मिथिलाक जनपदीय विकास

नरेन्द्र झा

मैथिली भाषा के संवैधानिक [illegible]

[illegible] बातु पर लिए

आकार सब संगोर-मिथिला

के अलग राज्यक राजनैतिक

मान्यताक लेल। आर्थिक,

सांस्कृतिक विकासक मुद्दा

एखनो गौण अइ। विकासक

परिकल्पना अलग राज्येक

रूप मे कयल जा रहलए।

विचारणीय अइ जे की अलग

राज्य आ क्षेत्र विशेषक

विकास एकहि मुद्दा अइ आ

कि एकरा अलग-अलग क'

क' देखल जा सकैए।

मिथिलाक जनपदक

विकासक छोट-छोट स्थानीय

आंदोलन के कि अलग

राज्यक लेल होब' बला

विराट जन आंदोलन स'

जोड़ल नञि जा सकैए?

जोड़ल जा सकैए, मुदा ई

वायवीय नञि हैत। कतौ स',

कोनो जनपद स' विकासक

कोनो मुद्दाक संग आंदोलन

शुरू कायल जा सकैए।

प्रस्तुत पोथी समस्त

जनपदक विशिष्टता आ

संपूर्णताक परिचयक संग

सोझां मे विकासक मुद्दाक

पथार लगा दैए। जरूरत अइ

ज्वलंत मुद्दा के चिह्नित करब

आ एकरा लेल आंदोलनक

सुरसार करब।

मिथिलाक जनपदीय विकास

मिथिलाक जनपदीय विकास

नरेन्द्र झा

शिखा प्रकाशन, पटना

कृति स्वाम्य :
नीलिमा चौधरी

प्रकाशक :
शिखा प्रकाशन
झा एण्ड एसोसिएट्स
एस.पी.वर्मा रोड
पटना-800 001

मुद्रक :
शेखर प्रकाशन
इन्द्रपुरी, पटना – 800 024

आवरण फोटो :
सुनील कुमार मिश्र

आवरण सज्जा :
रमेश कुमार

मूल्य : 100 रु०

MITHILAK JANPADIYA VIKAS by Narendra Jha

समर्पण

बाढ़ि, सुखाड़ आ
बेरोजगारी स' लहालोट
मिथिलाक लोकक
जिजीविषा कें

अपन बात

उत्तर-पूब भाग मे 25 हजार वर्गमील क्षेत्रफल ओ अद्यतन जनगणनाक अनुसार 4,39,71,581 जनसंख्यावला भूभाग मिथिला भूमिक उर्वरा शक्ति, वन, जल आदि स' पूर्ण तथा विद्या-बुद्धि मे कोनो भूभाग स' न्यून नहि। मुदा, एहि भूभागक लोक आइ निर्धन, नि:सहाय, निराश ओ उपेक्षित अवस्था मे अछि। एहि भूमिक उत्तर मे हिमालय, दक्षिण मे गंगा नदी, पूब मे महानन्दा आ पश्चिम मे गंडक नदी अछि। हिमालय स' गंगा धरि 100 मील ओ पूब स' पश्चिम धरि 250 मील। ई क्षेत्र 25.3 अंश अक्षांश स' 27.5 अंश उत्तर अक्षांश धरि एवं 83.80 अंश स' 88.80 अंश पूर्व देशान्तर धरि पसरल अछि। विभाजित बिहारक भौगोलिक क्षेत्रफल 93.81 लाख हेक्टेयर छैक, जाहि मे मिथिलाक क्षेत्रफल 58.50 लाख हेक्टेयर अछि, जे कुल भौगोलिक क्षेत्रफलक 62.36 प्रतिशत अछि। बिहारक कुल 38 जिला मे 18 जिला मिथिला मे अछि। नवगछिया कें एखन धरि जिला नहि बनायल गेल अछि। पुलिस प्रशासन जिला अछि। विधान सभाक 243 सदस्य मे 127 एहि क्षेत्र स' निर्वाचित होइत छथि। तहिना लोक सभा मे मिथिला स' 21 सदस्य कुल 40 मे चुनल जाइत छथि। नेपालक तराई क्षेत्र, जे 1816 मे सुगौली सन्धिक पूर्व एहि अंचलक भूभाग छल, नेपाल कें दय देल गेल। एहि मे नेपालक मोरंग, सप्तरी, महोत्तरी, सरलाही, रौतहट, बारा ओ परसा जिला अछि। एहि क्षेत्रक लोकक दलान भारत मे त' खेती नेपाल मे पसरल छनि। अंग्रेजक शासन काल मे ई भूभाग नेपालक दय देला स' एतय बहुउद्देशीय नदी-घाटी योजनाक निर्माण मे असुविधा भ' रहल छैक, जाहि स' एहि क्षेत्रक आर्थिक विकास मे बाधा उत्पन्न भ' रहल अछि। 1800 किलोमीटर भारत -नेपाल सीमा खूजल अछि जे देशक सुरक्षा मे पैघ

बाधा उत्पन्न कय रहल छैक।

आजुक युग मे सम्पूर्ण विश्व मे अनुभव कयल जा रहल अछि जे आर्थिक विकास मानवक सब आवश्यकता एवं आकांक्षाक पूर्तिक एकमात्र साधन थिक। विकसित, अविकसित ओ अर्द्धविकसित देश मे जीवनक आवश्यकताक पूर्ति तथा बेरोजगारी एवं निर्धनता सदृश विकट समस्याक समाधान हेतु मात्र आर्थिक विकास एकमात्र साधन अछि। द्वितीय विश्वयुद्धक बादक परिस्थिति आर्थिक विकासक महत्व कें एक नवीन स्वरुप प्रदान कयलक। अंग्रेजक शासनकाल मे भारतीय अर्थव्यवस्था स्वार्थी, शोषक एवं दोषपूर्ण नीतिक कारणें आर्थिक रूप स' कंगालीक शिकार बनल। उनैसम शताब्दी मे भारत स' इंगलैंडक खजाना मे धनक-प्रवाह होइत रहल एवं ई देश नियमित रूप स' सम्पत्ति विहीन राष्ट्र बनि गेल। अंग्रेजक शासनकाल मे भारतीय कृषि व्यवस्था कें तानाशाहीक शिकंजा मे जकड़ि देल गेल। फलस्वरुप कृषक भयंकर शोषण स' ग्रसित भ' गेलाह। कृषकक समृद्धता हीनता मे परिवर्तित भ' गेल। फलस्वरुप ओ भुखायल, अर्द्धनग्न, बेकार ओ सर्वथा असहाय भ' गेला। एकर पूर्ण प्रभाव मिथिलांचल मे सेहो भेल। देश स्वतंत्र भेलाक बाद सरकार जमीन्दारी प्रथाक उन्मूलन अवश्य कयलक, मुदा एकर लाभ भूमिहीन धरि नहि पहुँचि सकल। भूमि व्यवस्था एवं भूमि सुधार नहि भ' सकल। जोतक सीमाक निर्धारण एक आदर्श भूमि व्यवस्थाक गुण मानल जाइत छैक। मिथिलांचल मे चकबन्दी एखन धरि नहि भेल अछि। भूमि सुधार कार्यक्रमक अन्तर्गत बहुतो अधिनियम बनायल गेल, मुदा एकर पालन नहि भेल। फलस्वरुप बांछित फल नहि भेटल। भूमिहीन भूमिहीने रहला। खेतिहर मजदूर कें भूमिक स्वामित्व नहि भेटल। एहन मे कृषि आधारित भूभागक आर्थिक विकास कोना होइत।

मिथिला नदी मातृक भूभाग अछि। पूब स' पश्चिम धरि मुख्यतः 15टा नदी ओ छोट-छोट नदी बहुतो। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद देशक बहुतो भाग मे बहुउद्देशीय नदी घाटी योजना बनल। जेना दामोदर घाटी, भाखड़ा नांगल, रिहन्ड अदि। पंजाब ओ हरियानाक आर्थिक विकास मे नांगल घाटी योजनाक बड़ पैघ योगदान छैक। कोसी ओ गंडक योजना एखनो अधर मे लटकल अछि। जाधरि बाढ़िक रोकथाम, पटौनीक आधुनिक व्यवस्था, जल विद्युतक समुचित विकास, कृषि आधारित उद्योग ओ यातयात व्यवस्थाक स्थायी निदान नहि होयत, एहि अंचलक सर्वांगीण विकास दिवास्वप्ने रहि जायत।

मिथिला विभाजित बिहारक एकटा पैघ भूभाग अछि। एतयक लोक प्रबुद्ध छथि, मुदा रोजगारक अभाव मे अन्य राज्य मे पलायन क' रहल छथि। प्रबुद्ध जनमानसक तात्पर्य होइछ कर्त्तव्य ओ अधिकारक प्रति जागरूक रहब। राजीव गांधी बिहार मे कहने छलाह जे सरकारक विकास मदक एक रुपया मे मात्र 15 पैसा लाभान्वित धरि पहुंचैत छैक। हिनक मातामह देशक प्रथम प्रधानमंत्रीक कार्यकाल मे, जखन जिलास्तर स' प्रखंड स्तर धरि शासन विकेन्द्रित भेल छल, नव व्यवस्था कें ओ 'ग्रासरुट आफ डिमोक्रेसी' कहने छलाह। प्रखंड विकास पदाधिकारी, जे गामक लोकक व्यथा स' जुरल छथि, केहन विकास कय रहल छथि, से सर्वविदित अछि। केहन पैघ त्रासदी। चेतय परत। विकासक रास्ता जोहय परत। अगिला पीढ़ीक भविष्यक मार्ग सुदृढ़ करय परत।

2000 मे बिहार राज्यक विभाजन भेल। मिथिलांचलक प्राकृतिक साधन आ श्रम कें आंकल नहि गेल किन्तु कहल गेल जे एहि भूभाग मे कोसी-कमला-गंडकक बाढ़ि आ बालू मात्र अछि। ई नहि स्वीकार कयल गेल जे प्रकृति-प्रदत्त सम्पत्तिक समुचित उपयोग नहि कयला स' आर्थिक विषमता अछि। हम अपन पुस्तक 'मिथिलाक आर्थिक विकास' मे स्पष्ट कयने छी जे समस्त मिथिलांचलक नदी, प्राचीन ओ अर्वाचीन उद्योग-धंधा, ऊर्जा आ यातयात कें सुविचारित नीति स' व्यवस्थित कयला पर एहि क्षेत्र कें खेती ओ उद्योगक माध्यमे धन-धान्यपूर्ण कयल जा सकैत अछि। आब पंचायती राज व्यवस्था एहि राज्य मे लागू भ' गेल छैक सत्ता विकेंद्रित भ' गेल अछि। मिथिलाक प्रत्येक जनपदक आर्थिक विकास कोना होयत, अही कें दृष्टि मे राखि ई पोथी प्रस्तुत अछि।

- नरेन्द्र झा

अनुक्रम

पूर्णिया

पुरैन (कमल)स' पूर्णिया नामांकनक कारण कोसी आ महानन्दाक धार स' घेरल भूमि कमलक फूल स' सजल क्षेत्र अछि। 1772 मे मिथिलाक पूर्वी जिलाक स्थापना भेल। 1863 मे एहि भूभाग कें जिलाक स्तर भेटि गेल छल। आब 14.01.1990 स' प्रमण्डलक दर्जा। एहि जिलाक उत्तर मे अररिया, पूब मे पश्चिम बंगाल, पश्चिम मे मधेपुरा आ दक्षिण मे कटिहार जिला अछि। जिलाक कुल क्षेत्रफल 3229 वर्ग कि.मी. अछि आ ई चारि अनुमंडल-पूर्णिया, धमदाहा, बनमनखी आ बौसी में विभक्त अछि। प्रखंड 14 एवं कुल पंचायत-252। धमदाहा मे-26, बौसी मे 16, पूर्णिया पूर्वी मे 19, कसवा मे 25, वायसी मे 17, भवानीपुर मे 14, बनमनखी मे 19, डगरुवा मे 18, जलालगढ़ मे 10 एवं श्रीनगर प्रखंड मे 10 पंचायत। कोसी, महानन्दा, परना ओ कोली मुख्य नदी अछि। 21° 58' 10" ओ 27° 31' 15" उत्तर अक्षांश तथा 83° 19' 50" ओ 88° 17' 40" पूर्व देशान्तरक बीच पूर्णिया जिला अछि। ई एक निक्षेपीय मैदान ओ सामान्यतः क्वार्टरनो निक्षेप स' निर्मित। हिमालयी भूसंचलनक प्रभाव ओ नदीक निक्षेप स' भरल जयबाक कारणें विभिन्न नदीक क्रीड़ा क्षेत्र ओ समतल निक्षेपीय मैदान अछि। समुद्र तल स' सामान्य उंचाइ 75 मी. स' कम। वर्षा अधिक होइछ-1500 मि. मी. स' अधिक। पूर्णिया जिला एक समय मे अपन अस्वास्थ्यकर जलवायुक लेल कुख्यात छल। कहबी छलैक जे 'ने जहर खाउ ने माहुर खाउ, मरबाक हो त पूर्णिया जाउ'। 20म शताब्दीक प्रारम्भ मे ई लोकोक्ति खूब प्रचलित छल। सौभाग्य स' आब एहन बात नहि अछि। जलवायु स्वास्थ्यकर। तीन प्रमुख ऋतु-शीत, ग्रीष्म ओ

वर्षा। मध्य अक्टूबर स' फरवरी धरि शीत ऋतु, मार्च मास स' 15 जून धरि ग्रीष्म ऋतु ओ मध्य जून स' अक्टूबर धरि वर्षा। हिमालयक दक्षिणी ढाल पर घनघोर वृष्टि जाहि स' एतयक नदी मे बाढ़ि आबि जाइछ। मानसून नियमित रूप स' आवश्यकतानुसार बरसला पर सर्वोत्तम मित्र, किन्तु अनियमित बरसला पर अजेय शत्रु प्रमाणित होइछ। एहि जिला मे 2864 पोखरि अछि जाहि मे 1773 निजी पोखरि।

वर्ष 2001क जनगणना मे एहि जिलाक जनसंख्या 25,40,788 आंकल गेल जाहि मे पुरुषक संख्या 13,25,794 ओ महिलाक संख्या 12,14,994 छल। 1991मे एहि जिलाक आबादी 18,78,885 छल, जे वर्ष 2001मे एहि जिलाक आबादी गत जनगणनाक तुलना मे 35.23 वृद्धि भेल, जखन कि बिहारक आबादी मे 28.43 प्रतिशत तथा राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि 21.34 प्रतिशत अछि। एहि जिला मे जनसंख्याक घनत्व 787, राज्यक 880 ओ राष्ट्रीय घनत्व मात्र 324। कुल साक्षरता 35.51 प्रतिशत जाहि मे पुरुष साक्षरता 46.16 प्रतिशत ओ महिलाक 23.74 प्रतिशत। बिहार राज्यक कुल साक्षरता 47.53 ओ देशक 65.38 प्रतिशत अछि। एहि जिलाक कुल साक्षरता समस्त बिहारक साक्षरता स' 12.02 प्रतिशत कम ओ देशक तुलना मे 29.87 प्रतिशत कम। एक हजार पुरुष पर 916 महिला एहि जिला मे अछि।

कोसी तथा महानन्दा एहि जिलाक मुख्य नदी। महानन्दा मात्र अपन रास्ता नहि बदलैत अछि, ओ अपन नाम सेहो बदलैत अछि। एहि नदीक शाखा पनार अपन नाम पनार, परमान, परमौं, कदवो, रीगा, कंकर, फुलहर। एहिना बकरा, कतुआ या देवनी धार भ' जाइछ। यैह स्थिति कनकई, मेचो आदिक अछि। कनकईक संगमक बाद महानन्दा बरहो-गुआहाटी राष्ट्रीय मार्ग 31के बाध झोंगक पास पार करैत वागडोब तक जाइछ। जतय एकर दू धारा भ' जाइछ। महानन्दाक झौआ शाखा पश्चिम बंगालक मालदा जिला मे प्रवेश कय जाइछ ओ सुरभाराक पास गंगा मे संगम करैछ। कोसी अपन अत्यधिक सिल्टक कारण धारा परिवर्तनक हेतु बहुत बदनाम अछि। 1736 स' 1955क बीचक उपलब्ध रेकर्डक अनुसार कोसी जे पूर्णियाक पूब स' बहैत छलीह आब घुसकैत-घुसकैत 110 कि. मी. पश्चिम हटि गेल छथि आ सुपौल, मधुबनी, सहरसा, खगड़िया जिला स' होइत गंगा मे विलीन भ' जाइछ। उत्तरक पहाड़ स' आबयवाली बहुतो नदी महानन्दा मे मिल जाइछ। बहुत संभव अछि पहिने ई नदी सब कोसी मे मिलैत रहैत हो, जखन कि एकर धारा उत्तर पूबक दिस छल। पूर्णिया जिलाक एको इंच जमीन एहन नहि होयत जतय कोसीक धार नहि बहल हो। विभिन्न धाराक नाम-सौरा, वरण्डी, कारीकोसी, भूरा कोसी, तिलावे धार, हइयाधार, बोंचहा धार, भझारी धार, धेंभुरा धार, मिरचइया धार, लगुनिया धार आदि। जाहि धार स'

कोसीक मुख्य धारा बहल छैक कोसीक धार कहीलक। एहि तरहें कोसी ओ महानन्दाक बीचक क्षेत्र बराबरि बाढ़ि तथा जलजमावक क्षेत्र रहल, जकर मुख्य श्रेय कोसी के अछि। कोसीक बाढ़ि महानन्दाक तुलना मे भीषण, भयावह एवं रोमांचक होइछ। राज्य सरकार प्रतिवर्ष बाढ़िनिरोधक काज करैत अछि। तटबंध पर कटाओक मरम्मति। 19 जून 2003 धरि पूर्णिया जिला मे 12 बाढ़िनिरोधक योजना मे 11 पर कार्य प्रारम्भ भेल, 10 पूरा कय लेल गेल एवं एक पर काज चलि रहल छैक। पूर्णिया प्रमंडलक एक योजनाक उचित टेंडर नहि भेलाक कारणें काज बन्द क' देल गेल।

कृषि प्रधान जिला पूर्णियाक हेतु माटि मूलभूत संसाधन अछि। एहि जिला मे नदी सब द्वारा आनल अवसादक निक्षेप स' बनल भूमि। बाढ़ि आ जलाप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि मे अत्यधिक नमी पाओल जाइछ। जलीय प्रक्रियाक द्वारा नदीक कछेड़ मे बाहित बालु ओ दोआब क्षेत्र मे उपजाउ माटि, सूक्ष्म गाद तथा मृत्तिकाक निक्षेप पाओल जाइछ। अभिनव जलोढ़ माटि पाओल जाइछ जे धानक फसिलक हेतु उत्तम मानल गेल छैक, किन्तु साधारणतः उपजाउ माटि अछि।

जिला प्रधानतः कृषि क्षेत्र अछि। प्राकृतिक वनस्पति एहि जिला मे 19म शताब्दी धरि घनघोर छल। 20म शताब्दीक प्रारम्भहि मे प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक लेल साफ क' देल गेल। आब एतय ओ वनस्पति नहि पाओल जाइछ। कृषि भूमि मे फसिल उपजायल जाइछ जाहि मे घासक प्रजातिक पौधा स्वतः जनमैत अछि। कृषि क्षेत्रक बाहर बगीचा, उद्यान, खेतक आरि, परती भूमि, सड़क, तटबंध, रेलवे लाइनक दुनू दिस, गैर कृषि भूमि ओ बंजर भूमि पर ताड़, खजूर, बबूर, महुआ, कहुआ, सीमर, तेतरि, आम, नीम, बड़, पीपर, पाकड़ि आदिक गाछ पाओल जाइछ। बांस, मूंज ओ खढ़ सेहो पाओल जाइछ। पर्यावरण संतुलनक दृष्टि स' 33 प्रतिशत भूमि पर वन रहनाइ आवश्यक अछि मुदा एहि जिला मे एखन 77.60 कि.मी. क्षेत्र मे वन अछि, जे 2.5 प्रतिशत स' कम अछि। एहि अभाव के दूर करबाक हेतु सरकार वनरोपण ओ वनमहोत्सव कार्यक्रम ओ वृक्षक कटाई पर प्रतिबंध लगौने अछि। खैर ओ बांसक कटाइ पर ई प्रतिबंध नहि छैक। सामाजिक वानिकीक दिशा मे सरकारी प्रयास चालू अछि मुदा कार्य सन्तोषजनक नहि कहल जा सकैछ।

भूमि व्यवस्था स' अर्थ ओहि व्यवस्था स' अछि जकरा अनुसार भूमिक स्वामित्व, अधिकार एवं दायित्व निर्धारित कयल जाय। भूमि पर भूमि जोतयबलाक स्वामित्व चाही। जनवरी 1956 धरि छोटका ओ बड़का जमीन्दारी व्यवस्थाक उन्मूलन कानूनी प्रक्रिया द्वारा समाप्त भेल। एहि जिला मे सब स' पैघ जमीन्दारी दरभंगा महाराजक छल, से खतम भेल। भूमि हदबन्दी विधान सेहो पारित कयल गेल। राज्य सरकारक राजस्व एवं भूमि

सुधार विभाग कार्यरत अछि, मुदा भूमिहीनक बीच हदबन्दी सीमा स' फाजिल भूमि बांटल नहि गेल।

एहि जिला मे एखनो कतेको लोक छथि जिनका हजार बीघा स' फाजिल जमीन छनि। जखनं कि नियमत: 30 या 40 बीघा (सिंचित या असिंचित) स' अधिक भूमि नहि राखि सकैत छथि। भूदान मे संहो एहि जिला मे भूमि भेटल। एकर खतियान राज्य सरकारक पास नहि छैक। दिसम्बर 2002 मे सरकार आंकड़ा तैयार करौलक अछि जे दान मे कतेक जमीन भेटल, किनका स' भेटल, किनका देल गेल से नाम, पता रकबाक संग। एहि जिला मे भूदान स' 27,639.10 एकड़ भूमि प्राप्त भेल, जाहि मे मात्र 13,505.15 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच वितरित भेल आ बाद बांकी भूमि ओहिना परल अछि।

महानन्दा, कोसी, कारी कोसी, रीगा, बरण्डी, कनकई आदि सब नदी पर छोट-पैघ तटबंध बनल। बाढ़ि स' सुरक्षा भेल। 1955मे राजापुर नहरि कोसी योजनाक अन्तर्गत 37.31 करोड़ रुपयाक लागत स' बनब निश्चित भेल। 1957मे काज शुरू भ' सकल ओ 1964 स' सिंचाइ शुरू भ' सकल। 43 कि.मी. लम्बा नहरि छैक जाहि स' मुरलीगंज, जानकीनगर, पूर्णिया ओ सहरसा मे पटौनीक सुविधा भेल। एहि जिला मे कुल सिंचित भूमि 18.15 प्रतिशत, बिहार मे 36.31 प्रतिशत ओ समस्त राष्ट्र मे 30.72 प्रतिशत छैक। अर्थात् एहि जिलाक 586.06 वर्ग कि.मी. क्षेत्र मे पटौनीक व्यवस्था छैक। नहरिक अलावा नलकूप-निजी ओ राष्ट्रीय आ अन्य माध्यम स' पटौनीक व्यवस्था छैक।

फसिल उत्पादन मे एहि जिला मे जलवायु, विशेषकय वर्षा प्रमुख नियंत्रक कारक छैक। यैह फसिलक प्रकृति ओ उत्पादकता कें नियंत्रित करैछ। धान सर्वप्रमुख फसिल। जूट, मकई आ गहूम सेहो उपजैछ। अगहनी धानक बीया आखिरी जून आ जुलाइक प्रथम सप्ताहक बीच स' ओ नवम्बर-दिसम्बर मे काटल जाइछ। लगभग 81 प्रतिशत धान क्षेत्र मे अगहनी धान उपजाओल जाइछ। 2 प्रतिशत बोरो धान एहि जिला मे होइछ। मार्च-अप्रैल मे काटल जाइछ ओ नवम्बर-दिसम्बर मे बीया लगाओल जाइत छैक। जूट दोसर फसिल अछि। मइ मे नॉरवस्टर स' प्राप्त पूर्व मानसून वर्षा (112 मि.मी.), उच्च तापमान ओ आर्द्रता ओ उपजाऊ जलोढ़ माटि जूटक उत्पादनक लेल आवश्यक। जूट प्रधानत: एहि जिलाक प्राकृतिक कगार जतय बाढ़ि नहि पहुंचैत छैक उपजाओल जाइछ। ई वाणिज्यिक फसिल थिक। वर्ष 2003क हेतु भारत सरकार जूटक मूल्य 860 रुपया प्रति क्विंटल स्थिर कयने छल आ भारतीय जूट निगम कें एहि दर मे कृषक कें भुगतान करबाक आदेश छलैक। मकई पहिने एहि जिला मे नहि उपजाओल जाइत छल। प्रमुख भदई फसिल। जून-जुलाइ मे आद्रा नक्षत्र मे मानसूनी वर्षा भेला पर बाउग कयल जाइछ आ भादव-आश्विन मे (सितम्बर) काटल जाइछ।

दोरस उपजाऊ माटि, कम वर्षा ओ पौधा मे पानि नहि लगबाक चाही। पहिने ई बारी मे मात्र लगाओल जाइत छल। आब व्यावसायिक खेती भ' रहल अछि। गहूमक खेती आब सेहो भ' रहल छैक। हरित क्रान्तिक सर्वाधिक प्रभाव गहूमक खेती पर परल छैक। उन्नत प्रभेदक बीज, उर्वरक, कीटनाशक दबाइ ओ सिंचाइक उपयोग स' एकर खेती भ' रहल अछि एवं एक प्रमुख खाद्यान्न अछि। गैरपारम्परिक नारियलक खेती गत सात वर्ष स' लगभग 4000 हेक्टेयर भूमि मे भ' रहल अछि। उत्पादन बढ़िया। कृषि मात्र एहन क्षेत्र अछि जाहि मे रोजगारक सर्वाधिक संभावना। पूर्णियाक लोक कठोर मेहनति स' परहेज करैछ। धान, मदइ ओ जूटक कटाइक कोनो परवाहि नहि कय एहि इलाका स' मजदूर रेल गाड़ीक छत पर बैसिकय पंजाब, हरियाना, असम एवं देशक अन्य भाग मे पलायन करैत छथि। कृषि समस्याग्रस्त भेल जा रहल अछि। बीज, उर्वरक, कृषि उत्पादक उचित मूल्य,विपणन व्यवस्था, कृषि मजदूरक पलायन पर रोक पटौनीक उचित व्यवस्था नहि कयलो स' बेकारीक समस्या बिकराल रूप धारण करत। एहि सब समस्याक शीघ्रातिशीघ्र निदान करय परत।

प्राचीन काल मे ई अंचल आर्थिक दृष्टि स' स्वावलम्बी छल। समाजक खास-खास वर्ग उद्योग विशेष मे लागल अपन जीविकोपार्जन करैत छलाह। आर्थिक दृष्टि स' ई सब उद्योग गृह उद्योगक श्रेणी मे पूर्ण विकसित छल। बेलौरी (पूर्णियाक समीप) कसेरा जातिक लोक बिदरीक बर्तन बनायबामे विशिष्ट नाम यश हासिल कयने छलाह। ई उद्योग 19म शताब्दी मे उन्नत अवस्था मे छल तथा 20म शताब्दीक मध्य मे समाप्तप्राय भ' गेल। तहिना नेवारगर सब नेवार बुनैत छलाह। रंग ओ सिन्दूर, पाटक बोरा ओ कागज, रेशमी मोटिया वस्त्र एवं सतरंजी, कम्बल, अन्य लघु एवं गृह उद्योग एवं गृह उद्योग स' निर्मित सामान स्थानीय बाजार मे ओ बाहर बिक्रीक हेतु जाइत छल। 18म ओ 19म शताब्दी मे नील उद्योग एहि जिला मे खूब विकसित छल। सर्वप्रथम 1775मे नीलगंज मे नीलक कारखाना बनल। थौमस एण्ड कम्पनी, एक अंग्रेजी फर्म महाराजा दरभंगा स' लीज पर भूमि ल'क' नीलक खेती करैत छल। वर्ष 1810 मे 77 नीलक कारखाना छल। गृह, कुटीर, लघु उद्योग प्रोत्साहनक अभाव मे बन्द भ' गेल एवं मशीन स' बनल गृहोपयोगी वस्तु बाजार मे उपलब्ध भ' गेल। बेकारी मे वृद्धि भ' गेल। राज्य सरकार द्वारा निबंधित औद्योगिक इकाइ 31 मार्च 1995 धरि 4707 छल जे 1999-2000 धरि कुल निबंधित इकाइक संख्या 5567 छैक। किन्तु रुग्ण, बन्द ओ चालू इकाइक संख्या अनुपलब्ध। पूर्णिया मे छोट-छोट जूटक कारखाना अछि जाहि मे मात्र 650 श्रमिक कार्यरत छथि। बनमनखी मे एकटा चीनी मिल छल जकरा बिहार राज्य चीनी उद्योग निगम अपना अधीन कय लेलक, मुदा ओकरा विकसित नहि कय सकल। सम्प्रति बन्द अछि। दू गोट कागजक मिल-विश्वनाथ पेपर मिल्स लिमिटेड ओ

क्राफ्टवेल पेपर प्राइवेट लिमिटेड बनल। क्राफ्टवेल पेपर मिलक क्षमता 2100 टी.पी.ए. छैक आ स्ट्राबोर्ड बनाओल जाइत छल। उद्योगक विकासक नेन एहि जिला मे औद्योगिक प्रांगण बनल। वर्तमान मे लगभग सब उद्योग बन्दप्राय अछि। 1988 मे बिहार राज्य वस्त्र निगम 96.82 लाख रुपयाक लागत स' इन्डस्ट्रीयल कॉटन यार्न प्रोजेक्ट स्थापित केलक। एहि मिल मे दरी, कनवास, जाल, टायर कौर्ड, फिल्टर कपड़ा आदिक हेतु सूतक उत्पादन होइत छल। 1993 धरि ई सूत मिल कार्यरत छल। कार्यशील पूंजीक अभाव से बन्द भ' गेल। एक स्टीलक कारखाना निजी क्षेत्र मे कार्यरत अछि। जूट ओ नारियल (तेल, झाड़ू ओ रस्सी) केराक चिप्स, अन्य खाद्य प्रसंस्करण, कृषि आधारित उद्योगक लाभकारी भविष्य अछि। उद्यमिताक अभाव। आधुनिक ढ़ंगक चाउरक मिल, जाहि मे भूसा स' गैस निर्मित उर्जा स' शक्तिक प्रावधान छैक, भविष्य उज्जवल छैक। स्टेट बैंक रोहतास जिलाक नोखा मे एहि तरहक चाउरक मिल, कें मार्च 2003मे सर्वप्रथम वित्तीय सहायता देलक अछि। पर्यटन उद्योग विकसित नहि कयल गेल छैक।

पूर्णिया बेसिन मे तेलक पैघ भंडारक खबरि भेटल अछि। भारत सरकार प्रारम्भिक जांच स' आश्वस्त अछि। पेट्रोलियम ओ प्राकृतिक गैस विभाग सक्रिय भेल अछि। अन्वेषण आ खननक हेतु देसी ओ सागर पार कम्पनी स' निविदा कयल गेल छैक। एक विदेशी कम्पनीक निविदा स्वीकृत भेल छैक। काज प्रारम्भ होयत। राज्य सरकार कें रॉयल्टी, नियुक्ति ओ सहायक उद्योगक पूर्ण संभावना छैक।

20सूत्री कार्यक्रमक कार्यान्वयन मार्च 2002 धरि उपलब्धिक संबंध मे कोटिकरण हेतु अंकक निर्धारण भारत सरकार द्वारा निर्धारित मापदंडक अनुसार पूर्णिया जिला तैसम स्थान प्राप्त कयलक। एहि मे मुख्य कार्य छल अधिशेष भूमिक वितरण, पेयजल समस्या, बच्चाक टीकाकरण, सहायता प्राप्त अनुसूचित जाति परिवार, अनुसूचित जनजातीय परिवार, आर्थिक रूप स' कमजोर वर्गक लेल मकान, मलिन बस्तीक सुधार, वृक्षारोपण, ग्रामीण विद्युतीकरण, उन्नत किस्मक चूल्हा अे बायोगैस संयंत्र शामिल छल। कमजोर वर्गक लेल मकान, अल्प आयवर्गक लेल आवास मे प्रगति सेहो एहि जिला मे असंतोषजनक छल। कोटिकरण मात्र स' आर्थिक लाभक कोनो संभावना नहि। सम्बद्ध अधिकारी कें जवाबदेह बनाओल जाय ओ असफलताक लेल दंडित कयल जाय। 50 प्रतिशत गरीब एहि जिला मे छथि। हिनका लोकनिक बीच मूलभूत बुनियादी सेवाक विस्तार कयल जाय। एक दिस पानि, बिजली, सड़क, विद्यालय, पर्यावरण सुरक्षा मे कमी दोसर दिस केन्द्र प्रायोजित योजनाक आवंटित राशि घुमिकय चल जाइछ। कतेक पैघ अन्याय। अक्टूबर 2002 मे इ.ए.एस. सरमा कमेटी देशक 100 जिला कें निर्धनतम जिलाक श्रेणी मे राखलक जाहि मे पूर्णिया जिला सेहो अछि। ई

कमेटी नव संरचनाक सृजन ओ पुरानक रखरखाव पर विशेष जोर देने अछि। औद्योगिक निवेशक ऋण जमा अनुपात 1975 मे 44 प्रतिशत छल से घटिकय 2002 मे 41 प्रतिशत भ' गेल। वर्ष 2001-02 मे लक्ष्य छल 465 करोड़ मुदा ऋण बांटल गेल मात्र 190 करोड़ रुपया। बैंकरक आपनि छनि जे जाधरि बिजली, सड़क ओ कानून व्यवस्था मे सुधार नहि होयत बाहरक उद्योगपति एतय उद्योग लगयबा स' हिचकिचाइत छथि।

कोनो अंचलक सामाजिक, आर्थिक ओ औद्योगिक विकास मे ऊर्जाक महत्वपूर्ण स्थान छैक। ऊर्जाक प्रतिव्यक्ति उत्पादन तथा खपत कोनो भूभागक प्रगतिक सूचक अछि। कोयला आ पेट्रोलियमक मात्रा सीमित अछि। एकाध शताब्दीक अन्तराल मे ई स्रोत शेष भ' जायत किन्तु जाबत धरि जल-चक्र रहत, जल विद्युत भेटैत रहत। मुदा बड्ड पैघ विडंबना। जाहि क्षेत्र मे कोसी, महानन्दा, कोली ओ परना नदी हो ओ भूटानक चुक्का डैम स' 65 मेगावाट बिजली किनैत अछि। एहि प्रोजेक्टक प्रवेश द्वार पर लिखल छैक 'नदीक पानी नदीक उजला सोना' आ निर्मित अछि भारतीय अभियंता द्वारा। मात्र सप्तकोसी डैम स' नेपाल, बिहार, मिथिला, उत्तरप्रदेश ओ पश्चिम बंगालक ऊर्जाक दीर्घकालीन समस्याक समाधान होयत। सिलीगुड़ी होइत 65 मेगावाट पनबिजली पूर्णिया मे उपलब्ध होइछ। विद्युत संचरणक व्यवस्था बिहार राज्य विद्युत बोर्ड एखन धरि व्यवस्थित नहि कय सकल अछि। विद्युत शक्ति वितरणक हेतु 33 के. वी.क अनेक उपकेन्द्र अछि। एक आकलनक अनुसार संचरण मे 25 प्रतिशत बिजली नष्ट भ' जाइछ। पूर्णिया स' बेगूसराय एवं बेगूसराय स' समस्तीपुर धरि नव व्यवस्था कयल जा रहल छैक। एहि जिलाक अधिकांश गाम एखनो प्रकाशक लेल डिबिया आ लालटेन पर निर्भर अछि। ग्रामीण विद्युतीकरण बहुत पछुआयल। मार्च 1987 धरि पुरना पूर्णिया जिलाक मात्र 927 गाम मे बिजली पहुंचल छल। राज्य सरकार 2007 धरि प्रत्येक गाम कें आलोकित करत। दाबा आ सफलता भगवान भरोसे। कटैया (बीरपुर) पनबिजली स' एहि जिला कें ऊर्जा उपलब्ध नहि भ' रहल छैक। भूटानक ताला हाइड्रोइलेक्ट्रिक परियोजना स' 400 केवी डबल सर्किट 'बार्डर क्षेत्र स' निकालल जायत जे डालकोला, सिलीगुड़ी, पूर्णिया, मुजफ्फरपुर, गोरखपुर, लखनऊ होइत दिल्ली धरि जायत तथा लगभग 1000 मेगावाट उत्पादन करयबला इकाई स' जोड़ल जायत। ई ट्रान्समिशन लाइन बेगूसराय धरि पहुंच गेल छैक। भारत सरकारक पावर ग्रिड कारपोरेशनक अधीन ई काज भ' रहल अछि।

एहि जिला मे सड़क यातायातक स्थिति दयनीय अछि। कोसी, महानन्दाक दोआब क्षेत्र तें सड़कक कमी। कोसी घाटी मे कौसकीक धारक कारण सड़क निर्माण बाधित। भूमि ठोस नहि, बाढ़िक आगमन, जलजमाव आदि मुख्य कारण। राष्ट्रीय उच्चपथ संख्या 106 भारत-नेपाल बोर्डर-बीरपुर-मधेपुरा-बिहपुर (राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 31) 130कि.मी. लम्बा पर सन्तोषजनक कार्य भ' रहल छैक। पूर्णिया शहर राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 31 पर अवस्थित अछि।

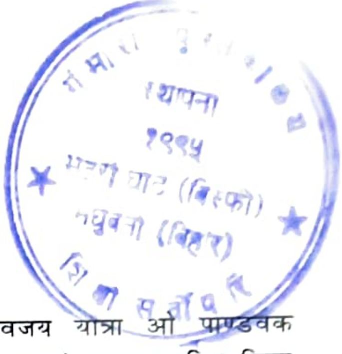
मोकामा-बरौनी-पूर्णिया-सिलीगुड़ी पथ। ई पथ आसाम मे लोहित नदी पर स्थित सैकवा घाट धरि जाइत अछि। जून 2002मे पूर्णिया-कदवा-आबादपुर पथ मे महानन्दा नदी पर झौआ पुलक निर्माणक लेल पुनरीक्षित राशिक स्वीकृति भेटि चुकल छैक। एहि पुलक 13 पाया मे 8क काज कतेको वर्ष पहिने पूरा भ' गेल छलैक। एहि वर्षक अन्त धरि पूरा होयबाक संभावना ओ पुलक पुनरीक्षित राशि 2116 लाख रुपया। योजना आयोग सड़कक खस्ता हालत कें ध्यान मे राखि 'कनेक्टीविटी' कें प्राथमिकता द' रहल छैक। कनेक्टीविटीक अन्तर्गत राष्ट्रीय राजमार्ग कें राज्य मार्ग स' ओ राज्यमार्ग कें जिलामार्ग स' तथा जिला मार्ग कें ग्रामीण मार्ग स' जोड़बाक छैक। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना स' जोड़ल गाम कें सोझे भारतक राजधानी स' जोड़बाक छैक। 2007 धरि एक हजार आबादीबला प्रत्येक गाम के सब मौसम मे सड़क स' जोड़बाक महत्वाकांक्षी योजना अछि। एहि जिला मे एहि योजनाक प्रगति कच्छप गति स' चलि रहल अछि। दिसम्बर 2002 धरि पूर्णिया स' धमदाहा जायबला सड़क बनभाग चुनापुर होइत परोरा-काझा-धमदाहा बाजार धरिक सड़कक हाल खस्ता अछि। ऐह हाल कसवा प्रखंडक 13 पंचायतक ग्रामीण सड़कक छैक। धमदाहा अनुमंडलक चारि प्रखंडक अधिकांश गाम मूलभूत सुविधा स' वंचित अछि। जनवरी 2002 मे रूपौली विधानसभा क्षेत्र जिला योजना कोष स' बलिघाट स्क्रू पुल-भवानीपुर-बलिया मार्गक 22 लाख रुपयाक लागत स' पक्कीकरण आ जीर्णोद्धार भेल अछि। जनवरी 2003मे प्रकाश मे आयल अछि जे पूर्णिया पथ प्रमंडल मे राष्ट्रीय उच्च पथ 31, 81 ओ 107क मरम्मतिक लेल आवंटित 50 लाख रुपया स' सड़कक मरम्मति नहि भेल ओ टेंडर मे गोलमाल कयकें पैसाक निकासी भ' गेल। राष्ट्रीय उच्च पथक संग ई हाल अछि तखन राज्य, जिला ओ ग्रामीण सड़कक केहन मरम्मति होइत होयत, अन्दाज कयल जा सकैछ।

पूर्णिया बाढ़िक क्षेत्र मे अछि तें हेतु रेल मार्गक विन्यास सघन नहि। 1888मे ईस्टर्न बंगाल स्टेट रेलवेक विस्तार भेल तथा 1902मे कटिहार-बरौनी-समस्तीपुर-सोनपुर रेलपथ कें पूब मे पार्वतीपुर आ पश्चिम मे गोरखपुर स' मिला देल गेल। कटिहार लग कोसी पुल बनाओल गेल। कटिहार पूर्व मे पूर्णिया जिलाक महत्वपूर्ण भाग छल। एहि जिलाक रेलपथ कटिहार मंडलक अधीन अछि। रेल पथक विकास नहि भेल छैक। रेल मार्गक लम्बाइ नगण्य। पटना स' पूर्णिया जयबाक हेतु कैपिटल एक्सप्रेस स' कटिहार ओकर बाद रेल ओ बस मार्ग। सोझ रेल सेवा अनुपलब्ध।

एहि जिलाक चुनापुर मे रक्षा मंत्रालयक हवाई अड्डा अछि। व्यावसायिक उड़ानक अनुमति रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार देने अछि एवं जनवरी 2003 स' सहारा हवाई जहाज पूर्णिया-कोलकाता, पूर्णिया-पटना-नयी दिल्ली सेवा शुरू कयने अछि।

■

अररिया



पाण्डु पुत्र भीमक दिग्विजय यात्रा ओ पाण्डवक अज्ञातवासक पौराणिक इतिहास स' जुड़ल अररिया जिला 1864 ने अनुमंडल आ 1990 मे जिला घोषित कयल गेल। मुदा बारह साल बादो एहि नवसृजित जिलाक प्रशासनिक भवन, जेल आओर अदालत आदिक निर्माण राज्य सरकारक संचिका मे लसकले अछि। राज्य सरकार 9 जुलाइ 1996मे बिहार विधान परिषद मे आश्वासन देने छल जे वर्ष 1999 धरि आधारभूत ढांचा बनि जायत। मुदा एखन धरि संभव नहि भ' सकल। एहि जिलाक उत्तर मे तराई नेपालक मोरंग जिला, दक्षिण मे पूर्णिया जिला, पूब मे किसनगंज आ पश्चिम मे सुपौल जिला अछि। क्षेत्रफल 2830 वर्ग कि.मी.। अररिया आ फारबिसगंज दू गोट अनुमंडल। 218 पंचायत एवं 745 गाम। तीन टा शहर-अररिया, फारबिसगंज तथा जोगवनी। 9 प्रखंड मे बंटल अइ जिला मे अररिया मे (30) पंचायत, जोकीहाट (27), पलासी (21), सिकटी (14), कुर्साकाटा (13), रानीगंज (32), भरगामा (20), फारबिसगंज (32) एवं नरपतगंज (29) ओ कुल पंचायत संख्या 218 अछि।

2001क जनगणना मे जनसंख्या मे वृद्धि भेल छैक। 1991मे जनसंख्या 16,11,638 छल जे 2001 मे बढ़ि कय 21,24,831 भ' गेल। एहि मे पुरुषक संख्या 11,08,924 एवं महिलाक 10,15,907। प्रति हजार पुरुषक तुलना मे महिलाक संख्या मात्र 916 अछि। एहि दशक मे जिला मे 31.28 प्रतिशत जनसंख्या मे वृद्धि आंकल गेल, जखन कि राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि 2001मे 21.34 प्रतिशत। जिला मे साक्षरता 34.94 प्रतिशत। महिलाक

साक्षरता लगभग 23 प्रतिशत अछि।

उष्ण कटिबन्धीय आर्द्र पर्णपाती वन अररिया जिलाक उत्तरी सीमान्त मे पाओल जाइछ। एहि क्षेत्र मे करीब 1250 मि.मी. वर्षा होइत छैक। तराई क्षेत्र मे बांस, नरकट, झाउ, साबेघास, सखुआ ओ सीसोक वृक्ष पाओल जाइछ। एतय अनूप मे जलकुम्भी एवं ओकर कछेड़ मे नरकट, झाउ आदि उपलब्ध छैक। एकरा बीच मे सखुआक गाछ भेटत। 13.05 कि.मी. वन क्षेत्र अछि एहि जिला मे। 1952मे राज्य सरकार समस्त वनक्षेत्र कें सरकारी सम्पत्ति घोषित कयलक तथापि वनक विकास तेजी स' नहि भ' रहल छैक। अवैध कटाइक कारण वन क्षेत्र मे अतिक्रमण। वन क्षेत्रक वृद्धिक लेल राज्य सरकारक वन विभाग नियमित रूप स' वनरोपण तथा वन महोत्सव मनबैत अछि। वन एवं पर्यावरण क्षेत्र मे एहि जिला मे वर्ष 2000-01मे विकासक कोनो काज नहि भेल। स्थिति निराशाजनक छैक।

मनुष्यक मूलभूत संसाधन माटि थिक। प्राकृतिक वातावरणक प्रधान तत्व। एहि जिलाक माटि कोसी एवं अन्य नदीक द्वारा आनल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल छैक। कोसी नदीक बाढ़ि ओ जलप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे एहि जिलाक माटि अत्यधिक नम्र पाओल जाइछ। जलीय प्रक्रियाक द्वारा नदीक कछेड़ मे वाहित बालु ओ दोआब क्षेत्र मे सूक्ष्म गाद तथा मृतिकाक निक्षेप पाओल जाइत छैक। कोसी आ दक्षिणी महानन्दा घाटी मे 15813कि.मी. बालु तथा बलुआही माटि भेटैछ। धान, गहूम, मकई ओ पटसन प्रमुख फसिल अछि। धान मे अगहनी मुख्य, 12-14 प्रतिशत क्षेत्र मे भदै धान लगाओल जाइछ जे मइ-जून मे रोपल जाइछ। गहूम सेहो होइछ। एहि जनपदक कृषि समस्याग्रस्त अछि। बाढ़ि, रौदी, बीज, उर्वरक, कृषि उत्पादक उचित मूल्यक अभावक संगहि कृषि मजदूरक समस्या। जमींदारी उन्मूलन भेल मुदा भूमिहीन एखनो भूमिहीने छथि। राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग, बिहार सरकार एखन धरि जिला भूदान यज्ञ समिति कें दान मे भेटल जमीन ओ किनका वितरित कयल गेल अक्टूबर 2002 धरि स्पष्ट नहि कयने अछि। अररिया जिला मे उपलब्ध जमीन 14,253.81 एकड़ छैक, जाहि मे मात्र 5222.26 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच वितरण कयल गेल छैक। 9031.55 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच वितरित नहि भेल। राज्य सरकार कें गरीब कें अत्यधिक निर्धन बनयबाक की औचित्य छैक। की यैह समाजवादी समतामूलक समाजक निर्माण थिक।

ई क्षेत्र प्रधानतः कृषि पर निर्भर अछि तें प्राकृतिक वनस्पति कें कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। उद्यान प्रकारक वनस्पति पाओल जाइछ। गैर कृषि भूमि ओ बंजर भूमि पर ताड़, खजूर, बबूर, महुआ, सेमड़, तेंतरि, आम, नीम, बड़, पीपर, पाकड़ि आदिक गाछ एवं बांस, मूज, नरकट, सवई घास आदि पाओल जाइछ। जलकुम्भी सेहो पाओल जाइछ। अररिया जिला मे 1999मे 13.05 कि.मी. क्षेत्र मे वन छल। एखनो वनक उपयोग औद्योगिक विकासक हेतु नहि कयल गेल छैक। वन एवं पर्यावरण क्षेत्रमे वर्ष 2001मे कोनो विकास नहि भेल।

अररिया जिला कृषि प्रधान अछि। मात्र कृषि विकास स' कृषक समुदाय कें वांछित सुख-सम्पन्नता उपलब्ध नहि हेतै। ई सम्पन्नता तखने संभव भ' सकैछ जखन ग्रामीण कृषि आधारित उद्योगक समागम कें वैज्ञानिक ओ सही दिशा देल जायत। एहि जिला मे सालो भरि कृषि कार्य नहि रहला स' एवं पारिवारिक विभाजनक कारणें सीमान्त किसानक संगहि भूमिहीन मजदूरक संख्या मे वृद्धि भ' रहल छैक, तें हेतु ग्रामीण शहर दिस भागि रहल अछि। ग्रामीण समाजक हेतु सालो भरि रोजगारक व्यवस्था परमावश्यक। कृषि उद्योग एवं अन्य ग्रामीण उद्योगक हेतु कच्चा माल ओ श्रमशक्ति गामे मे उपलब्ध छैक। मात्र ग्रामोद्योग नव प्रौद्योगिकीक आवश्यकता ओ जानकारी अपेक्षित छैक। विश्व व्यापार संगठन कें ध्यान मे राखि कृषि व्यवस्था मे परिवर्तन अपेक्षित।

अररिया धानक एक प्रधान उत्पादक जिला अछि संगहि एतय ई प्रधान भोजन अछि। सब धानक कुटाइ नहि भ' पबैत छैक। ढेकी ओ ऊखरि-समाठ स' धानक कुटाइ कम भ' गेल छैक। चूरा धरि आब मशीने पर कुटाइ छै। 1999 मे एहि जिलाक जोगबनी तथा फारबिसगंज मे चाउरक मिल छल। प्रत्येक प्रखंड मे एकटा आधुनिक चाउरक मिलक प्रावधान कयल जा सकैछ जाहि मे चाउर, दालि एवं चूड़ा तैयार कयल जा सकय। एहि चाउर मिल कें तराई क्षेत्र स' सेहो प्रचुर धान प्राप्त भ' जेतै। चाउरक मिल मुख्यतः धानक भुस्सी, बिजली ओ डीजल स' चालित होइछ। भदै धान सेहो 12-14 प्रतिशत क्षेत्र मे रोपल जाइछ मइ-जून मास मे।

एहि जिला मे जूटक उत्पादन होइछ मुदा व्यावसायिक ढंग स' खेती नहि कयल जाइछ। व्यावसायिक ढंग स' कम लागत मे जूटक खेती एहि क्षेत्र मे संभव छैक। जूट बेलिंग उद्योग कें प्रोत्साहन भेटबाक चाही। जूटक ट्वाइन ओ सनठी स' पल्प कागज तैयार कयल जा सकैछ। फारबिसगंज जूट व्यापारक पैघ केन्द्र अछि। सम्प्रति सनठी कें जरा देल जाइछ। फारेस्ट रिसर्च इन्स्टीच्यूट, देहरादून एहि पर शोध कयने अछि। बिहार सरकार एकरा क्रियान्वित एखन धरि नहि कय सकल।

मवेशीक पालन एतय अत्यधिक संख्या मे होइछ। माल-जालक खाल ओ चमड़ा प्रचुर पाओल जाइछ जे कोलकाता ओ कानपुरक बाजार मे चल जाइछ एवं उचित मूल्य स्थानीय व्यापारी कें नहि भेटैत छैक। बीचक

एजेंट बढ़िया पैसा अर्जन कय लैत छैक। पांच लाख टाकाक लागत स' टेनरीक निर्माण कयल जा सकैछ जाहि मे कम स' कम पचास टा श्रमिकक रोजगार निश्चित छैक। खादक हेतु माल-जालक हड्डी स' बोन मिल स्थापित कयल जा सकैछ। एक लघु बोनमिल फैक्टरी मात्र एक लाख टाका मे आ दस श्रमिक कें रोजगार मुहैया कय सकैछ।

एहि जनपद मे अफीमक खेतीक प्रचुर संभावना छैक। नुका-चोरा क' खेती भ' रहल छैक। रानीगंजक परवाहा इलाका अवैध ढंग स' एकर खेती मे प्रसिद्धि पाबि चुकल अछि। एहि धंधा मे राजनेता लोकनिक हाथ रहैत अछि। अफीम स' दवाइ बनायल जाइछ। एक किलो मादक पदार्थ हेरोइनक मूल्य एक करोड़ आंकल जाइछ। तस्करीक धंधा क्रमिक विकसित भ' रहल छैक। नेपाल-मिथिलाक सीमा एहि धंधाक लेल कुख्यात भ' गेल छैक। राज्य सरकार एकटा अफीमक कारखाना निर्मित कय एहि धंधा कें रोकि सकैछ। संगहि एहि स' इलाकाक आर्थिक विकास एवं बेकारीक किछु समाधान भ' सकत।

मड़ुआ ओ मकईक खेती होइछ किन्तु वृहत् स्तर पर नहि। दलहन ओ तेलहन (सूर्यमुखी सेहो) उपजाओल जाइछ। मात्रा कम छैक। वाणिज्यिक फसिल मे जूट प्रधान आ मसालाक उत्पादन नाममात्र। मइ मे नॉरवेस्टर स' प्राप्त पूर्व मानसून वर्षा (112मि. मी.), उंच तापमान, उच्च आर्द्रता ओ उपजाउ जलोढ़ माटि जूटक उपजक लेल आवश्यक। संगहि एकर धोआइ हेतु आवश्यक छैक साफ पानि।

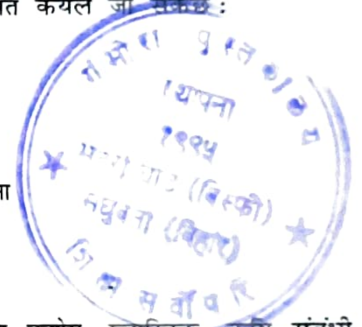
मत्स्य उद्योग एखन धरि वाणिज्यिक रूप मे नहि अछि। मत्स्य पालन आब 'जलीय खेतीक' नाम स' जानल जाइछ। एहि खेती मे माछ, सिंघाड़ा, मखान, घोंघा आदि अछि। एकरा हेतु उन्नत बीज, खाद, उर्वरक, चून, अतिरिक्त भोजन एवं संचयक बाद एकर देखभाल आवश्यक। ई निर्विवाद अछि जे पानि मे माछ कें भोजन स्वत: भेटैत छैक किन्तु खाद आदिक प्रयोग स' माछक बढ़त होइ छै। पोखरि, जलाशय, नदी एकर उत्पादन हेतु मुख्य अछि, किन्तु व्यावसायिक ढंगक खेती नदारद। कृषि पर बोझ कें व्यावसायिक मत्स्य पालन स' कम कयल जा सकैछ।

कोसी अहू जिलाक मुख्य नदी अछि जे अपन धार परिवर्तनमे विश्वविख्यात। 1731क पूर्व एकर धार परिवर्तनक कोनो लिखित प्रमाण उपलब्ध नहि अछि। हण्टर मानैत छथि जे कोसी पुराकाल मे कारतोवा नदीक मार्ग स' प्रवाहित होइत छल। 1731मे फारबिसगंज ओ पूर्णिया लग बहैत छल, 1892मे मुरलीगंज लग, 1922मे मधेपुरा लग, 1936मे सहरसा लग तथा 1952मे सहरसा ओ मधुबनी जिलाक सीमा पर पहुंचि गेल छल।

लगभग सबा दू सय वर्ष मे 110कि.मी. पश्चिम ससरि गेल अछि। 1891मे प्रथम बेर कोसीक उपरी भाग मे प्रवाह मार्ग दक्षिण-पश्चिमक दिस भेल। 1897मे फारबिसगंज अखाड़ा घाटक बीच रेल मार्ग नष्ट भ' गेल। एकर बाद कोसी धारक बहाव पश्चिम दिस तेज भेल। 1921 धरि कोसी मिरचइया धार स' प्रवाहित होइत छल जे मधेपुरा स' 13कि.मी. पूब मे प्रवाहित छल। 1936मे महुली नदी कोसीक एक वाहिका बनि गेल। नेपाल मे बीरबांध टूटल जाहि स' कोसी तथा उधा धार मे जल प्राप्त होमय लागल। 1936मे बीरबांधक कटान पैघ भ' गेल जाहि स' कोसीक समस्त प्रवाह घेमरा मे प्रवाहित होमय लागल। कोसी पर बान्ह बनि गेला स' बाढ़ि नियंत्रित भेल छैक। पूर्वी कोसी नहरि बनि गेला स' पटौनिक बढ़िया व्यवस्था भ' गेल छैक। 1968 मे राजपुर शाखा नहरि स' सिंचाइ प्रारम्भ भ' गेल मुदा एहि नहरि कें एखन धरि पूर्ण विकसित नहि कयल गेल छैक। फलस्वरूप एहि नहरि प्रणाली स' एहि अंचल कें पूर्ण लाभ नहि भेल छैक। जिलाक अन्य प्रमुख नदी-परमान, बकरा, रतबा, सुरसर ओ दुलादे अछि।

औद्योगिक विकासक कोनो सूत्रपात एहि जिला मे नहि भेल छैक। ई उद्योग विहीन जिला अछि। संगठित, मध्यम एवं लघु उद्योग नहि। जनसंख्याक सब भार खेतीये पर। बेकारी भयानक। आर्थिक स्थिति नाजुक छैक, जखन कि कृषि आधारित उद्योगक सब साधन विद्यमान छैक। एहि क्षेत्र मे उपलब्ध साधनक आधार पर निम्न उद्योग विकसित कयल जा सकैछ :

1. जूटक सुतरी
2. सन्ठी स' कागजक हेतु लुगदी
3. टेनरी (चमड़ा उद्योग)
4. हड्डी पर आधारित खादक कारखाना
5. खाद्य प्रसंस्करण उद्योग
6. लकड़ी उद्योग



मांगक आधार पर अलमूनियम आधारित उद्योग, प्लास्टिक, कृषि संबंधी औज़ार, फाउण्ड्री, भवन निर्माणक हेतु हार्डवेयर, बनल बनाओल वस्त्र उद्योग स्थापित कयल जा सकैछ।

जूटक पैघ बाजार फारबिसगंज मे अछि। देहात स' परिष्कृत जूट एतक मंडी मे अबैछ। आधुनिक ढंगक सुतरी एवं बोरा आ चट्टीक एक पैघ कारखाना एतय लगाओल जा सकैछ। चमड़ाक एक कारखाना फारबिसगंज मे लघु स्तर पर कार्यरत अछि। पैघ स्तर पर कारखानाक साधन उपलब्ध छैक। जोगबनी मे लकड़ी ओ टिम्बरक छोट-छोट कारखाना छैक। एकरा

पैघ स्तर पर स्थापित कयल जा सकैछ। फारबिसगंज मे सेहो टिम्बरक कारखाना छैक। वृहत स्तर पर एहि उद्योग कें एहिठाम विकसित करबाक योजना कें क्रियान्वित करबाक चाही। वन आधारित उद्योगक संभावना प्रचुर छैक। बिस्कोमान फारबिसगंज मे शीतगृह चालू कय रहल अछि।

ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक ओ पर्यावरणीय महत्वक अनेक स्थल एहि जिला मे अछि। एकरा पर्यटन स्थलक रूप मे विकसित कय अर्थव्यवस्था मे सकारात्मक योगदानक संग अतीतक बिसरल चित्र कें सजाओल जा सकैछ। अररियाक आसपास स्थित साहसमल, बेणुगढ़ ओ बड़ीजानक 'स्वर्णिम त्रिकोण'क उत्खनन ओ विकास एकटा विश्व धरोहरक रूप मे प्रकट भ' सकैछ। पांडवक अज्ञातवास स' जुड़ल स्थान-भेंड़ियारी, भेंसिया पोखरि, बीरबन, बरांटपुर सहित अन्य कें चिह्नित ओ विकसित कयल जयबाक चाही। 1857क प्रथम स्वाधीनता संग्रामक भव्य अध्याय एहि जिलाक जमीन पर लिखल गेल। नरपतगंज प्रखंडक नाथपुर मे अवधक नवाब स' भावनात्मक लगाओ रखनिहार विद्रोही सैनिक ओ अंग्रेजक बीच लड़ाइ भेल छल। अररिया अनुमंडल मे 1823क बनल व पौंडरक धनगरज तोप एखनो राखल अछि। एकरा फारबिसगंजक संस्थापक ए.जे.फोर्ब्स 1859मे मुर्शीदाबाद स' एतय अनने रहथि। मदनपुर, बसैठी ओ सुन्दरीमठक प्रसिद्ध शिवालय, फारबिसगंज स्थित दादाबाड़ी मन्दिर, सुल्तानपुर इस्टेटक कोठी, सुल्तानी माइक मंदिर, मजार, रानीगंज प्रखंड मे सौरिया राजक अवशेष, बीरनगर बिसहरिया मे बीर सिंहक किलाक अवशेष एवं अन्य आकर्षक पर्यटन स्थलक संभावना छैक। दर्जनों स्थल कें 'ईको टूरिज्म' केन्द्र मे विकसित कयल जा सकैछ। सिमरबनी आजादीक लड़ाइ मे क्रांतिकारी लांकनिक मुख्य अड्डा छल।

महिषाकोल गामक मेहनती महिला अपन आर्थिक स्थिति मे परिवर्तन कय आसपासक गामक हेतु आर्थिक विपन्नता स' त्राणक हेतु अनुकरणीय प्रमाणित कयने छथि। अररिया जिलाक मुख्यालय स' 10 कि.मी. उत्तर परमान ओ ओकर सहायक नदीक बीच मे बसल महिषाकोल एक अत्यन्त पिछड़ल गाम। गाम धरि जयबाक हेतु सड़क नहि। समय-समय पर बाढ़िक आतंक। रोजी-रोटीक खोज मे पुरुष पंजाब ओ दिल्ली। कर्मजीवी महिलाक मुख्य व्यवसाय चूरा-मूढ़ी तैयार करब आ निकटक बाजार मे बेचब। हिनका सभ कें महाजन स' उच्च सूदि दर पर रुपया लेबय परैत छनि। हिनक एहि दुर्दशा पर समाजसेवी, पत्रकार ओ प्रशासनक समन्वित प्रयास भेल। प्रशासन समेकित ग्राम्य विकास कार्यक्रमक अन्तर्गत प्रथम चरण मे चालीसटा निर्धन महिलाक परिवार कें चिन्हित कयलक, आर्थिक सहायता देलक ओ ग्रामीण सूदखोरक चंगुल स' मुक्त कयलक। आर्थिक सुरक्षा स' उत्पन्न आत्म

विश्वास स' एहि गामक निर्धन महिला मे अदम्य आत्मविश्वासक सृजन भेल एवं अपन सामाजिक जरूरतक पूर्तिक हेतु मुखर आवाज उठयबाक प्रेरणा भेटल। ग्रामीण आर्थिक विकासक हेतु 'महिषाकोल माडल' अनुकरणीय अछि।

सुब्रत राय सहारा इंडियाक प्रवर्तक 1948मे एहि जिला मे जन्म लेलनि। 2000टाका, दू कुर्सी, एक टेबुल एक स्कूटर स' एतहि अपन कारोबार शुरु कयलनि। एखन 20,000 करोड़ रुपयाक मालिक भ' गेल छथि। ई एकटा उद्योग लगाय अपन मातृभूमि कें औद्योगिक विकासक पथ पर लय जा सकैत छथि।

1999मे जिला प्रशासन 50 लाख टाकाक लागत स' टूल किट्स वितरण कयलक। मधुमक्खी पालन लेल 63, बढ़ईगिरीक लेल 423, चर्म कलाक लेल 450, बोरिंग मेकेनिक लेल 144, डीजल पम्प मैकेनिक लेल 215, लोहार मिस्त्रीक लेल 425 एवं बांस टोकड़ीक लेल 223 टूल किट्स। एहिना 1988-89 मे मुख्यालक समीप गैयारी गाम मे 100 जरसी गाय देल गेल छल जाहि मे 84 गाय पंजाब स' आयल मुदा मरि गेल। प्रशासनक कहियो काल निन्द टूटैत छैक।

आर्थिक विकासक संग सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं प्रशासकीय दृष्टिकोण स' यातायात साधनक विशेष महत्व छैक। जिला मे सड़क नामक किछु नहि। जेहो छल से टूटि गेल। सरकारक विभिन्न योजना स' सड़कक निर्माण होइछ। प्रधानमंत्री सड़क योजना अन्तर्गत 30 दिसम्बर 2001मे अररिया जिलाक चारि प्रमुख सड़क-पलासी मे बालुगंज स' वाया मालदार (वेकनिया घाट पर पुल सहित) धर्मगंज प्रखंड धरि पक्की सड़क। सिकरी-उफरैल चौक स' तोरा खारदह मे ईट सोलिंग धरि-जोंकी तारण चौक स' वाया मुफ्ती बहावक घर होइत प्रखंडक सीमा धरि पक्की सड़कक निर्माण भेल छैक। सिकटी विधानसभा मे सात जर्जर काठपुलक जगह पक्का आरसीसी पुलक स्वीकृति 3 करोड़ 62 लाख 75 हजार टाका लागत स'। पलासी रोड मे मोहनिया लग लगभग पौने दू करोड़क लागत स' दू पक्का पुल निर्माणाधीन। विधायक कोष ओ सुनिश्चित रोजगार योजनाक अन्तर्गत 19 आरसीसी पुलक निर्माण जाहि मे आधा बनिकय तैयार भ' गेल छैक। एहि मे ढ़ंगरी गामक पुल, बरदाहा स' पश्चिम घाघोधार पुल ओ पलासीक पास डेंगा-चौकक नजदीकक पुल सेहो सम्मिलित अछि। अररिया जिला मे 342 कि.मी. पक्की सड़क ओ 2977 कि.मी. कच्ची सड़क छैक। किछु सड़क मरम्मति मे अछि-

रानीगंज-भरगामा - 19,60,000 लागत स'

अररिया - मदनपुर - 51,80,000 लागत स'

अचरा-घुटना पथ - 12,80,000 लागत स'

हाता चौक - बलचंदा 8,40,000 लागत स'

भरगामा - जयनगर 14,00,000 लागत स'

लक्ष्मीपुर - फुलकाहा पथ 16,80,000 लागत स'

निम्न सड़क जर्जर अछि, मरम्मतिक नामोनिशान नहि

बथनाहा - जोगबनी; अररिया-कुर्साकांटा-कुआड़ी,

वैरगाड़ी- डुमरिया, जोकीहाट-कलियागंज।

केन्द्रीय सड़क निधि (सी.आर.एफ.)क, जे डीजल ओ पेट्रोल पर एक रुपया अधिशेष स' गठित अछि, अन्तर्गत अररिया-बहादुरपुर-ठाकुरगंज रोडक जीर्णोद्धार होयत। फारबिसगंज-जोगबनी सड़कक जीर्णोद्धार 3 करोड़ रुपयाक लागत स' भ' रहल छैक। 22 जनवरी 2003कें एहि मार्गक मात्र 6 किलोमीटर सड़क जर्जर रहला स' सुधारक हेतु केन्द्रीय सड़क निधि स' धनादेशक स्वीकृत कयल गेल छै। मात्र 12 कि.मी. सड़क जयबा मे एखन एक घंटा स' ऊपर समय लागि जाइछ। एहि जिला कें सीमावर्ती हेबाक कारणें प्रत्येक सड़कक आधुनिक ढंग स' सरकार कें निर्माण करबाक चाहियैक। एहि स' आर्थिक विकास मे सेहो सहायता भेटत। एहि जिलाक काठक पुलक बदला आरसीसी पुलक निर्माणक लेल पथ निर्माण विभागक बजट मे प्रावधान छैक, किन्तु बदलल नहि गेल छैक।

रेल यातायातक विकासक हेतु भारत सरकार कृतसंकल्प अछि। भारतक सीमा होयबाक कारणें एकर महत्व बढ़ि जाइछ। जोगबनी स' राधिकापुर (बंगलादेश सीमा) छोटी लाइनक गाड़ी कें बड़ी लाइन मे परिवर्तनक प्रयास अछि। 6 नवम्बर 2001मे जोगबनी-कटिहार लाइनक आमान परिवर्त्तन 181.45 करोड़ टाकाक लागत स' शुरू कय देल गेल छैक। एहि स' नेपालक संग व्यापार वृद्धि होयत। आमान परिवर्तन काज राधिकापुर धरि बढ़ाओल जायत ओ कुल लागत 407 करोड़ टाका होयत। कोलकाता ओ हल्दीया बन्दरगाह अपन महत्व कम कय देने अछि। सड़क यातायात द्वारा मुख्य आयात-निर्यात व्यापार नेपालक संग चलि रहल छैक। आमान परिवर्तन स' विदेश व्यापार विकसित होयत। 56कि.मी. लम्बा बथनाहा-भीमनगर-चरकरघाटी (नोपाल) रेलमार्ग चालू करबाक प्रयास भ' रहल छैक। स्वीकृति नहि भेटल अछि।

भारत-नेपालक सीमावर्ती क्षेत्र मे-दुनू देशक बीच अनधिकृत भूमि भारत-नेपाल सरकारक हेतु पैघ समस्या भ' गेल छैक। जनवरी 2002मे अररिया जिलाक पदाधिकारी एवं नेपालक मोरंग ओ सुनसरी जिलाक अधिकारी विराटनगर मे एहि जमीन पर बसल लोकक निष्कासनक योजना बनौलनि। 132कि.मी. भूमि पर गलत ढंग स' बसल लोकक निष्कासन सोझ नहि छैक। वेला बसमतिया गाम स' किशनगंज जिलाक सिक्ती गाम धरि जघन्य अपराधी लोकनि पक्का मकान धरि बना लेने अछि। भारत ओ नेपाल सरकारक पदाधिकारी लोकनि एहन अवैध भूमि कब्जा कयनिहार कें निकाल-बाहर करबाक हेतु प्रयत्नशील छथि।

नेपाल-चीनक गतिविधि मे विकास भेल छैक। नेपालक विकास मे बढ़ोतरी भेल छैक। जाहि स' भारतीय सीमा मे चीनी गतिविधि भारतक हेतु सिरदर्द साबित भ' सकैछ। भारत-नेपाल सीमान्त क्षेत्र बीरगंज ओ रानीबाजार (विराटनगर) जांच चौकी लग ड्रायपोर्टक निर्माण। ई निर्माण नेपालक वाणिज्य मंत्रालयक द्वारा 'मल्टी मोडल ट्रान्जिट हैंड ट्रेड फैसीलिटी प्रोजेक्ट'क अधीन भेल छैक। एकर अंतर्गत भारतीय क्षेत्रक सीमा जोगबनी स' सटले रानीबाजार(नेपाल) जांच चौकीक बगल मे मानव रहित क्षेत्र स' सटल 3700 वर्ग मीटर भूमि पर पचास कैन्टनरक भण्डारण क्षमताक संग लगभग 50 ट्रकक पार्किंग लेल ड्रायपोर्ट भवनक आलीशान पक्का निर्माण भेल छैक। 1970मे नेपाल-चीन सीमा संधि भेल छल। अक्टूबर 1988 मे नेपाल सरकार चाइनावाटर एण्ड इलेक्ट्रिक कारपोरेशन कें नहर ओ सड़क सफाइ ओ मरम्मतिक निविदा स्वीकृत कयलक। हिमालय कें चीरी कय कोठारी-काठमांडू राजमार्गक निर्माण स' चीन-नेपाल धरि सीधा सड़क मार्ग स्थापित भ' गेल छैक। तिब्बतक राजधानी लाहसा स' कोठारी-काठमांडू राजमार्गक निर्माण स' चीनक नेपाल मे सीधा सड़क स' आवागमनक मार्ग प्रशस्त ओ नेपालक विभिन्न क्षेत्र स' भारत-नेपाल सीमावर्ती क्षेत्र मे विकास-व्यवसाय-औद्योगिक गतिविधि भारतक एहि सीमा पर चीनक कारण सुरक्षाक दृष्टि स' महत्वपूर्ण भ' गेल छैक। कारण तिब्बत आब पूर्णत: चीनक अधिकार मे छैक।

केन्द्र सरकार देशक अत्यन्त पिछड़ल ओ निर्धनतम जिलाक पहचानक हेतु इ.ए.एस. सरमाक अध्यक्षता मे एकटा कमेटी गठन कयने छल। कमेटी 1977 मे प्रतिवेदन देलक जाहि मे अन्य जिलाक संग अररिया जिला निर्धनतम श्रेणी मे छल। पिछड़ापन दूर करबाक हेतु आधारभूत सुविधाक अनुशंसा छल। नव संरचनाक सृजन ओ प्राचीन संरचनाक रखरखाब पर विशेष बल। 2001-2002 मे एहि योजना पर कोनो व्यय नहि भेल छैक।

■

किसनगंज

नेपाल, बांगलादेश ओ पश्चिम बंगालक सीमा स' घेरायल पूर्णिया जिलाक प्राचीन अनुमंडल मइ 1981 मे जिला घोषित कयल गेल, मुदा 22 वर्षक जवान भ' गेलाक बादो प्रशासनिक भवन, जेल आ अदालत आदिक निर्माण राज्य सरकारक संचिका मे सबल भ' रहल अछि। बिहार विधान परिषद मे 9 जुलाइ 1996 मे राज्य सरकार आश्वासन देने छल जे वर्ष 1999 धरि आधारभूत ढांचा ओ अनुमंडल बनि जायत। संभव नहि भ' सकल। एहि जिलाक उत्तर मे तराई नेपाल, पूब मे पश्चिम बंगाल, दक्षिण मे पूर्णिया जिला ओ पश्चिम बंगाल एवं पश्चिम मे अररिया जिला अछि। क्षेत्रफल 1884 वर्ग किलोमीटर। दिघलबैंक (16)पंचायत, ठाकुरगंज (22), पोठिया (22), कोचाधामन (24), बहादुरगंज (20), टेढ़ा गाछ (12) ओ किशनगंजमे (10) प्रखंड। 7टा प्रखंड मे कुल 26 पंचायत। पूर्णिया प्रमण्डलक एकटा जिला तथा किसनगंज मात्र एक अनुमंडल। 1956 मे राज्य पुनर्गठन आयोगक सिफारिसक आधार पर किशनगंजक 406 गाम आ इसलामपुरक 256 गाम पश्चिम बंगाल के दय गेल गेल। भारत ओ नेपालक बीच किसनगंज स' लागल सीमा असुरक्षित छल। बाउंडरी पिलर्सक काज शीघ्रे पूरा कयल जा रहल अछि।

2001क जनगणना मे अहू जिला मे जनसंख्या मे वृद्धि भेल। 1991 मे 9,84,107 कुल जनसंख्या छल जे 2001 मे 12,94,063 बढ़ि कय भ' गेल। एहि मे पुरुषक संख्या 6,66,910 ओ महिलाक संख्या 6,27,153। 31.50 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि 1991क जनगणनाक

तुलना मे। कुल साक्षर 31.02 प्रतिशत, जाहि मे पुरुष साक्षरता 42.80 प्रतिशत ओ महिला साक्षरता मात्र 18.49 प्रतिशत। एहि जिला मे जनाधिक्यक समस्या महत्वपूर्ण अछि। अधिकांश व्यक्ति आधा भुखायल, आधा नांगट ओ अस्वस्थ रहैत अछि। द्रुत गति स' बढ़ैत जनसंख्या आर्थिक विकासक मार्ग मे पैघ बाधक। आजुक युग मे प्रति लाख जनसंख्या पर टेलीफोन ओ टेलीग्राफ नदारत।

महानन्दा एहि जिलाक मुख्य नदी अछि। नदीक उद्गम पश्चिम बंगालक दार्जिलिंग जिलाक करसियांगक 6 कि.मी. उत्तर हिमालय पर्वत मालाक चिमलेकक पास स' 2062 मी.क उंचाई स' गंगा धरि अपन 376 कि.मी. यात्रा करैत छथि। महानन्दाक संबंध मे कहल जाइछ जे ई आर्यक प्रभावक अन्तिम पूर्वी छोर थिक। नदीक चंचल होयब ओ कछेड़ कें तोरि बहब आदिकाल स' घटि रहल अछि। 1937 मे बहुचर्चित पटनाक बाढ़ि सम्मेलन मे महानन्दाक बारे मे कोनो चर्च नहि भेल। पूर्णिया गजेटियरक अनुसार 1909-10 तथा 1917-18 मे किशनगंज इलाकाक पाटक फसिल कें महानन्दा अपन कछेड़ कें तोरि नुकसान पहुंचेलक। 1955 मे महानन्दाक बाढ़िक प्रभाव बारसोई, ठाकुरगंज, किसनगंज तथा कटिहार धरि सीमित छल। एहि वर्षक बाढ़िक प्रकोप स' फसिल ओ घर-दुआरि नष्ट भेल। पुरना पूर्णिया जिलाक 1630 गाम ओ 7,91,026 आबादी पीड़ित भेल। 1963 धरि महानन्दा पर तटबंधक कोनो चर्चा नहि छल। पुन: 1968 मे भीषण बाढ़ि आयल। जमीनक हदबन्दी ओ महानन्दा तटबंध लेल सत्याग्रह आन्दोलन भेल। 1972 मे महानन्दा पर तटबंध बनल। पश्चिम बंगाल सरकार मालदा जिलाक महानन्दा स' पीड़ित भाग मे तटबंध बना चुकल छल। 1992 धरि महानन्दाक बामा ओ दहिना तटबंध बनिकय तैयार भेल ओ खर्च 5247.94 लाख रुपया भेल। महानन्दाक बाढ़ि स' सबस' बेसी प्रभावित कटिहार जिला होइछ। किसनगंज जिला मे बाढ़ि स' क्षति कम होइछ। तटबंध ओ नहरि स' एहि जिला कें लाभ भेल छैक। किन्तु एहि वर्ष 12 जुलाइ 2003 क' महानन्दाक तेज कटाव स' पूर्णिया-किसनगंजक बीच करीब एक कि.मी. धरि राष्ट्रीय राजमार्ग 31 कें बहि गेला स' उत्तरी अंचलक पूर्वोत्तर भाग स' सम्पर्क भंग भ' गेल। सैकड़ो एकड़ मे लागल धान ओ पाटक फसिल बर्बाद भ' गेल। महानन्दा, डौक, मेकी नं-एक ओ दू कनकई समेत सब नदीक जलस्तर मे वृद्धि भेल। फलस्वरुप पोठिया, दिघलबैंक, ठाकुरगंज, टेढ़ागाछ एवं कोचाधामन प्रखंडक स्थिति गंभीर छल।

किसनगंज जिला मे वर्षा अधिक होइछ। 1500 मि.मी. स' अधिक वर्षा। एतय अनियमित, अनिश्चित, अविश्वसनीय वर्षा होइत अछि। आर्द्रा ओ हथिया नक्षत्र मे वर्षा सघन होइछ, तें सिंचाइक आवश्यकता एहि जिला मे कम छैक।

कृषि प्रधान जिला मे माटि अतिमहत्त्वपूर्ण संसाधन। बाढ़ि ओ जलाप्लावनक कारण वर्षा ऋतु मे माटि अत्यधिक नम पाओल जाइछ। जलीय प्रक्रियाक कारण नदीक कछेड़ मे वाहित बालू ओ दोआब क्षेत्र मे सूक्ष्म गाद तथा मृतिकाक निक्षेप पाओल जाइछ। मृतिका मे जलसंचार अवरुद्ध रहबाक कारण माटि मे हानिकारक क्षारक निक्षेप पाओल जाइछ। जाहि स' माटि कमजोर भ' जाइछ। एहि जिला मे क्षारक मात्रा नगण्य अछि।

ई जिला प्रधानतः कृषि क्षेत्र अछि। एतय प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। कृषि भूमि मे फसिल उपजाओल जाइछ। कृष क्षेत्रक बाहर उद्यान, बाग-बगीचा, परती भूमि, रेलवे लाइनक कछेड़, गैर कृषि भूमि आओर बंजर भूमि पर ताड़, खजूर, बबूर, महुआ, सिमड़, तेतरि, आम, नीम, बड़, पीपर, पाकड़ि, बांस, मूज आदि पाओल जाइछ। ताड़ ओ खजूर कें छोरि शेष सब पतझड़ प्रकारक। आजुक मानवक आर्थिक उन्नति प्राकृतिक संसाधनक पर्याप्तता ओ निश्चित उपयोग पर निर्भर करैछ। उक्त संसाधनक विकास मे मनुष्य सर्वोपरि शक्ति आ यैह एकर उपभोक्ता। एकरा बिना कोनो संसाधन अनजान, अनुपयुक्त ओ अविकसित रहि जायत। चरागाह जंगलक सीमान्त ओ नदीक कछेड़ मे पाओल जाइछ। किसनगंज जिला मे स्थायी चरागाह ओ अन्य गोचर भूमि अछि। एहि जिला मे 36.40 कि.मी. मे वन क्षेत्र अछि। पर्यावरण संतुलनक हेतु एतय 33प्रतिशत क्षेत्र मे वन होयबाक चाही, जखन कि मात्र 2 प्रतिशत सेहो नहि अछि।

एहि जिला मे कृषि विकास अनिवार्य ओ निर्विवाद अछि। कृषि अर्थतंत्रक धूरी ओ आर्थिक विकास कृषिक विकासक बिना असंभव। एतय कृषि तथा अन्य गतिविधि मे 90.17 प्रतिशत लोक लागल छथि जखन कि बिहार राज्य मे 81.01 प्रतिशत ओ भारतवर्ष मे मात्र 66.92 प्रतिशत लोक। धान, गहूम, मकई ओ पटसन प्रमुख फसिल अछि। भदै धान (सितम्बर-अक्टूबर मे पाकयबला) होइछ। प्रधान अगहनी फसिल (नवम्बर-दिसम्बर मे काटयबला) धान अछि। ई धान प्रति कट्ठा भदै स' अढाइ गुना बेसी होइछ। जूट दोसर फसिल अछि। गहूम आ मकई सेहो आब उपजाओल जाइछ। जूट नगदी फसिल अछि। हरित क्रांतिक सर्वाधिक प्रभाव गहूमक खेती पर परल छैक। कृषि मजदूरक समस्या जटिल भ' गेल छैक। भूमिहीन कें जमीन नहि ओ भूस्वामी ठीक ढंग स' खेती नहि करताह, तें कृषि क्षेत्र मे उपस्थित अछि उग्रवाद। एहि जिला मे चाहक खेती जोर पकरलक अछि। नारियलक खेती कें विकसित कयल जा रहल अछि। प्रति गाछ औसत उत्पादन राष्ट्रीय 34. 6 अछि ओ एहि जिला मे औसत 36क आसपास।

1956 मे जमीन्दारी उन्मूलन भेल आ भूमि हदबन्दी कानून बनल, किन्तु भूमिहीन कें जमीन सरकार नहि दिया सकल। द्वितीय पंचवर्षीय

योजना मे मध्यस्थ किरायेदारक समाप्ति, काश्तकारी व्यवस्था मे सुधार, भूमिक उच्चतम सीमाक निर्धारण, चकबन्दी ओ कृषि व्यवस्थाक पुनर्गठन कयल गेल। अधिकतम जोत जमीन स' बेसी जमीन सरकारक अधीन आयल मुदा एकरा भूमिहीनक बीच नहि बांटल गेल। भूदान स' प्राप्त जमीनक खतियान राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग मंगलक। कतेक जमीन दान मे भेटल, किनका स' प्राप्त भेल, किनका वितरित कयल गेल नाम, पता, रकबाक संग। किसनगंज जिला मे भूदान स' 15634.92 एकड़ भूमि प्राप्त भेल ओ दिसम्बर 2002 धरि मात्र 6810.15 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच बांटल गेल। जनवरी 2003 मे 1000 एकड़ भूमि जे भूमिहीन, दलित ओ आदिवासीक बीच वितरणक हेतु ठाकुरगंज ओ पोठिया प्रखंड मे छल चाह उत्पादक द्वारा हरपि लेल गेल। आजुक अर्थप्रधान युगक आधार भेल उद्योग। उद्योगीकरण ओ आर्थिक विकास उच्च जीवन स्तरक कुंजी अछि। एहि स' प्राकृतिक संसाधनक अधिकाधिक लाभप्रद उपयोग होइछ। उद्योगीकरण कें राष्ट्रक भौतिक उन्नतिक पर्याय मानल गेल अछि। एहि स्थिति मे एहि जिला मे संगठित उद्योग एकोटा नहि अछि।

एहि जिला मे लघु औद्योगिक इकाइक, जकर निबंधन राज्य सरकारक अधीन अछि, कुल संख्या 5761 अछि। एहि मे 1995-96 मे 121, 1996-97 मे 125, 1997-98 मे 122, 1998-99 मे 99 एवं 1999-2000 मे 109 इकाइक निबंधन भेल छल। एहि मे चालू या रुग्ण इकाइक अद्यतन स्थिति अनुपलब्ध अछि। जूटक उत्पादन मे ई जिला अग्रणी अछि। बिहार मे मात्र मिथिलांचले मे जूट उपजाओल जाइछ। मात्र एहि जिलाक उत्पादन 86 प्रतिशत छैक, किन्तु आधुनिक जूट मिल नहि बनल अछि। जून 1975 मे 100 एकड़ भूमि राज्य सरकार एहि जिला मे एक जूट मिलक निर्माणक हेतु अधीनस्थ कयलक। मुदा एखन धरि जूट मिल नहि बनल। मात्र सर्वेक्षण आ प्रोजेक्ट बनल। बाहरक जूट कम्पनी एवं जूटक करोबारी अपन लाभक हेतु एकर स्थापना मे अड़चन लगबैत अछि। फरबरी 2003 मे जूटक मूल्य 840 रुपया प्रति क्विंटल निर्धारित भेल, किन्तु जूट उत्पादक किसान कें 700 रुपया प्रति क्विंटल स' बेसी मूल्य नहि प्राप्त भेलैक। एहन, कृत्रिम स्थिति बनाओल जा रहल अछि जे 600 रुपया क्विंटल स' बेसी मूल्य किसान कें उपलब्ध नहि भ' सकतनि। एहि मे सट्टा कारोबार होइछ। जूट निगम मात्र दूटा क्रय केन्द्र रखने अछि, मुदा बिचौलिया हावी अछि। भारतीय पाट निगमक सालमारी क्रय केन्द्र पर जूटक भंडारणक समस्या सितम्बर 2003 मे गंभीर भ' गेल छल। गोदामक अनुपलब्धता एवं अत्यधिक किरायाक मांगक कारणें समस्या जटिल छल। गोदामक व्यवस्था परमावश्यक। 30 जून 2003 कें किसनगंज मे राष्ट्रीय पटसन विविधीकरण केन्द्र संभावना एवं योजना कार्यशालाक उद्घाटन

पर विविध घरेलू उपयोग पर चर्चा एवं कार्यान्वयनक कयल गेल। पाटक विविध घरेलू उपयोग पर चर्चा एवं कार्यान्वयनक समुचित प्रयास पर जोर देल गेल। 28 अगस्त 2003 कें किसनगंजक सिमलबाड़ी मे 50 टन क्षमताक निजी क्षेत्र (शारदा ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज) मे एक जूट मिलक शिलान्यास कयल गेल, जाहि मे 5000 लोक कें काज भेटत। ठाकुरगंज मे शीघ्रे दोसर जूट मिलक संभावना छैक। यैह स्थिति चाहक उत्पादनक अछि। बिहार मे चाहक उत्पादन नहि होइत छल। 1992क बाद किसनगंज जिला मे चाहक उत्पादन शुरू भेल। 1998 मे लगभग 6000 एकड़ स' बेसी भूमि पर चाहक खेती भेल। सितम्बर 2003 मे 10000 एकड़ भूमि पर चाहक खेती भेल छल। एतयक चाहक क्वालिटी दार्जिलिंगक चाहक समकक्ष अछि। 10 फरबरी 1999 कें बिहार सरकार चाहक उत्पादन कें उद्योग श्रेणी मे मानि लेलक। एहि वर्ष मार्च 2003 मे 17टा चाह उत्पादक कें एक करोड़ रुपया चाहक सहायता वितरित कयल गेल। राज्य सरकार जमीन नहि देलक तें हेतु कारगो कम्पलेक्सक निर्माण नहि भ' सकल छैक। एहि जिलाक पोठिया, ठाकुरगंज, किसनगंज, बहादुरगंज ओ दिघलबैंक कें चाह उत्पादकक अंचल घोषित कयने अछि। टी प्रोसेसिंग यूनिट एकोटा नहि अछि जखन कि एक करोड़ किलोग्राम स' बेसी ग्रीन चाह एतय एवं दू करोड़ किलोग्राम निकट भविष्य मे उपजाओल जायत। कलकत्ताक व्यापारी औने-पौने दाम मे लय लैत अछि। टी बोर्ड कलकत्ता सभ तरहक साहाय्य मुहैया नहि कयने अछि। बिहार सरकार लैंड सीलिंग ऐक्टक प्रावधान चाह खेतीकें नहि देलक अछि। बिहार इन्डस्ट्रीज कमीशन (डा. इरानी कमीशन) अपन प्रतिवेदन मे अनेक सुझाव एहि उद्योगक विकास लेल प्रस्तुत कयलक, मुदा राज्य सरकार एखन धरि किछु नहि कयने अछि। नवम्बर 2002 मे राज्य सरकारक उद्योग मंत्री घोषणा कयलनि जे राज्य सरकार पांचटा टी प्रोसेसिंग इकाइ किसनगंज मे स्थापित करत। 15 प्रतिशत सबसिडी देल जायत जकर उच्चतम सीमा रहत 20 लाख रुपया प्रति यूनिट। प्रत्येक इकाइ कें एक वर्ष धरि बिक्री कर मे छूट रहत। प्रत्येक इकाइक उत्पादन लक्ष्य 2 लाख किलोग्राम निर्धारित कयल गेल छैक। प्रोसेसिंग इकाइ किसनगंज मे नहि छल। सब माल कलकत्ता जाइत अछि प्रोसेसिंग हेतु। 2002 मे एक प्रोसेसिंग इकाइ बनल तथा चारिटा इकाइ निर्माणाधीन अछि।

केन्द्र सरकार अत्यन्त पिछड़ल ओ निर्धनतम जिलाक पहचान हेतु इ.ए.एस. सरमाक अध्यक्षता मे एक कमेटीक गठन कयलक। 1997 मे कमेटी अपन प्रतिवेदन प्रस्तुत कयलक। किसनगंज कें निर्धनतम जिला घोषित कयलक। आधारभूत सुविधा बढ़यबाक अनुशंसा कयलक। नव संरचनाक सृजन ओ पुरानक रखरखावक सुझाव देलक मुदा, कोनो काज नहि भेल। गरीबी उन्मूलन स' जुड़ल कार्यक्रम 20 सूत्रीक जून 2002 मे मूल्यांकन भेल एवं ई जिला 40 फीसदी स' कम अंक प्राप्त कयलक।

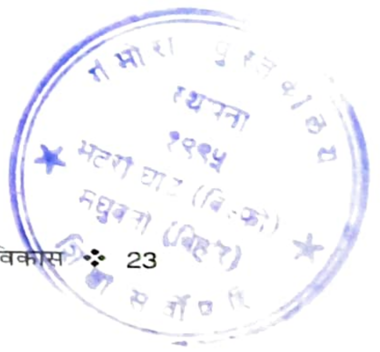
सीमावर्ती जिला अछि, किन्तु यातायात व्यवस्था चौपट। सड़क बनल छल मुदा ध्वस्त भ' गेल। उदाहरणस्वरूप ठाकुरगंज-पौआखाली 22 कि.मी. जर्जर सड़क। ठाकुरगंज-गलगलिया-14 कि.मी. सड़क ध्वस्त। ठाकुरगंज-किसनगंज सड़क अपन स्थिति पर नोर बहबैछ। एन. एच. 31क फोर लेनिंग एवं किसनगंज शहर मे महत्वाकांक्षी चिरप्रतीक्षित फ्लाई ओवरक निर्माण भेल। सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजनाक अन्तर्गत टेढ़ा गाछ मे लोधाबाड़ी पुल, जिकटी बरदाहा सड़क, पलासी मे रिक्की धारपुल, अमौर मोगड़ा धार मे ब्रिज, जोकी डोराकुंड स्क्रूपाइल ब्रिज, धनतोला गड़वन डांगा सड़क, कोचाधामन मे अरघनीया ओ खखुआ पुल, ठाकुरगंज-रूईधासा सड़क मे काज भेल अछि। सड़क यातायातक स्थिति अत्यन्त खराब। केन्द्रीय सड़क निधि स' ठाकुरगंज-बहादुरपुर-अररिया धरि सड़कक जीर्णोद्धार प्रारम्भ भेल छैक। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना (एक हजार स' ऊपर आबादीबला गाम कें मुख्य सड़क स' जोड़बाक) काज प्रगति नहि कय रहल अछि। किसनगंज-बहादुरगंज, किसनगंज-ठाकुरगंज वाया तैयाबपुर, किसनगंज-दिनाजपुर-नेपाल ओ बांग्लादेश सीमा मे काठक पुलक कारण यातायात बाधित होइत छैक।

रेल यातायात विकसित नहि कयल गेल अछि। सरकारक समक्ष नव रेल निर्माणक योजना नहि अछि। सम्प्रति खगड़ा किसनगंज मे रेल ओवर ब्रिज, किसनगंज रेलवे स्टेशन कें मॉडल स्टेशनक दर्जा, किसनगंज रेलवे स्टेशन पर कैपिटल एक्सप्रेसक ठहराव आदि काज भेल अछि। आब राजधानी एक्सप्रेस सेहो रुकत।

नेपाल-बांग्लादेश-पश्चिम बंगालक सीमा स' घेरायल सामरिक महत्वक कारण खगड़ा मे साढ़े तीन करोड़ रुपयाक लागत स' हवाई अड्डाक निर्माण आ 50 सीटवला व्यावसायिक विमानक आयब-जायब स्थिर भेल अछि।

पर्यटन उद्योगक विकास हेतु किसनगंज स' 40 कि.मी.क दूरी पर कोचाधामन प्रखंडक शीतलनगरक 55 एकड़ झील कें विकसित कयल जा सकैछ। ई ऐतिहासिक अंधसुरक निकट अछि। दुर्लभ प्रजातिक प्रवासी चिड़इ निवास करैत अछि। राजहंस सेहो रहैत अछि। दिसम्बर 2003 मे राज्य सरकारक दिस स' सामान्य प्रयास भेल छल। व्यावसायिक ढंगक प्रयास एवं विकास अपेक्षित।

■



कटिहार

कटिहार पूर्णिया प्रमण्डलक एकटा महत्त्वपूर्ण जिला अछि। ई पहिने पूर्णिया जिलाक एकरा अनुमण्डल छल। आब स्वतंत्र एकटा जिला। उत्तर मे पूर्णिया, पूब मे पश्चिम बंगाल, पश्चिम मे पूर्णिया-भागलपुर आ दक्षिणमे भागलपुर-साहेबगंज जिला। एहि जिलाक कुल क्षेत्रफल 3057 वर्ग कि. मि.। 21°58'10" ओ 27°31'15" उत्तरी अक्षांश एवं 83°19'50" ओ 88°17'40" देशान्तरक बीच विस्तृत अछि ई जिला। तीन अनुमंडल-कटिहार, बारसोई एवं मनिहारी तथा 238 पंचायत आ 16 प्रखंड। बलरामपुर- 13, कटिहार-8, कोढ़ा-23, फलका-13, बरारी-22, अदमाबाद-14, मनिहारी-14, प्राणपुर-12, आजमनगर-28, बारसोई-29, कदबा-30, हसनगंज-5, महेशपुर-6, मनसाही-7, समेली-8 एवं कुरसेला मे 6 पंचायत। एहि जिला मे 1657 पोखरि अछि जाहि मे 1445 निजी पोखरि।

वर्ष 2001क जनगणना मे जिलाक जनसंख्या 23, 89, 533 भ' गेल जे 1991 मे 18, 25, 380 छल। पुरुषक संख्या 12,44,943 एवं महिलाक संख्या 11, 44, 590। राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि 21.34 प्रतिशतक अनुपात मे बिहार मे वृद्धि 28.43 प्रतिशत एवं एहि जिलाक जनसंख्या 1991क जनगणनाक अनुसार 59.48 प्रतिशत वृद्धि भेल। प्रति हजार पुरुष पर महिलाक संख्या 919। जनसंख्याक घनत्व एहि जिला मे 782, बिहार मे 880 एवं सम्पूर्ण देशक मात्र 324 अछि। एहि जिलाक आबादी घनगर छैक। जिला मे कुल साक्षरता 35.29।

कुल पुरुष साक्षरता 45.51 एवं महिला साक्षरता मात्र 24.03 प्रतिशत। एतय जनसंख्याक वितरण भौगोलिक पर्यावरण ओ उपलब्ध संसाधन द्वारा नियंत्रित होइछ। कोनो क्षेत्र मे निवास करयबला मनुष्यक उपलब्धता, उत्पादक संसाधनक उपलब्धता, उद्योग ओ आर्थिक विकासक संभावना, पर्यावरण, यातायात एवं संसाधनक मनुष्य द्वारा उपयोग ओ संयोजन स्थिति पर निर्भर करैछ। श्रम शक्तिक उपलब्धता तखनहि उपयोगी जखन कि पूर्ण रोजगार उपलब्ध हो, नहि त निर्धनता।

कोसी, गंगा ओ महानन्दा स' एहि जिलाक भूमि पवित्र भेल अछि। पाण्डव अपन अज्ञातवासक क्रम मे एहि अंचल मे आयल छलाह। माघी पूर्णिमा दिन महानन्दाक प्रति श्रद्धा व्यक्त करबाक हेतु कटिहार जिलाक दुर्गापुर ओ कल्याणी मे मेलाक आयोजन होइछ। कनकईक संगमक बाद महानन्दा बरही-गुवाहाटी राष्ट्रीय राजमार्ग 31 कें बाघझोर लग पार कय बागडोब तक अबैछ जतय एकर धार दू भाग मे बंटि जाइछ। बागडोब मे दक्षिण दिस सोझे बहयबाली धारक झौआ शाखा आगू जा कय पनार नदी मे मिल जाइछ। यैह शाखा आगू चलिकय कटिहार-बारसोई रेल लाइन कें झौआ लग तथा कटिहार-मालदा रेल लाइन कें लामाक लग पार करैछ। महानन्दाक झौआ शाखा स' एक अन्य सहायक नदी घसिया लाभाक नीचा आबि कय मिल जाइछ। एतहि स' महानन्दाक झौआ शाखा पश्चिम बंगालक मालदा जिला मे प्रवेश कय जाइछ ओ सुरभारा लग गंगा नदी स' संगम करैछ। बागडोब पर महानन्दाक दोसर शाखा, जे दक्षिण पूब दिशा मे बहैछ, कटिहार-बारसोई रेल लाइन कें बारसोई लग पार करैछ। बारसोईक नीचा धार दू भाग मे विभक्त होइछ। पुनः सुबर्नपुरक निकट मुख्य धार मे मिल जाइछ जे संयुक्त धार बांग्लादेश मे गोदागिरी घाटक निकट गंगा मे मिल जाइछ। महानन्दाक निचला हिस्सा मे जलजमावक कारणें कटिहार जिला पानि मे डूबि जाइछ। कटिहारक एहि दुर्गति मे मात्र महानन्दा नहि कारी कोसी तथा गंगा नदीक यथेष्ट योगदान रहैछ।

कोसीक पानि एहि जिलाक इंच-इंच भूमि कें पटा दैत अछि। बाढ़िक इतिहास प्राचीन अछि। 1980 मे दरारि कारी कोसीक कटिहार-मनिहारी-कांटाकोश रेलवे बांध मे परल। 1981 मे चांदपुर गाम लग महानन्दाक पश्चिमी तटबंध टूटल जाहि स' कटिहार शहर पर खतरा उपस्थित भेल छल। 2003क पानि कदवा, प्राणपुर ओ आजमनगर प्रखंडक 43 गाम कें प्रभावित कयलक। 1982 मे गंगा नदी पर बनल कुरसेला-जौनियां-बरण्डी तटबंध 9 सितम्बर कें मेघली गाम लग टूटि गेल ओ दर्जनों गाम बाढ़िक चपेट मे आबि गेल। वर्ष 1984 मे गंगा नदीक उत्तरी

छोर पर बनल तटबंध 8 अगस्त कें चौकिया पहाड़पुर लग टूटल जाहि स' अमदाबाद, प्राणपुर, मनिहारी तथा कटिहार प्रखंडक कुल पांच लाख लोक बाढ़ि स' प्रभावित भ' गेलाह। कटिहार शहर कें डूबि जयबाक खतरा उपस्थित छल। सिकटियाक आसपासक लोक कें गाम छोरि सुरक्षित स्थान पर जयबाक आदेश प्रशासन देलक। झौआ रेल पुल पर सेहो खतरा छल। 1985 मे महानन्दा तटबंध पर तीन जगह कटाव भेल। सिकटिया, धबौल ओ गोविन्दपुर। बाढ़िक लीला अपरम्पार अछि एवं एहि जिलाक आबादी एकरा झेल रहल अछि। 1993 मे बाढ़ि स' 5 प्रखंड, 38 पंचायत, 83 गाम, 1.62 लाख जनसंख्या ओ 0.17 लाख हेक्टर क्षेत्रफल बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त भेल छल। (राहत ओ पुनर्वास विभाग, बिहार सरकारक वार्षिक रिपोर्टक आधार पर)। वर्ष 2002 मे एहि जिलाक 91 पंचायत पूर्णरूपेण तथा 24 पंचायत आंशिक रूप स' बाढ़ि स' ग्रसित छल। वर्ष 2003 मे प्रलयकारी बाढ़ि स' जन-जीवन अस्त-व्यस्त छल। 10 जुलाइ 2003 कें कटिहार-बारसोई छोटी लाइन (सोनाली झौआ रेल लाइनक दुनू छोर) बाढ़िक पानि मे टूटि गेल छल। ट्रेनक इंजन ओ डिब्बा धसि गेल। दर्जन स' बेसी लोक घायल भेल।

महानन्दा बाढ़ि परियोजनाक अंतर्गत दूटा तटबंध-बामा ओ दहिना-बनल। कुल खर्च बामा मे 1189.20 लाख रुपया ओ दहिना मे 2473.98 लाख रुपया। 1987 मे कटिहार जिलाक 1454 गाम प्रभावित होइत छल से घटि कय 83 गाम। 2.44 लाख हेक्टेयर भूमि बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त होइत से 0.72 लाख हेक्टेयर। 1.3 लाख हेक्टेयर भूमिक फसिल क्षतिग्रस्त होइत छल जे 1993 मे 0.17 लाख हेक्टेयर। बाढ़ि स' प्रभावित जनसंख्या 15.6 लाख छल जे 1.62 लाख बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त होइत छल 1,65,654 घर जे आब घटि कय 1992 मे शून्य छल ओ 1993 मे 906 घर। (सब आंकड़ा 1987 आ 1993 वर्षक अछि)। महानन्दा परियोजना स' कटिहार जिला के यैह लाभ भेल छैक। महानन्दा बाढ़ि नियंत्रण परियोजना मे रिहाइशक लेल 188.69 हेक्टेयर भूमिक अधिग्रहणक सूचना जारी भेल ओ 173.72 हेक्टेयर भूमि अधिग्रहण कय कें बांटल गेल। बाद मे आजमनगर प्रखंडक गोलिया नन्देसरी गामक 156 परिवार कें बसयबाक लेल लालगंज, तेघरा, तथा इंगलिसिया गामक जमीनक अधिग्रहण 9,82,000 रुपयाक लागत पर कयल गेल।

कोसी, महानन्दा ओ गंगा नदी द्वारा निर्मित भूमि समतल अछि। ई जिला समशीतोष्ण कटिबन्ध मे स्थित रहबाक कारणें जलवायु उपोष्ण एवं आर्द्र। समुद्र तल स' सामान उंचाइ 75 मी.स' कम अछि। वर्षा अधिक

होइछ। गंगा डेल्टाक समीप रहबाक कारण काल बैशाखी स' मानसून स' पूर्व वर्षा होइछ। मइ मास सर्वाधिक गर्म एवं शुष्क मास। मध्य जून स' मध्य अक्टूबर धरि वर्षा ऋतु। दक्षिण-पश्चिम मानसून स' वर्षा होइछ। उत्तर पूब कटिहार मे 1500 मि.मी. स' अधिक वर्षा होइछ। एहि जिलाक दोआब क्षेत्र मे होबयवला वर्षाक जल नदीक मार्ग स' बाहित नहि भ' कय सोझे गंगा मे खसय वाली वा नदीक निचला भाग मे मिलयबला छोट-छोट नालाक द्वारा प्रवाहित होइछ। महानन्दा नदीक पूब मे मालदाक पूब ओ उत्तर मे उपलब्ध पुरावाहिका ओ झील कोसी ओ महानन्दाक व्यक्त वाहिका थीक। बूढ़ कोसी ओ भर कोसीक पुरावाहिका गोखुर झील कें प्रदर्शित करैछ। ओहि समय मे ई महानन्दा ओ परमन कोसीक सहायिका छल।

एहि जिला मे 33 प्रतिशत स' अधिक भूमि पर खेती होइत अछि एवं एक स' अधिक फसिल उपजाओल जाइछ। नमीक कारणें चरागाह ओ अन्य गोचर भूमि एहि जिला मे अछि। नदीक कछेड़ मे चरागाह पाओल जाइछ। एखन चरागाह भूमिक कमी भ' गेल अछि। अभिनव जलोढ़ माटि पाओल जाइछ। साधारण उपजाऊ माटि अछि। 20 वर्ष स' भवानीपुर, कान्तनगर, मरलाही, काढ़ागोला, जौनिया, पकहरा, बसुहार, गुरुहार, गुरुन्ला, विसनपुर ओ भंडारतलक दू लाख स' ऊपर आबादी कटावग्रस्त ओ फटेहालीक स्थिति मे अछि। बरारी प्रखंड में गंगाक कटाव स' भयंकर क्षति होइछ।

ई जिला प्रधानत: कृषि क्षेत्र अछि। प्राकृतिक वनस्पति वनक रूप मे पाओल जाइछ। प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। एतय उद्यान प्रकारक वनस्पति पाओल जाइछ। पर्यावरण संतुलनक हेतु 33 प्रतिशत भूमि पर वन भेनाइ परमावश्यक। वन क्षेत्र कें सरकार एहि दृष्टि स' आरक्षित वन घोषित कयने अछि। समस्त वन क्षेत्र कें राजकीय क्षेत्र मे लय लेने छैक। नियमित रूप स' वनरोपण ओ वनमहोत्सव कयल जाइछ। कुल वनक्षेत्र 0.74 प्रतिशत अर्थात 22.62 कि.मी. एहि जिला मे अछि।

एहि जिला मे कृषि विकासक अनिवार्यता निर्विवाद अछि। आर्थिक विकास कृषिक विकास बिना संभव नहि। कृषि उत्पादन मे वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार एवं आयक अवसर मे वृद्धि तथा आत्मनिर्भरताक लेल कृषिक आधुनिकीकरण आवश्यक। जिलाक सम्यक आर्थिक विकास कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि द्वारा संभव छैक। भदै जून मे लगाओल जाइछ ओ सितम्बर-अक्टूबर मे पाकि जाइछ। भदै मे धान, मकई, जनेर ओ जूट उपजाओल जाइछ। जूट द्वितीय फसिल होइछ। अगहनी धान प्रमुख फसिल एवं 45.52 प्रतिशत क्षेत्र मे धान उपजाओल जाइछ। मानसून वर्षा पर धानक

उत्पादन निर्भर करैत अछि। जलवायवीय स्थिति ओ जलक उपलब्धि धान क्षेत्रक विस्तार कें नियंत्रित करैछ। समतल उपजाऊ माटि, सुवितरित 1000 मि.मी. वर्षा, उपजाकाल मे 30° तापमान तथा प्रचुर मात्रा मे सस्त मजदूर धानक खेतीक लेल अपेक्षित। तें एहि जिला मे धानक फसिल ठीक स' होइछ। तहिना मइ मे पूर्व मानसून वर्षा (112 मि.मी.), उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता ओ उपजाऊ जलोढ़ माटि जूटक उत्पादनक लेल आवश्यक, जे एतय उपलब्ध छैक। प्रधानतः जूट प्राकृतिक कगार पर उपजाओल जाइछ जतय बाढ़िक पानि नहि पहुंचैत छैक। हरित क्रान्तिक सर्वाधिक प्रभाव गहूमक खेती पर परल छैक। उन्नत प्रभेदक बीज, उर्वरक, कीटनाशक दवाइ ओ पटौनीक व्यवस्था उपलब्ध भेला पर बढ़िया उत्पादन भ' रहल छैक। गैर पारम्परिक कृषिक रूप मे नारियल उपजाओल जाइछ। नारियलक उपज प्रति गाछ 37 आसपास जखन कि राष्ट्रीय औसत 34.6 अछि। तरबूज सेहो आब उपजाओल जाइछ।

जमीन्दारी प्रथा खतम भेल। भूमिक स्वामित्व, अधिकार एवं दायित्व एखन धरि निर्धारित नहि कयल गेल। भूमि जोतक सीमा निर्धारण नहि भेल छैक। जोतयवला कें स्वामित्व ओ अधिकार नहि देल गेल। सामाजिक न्यायक दृष्टि स' असली काश्तकारक प्रति न्याय नहि भेल अछि। भूमिहीन काश्तकार कें जोतक जमीन नहि देल गेल छै। एहि जिला मे भूदान मे जमीन भेटल, किन्तु एखन धरि वितरण नहि भेल छैक। राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग एक खतियान जिलावार तैयार कयलक, जाहि मे दान मे भेटल जमीन के देलनि, किनका वितरण भेल तकर नाम, पता रकबाक संग तैयार कयल गेल। दिसम्बर 2002 धरि एहि जिला मे 32611.44 एकड़ भूमि दान मे भेटल, जाहि मे मात्र 16,869.99 एकड़ वितरित भेल।

उद्योगीकरण आजुक आर्थिक युगक आधार अछि। प्रत्येक देश उद्योगीकरणक दौड़ मे अगुएबाक प्रयास मे सक्रिय अछि। मुदा कटिहार जिला औद्योगिक विकास मे निरंतर पछुआएल जा रहल अछि। जूट उद्योग एहि जिला मे विकसित अवस्था मे छल किन्तु एखन बन्द अछि। एतय दूटा जूट मिल कटिहार जूट मिल्स लिमिटेड ओ आर.बी.एच. मिल। कटिहार जूट मिल्स कें बिहार सरकार अपना अधीन कयलक एहि मिलक सर्वांगीण विकासक हेतु किन्तु एहि तत्परता स' काज सरकारक हाकिम अमला सब कयल जे चलैत मिल बन्द भ' गेल। एखनो बन्द अछि। दोसर मिल सेहो बन्द अछि। सात सय स' ऊपर कर्मचारी बेकार भ' गेल छथि। एतयक जूट, जे उत्तम कोटिक होइछ, कोलकाताक जूट मिल सब सस्त दाम पर खरीद लैत अछि जाहि स' एतयक जूट उत्पादक कें नोकसान भ' जाइत छनि। एहि

दुनू रुग्ण मिलक उद्धार ओ आधुनिक ढंगक एक जूट कारखाना खोलल जा सकैछ जे बढ़िया लाभ अर्जन करत। जूट बेलिंग प्रेस अछि जतय लघु स्तर पर काज होइछ। एतय एक दियासलाइक कारखाना अछि। उत्तम कोटिक दियासलाइ बनाओल जाइछ। सेमापुर मे एक चीनी मिल ओक्टेवियस ग्रुपक अधीन अछि जे बन्द परल अछि। महानन्दाक तट पर रेशम उपजाओल जाइछ। प्राचीन काल मे रेशमी वस्त्र उद्योगक ई केन्द्र छल। कटिहार मे कम्बल बूनल जाइत छल। एकरा विकसित कयल जेबाक चाही। एतयक आटा मिल बहुत पुरान ओ सही ढ़ंग स' काज नहि कय रहल अछि। एतय कतेको छोट-छोट उद्योग अछि मुदा सही दिशा ओ अर्थाभावक कारणें सुचारु रूप स' नहि चलि रहल अछि। एहि जिला मे 31.03.95 धरि 3902 एवं 1995-96 मे 247, 1996-97 मे 253, 1997-98 मे 246, 1998-99 मे 261 ओ 1999-2000 मे 245 इकाइक निबंधन भेल। बेसी इकाइ कार्यरत अछि। हस्तकरघा ओ पावरलूमक लगभग 5000 इकाइ एहि जिला मे कार्यरत अछि। कृषि आधारित उद्योग, जूट स' साज-सज्जाक सामान खाद्य प्रसंस्करण उद्योगक भविष्य सुन्दर अछि।

जिलाक पर्यटन उद्योग पर कोनो ध्यान नहि देल गेल छैक। अविकसित अवस्था मे अछि। एहि जिलाक गोगा विल पक्षी बिहार अमदाबाद प्रखंडान्तर्गत 217.99 एकड़ क्षेत्रफल मे पसरल अछि। पर्यटनक दृष्टि स' विकसित नहि कयल गेल अछि। 1987 मे झील कें आकर्षक पर्यटन स्थल बनयबाक प्रयास भेल। वाइल्ड लाइफ प्रोटेकशन अधिनियम 1972क अधीन। रूस, साइबेरिया आदि देश स' जाड़ मे तीन सय प्रजातिक चिड़ इ प्रतिवर्ष अबैछ। भूमि अधिग्रहण, सड़क निर्माण, गेस्ट हाउस, पानिक आपूर्ति, विद्युतीकरणक हेतु 87.34 लाखक बजट छल। झीलक जल ठमकल रहला स' पर्यावरणीय प्रदूषण।

दिल्लीक सरकार अत्यन्त पिछड़ल ओ निर्धनतम जिलाक पहचानक हेतु इ.ए.एस. सरमाक अध्यक्षता मे समिति गठन कयलक, जाहि मे कटिहार जिला कें एहि श्रेणी मे रखलक। नव संरचनाक सृजन ओ पुरान संरचनाक रखरखाव पर विशेष जोर देल गेल मुदा सकारात्मक कोनो काज नहि भेल। जून 2002 मे बीस सूत्री कार्यक्रमक मूल्यांकन कयल गेल। कटिहार जिला कें मात्र 9.52 प्रतिशत अंक भेटल। प्रगति 10 प्रतिशत स' कम।

एहि जिलाक सड़क यातायात चौपट अछि। पूर्व मे सड़क छल की नहि से बूझल नहि जा सकैछ। सड़क खाधि बनि गेल। निर्माण ओ मरम्मतिक कोनो सुरसार नहि। जिलाक सड़क, पुल, पुलिया अर्द्धनिर्मित तथा बिहार-बंगाल कें जोरयवला मार्ग यथावत अछि। 114 कि.मी. जौनिया 15

कि.मी. सैरा तथा 16म कि.मी. पर सिरण्डा पुल तैयार अछि मुदा सम्पर्क पथ नहि बनला स' स्थिति भयंकर। कटिहार जिला मुख्यालय स' प्राणपुर प्रखंड कार्यालय धरि अर्द्धनिर्मित पुलक कारणें आवागमन अवरूद्ध छैक। सलमारी-बलिया-बेलौन-करूमपथ 19 कि.मि. पथ तैयार भ' गेल छैक आवागमनक हेतु। राष्ट्रीय उच्चपथ संख्या 81 कें कांढ़ा-कटिहार-मालदा (पश्चिम बंगाल) 100 कि.मी. राष्ट्रीय राजपथ अपना अधीन कय लेलक। पूर्णिया-कदवा-आबादपुर पथ पर महानन्दाक झीलाघाट पर पहुंच पथ 1985 मे स्वीकृत ओ 544 लाख रुपया बिहार पुल निगम निर्माण कें भुगतान भेल। 1989-90 मे पूरा करबाक छल जे 2000 मे शुरू भेल। महानन्दाक बहाव बारसोईक दिस 187 मीटर खिसकि गेल छैक जाहि स' पुलक लम्बाइ 61.778 मीटर एवं पथक लम्बाइ मे 2174 कि.मी. वृद्धि भ' गेल। नवम्बर 2002 धरि 562 लाख खर्च भ' गेल छैक।

कटिहार रेल मंडल प्राचीन अछि। 1900 मे इस्टबंगाल रेलवे हल्दीबाड़ी, बारसोई, किसनगंज-मनिहारी-कटिहार, कसबा खंडक निर्माण भेल छल। एकर विस्तारीकरण कसबा-फारबिसगंज, कटिहार-सिंहबाद, गोदागरी-फारबिसगंज-जोगबनी, कटिहार-बनमनखी-मुरलीगंज तथा बड़ी लाइन मे पुरानी मालदा-खुरियाल-कुमेदपुर धरि। 1947 मे देशक बंटबाराक असर परल। राधिकापुर-सिंहाबादक बादक लाइन बांग्लादेश मे ओ शेष कटिहार मंडल मे रहल। 1953 मे रेल क्षेत्रक पुनर्गठन कयल गेल। असम रेलवे तथा तिरहुत रेलवेक पूर्वोत्तर रेलवेक संग विलय भेल। 15 जनवरी 1958 कें पूर्वोत्तर सीमांत रेलवेक गठन ओ कटिहार मंडल एहि मे शामिल। एहि मंडल मे 95 रेलवे स्टेशन-बड़ी लाइनक 29, छोटी रेल लाइनक 11 तथा मीटर गेजक 38 रेलवे स्टेशन ओ अन्य अछि। एहि रेलमंडलक एक आरक्षण केन्द्र 14500 फीटक उंचाइ पर स्थापित कयल गेल जनवरी 2003 मे। सिलीगुड़ीक समीप धेगू मे आरक्षण कार्यालय स्थापित भेल। आठ हजार स' अधिक सैनिक रहैत छथि। विश्वक सब स' ऊंच आरक्षण केन्द्र-गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकार्ड मे नामांकन हेतु प्रस्तावित। रेल दुर्घटना रोकबाक हेतु रंगीन सिग्नलिंग व्यवस्था कयल जा रहल अछि। अप्रैल 2003 धरि कुरेठा तथा प्राणपुर मे सिग्नलिंग काज पूरा भ' जायत।

■

सहरसा



वैदिक कर्मकाण्डक प्रसव भूमि मिथिलाक जनपद आजुक सहरसा जिलाक महिषी भगवत्पाद आदिशंकराचार्य ब्रह्मसिद्धिक लेखक प्रकांड मीमांसक मण्डन मिश्रक ओतय जखन पहुंचलाह त' ओतुका विद्याप्रताप देखि ओ दंग रहि गेलाह-'धन्याडसिद्त मिथिला यत्र कुम्भकारोपि पण्डित:'। गामक पनिभरनी स' जखन शंकराचार्य मण्डन मिश्रक पता पुछलथिन तखन ओ अपन उत्तर स' आचार्य शंकर कें मुग्ध कय देलकनि-'फलप्रदं कर्म, फलप्रदंवा कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति। द्वारस्थनोडान्तर सत्रिरुद्धा जानोहि तन्मण्डनमिश्रधाम:'। अर्थात्, दुआरि पर पिंजड़ा मे बन्द सुगागण जतय बजैत हो जे कर्म फल दैत अछि वा नहि, ताहि घर कें अपने मण्डन मिश्रक घर बुझब। मीमांसा-वेदान्तक लपक-झपक वा ज्ञान-कर्मक सघन धुमसाहि, तर्क-वितर्कक महाजाल आ देवी भारतीक मध्यस्थता मे मण्डन मिश्रक पराजय तथा 'आत्मनो अर्द्ध पत्नी' पुनः भारती द्वारा पूर्ण विजयार्थ शास्त्रार्थक चुनौती भरल कथा-प्रसंग सहरसा जिलाक संगहि मिथिलाक महत्ताक अलिखित दस्तावेज अछि। घटना 788-820क माध्यक थिक, कारण आदिशंकराचार्यक बत्तीस वर्षक यैह काल अछि।

सहरसा मिथिलाक एक नवनिर्मित जिला अछि। पहिने ई भागलपुर जिलाक एक अंग छल। अप्रैल 1954मे सहरसा स्वयं पूर्ण जिला बनल तथा जून 1973मे कोसी प्रमंडलक मुख्यालय बनि गेल। अन्य दूटा जिला-सुपौल आ मधेपुरा-एहि प्रमंडलक अधीन अछि। एहि जिलाक उत्तर मे सुपौल-मधुबनी, दक्षिण मे खगड़िया, पूब मे मधेपुरा आ पश्चिम मे दरभंगा-खगड़िया अछि। ई 4112

वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे पसरल अछि। एहि जिला मे दू अनुमंडल-सहरसा सदर ओ सिमरी बख्तियारपुर अछि। 10 प्रखंड आ 154 पंचायत। नौहट्टा मे 14 पंचायत, सिमरी बख्तियारपुर मे 24, सत्तर कटैया मे 14, महिषी मे 19, पतरघट मे 11, सोनवर्षा मे 21, सौर बाजार मे 17, सहरसा मे 15, सलखुआ मे 12 तथा बनमा इटहरी मे 7 पंचायत अछि। प्रमुख नदी भगवान शिवक उत्पाती कन्या कोसी। कोसी नदीक जल संग्रहण 10603 वर्ग कि. मी. मे अछि। जिला मे 1425 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे चौर तथा कुल 921 पोखरि अछि जाहि मे 860 निजी स्वामित्व मे।

वर्ष 2001क जनगणना मे एहि जिलाक जनसंख्या 15,06,418 अछि, जाहि मे कुल पुरुषक संख्या 7,88,585 तथा कुल महिलाक संख्या 7,17,833। जनसंख्याक घनत्व 885 अछि जखन कि बिहार मे 880 आ सम्पूर्ण भारत मे मात्र 324। कुल साक्षरता एहि जिला मे 39.28 प्रतिशत, बिहार मे 47.53 प्रतिशत जखन कि समस्त भारत मे 65.38 प्रतिशत साक्षरता छैक। जिला मे कुल पुरुष साक्षरता 52.04 प्रतिशत तथा कुल महिला साक्षरता 25.31 प्रतिशत आ समस्त भारत मे 54.16 प्रतिशत। कतेक कम महिला साक्षर छथि एहि जिला मे तकर अनुमान लगाओल जा सकैछ। राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि दर वर्ष 2001क जनगणना मे 21.34 प्रतिशतक अनुपात मे 28.43 प्रतिशत सम्पूर्ण बिहार मे आ एहि जिला मे वृद्धि 33.03 प्रतिशत। वर्ष 1991क जनगणना मे एहि जिलाक जनसंख्या छल 11,32,413। अर्थात एहि वर्षक जनगणना मे राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धिक तुलना मे 11.69 प्रतिशत वृद्धि एहि जिला मे भेल। प्रत्येक हजार पुरुष पर 910 छथि महिला एहि जिला मे। जनसंख्या वृद्धि श्रमशक्तिक दृष्टि स' श्रेयस्कर यदि बेकारी कें नहि बढ़ाबय। मुदा एहि जिला मे उद्योग-धंधाक अभाव तें जनसंख्या वृद्धि बेकारी कें बढ़ा रहल अछि।

चिरयौवना एवं अपन अल्हड़पनक कारणें मोहक ओ मारक कोसी एहि जिलाक प्रमुख नदी छथि। हिमालय स' निसृत चतरा नामक स्थान मे मैदान मे उतरि कय 42कि.मी. दक्षिण बहैत नेपालक सप्तरी ओ मिथिलाक सुपौल जिला कें पार कय सहरसा जिला मे प्रवेश करैत छथि। कोसी अपन धार परिवर्तनक लेल सुविख्यात छथि। ई 1731 मे फारबिसगंज ओ पूर्णिया लग बहैत छलीह से 1892मे मुरलीगंज लग, 1922मे मधेपुरा लग, 1936मे सहरसा लग बहय लगलीह। पुन: 1952मे सहरसा स' मधुबनी जिलाक सीमा लग प्रवेश कयलनि। करीब सवा दू सय वर्ष मे 110कि.मि. पश्चिम खिसकि गेल छथि। कोसी नदीक पुन: मार्ग परिवर्तन संभावित अछि। कोसीक बाढ़िक रोकथामक चर्चा 19म शताब्दीक पूर्वार्द्ध मे शुरू भेल। चर्चा चलैत रहल। अन्तत: 14 जनवरी 1955मे बिहारक प्रथम मुख्यमंत्री डा.

श्रीकृष्ण सिंह निर्मलीक भूतहा गाम मे एक छिट्टा माटि स' पश्चिमी कोसी तटबंधक निर्माण प्रारम्भ कयलनि। जलाशयक प्रावधान एहि निर्माण योजना मे नहि छल। बिना डैमक तटबंध कें सफल योजना नहि कहल जा सकैत अछि। बाढ़िक जलक संग्रह नहि भ' सकल। जल विद्युतक उत्पादन सेहो नहि। दुनू तटबंधक बीच 304 गामक लोक कें नारकीय जीवन जीबाक हेतु छोरि देल गेल। तटबंध स' बाढ़िक आंशिक रोकथाम भेल। 3 फरवरी 1955कें बैरिया गाम (सुपौल) स' पूर्वी कोसी तटबंधक निर्माण काज शुरू भेल। 1957मे सर्वप्रथम 43कि.मी. लम्बा पूर्वी नहर निकालल गेल। बराजक बाम भाग स' बथनाहा धरि मुख्य नहरि स' राजपुर शाखा नहरिक माध्यमे सहरसा जिला मे पटौनीक व्यवस्था भ' सकल। एहि जिला मे 31.12 प्रतिशत सिंचित क्षेत्र अछि जखन कि समस्त बिहार मे 36.31 प्रतिशत ओ भारत मे 30.72 प्रतिशत। अर्थात एहि क्षेत्रक 1279.65 वर्ग कि.मी. क्षेत्र मे सिंचाइक व्यवस्था कोसी बांध ओ राजपुर नहरिक बदौलति भ' रहल अछि। सामान्य क्षेत्र मे बांस बोरिंग स' सेहो पटौनी होइत अछि।

कोसी नदी बान्हल गेलीह, किन्तु सहरसा जिला मे बाढ़िक प्रकोप एखनो अछि। कोसी कें हिमालय स' नि:सृत हेबाक कारणें नदीक कछेरक निर्माणक प्रक्रिया रुकल नहि तें धार मे परिवर्त्तन भ' रहल अछि तदर्थ बाढ़िक आगमन होइत अछि। बराजक नीचा कुरसेला मे कोसी-गंगाक संगम धरि एहि नदीक जलग्रहण क्षेत्र 11410 वर्ग कि.मी. बढ़ि जाइछ। यैह पानि पूर्वी ओ पश्चिमी तटबंधक कछेर मे जमा होइछ ओ जलजमावक समस्या स्थायी अछि। 2002मे बाढ़ि आयल ओ आंशिक रूप स' 39 पंचायत बाढ़ि मे डूबल। 7 जुलाइ 2003क पानिक प्रवाह 2,99,114 क्यूसेक छल जे कतेको ठाम नदीक स्परक सतह कें छूबि लेलक। संयोगवश गंगाक स्तर कम छल, कोसीक पानि गंगा मे बहि गेल। पूर्वी तटबंध 1984क बाढ़ि मे 76 ओ 77 कि.मी.क बीच टूटि गेल छल। रिंग बांध बना कय पूरा तटबंध कें जोरि देल गेल। कि.मी. 76स' 84क बीच 15 स्पर ओ 10मिनी स्पर अछि। तटबंधक रखरखाव नहि भ' रहल छैक। तटबंधक उंचाइ गादक कारणें कम भ' रहल छैक। पहिने 10 लाख क्यूसेक जल-प्रवाह रोकबाक क्षमता छल जे उंचाइ कम भेला स' तटबंधक क्षमता घटि गेल छैक। कोसीक पूर्वी दीयर मे अछि सहरसा जिलाक गाम। सहरसा शहर स' पूर्वी तटबंध 20 कि.मी. पर अछि। पूर्वी ओ पश्चिमी तटबंधक बीच एहि जिलाक महिषी प्रखंडक 46 ओ नौहट्टाक 37 गामक लोक कें कोसीक जल मे भासि जएबाक हेतु छोड़ि देल गेल छैक। बाढ़िक मारि जून 2003स' शुरु भेल। राज्य सरकार 20 जनवरी 2003कें बाढ़ि सुरक्षात्मक कार्यक अन्तर्गत बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त तटबंधक मरम्मति लेल अत्यन्त संवेदनशील स्थानक

चयन कयलक। तदनुसार सहरसा जिलाक 14 स्थान पर 1.56 करोड़ रुपया खर्च करवाक निर्णय केलक एवं जल संसाधन विभाग 20 जून 2003 धरि 14 स्थान पर कार्य पूरा होयबाक दावा कयलक तथापि बाढ़ि किएक आयल। 1984मे बांध टूटल। एहि जिलाक नौहट्टा प्रखंडक केदली, छतवन, पहाड़पुर, बगहाखाल, हाटी, इरागो ओ कदुआर गामक विस्थापित पूर्वी तटबंध तथा स्पर पर एखनो बसल छथि। विस्थापितक पुनर्वासक लेल मोहनपुर मे 57 एकड़ तथा नौहट्टा मे 74 एकड़ जमीन अधिग्रहणक कारवाई चलि रहल अछि। 16 जुलाइ 2003क विधानसभा मे सरकारक दिस स' ई कहल गेल छल।

हिमालय स' निःसृत चंचला कोसी नदीक क्रीड़ा क्षेत्र ई जिला अछि। एहि नदी द्वारा आनल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल अंचल। बाढ़ि ओ जलाप्लावनक कारण वर्षा ऋतु मे मांटि अत्यधिक नरम पायल जाइछ। नदीक कछेड़ मे वाहित बालु ओ दोआब क्षेत्र मे सूक्ष्म गाद तथा मृतकाक निक्षेप पाओल जाइछ। उत्तम जल संचार होइछ। माटि मे चून नहि अछि। अभिनव जलोढ़ माटि, मध्यम उपजाऊक लेल उपयोगी अछि।

प्राकृतिक संसाधन मे जल जीवनक हेतु विशिष्ट महत्व रखैछ। जल पृथ्वी पर जीवक विकासक स्थिति उत्पन्न करैछ। जल मनुष्यक प्राकृतिक, भौतिक ओ जैविक पर्यावरण तथा कृषिगत, औद्योगिक तथा आर्थिक क्रिया-कलापक नियामक अछि। औद्योगिक एवं तकनीकी सभ्यता तथा जल विद्युत उत्पादनक संभावनाक संग जल यांत्रिक ऊर्जाक महत्वपूर्ण स्रोत एवं कतेको उद्योगक महत्वपूर्ण कारक अछि, जाहि स' औद्योगिक कें नवीन, आयाम प्राप्त भेल छैक। द्वितीय बिहार राज्य सिंचाई आयोग, 1994मे बिहार कें 21 नदी बेसिन मे विभाजित कयलक जाहि मे कोसी नदी थाला (बेसिन) एक प्रमुख अछि। सिंचाइक लेल आवश्यक जलक मात्रा माटि ओ फसिलक प्रकृति, भूमिक ढाल, जलवाष्पीय स्थिति आदि पर निर्भर करैछ। जेना सामान्यतः परम्परागत रीति स' एक हेक्टयर गहूमक सिंचाइ हेतु 7000 मी³ तथा धानक लेल 15,000 मी³ जल आवश्यक होइत छैक। सामान्यतः धान मे जलक आवश्यकता वर्षा स' ओ गहूम मे तीन बेर पटौनी द्वारा। राजकीय नलकूप द्वारा पटौनीक व्यवस्था 1999मे बांसापट्टी-गोबरगढ़-सुपौल-नरपतगंज-राघोपुर-किशुनपुर-चौहट्टा-त्रिवेणीगंज-अमराहा-बिहारीगंज क्षेत्र मे लगाओल गेल छल। सम्प्रति सब कार्यरत नहि अछि। बाढ़ि मुक्त क्षेत्र मे कोसीक पूर्वी मुख्य नहर द्वारा सिंचाइ होइ छैक। एहि जिलाक 1.40 लाख हेक्टेयर बाढ़ि मुक्त भूमि मे राजपुर नहर स' पटौनीक व्यवस्था छैक। बालु-गाद जमा होइछ जे एजेक्टर द्वारा कम कयल जाइछ। कुल 611.82 वर्ग कि.मी. क्षेत्र एहि जिलाक सिंचित अछि।

सहरसा कृषि प्रधान जिला अछि। एतय 86 प्रतिशत लोक जीविकाक

लेल प्रत्यक्ष रूप स' कृषि पर निर्भर अछि। औसत वर्षाक मात्रा, आकार वितरण, विश्वसनीयता एवं परिवर्तनशीलताक प्रत्यक्ष प्रभाव लोकक आर्थिक स्थिति पर पड़ैत छैक। वर्षाक कमी भेला स' सिंचाइक आवश्यकता तथा ई आवश्यकता वर्षाक परिवर्तनशीलताक मात्राक अनुपाती होइछ। 1966मे भयानक रौदी भेल छल तथा एहि जिला मे 66-70 प्रतिशत वर्षा भेल छल। अधिकांशतः एहि जिला मे 1100-1300मि.मी. वर्षा होइछ। हथिया नक्षत्र (25 सितम्बरक बाद) मे न्यूनतम 50मि.मी. वर्षा धानक फसिल तथा रबी बागुक लेल आवश्यक अछि। तहिना भदै ओ अगहनी फसिलक सफल कृषिक हेतु जून मे 100मि.मी. वर्षा आवश्यक छैक। एहि जिला मे मोनि, चौर ओ धार अछि। एहि मे धान ओ भदै उपजाओल नहि जा सकैछ। नलकूप स' सिंचाइ व्यवस्था कय कें रबी ओ गरमा फसिल उपजाओल जा सकैछ।

पूर्व मे प्राकृतिक वनस्पति एहि जिला मे छल, जकरा कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल। उद्यान प्रकारक वनस्पति पाओल जाइछ। कोसीक बाढ़ि स' सेहो वनस्पति नष्ट भेल। कृषि क्षेत्रक बाहर बगीचा, उद्यान, खेत-आहर-पाइनक अलग, परती भूमि, सड़क ओ रेलवे लाइन, गैर कृषि भूमि पर ताड़, खजूर, बबूर, महुआ, कहुआ, सिमर, तेतरि, आम, नीम, बड़, पीपड़, पाकड़ि आदिक वृक्ष, बांस, मूंज, खढ़ आदि पाओल जाइछ। जलकुम्भी सेहो पाओल जाइछ। खैर ओ बांस कें छोरि क' वृक्षक कटाइ पर सरकार प्रतिबंध लगौने अछि, तथापि अवैध कटाइक कारणें वन-क्षेत्रक ह्रास भ' रहल छैक। एहि जिला मे 60.40 कि.मी. वनक्षेत्र अछि जे कुल क्षेत्रफलक 1.47 प्रतिशत मात्र, जखन कि पर्यावरण संतुलनक हेतु 33 प्रतिशत वन होयबाक चाही।

एहि जिलाक वर्तमान आर्थिक, सामाजिक ओ राजनैतिक स्थिति मे कृषि विकासक अनिवार्यता निर्विवाद छैक। आर्थिक विकास कृषिक विकासक बिना संभव नहि। कृषि उत्पादन मे वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार तथा आयक अवसर मे वृद्धि करब तथा आत्मनिर्भरताक लेल कृषिक आधुनिकीकरण अत्यावश्यक। सघन जनसंख्या परन्तु उन्नत तकनीक, उर्वरकक उपयोग वा फसिल चक्रक अनुसरण मे कृषि सघन नहि। धान, गहूम, मकई, खेसारी ओ जूट प्रमुख फसिल छैक एहि जिलाक। अगहनी फसल प्रमुख। भदै स' डेढ़ गुणा होइछ। कोसीक बाढ़ि स' प्रभावित एहि जिला मे धानक क्षेत्र 30 प्रतिशत अछि। 35 प्रतिशत धानक क्षेत्र सिंचित छैक। शेष वर्षा पर आश्रित। भदै धानक क्षेत्र 12 स' 14 प्रतिशत अछि। लगभग 8.5 प्रतिशत क्षेत्र मे मकई उपजाओल जाइछ। वाणिज्यिक फसिल मे कुसियार नगण्य मुदा जूट मुख्य फसिल होइछ। जूट मुख्यतः प्राकृतिक कगार पर उपजाओल जाइछ,

जतय बाढ़िक पहुंच नहि छैक।

एहि जिलाक कृषि समस्याग्रस्त अछि। सभ स' पैघ समस्या बाढ़ि। बीज, उर्वरक, कृषि उत्पादक उचित मूल्य ओ कृषि मजदूरक समस्या। परम्परागत बीज दुर्लभ भ' गेल अछि। विश्व व्यापार संगठनक अधीन बहुराष्ट्रीय कम्पनी एहन बीज आनि रहल अछि जे एकहि बेर व्यवहार कयल जाइछ। 80 प्रतिशत किसान प्रत्येक खेप बीज खरीदबाक स्थिति मे नहि रहैत छथि। जमींदारी उन्मूलनक बाद मध्यस्थक उन्मूलन नहि भेल। अधिकतम ओ न्यूनतम भूमिक सीमा विधिवत निर्धारित भेल, मुदा कार्यान्वयन नहि भेल। सीमान्त कृषक एवं कृषि श्रमिकक लाभार्थ भूमि स्वामीत्वक वितरण नहि कयल गेल। भूमिहीन ओ वास्तविक कास्तकार कें भूमिक स्वामित्व नहि देल गेल। एखनो हजार बीघा स' ऊपर कतेको लोक कें काश्त जमीन छनि। सामाजिक न्याय मात्र नारा रहि गेल अछि। एहि जिला मे 6000 एकड़ भूमि भूदान मे भेटल। किनका वितरित भेल, एकर रेकर्ड बिहार सरकारक राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग कें नहि छैक।

उद्योगीकरण आजुक आर्थिक युगक आधार अछि, मुदा एहि जिला मे संगठित उद्योगक नाम पर किछु नहि। निबंधित लघु औद्योगिक इकाइक मार्च 2000 धरि कुल संख्या 3511 छल जाहि मे मार्च 1995 धरि 2923 इकाइ निबंधित छल। एहि मे बेसी इकाइ बन्द अछि। छोट-छोट खंडसारी उद्योग चलि रहल छैक। हस्तकरघा ओ खादी उद्योग विकसित नहि। जूटक आधुनिक ढंगक एक मिल ओ खाद्य प्रसंस्करणक छोट-छोट इकाइ लगायल जा सकैछ। आधुनिक ढंगक चाउर मिल सेहो स्थापित कयल जा सकैत अछि। जूट ओ बांसक सजावटक सामान बनयबाक हेतु प्रोत्साहित करबाक चाही। राज्य सरकार द्वारा बैजनाथपुर मे एकटा कागज मिल लगाओल जा रहल छल। एहि पर 156.12 लाख रुपया खर्चा भ' गेल, मुदा मिल स' धुंआ नहि बहरायल। यैह भेल राज्य सरकारक उद्योगीकरण। पेट्रोलियम पदार्थ अछि एवं अनुसंधान भ' रहल छैक। मत्स्य उद्योग विकसित नहि कयल गेल, जखन कि जिला मे पोखरि 108 हेक्टेयर, जलकर 7.77 हेक्टेयर, 17.529 हेक्टेयर मे चौर, 219 हेक्टेयर मे झील, 700 हेक्टेयर मे नहरि, 578 हेक्टेयर मे धार अछि। 80 कि.मी. नदी तथा 1500 हेक्टेयर मे सिपेज अछि। जीरा रायगंज, ललियागंज एवं कोलकाता स' अबैछ। गम्हरिया मे आधुनिक ढंगक हेंचरीक सरकार निर्माण करय। सहरसा मे बिस्कोमान द्वारा एक शीतगृह बनल अछि।

एहि जिला मे सड़क यातायातक स्थिति दयनीय अछि। सहरसा एवं महिषी विधान सभाक जर्जर सम्पर्क पथक (बिनोबा पथ) निर्माण, सिमरी बख्तियारपुर खोजचक स' बसंतपुर होइत कोसी तटबंध धरि सड़क निर्माण,

राष्ट्रीय उच्चपथ 107 स' मुरलीचौक होइत खुरेसान धरि तथा कोसी बांध धरि सड़क निर्माणक स्वीकृतिक संग सलखुआ प्रखंड मुख्यालय स' हरेवा, सौरबाजार स' रामपुर बरराम होइत सिमरी बख्तियारपुर धरि सड़कक निर्माण 5 करोड़ 82 लाखक लागत स' भ' रहल छैक। खगड़िया-सहरसा सम्पर्क पथक निर्माणक जोरदार मांग भ' रहल छैक। खैरी, झीमा, शरवजीता होइत सहरसा जिलाक चिड़ैया, बेलाही, रैठी, कबीरा, धाप, हरिया स' कठघरा पंचायतक खजूरदेबा कोसी कोलोनीक बीच लगभग 12 कि.मी. सड़क निर्माण एवं खगड़िया सोनभन घाटक बीच 1500स' 2000बागमती नदी पर पुल तथा डंगराही एवं खजूरदेबा कोसी कालोनी सहरसाक बीच 3000 फीट एकटा पुल, झीमा पंचायत अमरौली लग कमला धार (सुअर टोला) पर एक हजार फीट लम्बा पुलक निर्माण सेहो जोर पकरने अछि। सहरसा जिला मुख्यालय स' अनुमंडल सिमरी बख्तियारपुर मुख्य सड़कक स्थिति जर्जर। सहरसा स' सुलिन्दाबाद धरि मुख्य सड़कक स्थिति दयनीय अछि। महेशखूंट-सोनबरसा सड़क जीर्णावस्था मे छैक तथा जीर्णोद्धारक सुगबुगाहटि धरि नहि। एहि प्रमंडलक किछु महत्वपूर्ण मार्ग कें राष्ट्रीय उच्च पथक दर्जा भेटल किन्तु स्थिति मे सुधार नहि। बीरपुर-मधेपुरा होइत बीहपुर धरि एन. एच.106 तथा महेशखूंट स' सिमरी बख्तियारपुर, बरियाही, सहरसा-पूर्णिया धरि जायबला एन.एच. 107 एहि क्षेत्रक जीवन रेखा अछि मुदा तकला पर कतेको कि.मी. धरि सड़क नहि भेटत। पथ निर्माण विभागक मुख्य सड़क मे बरियाही स' बिहरा बाजार सुपौल धरि, सहरसा स' बख्तियारपुर होइत सलखुआ, पचगछिया, नवहट्टा, कर्णपुर, राजनपुर, सुपौल, सिंहेश्वर, किसनगंजक किछु सड़क, जे ग्राम्य अभियंत्रण संगठनक अधीन अछि, भयावह चित्र प्रस्तुत करैछ। सहरसा-सुपौल जायवला मुख्य सड़कक बीच निर्माणाधीन पुलक कारण आवागमन डायवर्सन स' होइछ जे बेसी समय जल मे डूबल रहैत अछि।

रेल यातायातक स्थिति अतिप्राचीन। 21म सदी मे सेहो सुधार नहि। राजधानी पटना स' नहि जुड़ल अछि। मुख्य तीनटा ट्रेन-कटिहार-समस्तीपुर जानकी एक्सप्रेस, फारबिसगंज-समस्तीपुर कोसी एक्सप्रेस ओ कटिहार-समस्तीपुर हरिहरनाथ एक्सप्रेस सहरसा होइत जाइत अछि। मानसी सहरसाक दूरी मात्र 44 कि.मी.। 1996-97मे आमान परिवर्तन स्वीकृत भेल। 10 पैघ पुल छैक। 48 करोड़ रुपया लागत छैक। आशा कयल जाइछ जे 2004 धरि काज पूरा भ' जायत।

केन्द्र सरकार कें इ.ए.एस. सरमा कमेटी, जे अत्यन्त पिछड़ल ओ निर्धनतम जिलाक अध्ययन कयने छल, देशक 100 जिला कें निर्धनतम ओ पिछड़ल श्रेणी मे रखलक। एहि मे सहरसा जिला सेहो निर्धनतम श्रेणी मे

वर्गीकृत अछि। ई समिति सरकार स' अनुशंसा कयने छल जे नवीन संरचना सृजित कयल जाय तथा प्राचीन संरचनाक रखरखाव पर विशेष जोर देल जाय. किन्तु एहि दिशा मे कोनो काज नहि भेल। गरीबी उन्मूलन स' जुड़ल बीस सूत्री कार्यक्रमक एहि जिला मे मूल्यांकन कयल गेल जून 2002मे आ ई जिला मात्र 40प्रतिशत अंक प्राप्त कय सकल। सब तरहें पिछड़ल जिला।

आर्थिक ओ राजनैतिक रुपें उपेक्षित मिथिला, पुरातात्विक धरोहर सबहक उत्खनन ओ विश्लेषणक संग पर्यटन स्थलक रूप मे सेहो उपेक्षिते अछि। तें हेतु एतयक गौरवशाली ऐतिहासिक, आध्यात्मिक स्वरूप जगजिआर नहि भेल छैक एवं हमरा लोकनि गौरवान्वित सेहो नहि भ' रहल छी। एहि जिलाक पर्यटन स्थलक आधुनिक ढंगे विकास आर्थिक दृष्टि स' परमावश्यक। देश कें स्वतंत्र भेना 53वर्ष भ' गेल। एहि जिला मे रेडियो स्टेशन एखन धरि नहि स्थापित भेल। केन्द्र सरकार दशम योजना काल मे रेडियो ओ प्रसारण केन्द्र स्थापित करय जा रहल अछि।

मत्स्यगंधा परियोजनाः वर्ष 2000-01 मे 74.13 लाखक लागत स' टूरिस्ट कम्पलेक्स सह पर्यटन सूचना केन्द्रक स्वीकृति राज्य सरकार देलक मुदा काज नहि भेल। बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम कें काज भेटल छल। कोसी महोत्सवकक अवसर पर सरकार निश्चय कयलक जे राज्य सरकार स्वयं एकरा विकसित करत। रक्तकाली एवं महायोगिनी मन्दिर परिसर कें आधुनिक ढंगक पर्यटन केन्द्र बनाओल जयबाक चाही।

महिषी : उग्रताराक मन्दिरक लेल विख्यात। एक जट्टा एवं सरस्वती पैघ आकर्षण छथि। मन्दिर परिसर मे बुद्धकालीन पुरावशेष अछि। प्रख्यात मीमांसक मंडन मिश्रक भूमि। आदिशंकराचार्यक शास्त्रार्थ स्थल। वर्तमान सब पीठक शंकराचार्य एहि स्थल पर अपन माथ नवा चुकल छथि। मुदा ई विश्वप्रसिद्ध पर्यटन स्थल किएक नहि बनि सकल।

मैनामहपुराः नौहट्टा सहरसा लगक इ गाम लोक देव 'कारू खिरहरि'क देवस्थलक कारणें प्रसिद्ध अछि। एक अजायबघर सेहो एतय अछि। एकरा लहटा बथान सेहों कहल जाइछ। अजायबघरक कोनो विकास नहि भेल छैक। राज्य सरकारक कार्य योजना मे अछि।

दिवारीक भगवती स्थान : ई सहरसा स' सुलिन्दाबाद जयबाक मार्ग मे अछि। सड़क जर्जर छैक। मंगल दिन कें मेला लगैछ एवं हजारक संख्या मे श्रद्धालु पूजा-अर्जनाक हेतु अबैत छथि। श्रावणी पूर्णिमाक अवसर पर भव्य मेलाक आयोजन होइछ एवं लाखों श्रद्धालु अबैत छथि। पड़ोसी देश नेपाल स' सेहो मुदा विकसित नहि अछि।

■

सुपौल

कोसी, तिलयुगा, खैरवाहा ओ बिलौनी नदी स' चतुर्दिक घेरल क्षेत्र सुपाल स' कालान्तर मे सुपौलक रूप मे सुप्रसिद्ध भेल। पालवंशक राजपाट एतय सैकड़ों वर्ष रहबाक कारणें सुपाल स' की सुपौल कहौलक? ईस्ट इंडिया कम्पनीक एकटा मुख्यालय सुपौल मे सेहो छल। चर्च मे सिपाल नामक एकटा पादरी ओहि समय रहैत छलाह एवं अंग्रेज शासक पादरीक नाम स' एहि स्थान के संबोधित कयल जे कालक्रम मे सुपौल भ' गेल। पाल वंशक शासन लगभग दू सय वर्ष धरि एहि क्षेत्र मे छल ओ बौद्ध धर्मावलंबिक एहि भाग मे बोलबाला छलनि। एहि अंचलक दार्शनिकता ओ धार्मिकता भगवान बुद्ध कें आकर्षित कयलक एवं ओ स्वयं एतय एक मास रहलाह। बौद्ध साहित्यक अगुन्तरण एवं आपण निगम एहि भूभाग मे विकसित भेल। कर्णाटवंशीय नान्यदेवक समय ई मिथिला राज्यक अंग छल। मुगलवंशक शासनाधीन सेहो रहल। 1793 मे नारेदिगर, मल्हनी गोपाल तथा निःशंकपुर कूढ़ा परगना कें तिरहुत स' अलग कय भागलपुर जिला मे जोरि देल गेल। 1862 मे सुपौल कें अनुमंडल बना कय प्रशासनिक दृष्टि स' विशेष महत्व देल गेल। 14 मार्च 1991 कें सहरसा जिला स' फराक कय सुपौल कें नव जिला बना देल गेल। निर्मली, वीरपुर, त्रिवेणीगंज ओ सुपौल चारि अनुमंडल एहि जिलाक अन्तर्गत अछि, किन्तु 13 वर्ष बितलाक बादो एहि नवसृजित जिलाक प्रशासनिक भवन, जेल तथा अदालत आदिक निर्माण राज्य सरकारक संचिका मे पड़ल अछि। राज्य सरकार 9 जुलाइ 1996 मे बिहार विधान परिषद मे आश्वासन देने छल जे वर्ष 1999 धरि आधारभूत ढांचा बनि जायत,

मुदा नहि बनि सकल। एहि जिलाक उत्तर मे सप्तरी नेपाल, दक्षिण मे मधेपुरा, पूब मे अररिया आ पश्चिम मे मधुबनी जिला अछि। एहि जिलाक कुल क्षेत्रफल 2420 वर्ग किलोमीटर तथा 25°37' स' उत्तरी अक्षांश एवं 86°22' स' 87°90' पूर्वी देशान्तरक मध्य अछि। 11 प्रखंड, 180 पंचायत, एक नगर परिषद ओ दूगोट नगर पंचायत अछि। बसन्तपुर प्रखंड मे 14 पंचायत, राघोपुर मे 18, छातापुर मे 23, पिपरा मे 15, त्रिवेणीगंज मे 27, किसनपुर मे 16, मरौना मे 13, निर्मली मे 6, भपटियाही मे 12, सुपौल मे 26, प्रतापपुर मे 9। 5 जनवरी 2002 कें त्रिवेणीगंज ओ छातापुर प्रखंड के मिला कय त्रिवेणीगंज अनुमंडल बनाओल गेल। एहि जिला मे 594 पोखरि अछि जाहि मे 447 निजी पोखरि।

वर्ष 2001क जनगणना मे जनसंख्या कुल 17,45,069 जाहि मे पुरुष 9,08,855 एवं महिला 8,36,214। एहि मे कुल साक्षर 37.80 प्रतिशत। पुरुष साक्षरता 53.23 प्रतिशत ओ महिलाक साक्षरता मात्र 21.02 प्रतिशत। जनसंख्याक घनत्व एहि जिला मे 724 जखन कि बिहार मे 880 ओ सम्पूर्ण भारत मे 324। एहि जिला मे प्रति हजार पुरुष पर महिलाक संख्या 920 अछि। गत जनगणना मे महिलाक संख्या 904 छल। अर्थात प्रति हजार पुरुष पर महिलाक संख्या एहि जनगणना मे एहि जिला मे मात्र 16क वृद्धि भेल छैक। एहि जिलाक आबादी गत जनगणनाक तुलना मे 26 प्रतिशत वृद्धि भेल छैक। 1991 मे एहि जिलाक आबादी 13,84,841 मात्र छल।

कोसी एहि जिलाक प्रमुख नदी। सर्वप्रथम चतरा नामक स्थान में मैदान मे उतरैत अछि। ओतय स' 42 किलोमीटर दक्षिण बहैत सप्तरी (नेपाल) जिला के पार कय सुपौल जिला मे प्रवेश करैत अछि। एहि नदी कें मिथिलाक शोक सेहो कहल जाइत अछि। कोसी हिमालयक अनेक हिमपोषित धारा स' मिलि कय बनैछ। विभिन्न उद्गम स' गंगाक संगम स्थल धरि कोसीक लम्बाइ 725 कि.मी. जाहि मे पहाड़ मे 425 कि.मी. ओ मैदान मे 300 कि.मी. अपन यात्रा तय करैछ। 1731 मे फारबिसगंज ओ पूर्णिया लग ई बहैत छल ओ 1936 मे सुपौल लग पहुंच गेल। सवा दू सय वर्ष मे 110 कि.मी. पूब स' पश्चिम खिसकल अछि। कोसीक बाढ़िक रोकथाम कतेको साल स' चर्चा में छल। 6 अप्रैल 1947 मे केन्द्रीय जल, सिंचाइ ओ परिवहन आयोगक अध्यक्ष श्री खोसला एहि जिलाक निर्मली मे कोसी बाढ़ि नियंत्रण योजना पर अपन एक रिपोर्ट कोसी पीड़ितक सम्मेलन मे प्रस्तुत कयलनि, किन्तु एहि सम्मेलन मे सी. एच. भाभा कोसी योजनाक नव प्रारूप प्रस्तुत कयलनि जाहि मे चतरा घाटी मे बराह क्षेत्र लग 750 फीट ऊंच आ 1,10,000 एकड़ जलसंचयन क्षमता बला कंक्रीटक बान्ह बनयबाक

छल। राजनैतिक ग्रहण लागि गेल उपरोक्त योजना पर। 1953 मे कोसी तटबंधक योजना स्वीकृत भेल जाहि मे हनुमाननगर मे 1148.5 मी. एकटा बराज ओ कोसीक मुख्य धाराक दुनू कात 120 कि.मी. लम्बा तटबंध ओ 100 कि.मी. पूर्वी तटबंधक निर्माण निर्धारित भेल। 14 जनवरी 1955 कें तत्कालीन मुख्य मंत्री डा. श्रीकृष्ण सिंह पश्चिमी कोसी तटबंधक निर्माण प्रारम्भ कयलनि। तटबंधक 800 मी. लम्बाइ स्थानीय जनता ओ छात्र लोकनि कयलनि। 3 फरवरी 1955 कें बैरिया गाम (सुपौल) मे पूर्वी कोसी तटबंधक निर्माण काज प्रारम्भ भेल। योजनाक काज, जे 1963 मे पूरा होयबाक छल, एखन धरि चलि रहल छैक। 7,02,400 हेक्टर भूमि मे सिंचाइ करबाक छलैक सं 1995 धरि मात्र 1,89,000 हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइ कयलक।

सरकारक एहि योजना मे बड़ पैघ विडंबना छैक जे पूर्वी ओ पश्चिमी कोसी तटबंधक बीच बसल सुपौल, सहरसा, दरभंगा ओ मधुबनी जिलाक 304 गामक लोक कें नारकीय जीवन जीबाक हेतु छोरि देल गेल छैक। एहि जिलाक सुपौलक 29 गाम, किसनपुरक 32 गाम, निर्मलीक 42, मरौनाक 36 गाम तथा बीरपुरक 21 गाम कें भसिएबाक हेतु छोरि देल गेल। एखन धरि पुनर्वासक काज पूरा नहि भेल छैक। बाढ़ि पीड़ित कें व्यवस्था मे व्याप्त धांधलीक शिकार होवय परलैक। आब उचित पुनर्वासक संभावना नहि छैक।

वर्ष 1999 मे केन्द्र सरकारक आर्थिक सहयोग स' राघोपुर मे एक जल निस्सरण प्रमंडलीय कार्यालयक स्थापना भेल जकर मुख्य काज छल उत्तरी सुपौल जिलाक हजारो एकड़ जमीन मे पसरल पैघ चौरक पानि कें निकालि भूमि कें उपजाऊ बनाओल जाय। एहि परियोजनाक मुख्य अभियंता पूर्णिया मे छथि ओ कार्यपालक अभियंता पदस्थापित छथि राघोपुर मे तथा ओ प्रभारी छथि नरपतगंज एवं अररिया सिंचाइ प्रमंडलक। फलस्वरुप सीमान्त पीड़ित किसानक भूमि स' जलजमाव खत्म नहि भेल छैक। चारि साल स' मात्र बोल-भेरोस भेटि रहल छैक।

मिथिला कें कोसी नदीक उत्पात स' बचयबाक हेतु सर्वप्रथम बीरबांध बनल। नेपालक 'बेलका पहाड़ी' स्थित फतेहपुर स' आरम्भ कय भागलपुर जिलाक बिहपुरक निकट गंगा तट धरि बान्ह बनल छल। बान्हक अवशेष उचित रखरखावक अभाव मे नष्ट होइत गेल। कटैया जल विद्युत केन्द्रक उत्तर पश्चिम समदा हाट लग वर्तमान मे एहि बान्हक अवशेष एकटा सड़क मात्र छैक। एतय बाजार ओ बस पड़ाव छैक एवं ई चांदनी चौक नाम स' प्रसिद्ध अछि। एहि बान्हक निर्माण मे इतिहासकारक बीच मतवैभिन्य अछि। बुकाननक अनुसार 12म सदी मे बंगालक लक्ष्मण सेन द्वितीय एकरा

दुश्मन स' साम्राज्यक रक्षार्थ बनाओल। अनुश्रुतिक आधार पर देवता या राक्षस बनौलनि। कुमारी कोसी स' विवाह रचयबाक हेतु एक राति मे बान्हक निर्माण। डी. आर. पटेलक अनुसार उक्त बांधक निर्माण नेपालक सीमांत स्थित बीरपुरक युवराज बनौलनि। किन्तु निष्कर्ष अछि जे बीरबांधक संरक्षणक प्रति सरकार ओ पुरातत्व विभाग उदासीन रहल एवं ई ऐतिहासिक स्थल बर्बाद भ' गेल।

कोसीक बाढ़ि स' ई जिला गम्भीर रुपें तहस-नहस ओ बर्बाद भेल अछि। गत 350 वर्ष मे कोसी मार्ग परिवर्तन कय भूतही बलान-खटुआ धार मे चल गेल छथि। कोसीक बाहिका लघु कोसी धार मे प्रवाहित अछि। पूब स' पश्चिम दिस एहि नदी कें घसकबाक कारणें 30,720 कि.मी. क्षेत्र मे अनुर्वरक बालुक पथार लागि गेल छैक। 1934क भयंकर भूकम्पक कारणें कोसी कतेको धार मे बंटि गेलीह। एहि क्रम मे भपटियाही-सुपौल रेलखंड नष्ट भ' गेल। 1930-32क बीच कोसी 18 कि. मी. पश्चिम खिसकल छलीह। भीमनगर स' 5 कि.मी. दक्षिण-पूब स' सुरूंगा श्रेणीक बीच लगभग 700 वर्ष पूर्व निर्मित जमींदारी बान्ह छल। बाढ़िक समय मे कोसीक जल एहि बान्ह कें फानि कय उत्तरोत्तर कटैत गेल। नेपालक बीरबांध कें टूटला स' एहि मे विशेष जल आबय लागल। 1936 मे बीरबांधक कटाव पैघ भ' गेल। कोसीक मुख्य प्रवाह घेमरा मे प्रवाहित होमय लागल। एहि नदीक बाढ़िक पानि घेमरा, गोगंजा, सोहराइन, बेटो ओ तिलयुगा होइत भपटियाही ओ परसरमा रेलवे स्टेशनक बीच प्रवाहित होइत छल। एकर फलस्वरुप निर्मली-भपटियाही रेल खंड नष्ट भ' गेल। आब कोसीक दुनू भाग मे तटबंध बनि गेल छैक, तें हेतु कोसी मात्र तटबंधक बीच मार्ग परिवर्तन करैत प्रवाहित भ' रहल छथि। तटबंध बिना जलाशयक निर्माण कयने बनल अछि। फलस्वरुप अपेक्षित लाभ नहि भ' रहल छैक।

सुपौल जिलाक जलवायु उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी। समशीतोष्ण कटिबन्ध मे स्थित उपोष्ण एवं आर्द्र। समुद्र तल स' सामान्य उंचाइ 75 मी. स' कम। उत्तर मे हिमालय, एकर ऊपर मे प्रवाहित होमयबला पवनक दिशा, जलवायु कें प्रभावित करयबला वायु-राशि एवं वर्षाक वितरण कें प्रभावित करैछ। मध्य जून स' मध्य अक्टूबर धरि वर्षा ऋतु रहैत अछि। दक्षिण-पश्चिम मानसून स' वर्षा होइछ। एहि जिला मे 1100-1300 मि.मि. वर्षा होइछ। आषाढ़ मे कारी कपासी वर्षा मेघक आगमन स' बाढ़िक विनाशलीला एहि जिलाक लोक कें त्रासदीक चरम बिन्दु पर पहुंचा दैछ। एतयक मनुष्य बाढ़िक संग सहअस्तित्व बना क' जीवैत आबि रहल छथि। बाढ़िक आवर्तता ओ बाढ़िग्रस्तता मे अत्यधिक वृद्धि भेल छैक।

कृषि प्रधान जिला ई अछि ते मांटि अतिमहत्वपूर्ण संसाधन।

कोसी-तिलयुगा द्वारा लायल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल माटि। बाढ़ि ओ जलाप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि मे अत्यधिक नमी रहैछ। अभिनव जलोढ़ माटि उपलब्ध अछि। साधारणतः उपजाऊ मांटि कहल जा सकैछ। एतय प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक हेतु साफ कय देल गेल छैक। कृषि भूमि मे फसिल उपजाओल जाइछ जकर पौधा घासक जातिक होइछ। कृषि क्षेत्रक बाहर गाछी, उद्यान, खेतक आरि, परती भूमि, सड़क ओ रेल लाइनक कात मे ताड़, खजूर, बबूर, महुआ, कहुआ, सिमर, तेतरि, आम, नीम, बड़, पीपड़, सखुआ आदिक वृक्ष, बांस, मूंजक, झाउ, साबे घास आदि पाओल जाइछ। पर्यावरण संतुलनक हेतु 33 प्रतिशत क्षेत्र मे बन अवश्य होयबाक चाही, किन्तु एहि अंचल मे नगण्य अछि। यद्यपि सम्प्रति वृक्षक कटाइ पर क्रमबद्ध रूप स' आंशिक प्रतिबन्ध (खैर ओ बांस कें छोरिकय) सरकार लगौने अछि। कारण वन कें कटला स' भूमि-क्षरण ओ पर्यावरणक समस्या असंतुलित भ' जाइछ। सामाजिक बानिकी, कृषि बानिकी ओ वनरोपण, वन-रक्षणक दिशा मे सरकार प्रयत्नशील बुझना जाइछ। किछु व्याधिक कारणें सीसोक वृक्ष स्वतः सुखा गेल छैक।

औद्योगिक एवं तकनीकी सभ्यता तथा जल विद्युत उत्पादनक संभावनाक संग जल यांत्रिक ऊर्जाक महत्वपूर्ण स्रोत एवं कतेको उद्योगक कारक भ' गेल छैक। एहि स' औद्योगिकी कें नवीन आयाम प्राप्त भेल छैक। आजुक औद्योगिक सभ्यता ओ मानव विकासक लेल आवश्यक कारक मे जल सर्वप्रमुख ओ अपरिहार्य अछि। मानव ओ जलक संश्लिष्ट संबंध अनेक भौगोलिक, आर्थिक ओ सामाजिक स्थिति कें प्रकट करैछ तथा विविध समस्या-जलक कमी, जलजमाव अथवा जलाधिक्य कें जन्म दैछ। जलक समुचित व्यवस्थाक अभाव मे एहि जिलाक नगरीकरण, उद्योगीकरण ओ कृषि विकास बाधित अछि। जलाधिक्यक समस्या गम्भीर अछि। एकर समुचित निदान स' जिलाक सर्वांगीण विकास अवश्यमभावी अछि।

कृषि एहि जिलाक अर्थतंत्रक धूरी ओ आर्थिक विकास कृषिक विकासक बिना संभव नहि। कृषि क्रान्ति कें औद्योगिक क्रान्तिक पूर्वाधार कहल गेल छैक। कृषि उत्पादन मे वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार एवं आयक अवसर मे वृद्धि करब तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त करबाक लेल कृषिक आधुनिकोकरण आवश्यक छैक। एहि जिलाक सम्यक् विकास कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि द्वारा संभव। अगहनी धान एहि जिलाक प्रमुख फसिल अछि। जूनक अंतिम ओ जुलाइक प्रथम सप्ताह धरि बीया खसा देल जाइछ एवं रोपनी जुलाइ स' अगस्त धरि कयल जाइछ। धान नवम्बर-दिसम्बर मे काटल जाइछ। एहि क्षेत्रक 35 प्रतिशत धानक क्षेत्र सिंचित ओ बाद बांकी वर्षा पर आश्रित। भदै धान सेहो होइछ। धानक उत्पादन एहि जिला मे एखनो

मात्र 1432 एलबी होइछ जखन कि अमेरिका मे 2185 एलबी, जापान मे 3444 एलबी एवं इटली मे 4565 एलबी। धानक उत्पादन एतय बढ़ाओल जा सकैछ, किन्तु ई तखने होयत जखन कि वैज्ञानिक खेती, उत्तम बीज, खाद ओ समुचित पटौनीक व्यवस्था भ' सकय। चाउर मिल सर्वत्र खुजि गेल अछि। गामक लोक आब चाउर ओ चूड़ा मशीन मे कुटबैत छथि। चाउरक सब स' पैघ मंडी निर्मलीक अछि, मुदा चाउरक व्यापार चोरी स' नेपाल स' खूब भ' रहल छैक। 6617.50 एकड़ बंजर भूमि कें कृषियोग्य बनाओल जा सकैछ। शुद्ध बोआई क्षेत्र 7892.7 एकड़ अछि। 16,776.01 एकड़ स्थायी जलजमाव क्षेत्र 307.32 एकड़ मे चरागाह क्षेत्र।

जूट एहि जिलाक मुख्य वाणिज्यिक फसिल अछि। मइ मे नॉरवेस्टर स' प्राप्त हलका मानसून वर्षा, लगभग 112 मि.मी. ऊंच तापमान, उच्च आर्द्रता ओ उपजाऊ जलोढ़ माटि जूटक उपजा हेतु आवश्यक। एकर धुलाइ हेतु साफ पानि सेहो चाही। 1971 स' भारतीय जूट निगम निर्धारित मूल्य पर जूट कीनब ओ बिक्री करबाक व्यवस्था क' रहल अछि, तथापि स्थानीय व्यापारी गलत ढंग स' पटुआ कृषक स' कम दाम मे माल खरीद लैत छथि जाहि स' हिनका लोकनि कें अपना फसिलक उचित मूल्य नहि भेटैछ। जूटक मंडी अछि। जतय स' कोलकाताक मिलबला थोक भाव स' जूट खरीद लैत अछि। व्यवसाय मे सट्टेबाजी अछि। आधुनिक ढंगक एक जूट कारखाना एतय बनाओल जा सकैछ। निर्मली एक पैघ बाजार अछि, एकरा विकसित कयल जेबाक चाही।

गहूमक खेती आब एहि क्षेत्र मे सेहो भ' रहल अछि। हरित क्रान्तिक सर्वाधिक प्रभाव एकर खेती मे पाओल जाइछ। उन्नत प्रभेदक बीज, उर्वरक, कीटनाशक दवाइ ओ पटौनीक उपयोग भ' रहल छैक। मकईक खेती नगदीक हेतु सेहो एहि जिला मे भ' रहल अछि। मडुआ (रागी) क खेती आब नहियेक बराबर। आलू उपजाओल जाइछ मुदा शीतगृहक अभाव मे कृषक कें उचित मूल्य नहि भेटैत छैक।

कृषि उपजाक विपणन सही ढ़ंग स' नहि भ' रहल अछि। गाम मे, मेला, हाट, फुटकर विक्रेताक माध्यम स' बिक्री होइत छैक। मध्यस्थक अधिकता, मंडीक कुरीति, बाजार व्यय मे बाहुल्य, श्रेणीकरण ओ प्रमाणीकरणक अभाव, भंडारणक कमी, परिवहनक अभाव, वित्तीय असुविधा, संगठनक अभाव ओ कृषकक रूढ़िवादी प्रवृत्तिक कारणें एहि जिला मे कृषक कें कृषि उपजाक उचित मूल्य नहि भेटैत छैक। बिहार राज्य कृषि विपणन परिषद एतय अपन गोदाम ओ कार्यालय खोलने अछि, मुदा कृषक कें उचित साहाय्य नहि करा रहल छैक। मखान एवं आम देशक अन्य भाग मे बिक्री होइछ। त्रिवेणीगंज मे आलू, राघोपुर मे लकड़ी, सरायगढ़ मे मौसमी

सब्जी तथा निर्मली मे चाउरक मंडी अछि।

जमीन्दारक अत्याचार, अनाचार ओ शोषण स' 1956 धरि वैधानिक मुक्ति भेटल परंच भूमि कें जोतयबलाक स्वामित्व, उचित मात्रा मे लगानक भुगतान, भूमिक हस्तांतरणक स्वतंत्र व्यवस्था एवं जोतक सीमाक निर्धारण एखन धरि नहि भेल छैक। भूमि सुधारक सभ विधि-विधान बिहार सरकारक कार्यालय मे शोभायमान अछि। भूमि सुधार कार्यक्रमक सफलताक हेतु भूमिक संबंध मे नवीन रेकर्ड तैयार कयल जाय। जिला, पंचायत ओ राज्य स्तर पर कुशल प्रशासनिक व्यवस्था, गरीबक प्रति सही न्यायक हेतु भूमि सुधार अदालत, खेतिहर ओ बटाइ जोतयबलाक संगठन, जाहि कृषक कें भूमि आवंटन हो हुनका वित्तीय सुविधा ओ भूमि सुधार अधिनियमक सख्ती स' पालन भेला स' भूमि व्यवस्थाक लाभ भूमिहीन ओ सीमान्त कृषक कें होयत। एहि स' हिनक आर्थिक विकास संभव भ' सकत। भूदान मे सेहो एहि जिला मे सरकारक अधीन जमीन आयल, किन्तु बिहार सरकारक राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग समुचित व्यवस्था नहि कयने अछि। सुपौल जिला मे 26,891.93 एकड़ भूमि दानस्वरुप भेटल छल, जाहि मे 25,335.15 एकड़ भूमि किसान मे वितरित कयल गेल, किन्तु कतेको ठाम मामिला-मोकदमा जमीन-संबंधी भ' गेल छैक। राज्य सरकार शीघ्रातिशीघ्र एहि मोकदमाक तफसिया नहि करा पाबि रहल अछि।

कोसी पश्चिमी तटबंध बनि कय तैयार भेल, किन्तु एहि जिलाक लोकक बाढ़ि स' बचाव ओ पटौनीक समुचित व्यवस्था की भ' सकल। उदाहरणस्वरुप निर्मली अनुमंडल मे बाढ़ि स' विनाशक दृश्य डेग-डेग पर देखय मे अबैछ। भारत ओ बिहार सरकार प्रत्येक वर्ष प्राकृतिक विपदाक तांडव देखैत अछि। बाढ़िक शिकार खेत-खरिहान, सड़क, रेल लाइन ओ लोकक घर-आंगन-बारी भ' जाइछ। बिहार ओ भारत सरकार नेपाल सरकार पर दोषारोपण करैछ, जखन कि नेपालक नदीक नियंत्रण कोसी बराज आदि जल संसाधान विभाग, बिहार सरकारक अधीन अछि। सरकारक ई विभाग पहिने स' कोनो काज नहि करैत अछि। घर-आंगन, टोल, गाम दहा गेला पर जागैत अछि। 21 जनवरी 2002 कें बाढ़ि सुरक्षात्मक काज मे जल संसाधन विभाग, बिहार सरकार सांसद ओ विधायकक भागीदारी सुनिश्चत कयने अछि। बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त तटबंधक मरम्मति मे सुपौल जिलाक 26 स्थान पर 81 लाख रुपया खर्च करबाक योजना एहि वर्ष छैक।

उन्नैसम शताब्दीक पूवार्द्ध धरि सुपौल जिलाक अन्तर्गत सड़कक अत्यन्त अभाव छल। बीसम सदीक आरम्भ मे किछु सड़क बनल। सहरसा-सुपौल मे मात्र 300 मील। लोक निर्माण विभाग द्वारा बनाओल गेल सड़कक अवस्था रखरखावक आभाव मे अत्यन्त जर्जर। सुपौल प्रखंड

अन्तर्गत सुपौल-बीना-एकमा रोड 22 वर्ष स' जर्जर अछि। तहिना मरौना प्रखंडक रसुआर, क्योटा-पट्टी, सखुआ, मुंगराहा, सोहनपुर, सिशोनी, कटैयाक सड़क यातायात जीर्ण। निर्मली-रसुआर-महुआ पथ, जे तिलयुगा नदी पर अवस्थित छैक, स्क्रूपाइल पुल नदीक धार मे बहि गेल छैक। मरम्मति नहि भ' रहल छैक जाहि स' निर्मली अनुमंडलक एक लाख स' ऊपर लोग तबाह अछि। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 106 भारत-नेपाल सीमा बीरपुर स' बिहपुर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 31 धरि 130 कि.मी., जे मधेपुरा होइत जयतैक भारत सरकार राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित कय देने अछि। राज्य सरकार सुपौल - पिपरा - त्रिवेणीगंज - भरगांवा - रानीगंज - अररिया - बहादुरगंज - ठाकुरगंज - गलगलिया 120 कि.मी. स्टेट हाइवे के एन. एच. घोषित करबाक प्रस्ताव 2002-2003 मे भारत सरकार के पठौने अछि। किन्तु बुझना जाइछ जे राज्य सरकारक ई प्रस्ताव केन्द्र सरकार ठंडा बस्ता मे राखि देलक। कारण गत दू वर्ष मे राष्ट्रीय राजमार्ग मे बिहार मे 71 प्रतिशत वृद्धि भेल छैक। रखरखाबक राशि मे पहिने स' बहुत बेसी वृद्धि भेल छैक। सेन्ट्रल रोड फंड (डीजल ओ पेट्रोल अधिशेष स' निर्मित फंड)क माध्यम स' सुपौल-सिंहेश्वर स्थान सड़कक नवनिर्माण 2002-03 मे करयबाक योजना छल। प्रधानमंत्री ग्राम्य सड़क योजना (1000 आबादी तक सब गाम कें 2007 तक जोरबाक)क काज काछुक चालि स' चलि रहल छल। 24 मार्च 2003 कें केन्द्र सरकार निर्णय लेलक जे बिहार मे एहि योजनाक सड़क निर्माण काज आब केन्द्रीय एजेन्सी स्वयं करत। स्वर्णिम चतुर्भुज सड़क योजनाक विकास गति बिहार मे असंतोषजनक अछि। अंतर्राष्ट्रीय लिंक रोड ओ तटबंध जलसंसाधन विभागक कोसी योजनाक अधीन भरवा-कुनौली-निर्मली 46 कि.मी. पश्चिमी कोसी तटबंध सह पथ तथा निर्मली-घोघड़डीहा लिंक रोड लगभग 11 वर्ष स' ध्वस्त ओ जर्जर भ' गेल छैक। कुनौली-पटना बस, जे नेपाल कें बिहारक राजधानी स' जोरने छल, एहि कारणें बन्द अछि। निर्मली रिंग बांध उत्तरी बांधक पक्की सड़क जर्जर हालत मे तथा पूर्वी रिंग बांध एखन धरि कच्चीये अछि। यातायात कष्टकर छैक।

कोसी क्षेत्र मे रेलमार्गक विन्यास सघन नहि अछि। कारण नदी पर पुल बनायब कठिन ओ अर्थकर। तें हेतु रेल मार्ग मुख्यत: समानान्तर अछि गंगा नदीक। गंगा पर पहिल रेल-रोड पुल 1959 मे मोकामा मे बनल, जे रेलमार्ग द्वारा प्रथमत: उत्तर बिहार के दक्षिण बिहार स' जोड़लक। दोसर सम्प्रति 644 करोड़ रुपया स' बनि रहल अछि।' ई पटनाक दीघाघाट कें सोनपुर स' जोड़त। कार्य प्रगति पर अछि। कटिहार लग कोसी मे पुल पहिने स' अछि। 1914-15 मे अवध-तिरहुत रेलवे जकर नामकरण आब नार्थ

ईस्टर्न रेलवे अछि रेलपथक संख्या मे वृद्धि कयलक। कमला-बलान नदी पर रेल-सड़क पुलक निर्माण भेल आ दरभंगा स' जयनगर ओ दरभंगा स' निर्मली कें जोरि देल गेल। 1934क भूकम्पक बाद कोसीक भयंकर बाढ़िक कारणें निर्मली स' बलुआ होइत खनवा घाट, भपटिया स' सुपौल तथा फारबिसगंज स' अचराघाट रेल लाइन नष्ट भ' गेल। 21 जून 2002 कें निर्मली स्टेशन पर कम्प्यूटरीकृत आरक्षण केन्द्रक उद्घाटन करैत भारत सरकारक रेलमंत्री कहलनि जे 70 वर्ष पूर्व बाढ़िक विभीषिका स' ध्वस्त भेल निर्मली-सरायगढ़ रेलवे लाइनक सर्वेक्षण पूरा भ' गेल छैक। राष्ट्रीय राजमार्ग कोसी नदी पर महासेतु बना रहल अछि। अनुमंडल मुख्यालय निर्मली ओ प्रखंड मुख्यालय भपटियाहीक बीच रेल सह सड़क पुलक निर्माण काज शुरू भ' गेल छैक भारत रेल विकास योजनाक अन्तर्गत। एहि स' दरभंगा ओ सहरसा एवं दरभंगा ओ पूर्णियाक बीच दूरी बहुत कम भ' जायत। किन्तु यदि फारबिसगंज स' गलगलिया धरि नवीन रेल लाइन बनि जाय तखनहि अत्यधिक लाभ एहि क्षेत्रक लोक कें हेतैक एवं व्यापार-व्यवसाय मे सेहो अप्रत्याशित लाभ संभावित छैक। एहि रेल लाइन कें नहि बनला स' निर्मली, किशनगंज होइत आसाम ओ पूर्वोत्तर राज्य मे ट्रेन जायत से पेंच घुमावदार ओ लम्बा भ' जायत। फारबिसगंज स' पूर्णिया, कटिहार, बारसोई, किशनगंज होइत गलगलियाक दूरी 301 कि.मी. तय करय परत, जखन कि 100 कि.मी. नवीन सोझ रेल लाइन बनला स' फारबिसगंज स' गलगलियाक दूरी 200 कि.मी. कम भ' जायत। एहि रेलमार्ग कें बनला स' दिल्ली गुआहाटीक दूरी बहुत कम भ' जायत। की भारतक रेल विकास योजना एहि योजना पर ध्यान देत जे एहि क्षेत्रक लोकक सर्वांगीण विकास मे सहायक होयत। कोसी रेल महासेतु परियोजनाक अन्तर्गत तिलयुगा नदी पर पुलक निर्माण 12.01.2004 कें शुभारम्भ कय देल गेल।

सुलभ, सस्त ओ निर्भर योग्य ऊर्जा साधनक उपलब्धि पर कोनो भूभागक आर्थिक विकास निर्भर करैछ। पनबिजली सब स' सस्त ऊर्जाक साधन अछि। सुपौल जिला मे अजस्र जलविद्युतक साधन उपलब्ध अछि, तथापि एहि क्षेत्रक लोक लालटेन युग मे छथि। तृतीय पंचवर्षीय योजना काल मे 2.20 करोड़ रुपयाक लागत स' कटैयाक, जे बीरपुर स' 10 कि. मी. पर अछि, मे कोसी योजनाक अन्तर्गत 20 मेगावाट पनबिजलीक योजना बनल। 1964 मे एहि स्थान पर बिजली घरक निर्माण शुरु भेल। जापान स' पांच-पांच मेगावाटक चारिटा टरबाइनक काज 1971-72 मे पूरा भेल। नोपाल स' समझौताक अनुसार पहिने ओकरे बिजली देल जाइछ। शेष अपना क्षेत्र मे आपूर्ति कयल जाइछ। सिल्ट इजेक्टरक अभाव मे बालूक भराव होइछ जाहि स' टरबाइनक संचालन बाधित भ' जाइछ। डिजाइनक

गड़बड़ी स' 18 मेगावाटक जगह 6 मेगावाट (कखनो 3 मेगावाट) बिजली उत्पादन होइछ। पुन: दिसम्बर 2003मे ई जापानी सलाहकार कें सुपुर्द कयल गेल अछि। फलस्वरुप, नेपाल सरकार मूंह फुलौने अछि। बिहार राज्यक मात्र अही क्षेत्रक लोक एहन सौभाग्यशाली छलाह जे 24 घंटा बिजली रहैत छलाह। आब हिनको सबहक स्थिति शेष बिहारक लोकक सदृश भ' गेल छनि। बिहार स्टेट हाइड्रोइलेक्ट्रिक पावर कारपोरेशन सुपौल जिलाक राजापुर परियोजनाक, जकर क्षमता 700 किलोवाट होयत ओ लागत 347 लाख रुपया प्राक्कलित कयने अछि, निर्माणक सुर-सार कय रहल अछि। राज्य विद्युत बोर्डक निर्मली सब स्टेशनक ट्रांसफार्मर सितम्बर 2002 स' भगैंठ गेल छैक। निर्मली सब स्टेशन कें 11,000 लाइन फुलपरास (मधुबनी) स्टेशन स' आपूर्त्ति कयल जा रहल अछि। ग्रामीण विद्युतीकरण नगण्य भेल छैक।

उद्योग आजुक आर्थिक युगक आधार अछि। उद्योगक आधार पर कोनो अंचलक आर्थिक विकास नापल जाइछ। एहि स' सम्पन्नता ओ प्रति व्यक्ति आय वृद्धि होइछ ओ सामाजिक प्रगतिक नव मार्ग खुजैत अछि, किन्तु सुपौल जिला कें 'नो इन्डस्ट्री' जिलाक रूप में वर्गीकृत कयल गेल छैक। बड़ पैघ बिडम्बना। प्राकृतिक साधन, सम्पन्न कृषि, सस्त मजदूर तखनो जिलाक औद्योगिक विकास नहि भेल। जल विद्युत, यातायात, तकनीकी, वित्त व्यवस्था जे आधारभूत संरचनाक आधार मानल जाइछ तकर अभाव छैक। आजुक उद्योग मे ऊर्जा ओ श्रम मुख्य साधन। एहि जिला मे दुनू प्रचुर तथापि औद्योगिक विकास नहि। कृषि आधारित उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण, जूट, मत्स्य, हस्त करघा, हस्त शिल्प, कृषि उपकरण एवं अन्य लघु ओ कुटीर उद्योगक पूर्ण संभावना छैक। सुपौल जिला मे लघु औद्योगिक इकाइ निबंधन वर्ष 2000 धरि 372 छल जाहि मे 1995-96 मे 82, 1996-97 मे 79, 1997-98 मे 76, 1998-99 मे 56 एवं 1999-2000 मे मात्र 79 इकाइ। एकटा छोट चीनी मिल निर्माणाधीन अछि। चाउर मिल कतेको अछि। जिला मे पेट्रोलियम उत्पादक पैघ प्राकृतिक साधन छैक। भारत सरकार एहि भंडारक खोज मे लागि गेल अछि।

कोलकाताक समीप रहला स' देसी ओ विदेशी व्यापारक प्रचुर संयोग। नेपाल ओ तराइ क्षेत्र स' सेहो बढ़िया व्यापारक संभावना। पूर्व मे बेलहा स' सुपौल, चन्दपिपरा तथा दुर्गमारा होइत कुनौली ओ हमामपट्टी स' बीरपुर धरि सुचारु ढंग स' व्यापार होइत छल। सीमाक्षेत्र होयबाक कारणें निर्मली एक विशिष्ठ व्यापारिक स्थान छल। चाउर ओ जूटक प्रसिद्ध मंडी छल। मजदूरक संग व्यापारी एहि मंडी स' पलायन कयलनि। निर्मली प्रखंड सह अनुमंडलक दरभंगाक मंडी स' घनिष्ठ संबंध छल। किन्तु विगत वर्ष

स' दरभंगा मंडी स' जोरयबला प्रमुख अन्तर्राष्ट्रीय महत्वक पथ जर्जर भ' गेला स' निर्मली 16 कि.मी. लिंक रोड तथा एकरा संग सातटा काठ पुल पूरा ध्वस्त ओ 5 झुलानुमा। एहिना निर्मली स' नेपाल कें जोरयबला जल संसाधन विभागक पश्चिमी कोसी तटबंध सह पथ 46 कि.मी. अति जर्जर। सड़कक दुर्दशाक कारणें नेपाली व्यापारी ओ लोकक निर्मली मंडी मे अबरजात नहियेक बराबर। अर्थात एहि जिलाक व्यवसाय-व्यापार चौपट अछि।

सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि स' सुपौल जिला अत्यन्त पिछड़ल भूभाग अछि मुदा ऐतिहासिक ओ पुरातात्विक महत्वक अनेक स्थल अछि। एकरा आधुनिक रूप देला स' पर्यटन उद्योग कें प्रश्रय भेटत आ बेरोजगारी दूर करबा मे पैघ सहायक होयत। मिथिलाक संस्कृति अपन वैशिष्टयक लेल प्रसिद्ध अछि। एहि क्षेत्रक कतेको गाम सिद्धपीठ, सिद्धलोकनिक जन्मभूमि ओ कर्मभूमि रहल अछि।

कपिलेश्वर स्थान : सुपौल जिलाक प्राचीन स्थल। जिला मुख्यालय स' 10 कि.मी. दक्षिण खैरदाहा नदीक कछेड़ मे गढ़बरुआरी एवं जगतपुर गामक मध्य मे अछि। प्राचीन टीला पर भगवान शंकरक मन्दिर छनि। ई टीला नदी तट स' 30 स' 35 फीट उंच होयत। मुख्य टीला 60 फुट लम्बा एवं 80 फुट चौड़ा। प्राचीन राजाक किलाक अवशेष। 17म सदी मे गंधवरिया राजा द्वारा परास्त कयला पर नष्ट कयल गेल। कालान्तर मे बरूआरी राजा डेढ़ कि.मी. दक्षिण अपन किला स्थापित कयलनि, तें गामक नाम गढ़ बरूआरी परल। गामक अवशेष दृष्टिगोचर अछि। जाहि शिवलिंगक पूजा कयल जाइछ ओ प्राचीन कारी पाथरक तथा जमीनक भीतर धसल अछि। मुख्य मन्दिरक बाहर बराह, सूर्य ओ भग्नकुंडक पथारक मूर्ति। पुरातात्विक खनन एखन धरि नहि भेल अछि।

संत लक्ष्मीनाथ गोसांइक जन्मभूमि : सुपौल स' सटले परसरमा गाम महान संत, परम तेजस्वी योगी, ज्योतिष ओ वेदान्तक प्रकांड विद्वान, साधक परमहंस गोस्वामी लक्ष्मीनाथक जन्मभूमि थिक। कोनो विकास एतय नहि कयल गेल छैक। कहल जाइछ जे परसरमा गाम परशुराम ऋषि स' संबंधित छैक। हिनक जन्म भेल छल वर्ष 1793 मे।

राजराजेश्वरी : छातापुर प्रखंड मे राजेश्वरी गाम अछि। एतय जगदजननी राजराजेश्वरीक भव्य ओ मनोहारी मन्दिर छनि। एहि मन्दिरक सोझा कोसी अपन दिसा बदलि देने छलीह।

मैत्री सरोबर : बीरपुर मे अविकसित अवस्था मे अछि।

भीमशंकर महादेवक मन्दिर : धरहरा गणपतगंज स्थित भीमशंकर महादेवक मन्दिर पौराणिक-ऐतिहासिक महत्वक अछि। अज्ञातवासक लेल विराटनगर

जयबा काल पांडुपुत्र भीम एहि महादेवक पूजा कयने रहथि।

लोकदेव लोरिक गढ़ : सुपौल स' 10 कि.मी. दूरी पर हरदी गाम। एहि गाम मे प्रसिद्ध दुर्गास्थान जतय भगवती दुर्गाक उपासक अत्यन्त श्रद्धाक संग पूजा-अर्चना करैत छथि। हरदी गाम मे लोकदेव लोरिकक गढ़ छनि। हुनक स्मृति मे प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमाक अवसर पर विशाल मेला लगैछ। एकटा ऊंच स्थान अछि जकरा लोरिकक डीह कहल जाइछ।

कोरियापट्टी : राघोपुर अंचलक देवीक प्रसिद्ध गहवरक रूप मे प्रसिद्ध अछि।

प्रथम सूफी काव्य चन्दायनक रचना : सुपौलक डगमारा क्षेत्र सूफी साहित्यक प्रथम काव्य चन्दायनक रचना स्थल। मुल्ला दाउद लगभग 781 साल मे चन्दायनक रचना कयल। एकर भाषा, भूगोल ओ भाव प्रमाणित करैछ जे डलमऊ सुपौलक डगमारा थिक। चन्दायन मे लोरिक एवं चन्दाक प्रेमप्रसंगक चर्चा छैक। लोरिक जे वीर छलाह अपन पत्नी मैनाक संग रहैत छलाह किन्तु सहदेवक पुत्री चन्दाक संग प्रेम करैत छलाह। चन्दायन मे गोबरक वर्णन अछि जे गोबड़गढ़ा सहरसाक मत्स्यगंधाक समीप अछि।

एहि तरहें एहि जिलाक कर्णपुर गाम कें राजा कर्ण स', मलहद कें राजा मल्लदेव स', कुनौली कें सम्राट अशोकक पुत्र कुणाल स' जोरल जाइछ। अनुश्रुति, किंवदन्ति एवं पौराणिक कथाक आधार पर ई क्षेत्र महाभारत काल मे मत्स्य क्षेत्रक नाम स' जानल जाइत छल। एहि भौगोलिक, सांस्कृतिक, पौराणिक महत्वक स्थल कें सरकार आधुनिक ढंग स' विकसित करय ओ पर्यटन उद्योग कें एहि क्षेत्रक आर्थिक विकासक दृष्टि स' सृजित करय।

■

मधेपुरा



महान संत शृंगी ऋषिक तपोभूमि ओ बिसु राउतक कर्मभूमि मधेपुरा जनपद आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक एवं भौगोलिक दृष्टि स' पिछड़ल अछि। मधेपुराक पुरान नाम दौरम छल। मधेपुरा रेलवे स्टेशनक नाम 'दौरम-मधेपुरा' राखल गेल। दौरमाडीह एखनो प्रसिद्ध अछि। चमार जातिक कुलदेवता लाला महाराजक स्थल। प्रशासनिक दृष्टि स' 1845 मे मधेपुरा अनुमंडल बनायल गेल जे ओहि समय मे भागलपुर जिलाक अर्न्तगत छल। 1 अप्रैल 1954 मे सहरसा कें जिला बनाओल गेल। तखन मधेपुरा एकर एक अनुमंडल छल। 12 मइ 1981 मे मधेपुरा स्वयं स्वतंत्र जिला घोषित कयल गेल। एहि जिलाक उत्तर मे सुपौल, दक्षिण मे भागलपुर जिला, पूब मे पूर्णिया आ पश्चिम मे सहरसा-खगड़िया जिला अछि। कोसी प्रमंडलक एहि जिलाक अन्तर्गत दूटा अनुमंडल-मधेपुरा आ उदाकिसुनगंज। कुमारखंड मे (21) पंचायत, सिंहेश्वर (13), मुरलीगंज (17), उदाकिसुनगंज (16), आलमनगर (14), चौसा (13), पुरैनी (9), मधेपुरा (17), शंकरपुर (9), बिहारीगंज (13), ग्वालपाड़ा (11), गम्हरिया (8), घैलाढ़ (9)। कुल 14 प्रखंड एवं 191 पंचायत। कोसी मुख्य नदी एवं तिलाबे, सोनेह, पखाने, बरहरो, दौस, बैवह, चुनौली, सुरसर, लोरम, हरून तथा हैया अन्य छोट-छोट नदी। मधेपुरा नदीक धार स' घेरायल अछि। प्रशासनिक दृष्टि स' अनुमंडल बनायल गेल, मुदा प्रशासनिक भवन, जेल ओ कोर्ट भवनक निर्माण लटकले अछि। यैह स्थिति नव सृजित प्रखंडक सेहो अछि। औसत वर्षा 1300 मी.मी.। कुल गाम अछि 449 एहि जिला मे।

राष्ट्रीय राजमार्ग कुल 129 कि.मी.-एनएच 106 मे 96 कि.मी. तथा एनएच 107 मे 33 कि.मी.। मात्र 161 गाम मे बिजली पहुंचल छैक।

मधेपुरा जिलाक कुल क्षेत्रफल 1788 वर्ग कि.मी. अछि। 25°34' उत्तरीय अक्षांश स' 26°07' मध्य तक स्थित अछि। वर्ष 2001क जनगणना मे जिलाक कुल जनसंख्या 15, 24, 596 अछि जाहि मे पुरुषक संख्या 7,96,272 एवं महिलाक संख्या 7,28,324। जनसंख्या सघन अछि। जनसंख्याक घनत्व 853 जखन कि बिहारक 880 ओ भारतवर्षक 324। पछिला दस वर्ष मे बिहार राज्यक आबादी मे 28.43 प्रतिशतक वृद्धि भेल छैक, जखन कि एहि अवधि मे एहि जिलाक आबादी मे 29.45 प्रतिशत वृद्धि भेल। अर्थात 3,46,890 व्यक्तिक वृद्धि। 1991 मे जनसंख्या छल मात्र 11,77,706। प्रति हजार पुरुष पर महिलाक संख्या एहि जिला मे 915 छैक। साक्षरता कुल 36.19 प्रतिशत, जाहि मे पुरुष साक्षरता 48.87 ओ महिला साक्षरता 22.31 प्रतिशत।

कृषि जिलाक लोकक जीविकाक प्रधान साधन अछि, किन्तु भूमिक व्यवस्था, स्वामित्व, अधिकार एवं दायित्व जमींदारी प्रथाक अन्त भेलो पर नहि भेल छैक। भूमि पर जोतयबलाक स्वामित्व, उचित मात्रा मे लगानक भुगतान, भूमि हस्तांतरणक स्वतंत्र व्यवस्था एवं जोतक सीमाक निर्धारण एहि जिला मे नहि भेल अछि। 1956 मे जमींदारी उन्मूलन भेल। जमीन पर स' मध्यस्थ ओ जमींदारी व्यवस्थाक अन्त सरकार नहि करा सकल। मत्र एहि जिला मे नहि समस्त बिहार राज्य मे भूमि व्यवस्था ओ भूमि सुधार नहि भेल। राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग दिसम्बर 2002 मे प्रत्येक जिलाक भूदान मे प्राप्त जमीनक खतियान तैयार करौने अछि, जाहि मे मधेपुरा जिला मे 7556.04 एकड़ भूमि प्राप्त भेल छल एवं ओहि मे 3102.91 एकड़ भूमि किसान कें वितरित कयल गेल। किन्तु एहि जिला मे मात्र 41 प्रतिशत भूमि, जे भूदान मे प्राप्त भेल, भूमिहीन कें देल गेल। भूदान किसान कें भूमिक पहिलुका मालिक संग मामला-मोकदमा सेहो चलि रहल छनि।

मिथिलांचलक सर्वाधिक चंचल ओ जीवंत नदी कोसी लगभग 50 कि.मी.क यात्रा करैत भीमनगर (सुपौल) लग भारत मे प्रवेश करैछ। मधेपुरा जिलाक एको इंच जमीन एहन नहि होयत जकरा भगवान शिवक पुत्री जलाप्लावित नहि कयने होथि। पछिला 250 वर्ष मे ई नदी 112 कि.मी. पश्चिम खिसकल छथि। अपन प्रवाह मे भारी मात्रा मे बालु, माटि अनैत छथि। जाहि स' नदीक तल उंच भ' जाइछ। कारण नदीक पानि कें गादक संग विस्तृत क्षेत्र मे फैलाबति अछि। कोसी 1931 मे पूर्णिया लग बहैत छली जे 1922 मे मधेपुरा लग बहय लगलीह। सम्प्रति मधुबनी जिलाक सीमा पर

पहुंचि गेल छथि। 1955 मे हनुमाननगर मे 1148.5 मीटर एकटा बराज ओ कोसीक मुख्य धाराक दुनूकात 120 कि.मी. लम्बा पश्चिमी तटबंध एवं 100 कि.मी. लम्बा पूर्वी तटबंध बनयबाक योजना स्वीकृति भेल। सर्वप्रथम 43 कि.मी. लम्बा पूर्वी नहरिक निर्माण प्रारम्भ भेल ओ चारि शाखा नहरि निकालल गेल। मधेपुरा जिला मे एहि नहरि प्रणाली स' पटौनी भ' रहल अछि। एहि जिलाक अन्य नदी भाथि गेल छैक। बाढ़िक जल स' जलाप्लावन होइछ। अन्यथा सुखायल रहैछ।

प्रकृति प्रदत्त भूमि संसाधन स' परिपूर्ण अंचल। जल संसाधन पर्याप्त। बाढ़िक समय मे बालू बिछि जाइछ जाहि स' भूमि अनुर्वरक ओ नतोन्नत बनि गेल छैक। धरातल पर कास उगि गेल छैक जाहि स' भूमि बंजर भ' गेल छैक। स्थायी चरागाह तथा अन्य गोचर भूमि पाओल जाइछ। नदीक कछेड़ मे चरागाह अछि। चालू परती जमीन सेहो अछि। 57.3 प्रतिशत भूमि मे एहि जिला मे एक स' अधिक बेर मुख्यत: दू फसिल उपजाओल जाइछ। मधेपुरा जिला मे 72 प्रतिशत कुल कृषि क्षेत्र छैक। अर्थात् 1284.58 वर्ग कि.मी.। एहि मे सिंचित क्षेत्र मात्र 391.9 वर्ग कि. मी.। जलाशय, चौर ओ मोनि कतेको बनि गेल अछि। अभिनव जलोढ़ माटि छैक जकरा खावड़ सेहो कहल जाइछ। साधारणत: उपजाऊ माटि एहि जिलाक अछि।

प्राकृतिक वनस्पति वनक रूप मे पाओल जाइछ। कृषि प्रधान क्षेत्र रहलाक कारणें प्राकृतिक वनस्पति कें कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। बांस, नरकट, झाउ, साबे घास, सखुआ आ सीसोक गाछ पाओल जाइछ। एहि जिला मे वनक्षेत्र 38.16 कि.मी. छैक। राज्य सरकार एक विधेयक द्वारा समस्त वनक्षेत्र कें राजकीय नियंत्रण मे लय लेने अछि। सम्पूर्ण वन क्षेत्र सरकारक सम्पत्ति। सरकार वनक्षेत्रक वृद्धि हेतु वनरोपण आ वनमहोत्सव नियमित रूप स' करैत अछि। आवश्यक वनाच्छादनक लेल वन एवं पर्यावरण विभाग एकटा बीस वर्षीय महत्वाकांक्षी योजना बनौलक।

एहि जिलाक प्रमुख फसिल-धान, मकई ओ जूट। आब गहूम सेहो उपजाओल जाइछ। भदै जून मे बाउग आ भादब मास (सितम्बर-अक्टूबर) मे काटल जाइछ। एहि मे भदै धान, मकई, जनेर ओ जूट मुख्य फसिल। अगहनी (नवम्बर-दिसम्बर) मे काटल जयबला-मुख्य धान। नकदी फसिल जूट अछि। एहि जिलाक द्वितीय फसिल जूट। कोसीक बाढ़ि स' प्रभावित मधेपुरा जिला मे 30 प्रतिशत धान क्षेत्र अछि। धरातलीय स्वरूपक अपेक्षा जलाबायबीय स्थिति ओ जलक उपलब्धि धानक क्षेत्रक विस्तार कें नियंत्रित करैछ। समतल उपजाऊ माटि, 1000 मि. मी. वर्षा, उपजकाल मे 30° से. तापमान ओ सस्त मजदूर धानक खेतीक लेल आवश्यक। जूटक फसिल

लेल 112 मि.मी. मानसून वर्षा, उच्च तापमान, उच्च आर्द्रता ओ जलोढ़ उपजाऊ माटि आवश्यक। जूटक धुलाइक हेतु साफ पानि चाही। मकई आद्रा नक्षत्र (जून-जुलाइ) मे बाउग कयल जाइछ एवं भादो-आश्विन (सितम्बर) मास मे काटल जाइछ। ई दोरस उपजाऊ माटि मे होइछ। एहि जिला मे प्रति हेक्टेयर उर्वरकक खपत 51.0, बिहार मे 58.0 ओ भारत मे 72.0 अछि ओ मुख्य फसिल आगत 29.46, बिहार मे 3017.0 ओ भारत मे 3576.0। तहिना एहि जिला मे प्रति व्यक्ति खाद्यान्न उत्पादन 117.0, बिहार मे 118.0 ओ भारत मे 173.0। उर्वरक खपत ओ खाद्यान्न उत्पादन मे बहुत पछुआएल अछि ई जिला। कृषियोग्य भूमि अछि 1,38,398.45 हेक्टेयर मे। 3644 हेक्टेयर मे बंजर भूमि। धान 52165 हेक्टेयर, गहूंम 31431 हेक्टेयर, मकई 34098 हेक्टेयर, कुसियार 801 हेक्टेयर तथा आलू 1442 हेक्टेयर मे उपजाओल जाइछ। नारियल विकास बोर्डक कार्यालय कार्यरत अछि।

कोसी योजनाक उद्देश्य छल पश्चिम दिस अपसरणशील कोसी के एक निश्चित बाहिका स' प्रवाहित करब, प्रलयकारी बाढ़ि कें रोकब, बाढ़िमुक्त क्षेत्र मे सिंचाइक प्रबंध, विद्युत उत्पादन ओ कोसी घाटीक सर्वांगीण विकास। बाढ़िमुक्त मधेपुरा ओ निकटवर्ती जिला मे 5.60 लाख हेक्टेयर भूमिक पटौनीक लेल पूर्वी मुख्य नहरक निर्माण। मुख्य पूर्वी नहर ओ राजपुर नहरक निर्माण भ' गेल छैक। एहि जिला कें बाढ़ि स' राहत ओ पूर्वी नहर स' पटौनी चालू अछि। 35.75 प्रतिशत भाग मे सिंचाइक व्यवस्था एहि जिला मे भेल छैक। कोसी प्रतिवर्ष 9856मी.[3] अवसाद लाबैत छथि ओ दुनू तटबंधक बीच जमा करैत छथि। फलस्वरूप नदी-तल 1.5-2 मी. उंच भ' गेल छैक। गादक जमाव भ' रहल छैक। प्राचीन पद्धति यथा करीन आदि स' पटौनी सेहो होइछ।

बांस बोरिंग स' सिंचाइक अद्भुत आविष्कार एहि जिला मे भेल सिंहेश्वर स्थानक लालपुर गाम मे। सर्वप्रथम अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बांस बोरिंग स' पटौनीक व्यवस्था चालू भेल। देखा-देखी समस्त इलाका मे प्रचारित भेल। पटौनीक सब स' सस्त व्यवस्था। एहि जिलाक मुसहरिया चौर मे वर्षाकाल मे पानि भरल रहैछ। एहि स' उदाकिशुनगंज वितरणी ओ पुरैनी लघु वितरणीक जल 25 क्युसेक ओ 10 क्यूसेक स्केप करैछ। एहि स' चौर मे जुलाइ स' फरवरी धरि जल भरल रहैत छैक। राज्य सरकार 24 मार्च 2003 कें निर्णय कयलक जे मुसहरिया चौर जलनिकासी योजना कें कार्यान्वित करत जाहि स' मधेपुरा जिलाक 648 हेक्टेयर भूमि कें जलजमाव स' मुक्त कयल जायत। एहि वित्तीय वर्ष मे योजनाक कार्यान्वयन पर 52.55 लाख रुपयाक स्वीकृति प्रदान कयल गेल छैक। कुल सिंचित भूमि 87647.26 हेक्टेयर जाहि मे राजकीय नलकूप स' 870.00 हेक्टेयर मे

सिंचाइ व्यवस्था तथा नहरि स' 32896 हेक्टेयर। बांकी पोखरि आ निजी व्यवस्था स' होइत अछि।

आजुक आर्थिक युगक आधार उद्योगीकरण अछि जाहि मे ई जिला शून्य अछि। संगठित उद्योगक नाम पर किछु नहि। लघु औद्योगिक इकाइक निबंधनक स्थिति एहि प्रकारक अछि। 1994-95 धरि 2106 इकाइ, 1995-96 मे 99 इकाइ, 1996-97 मे 118 इकाइ, 1997-98 मे 126, 1998-99 मे 152, 1999-2000 मे 144 इकाइ एवं 1999-2000 धरि कुल 2745 लघु उद्योग इकाइ राज्य सरकारक ओतय निबंधित भेल छल। कतेक पनपल ओ रूग्ण भेल से आंकड़ा अनुपलब्ध अछि। कृषि आधारित उद्योगक जाल स्थापित करय परत तखनहि आर्थिक स्थिति मे सुधार होयत। जूट उद्योग कें आधुनिक ढंगक मिल स्थापित कय विकसित करय परत। हस्तशिल्प ओ हस्तकरघा कें प्रोत्साहन देब' पड़त। मत्स्य उद्योग कें आधुनिक ढंग पर प्रचारित करए पड़त। खाद्य प्रसंस्करण ओ आधुनिक ढंगक चाउर मिल स्थापित करय परत। मधेपुरा मे प्राकृतिक तेल भंडारक संभावना। सदर डीएसपी आवासक सामने शिविर लगा एक सर्वेक्षण कम्पनी जांच मे लागल। 31 मइ 2003 कें राज्यक उद्योग मंत्री जिला मे उद्योग हेतु जमीन ओ बिजली तत्काल आवंटित करबाक प्रस्ताव देने छथि। दू करोड़ रुपयाक लागत स' केंद्रीय भंडारगृह ओ शीतगृहक निर्माण भ' रहल छैक। एकर क्षमता भंडारगृह मे 5000 टन एवं शीतगृह मे 1000 टन छैक।

एहि जिलाक यातायात व्यवस्था चौपट अछि। सड़क यातायात जनमारा छैक। ओहिना कोसीक दोआब मे सड़क बड़ कम अछि। कारण कोसीक परिवर्तित धार सड़क निर्माण ओ रख रखाब मे पैघ बाधक। भूमि सेहो ठोस नहि। जलजमावक स्थिति। दूटा राष्ट्रीय उच्चपथ, जे मधेपुरा होइत जायत, निमार्णाधीन अछि। पथ संख्या 106-भारत-नेपाल बोर्डर-बीरपुर-मधेपुरा-विहपुर 130 कि.मी. लम्बा (पहिलुक राष्ट्रीय उच्चपथ संख्या 31) दोसर महेशखूंट (एनएच 31)-सोनवरसाराज- सिमरी बख्तियारपुर - बैराही - सहरसा - बैजनाथपुर - मधेपुरा - मुरलीगंज - लम्बाइ 145 कि.मी.। ई सड़क पूर्णिया एन. एच. 31 मे मिल जाइछ। अन्य राज्यक तुलना मे बिहार मे राष्ट्रीय राजमार्गक प्रगति बहुत कमजोर। मुख्य कारण एतय अराजकता आ काज मे बाधा उपस्थित कयल जाइछ। प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना हेतु वित्त वर्ष 2000-2001 मे 149 करोड़ रुपया बिहार कें देल गेल जे मार्च 2003 तक खर्चा नहि भेल। कछुआ चालि स' आजिज केन्द्र सरकार आब केन्द्रीय एजेन्सी स' निर्माण कराओत। डीजल ओ पेट्रोल पर अधिशेष स' निर्मित सेन्ट्रल रोड फंड (सी. आर. एफ.) स' सुपौल-सिंहेश्वरस्थान रोडक जोर्णोद्धार वित्त वर्ष 2002-03 मे कराओल जा रहल

छल। मधेपुरा शहरक सड़क जीर्ण भ' गेल छैक। मधेपुराक भिरखी चौक स' सुखासन वाया कहरा-धवौली होइत बिहारीगंज धरि ओ कहरा मोड़ स' दक्षिण दिस पतरघाट-अतलखा स' चण्डीका स्थान धरि, जे सोनवरसा राजमे मिलैत अछि, सड़कक स्थिति एतेक खराब छैक जे आब कहुना कय पैदल चलल जा सकैछ। वाहन स' यात्रा मृत्यु कें आमंत्रण। एहि सड़क स' मधेपुरा शहर 100 गाम स' जुरल अछि। 2001 मे स्थानीय विकास फंडस' कहरा मोड़ ओ सुखासनक बीच काज शुरु भेल ओ बन्द सेहो कय देल गेल। दिसम्बर 2002 धरि एहि मुख्य सड़कक जीर्णोद्धारक कोनो काज नहि भेल छैक। सड़क यातायातक सुविधा बिना की एहि अंचलक आर्थिक विकास संभव भ' सकत। कथमपि नहि। जिला मे मात्र 317 कि.मी. पक्की तथा 376 कि.मी. कच्ची सड़क अछि।

रेल पथ 32 कि. मी. मात्र सेहो छोटी लाइन। स्टेशन 5-मिठाई, दौरम मधेपुरा, मुरलीगंज, बुधमा, दीनाट्टी तथा हॉल्ट-बिहारीगंज ओ मैरोप।

एहि जिला मे पर्यटन उद्योगक असीम संभावना अछि। एतयक ऐतिहासिक, प्राचीन सभ्यता, संस्कृति ओ सौन्दर्यक अनेक स्थल, खंडहर, तीर्थस्थल एहि उद्योगक विकासक लेल उपयुक्त अछि। एहि स' रोजगारक अवसर, अन्य उद्योगक अपेक्षा अधिक एवं लाभजनक साधन। मौर्यकालीन स्तम्भ, जे उदाकिसुनगंजक सरसन्डी गाम मे अछि मौर्यकालक ऐतिहासिकता कें प्रमाणित करैछ। साहुगढ़ मे सिकन्दर साह कालीन सिक्का पाओल गेल छैक। कुशाण वंशक इतिहास बसन्तपुर ओ रायभीर गाम मे भांट समुदाय मे पाओल जाइछ।

सिंहेश्वर: ई स्थान ग्राम सिंहेश्वरपुर, प्रगन्ना निशंकपुर कुढ़ मधेपुरा स' 4 कि.मी. उत्तर पंडुआमय तथा धसान नदीक संगम स' पश्चिम भाग मे अछि। नदी मे पक्का घाट ओ घाट पर सुप्रसिद्ध शिवमन्दिर। मन्दिर अतिप्राचीन। मिथिला महात्म्य मे उल्लेख अछि जे मिथिलाक परिक्रमा एहि स्थान स' प्रारम्भ हो। कतेको लोक हिनक नाम सींगेश्वरनाथ (शृंगेश्वरनाथ) वराहपुराणक अन्तिम अध्यायक कथाक प्रमाण दैत छथि। किन्तु की एहिठाम एहन कथा स्पष्ट होइछ जे मृगरुपी महादेवक शृंगमूल पाबि भगवान एहि स्थान पर स्थापित कयलनि। एहि आलय मे तरौनी गाम (दरभंगा जिला) निवासी योगीराज रघुवर गोसांइक स्थापित कयल सीता-राम-लक्ष्मण-हनुमानक मन्दिर अछि। ओ गोसाइंजीक रमणीय तथा एकान्त योगकुटी छनि। एहि मन्दिर मे सामूहिक विवाह सम्पन्न करयबाक परिपाटी अछि। धार्मिक मान्यताक मुताबिक राजा दशरथ पुत्रप्राप्तिक लेल शृंगी ऋषि द्वारा एतहि यज्ञ करबौने छलाह। सात हवनकुंड बनल छल जे बगलक सतोश्वर गाम मे अछि। एकर खनन नहि भेल छैक। आठ-दस फीट गहींर मे एक विशाल चट्टान छैक जे शिवलिंग स' जुरल अछि। एकरा कोसी भयानक रूप स' नष्ट नहि कय सकल अछि। फाल्गुनक शिवरात्रि मे बहुत पैघ मेला लगैछ। अन्य उपयोगी पदार्थक अलावा मालजालक मेला सेहो लगैत छैक। ई मन्दिर बिहार राज्य धार्मिक न्यास अधिनियमक अन्तर्गत संचालित होइछ। जिला पदाधिकारी पदेन अध्यक्ष होइत छथि। बिहार राज्य पर्यटन विकास निगम द्वारा 50 लाखक लागत स' पर्यटन भवन 'यात्रिका'क शिलान्यास 10 मइ 1999 मे भेल, किन्तु राजनैतिक उठा-पटकक कारणें कार्य ठप भ' गेल। न्यास समिति द्वारा 15 लाख रुपया लागत स 10 कोठलीक 'आस्था भवन'क काज मार्च 2002 धरि पूरा नहि भेल छैक।

सुखासन : लोकदेव 'खेदन महराज'क जन्मस्थान विकसित नहि कयल गेल अछि।

साहुगढ़ : एहि गाम मे ऐतिहासिक गुप्तकालीन गढ़ अछि। पुरातात्विक गवेषणाक अपेक्षा रखैत अछि।

लालापट्टी : ग्रामीण क्षेत्रक पूज्य लोक देवता 'लाला महाराज'क जन्मस्थानक लेल प्रसिद्ध गाम।

मुरहो : पौराणिक आस्थाक प्रतीक आ बुद्धकालीन सिद्धक स्थल। पुरातात्विक गवेषणाक अपेक्षा।

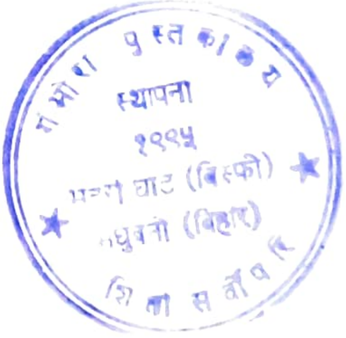
मधुबन : लोकदेव 'सरुप महराज'क निवास स्थान लेल प्रसिद्ध।

निशिहरपुर : मधेपुरा जिला स' 8 कि. मी. पूर्वोत्तर मे अवस्थित गाम। राजा निशिहरक राजधानी लेल प्रसिद्ध। गवेषणा अपेक्षित।

गोलमा : यादव कुलक लोकदेव 'थोथन महराज'क जन्मस्थान लेल प्रसिद्ध।

कोल्हायपट्टी : लोकदेव 'चिल्का महराज' क जन्मस्थान। मुरलीगंजक ई गाम प्रसिद्ध अछि।

■



खगड़िया

खगड़ियाक प्राकृतिक स्थिति पूर्वोत्तर रेल लाइन बनलाक बाद बदलल। अन्यथा बागमती एवं कोसीक पानि सोझे सन्हौली होइत बूढ़ीगंडक ओ गंगा मे मिल जाइत छल। नदीक ई चिह्न एखनो नाला ओ जलाशयक रूप मे रेलवे लाइनक दुनू कात देखल जा सकैछ। 1944मे ई अनुमंडल बनल। एकर एक विशेषता छल एक धरती, एक परगना, एक थाना, एक अनुमंडल-गोगरी। 10 मइ 1981कें खगड़िया कें जिला बनाओल गेल। तीनटा अनुमंडल-खगड़िया, जमालपुर एवं गोगरी। एहि जिला मे सातटा प्रखंड एवं 1320 पंचायत अछि। चौथम मे 14 पंचायत, अलौली मे 23, बेलदौर मे 16, परवत्ता मे 22, गोगरी मे 24, खगड़िया मे 26 तथा मानसी मे 7 पंचायत अछि। एहि जिलाक बनावट कटोरी सदृश अछि। फलत: बूढ़ी गंडक, बागमती, करेह, कोसी नदीक विशाल जल राशि एतय आबि कय रुकि जाइछ। खगरा घासक बहुलताक कारणें एकर नाम खगड़िया पड़ल। चौथम ओ गोगरी नामक पाछू नदीक पानिक भूमिका बुझा रहल अछि। एतय चारु दिस स' पानि आबि कय थम्हि जाइत अछि। गंगा, कोसी ओ बूढ़ी गंडक मुख्य नदी अछि। कुल क्षेत्रफल 1486 वर्ग कि.मी. मे पसरल अछि। ई क्षेत्र 21 0 58' 10" ओ 27° 31' 15" उत्तरी अक्षांश तथा 83° 19' 50" ओ 88° 17' 40" पूर्वी देशान्तरक बीच अवस्थित अछि।

वर्ष 2001क जनगणना मे एहि जिलाक कुल जनसंख्या 12,76,677 अछि जे 1991मे 9,86,731 छल।

अर्थात् गत दस वर्ष मे 2,89,946 वृद्धि भेल। ई वृद्धि 29.38 प्रतिशत अछि। बिहार मे 28.43 प्रतिशत वृद्धि भेल ओ समस्त देश मे मात्र 21.34 प्रतिशत। कुल पुरुष 6,75,501 एवं महिला 6,01,176 छथि। कुल साक्षरता एहि जिला मे 41.56 प्रतिशत। पुरुषक साक्षरता 52.02 प्रतिशत एवं महिला साक्षरता 29.62 प्रतिशत अछि। जनसंख्याक घनत्व 859, बिहार मे 880 ओ सम्पूर्ण देशक मात्र 324 छैक। प्रति हजार पुरुष पर महिलाक संख्या एतय 890 छैक। जनसंख्या वृद्धि स' श्रमशक्ति बढ़ैछ मुदा श्रम दिवसक अभाव मे बेरोजगारी मे वृद्धि होइछ। उद्योग-धंधाक अभाव मे बेकारी बढ़ि रहल अछि।

बूढ़ी गंडक नदी सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग हरहा दर्राक समीप 900 वर्गमील सम्प्रसारक संग चंपारण स' खगड़िया धरि 580कि.मी. लम्बा बहैत अछि आ एहि जिलाक दक्षिण-पश्चिम गंगा मे विलीन भ' जाइछ। चम्पारण स' खगड़िया धरि 415कि.मी. बाढ़ि सुरक्षा तटबंध दुनू कात बनल छैक। एहि तटबंध स' एहि जिला कें बाढ़ि स' सुरक्षा भेल छैक। मुदा, नहरि निकालि सिंचाइक व्यवस्था स' ई क्षेत्र वंचित अछि। 1987मे भयंकर बाढ़ि आयल छल। विनाशक पछिला रेकर्ड तोड़ि देलक। बागमती हायाघाटक पूब करेह नदीक मार्ग स' प्रवाहित होइत एहि जिलाक खोरमा घाट मे कोसी स' मिल जाइछ। एहि नदीक लम्बाइ 589कि.मी. काठमांडू घाटी स' कोसी संगम धरि अछि। जल संसाधन विभाग, बिहार सरकार एहि जिलाक बाढ़ि सुरक्षात्मक काज पर 4.27 करोड़ रुपयाक व्यय जनवरी 2003मे कयलक अछि। 150 स्टेट ट्यूबवेल मे 80 प्रतिशत खराबे अछि। 8070 निजी नलकूप स' सिंचाइ होइछ।

नदीक एहि क्रीड़ा-क्षेत्र मे नदी द्वारा लायल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल अछि माटि। बाढ़ि ओ जलाप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे एहि क्षेत्रक माटि अत्यधिक नरम होइछ। जलीय प्रक्रिया द्वारा नदीक कछेड़ मे वाहित बालु ओ दोआब क्षेत्र मे सूक्ष्म गाद तथा मृतिकाक निक्षेप पाओल जाइछ। एहि क्षेत्रक माटि साधारण उपजवला अछि।

प्राकृतिक वनस्पति वनक रूप मे पाओल जाइछ। प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। रेल मार्ग, सड़क विकास, औद्योगिक विकास, भवन निर्माण, कृषि प्रसार तथा अबैध कटाइक कारणें वन-क्षेत्रक अतिक्रमण भेल छैक। वनक कटाइ स' भूमि-क्षरण ओ पर्यावरण असंतुलनक समस्या बढ़ि गेल छैक। सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी ओ वनरोपण तथा वनरक्षणक दिशा मे प्रयास भेल अछि। सम्प्रति वृक्षक कटाइ

पर क्रमबद्ध रूप स' आंशिक प्रतिबंध सरकार द्वारा लगाओल गेल छैक। जिलाक कुल क्षेत्रफल 1486 वर्ग कि.मी.मे मात्र 50.10 कि.मी. वन क्षेत्र अछि, जखन कि पर्यावरण संतुलनक दृष्टि स' 33 प्रतिशत क्षेत्र मे वन रहयक चाही, जे मात्र 3.37 प्रतिशत अछि।

भूमि मानवक अस्तित्वक लेल आधार प्रदान करैछ ओ ओकर अस्तित्वक रक्षा सेहो। भूमि पर मनुष्य अपन आवास, कृषि कार्य, आवागमनक साधनक प्रसार तथा उद्योग-व्यवसायक निर्माण करैत अछि। एहि तरहें भूमि मानवक प्रत्येक क्रिया-कलापक आधार थिक। एहि जिलाक भूमि मे मुख्यत: दू फसिल होइत अछि। 33 प्रतिशत स' अधिक भूमि एहि तरहक अछि। लगभग सब कृषि योग्य भूमि मे कृषि कार्य होइत छैक। कृषि उत्पादन मे वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार आ आयक अवसर मे वृद्धि तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त करबाक लेल कृषिक आधुनिकीकरण परमावश्यक अछि। सम्यक आर्थिक विकास कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि द्वारा संभव। धान, गहूम,मकई ओ जूट मुख्य फसिल अछि। धान प्रमुख फसिल अछि जाहि मे अगहनी प्रधान। गरमा फसिल (ग्रीष्मकालीन) सेहो कयल जाइछ। भदै धान सेहो होइछ। दलहन आ साग-सब्जी सेहो उपजाओल जाइत अछि। मकईक फसिल उत्तम होइत छैक। गहूम उपजाओल जाइछ एवं एक प्रमुख खाद्यान्न चना सेहो होइछ। जूट वाणिज्यिक फसिल होइत छैक। जनवरी 2000मे एहि जिलाक 1,68,847.44 एकड़ मे रब्बी, 35,328.76 एकड़ मे गरमा, भदै 29.827.27 एकड़ तथा अगहनी 689.77 एकड़ भूमि मे भेल छल। 44.33 प्रतिशत भूमि मे पटौनीक व्यवस्था अछि। मिलियन शैलो ट्यूबवेलक भौतिक लक्ष्य छल 728 जाहि मे दिसम्बर 2002 धरि उपलब्धि 148 भेल।

एहि जिला मे कृषि समस्याग्रस्त अछि। बाढ़िक प्रकोप, उत्तम बीज ओ उर्वरक, कृषि उत्पादक उचित मूल्य, कृषि मजदूरक समस्याक उचित समाधान नहि भेल छैक। लगभग 75 प्रतिशत किसान जिनका कृषि भूमि छनि, कृषि कार्य नहि करैत छथि। कृषि काज करैत छथि भूमिहीन, दलित ओ सीमान्त किसान जे सामान्यत: पिछड़ल जातिक छथि। कृषि-कार्य करबाक हेतु जे तत्पर छथि हुनका भूमि नहि देल गेल छनि। अतिरिक्त भूमिक वितरण राज्य सरकारक विधान मे मात्र अछि। जे जमीन जोतताह वैह जमीनक मालिक घोषित नहि कयल गेल छथि। अतिरिक्त भूमिक वितरण नहि भेल छैक। एहि जिला मे 2645.08 एकड़ जमीन भूदान मे प्राप्त भेल छल तथा 1856.12 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच वितरित कयल गेल अछि।

खगड़िया जिला मे निबंधित लघु औद्योगिक इकाइ मार्च 2000 धरि 2037 छल, जाहि मे 740 इकाइ बन्द परल अछि। संगठित उद्योग नहि छैक।

मशरुम उत्पादन, औषधीय पौधाक उत्पादन कयल जाइछ। एहि पौधाक उत्पादन मे एक एकड़ मे 25,000 हजार रुपया खर्च पड़ैत छैक। 6 मासक बाद फसिल तैयार आ लाभ 4 लाख रुपया स' ऊपर होइत छैक। केरा, एकबैरा, जाम, जेली, अचार, मिनरल वाटर, डिब्बा बन्द फल ओ सब्जी उद्योगक एहि जिला मे पूर्ण संभावना छैक। जिलाक परवत्ता, चौथम एवं गोगरी प्रखंड मे व्यापक स्तर पर केरा, टमाटर, लीची, मकई, आम आधारित वृहत, लघु एवं कुटीर उद्योग शुरू कयल जेबाक चाही।

जिला मे सड़क यातायात दयनीय अछि। गोगरी-जमालपुर मुख्य सड़क शहीद चौक स' मुश्किपुर कोठी धरि खाधि बनि गेल अछि। सांसद कोटा स' बनबाक योजना बनल। गोगरी-कौआकोल धरि पक्की सड़कक अभाव। मात्र 3 कि.मी. सड़क बनला स' महेशखूंटक दूरी 2 कि.मी. कम भ' जायत। रजिस्ट्री मोड़ स' गोगरी नारायणपुर बांध धरि सड़कक खस्ताहाल अछि। बेलदौर प्रखंडक सड़क कोसी, बागमती, कारी कोसीक बाढ़ि स' ग्रसित रहलाक कारणें दयनीय छैक। बेलदौर स' पीरनगरा एन.एच. 107कि.मी. एवं आर.आइ.ओ. पथ रोहियामा होइत जोरो माइल धरि 9 कि.मी. अत्यन्त खराब छैक। जनवरी 2001 के परवत्ता प्रखंड मे सुनिश्चित रोजगार योजनाक अन्तर्गत 4,35,300 रुपयाक लागत स' सड़क बनाओल गेल। नदीक धार सड़क निर्माण मे बाधक छैक। सड़क निर्माणक हेतु आवश्यक पदार्थक अभाव। भूमि ठोस नहि। बारम्बार बाढ़िक आगमन, जलजमाव, सड़क कें बाढ़ि मे डूबब, सदानीरा नदीक बहुलता सड़क निर्माणक मार्ग मे पैघ बाधा अछि। किन्तु सब सुविधा-असुविधा कें विचारि सुन्दर सड़क यातायातक व्यवस्था करहि परंत। अन्यथा ई अंचल आर्थिक दृष्टि स' पिछड़ल अछिये आर पिछड़ि जायत। बेलदौर प्रखंडक डुमरीपुल 1,35,000 रुपया, लगमा सड़क निर्माण 4,81,200 रुपया ओ झड़फौरा मे 3,82,000 रुपयाक लागत स' सड़क जनवरी 2001मे बनल छल। प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजनाक अन्तर्गत कतेको योजना स्वीकृत छैक। जकरा पक्की सड़क स' 2003 धरि जोड़बाक छलैक सब योजना जनवरी 2004 धरि लसकल अछि। एन. एच. 31, जे जिला कें राजधानी स' जोड़ैत अछि, रखरखाव दयनीय अछि। खगड़िया एवं मुंगेरक बीच रेल सह सड़क पुलक निर्माण 26 दिसम्बर 2002कें प्रारम्भ भ' गेल छैक जकर लम्बाइ 3190 मीटर छैक। अनुमानित लागत 921 करोड़ रुपया।

रेल यातायात एखन धरि एहि अंचल कें जिला मुख्यालय स' बहि जोड़ने अछि। बड़ी आ छोटी दुनू रेललाइन अछि। बड़ी लाइन मे नयी दिल्ली-गुवाहाटी एन.इ.एक्सप्रेस, दिल्ली-कटिहार-न्यू जलपाइगुड़ी-सिक्किम महानन्दा एक्सप्रेस, जम्मू-तवी-गुवाहाटी लोहित एक्सप्रेस, दिल्ली-गुवाहाटी

अवध आसाम एक्सप्रेस, दादर गुवाहाटी एक्सप्रेस, मुख्य ट्रेन अछि। छोटी लाइन मे समस्तीपुर-कटिहार एक्सप्रेस, समस्तीपुर-कटिहार जानकी एक्सप्रेस, हरिहरनाथ एक्सप्रेस, समस्तीपुर फारबिसगंज कोसी एक्सप्रेस मुख्य गाड़ी अछि।

आजुक युग मे बिजलीक बिना विकास संभव नहि। एकटा ग्रिड सब-स्टेशन अछि तथा पाँच मेगावाट बिजली आपूर्तिक क्षमता। मुदा एक मेगावाट उपलब्ध नहि होइछ। 5 अप्रैल 2004कें परबत्ता प्रखंडक महदीपुर मे 33/11 केवीक विद्युत सबस्टेशनक शिलान्यास कयल गेल छैक।

केन्द्र सरकार देशक अत्यन्त पिछड़ल ओ निर्धनतम जिलाक पहचानक लेल अक्टूबर 2002मे इ.ए.एस. सरमाक अध्यक्षता मे एक कमेटी गठन कयलक जे देशक 100 जिला कें एहि श्रेणी मे वर्गीकृत कयलक, जाहि मे खगड़िया जिला सेहो अछि। एकर निवारणक हेतु नव संरचनाक सृजन तथा पुरान संरचनाक रख रखावाक अनुशंसा कयल गेल। किन्तु, एहि दिशा मे कोनो काज नहि भेल। जून 2002मे बीस-सूत्री कार्यक्रमक मूल्यांकन कयल गेल जाहि मे मुख्य रुप स' गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम अछि। खगड़िया जिला 40 प्रतिशत अंक हासिल कयलक। स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजनाक भौतिक लक्ष्य मे 2107 स्वरोजगारी छल जाहि मे जनवरी 2003 मे 804 उपलब्धि भेल, ऋणक राशि छल 144.45 लाख रुपया ओ अनुदानक राशि 96.30 लाख रुपया।

राज्य सरकार पर्यटन कें उद्योगक श्रेणी मे रखने अछि। किन्तु एहि जिलाक सांस्कृतिक धरोहरि मात्र इतिहासक पन्ना मे शोभायमान अछि।

- **अलौलीगढ़** : प्राचीन राजगढ़क खंडहर 100बीघा मे पसरल अछि। भवन ओ मूर्त्ति सुरक्षा हेतु लालायित छैक। एकरा दर्शनीय पर्यटन-स्थल बनाओल जा सकैछ।
- **गोगरी जमालपुर** : हस्तकरघाक लेल प्रख्यात अछि। एकर विकास जरूरी छै।
- **बखरी सलौना** : जादू-टोनाक लेल प्रसिद्ध।
- **चुकनी** : छत्री यादवक निवासस्थान लेल प्रसिद्ध।

■

बेगूसराय



बेगूसराय कें 2 अक्टूबर 1972मे जिला बनाओल गेल आ जिला मुख्यालय बेगूसराय मे अछि। 6 जनवरी 1870मे एकरा अनुमंडल बनाओल गेल छल। एखन ई जिला मुंगेर प्रमंडलक अधीन अछि। पाँच अनुमंडल-बेगूसराय, तेघड़ा, बलिया, मंझौल, बखरी। एहि जिला मे 18 प्रखंड एवं कुल 244 पंचायत अछि। खोदावन्दपुर मे 8 पंचायत, तेघड़ा मे 23, भगवानपुर मे 15, बरौनी मे 24, साहेबपुर कमाल मे 17, चेरिया बरियारपुर मे 14, बछवाड़ा मे 18, बलिया मे 18, मटिहानी मे 16, बेगूसराय मे 22, गढ़पुरा मे 9, नावकोठी मे 8, छौड़ाही मे 10, डंडारी मे 9, वीरपुर मे 4, बखरी मे 12 तथा साम्हो अकहा कुरहा मे 1 पंचायत। 1918 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे पसरल। 21°58'10" आर 27°31'15" उत्तर अक्षांश तथा 83° 19' 50" आर 88° 17' 40" पूर्वीय देशान्तरक बीच विस्तृत। एहि जिलाक उत्तर मे समस्तीपुर जिला, पूब मे खगड़िया, दक्षिण मे लखीसराय-मुंगेर तथा पश्चिम मे पटना जिला अछि। एहि जिला मे गंगा, बूढ़ीगंडक ओ कमला प्रमुख नदी बहैत छथि। नदीक निक्षेप स' बनल समतल मैदान। जलवायु उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी समशीतोष्ण कटिबंध मे स्थित अछि। तेँ जलवायु उपोष्ण एवं आर्द्र। तीन ऋतु शीत, ग्रीष्म एवं वर्षा। अक्टूबर स' फरवरी शीत, मार्च स' 15 जून तक ग्रीष्म तथा मध्य जून स' अक्टूबर तक वर्षाकाल रहैछ। 1100-1300 मि.मी. वर्षा होइछ। 180 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे पोखरि अछि तथा 7000 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे चौर छैक।

वर्ष 2001क जनगणना मे जनसंख्या 23,42,[illegible]

आंकल गेल जे 1991मे 18,13,214 छल। वृद्धि भेल 5,29,775 अर्थात् 29. 22 प्रतिशत। कुल पुरुषक संख्या अछि 12,26,057 तथा कुल महिला छथि 11,16,932। जनसंख्याक घनत्व 1222 जे बिहार मे 880 एवं देश मे मात्र 324। प्रति हजार पुरुष पर महिलाक संख्या एहि जिला मे 911 अछि। पुरुष साक्षरता 72.82 एवं महिला साक्षरता 40.36 प्रतिशत अछि, जखन कि औसत कुल साक्षरता एहि जिला मे 56.49 प्रतिशत अछि। एहि अवधि मे बिहारक साक्षरता अछि 60.32 प्रतिशत।

एहि जिला मे गंगाक दिआराक माटि प्रधानतः बलुआही अछि। बूढ़ी गंडक बेसिन मे मृतिका पाओल जाइछ जे खूब उपजाऊ अछि। बाढ़ि ओ जलाप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि अत्यधिक नरम पाओल जाइछ। नदीक तट ओ दिआरा मे जतय हर वर्ष जलाप्लावन होइछ, बालूक संग सूक्ष्म गादक निक्षेप होइछ। एहि मे उत्तम जल संचार पाओल जाइछ। बूढ़ीगंडक, बैती बलान, बाचा एवं चन्द्रभागा नदीक कछेरक भूमि उर्वरा शक्तिक दृष्टि स' एहि जिलाक मुख्य भूमि अछि।

प्राकृतिक वनस्पति आइ समस्याग्रस्त अछि। रेल मार्ग, सड़कक विकास, औद्योगिक विकास, भवन निर्माण, कृषि प्रसार तथा अवैध कटाइक कारणें वन-क्षेत्रक अतिक्रमण भेल छैक। वन कटि गेला स' भूमिक्षरण आ पर्यावरणक समस्या मे वृद्धि भेल। वर्तमान मे वृक्षक कटाई पर क्रमबद्ध रूप स' आंशिक प्रतिबंध छैक। सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी तथा वनरोपन वन-रक्षणक दिशा मे प्रयास भेल अछि। कुल भौगोलिक क्षेत्रक 40.20कि. मी. वन क्षेत्र अछि जे मात्र 2.09 प्रतिशत अछि।

जलवायु आ माटि कृषिक प्रधान नियंत्रक। मकई, गहूम, धान तथा मिरचाइ प्रमुख फसिल अछि एहि जिलाक, जाहि मे मकई प्रथम फसिल। वर्ष मे तीन खेप मकई उपजाओल जाइछ। मकइ 74646 हेक्टेयर मे, गहूम 54204 हेक्टेयर, धान 17,848 हेक्टेयर, मिरचाइ 7427 हेक्टेयर, राहड़ि 7453 हेक्टेयर, बदाम 7631 हेक्टेयर, सकरकन्द 4166 हेक्टेयर, कुसियार 12,000 हेक्टेयर, मटर 2212 हेक्टेयर, अण्डी 1447 हेक्टेयर मे अण्डी होइछ। अर्थात खाद्यान्न, दलहन, तेलहन एवं वाणिज्यिक फसिल सब होइछ। मंझौल एवं बखरी अनुमंडल मे कुसियार उपजाओल जाइछ एवं हसनपुर चीनी मिल कें देल जाइछ। मिरचाइ अगहनी फसिल अछि। सालोभरि उपजाओल जाइछ। अधिकांश मिरचाइक खेत मे हरदि, धनी, लहसुन, सौंफ आद संगहि संग उपजाओल जाइछ। सूर्यमुखी सेहो आब होइछ। जोतक आकार छोट अछि। प्रति हेक्टेयर उर्वरक खपत 170 जे सम्पूर्ण बिहार मे 58 तथा देश मे 72। अर्थात उर्वरक खपत सब स' बेसी एहि जिला मे। प्रतिहेक्टर मुख्य फसिल आगत 3301, बिहार मे 3017 तथा सम्पूर्ण भारत मे 3576। यदि सब तरहक सुविधा कृषि कें उपलब्ध हो त' ई जिला

फसिल उत्पादन मे पंजाब ओ हरियाणा स' अगुआ जायत।

एहि अंचलक कृषि समस्याग्रस्त अछि। बाढ़ि, रौदीक अलावा उत्तम बीज, उर्वरक, कृषि उत्पादक उचित मूल्य, कृषि मजदूरक समस्या महत्वपूर्ण अछि। परम्परागत अनुकूल बीजक चयन कयल जाइछ। किन्तु विश्व व्यापार संगठनक अधीन बहुराष्ट्रीय कम्पनी एहि तरहक बीज आनि रहल अछि जकर उपयोग एकहि बेर कयल जाइत छैक। कृषक कें प्रत्येक बेर बीज खरीदय परै छनि, जाहि मे 80 प्रतिशत किसान सक्षम नहि छथि। उर्वरक देश मे कमी अछि, तथापि केन्द्रीय सरकार द्वारा संचालिय खाद कारखाना, जे बरौनी मे छल, बन्द कय देल गेल छैक। तहिना कृषि मजदूरक समस्या विकराल रूप धारण कयने अछि। अधिकतर किसान, जिनका लग कृषि भूमि छनि स्वयं खेती नहि करैत छथि। भूमिहीन, दलित ओ सीमान्त कृषक जे पिछड़ल छथि वैह खेती करैत छथि। मजदूरक गतिशीलता बढ़ल अछि। बाहर चल जाइत छथि। भूमि सुधार नहि भेल छैक। अधिक भूमि जिनका लग छनि आ अवैध ढंग स' रखने छथि ओकरा भूमिहीनक बीच बांटल नहि गेल छैक। भूदान मे 2196.73 एकड़ भूमि एहि जिला मे उपलब्ध भेलै। एकर राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग खतियान तक ठीक नहि कयने अछि। किनका स' कतेक, कोन जमीन एवं वितरणक रेकर्ड तक नहि तैयार कयल गेल अछि। भूदान मे उपलब्ध जमीनक कुल 1081.44 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच बांटल गेल छैक।

आधुनिक ढंगक खेतीक हेतु समुचित सिंचाइ व्यवस्था परमावश्यक। एहि हेतु एहि अंचल मे पांच नदीक जलभंडार उपलब्ध अछि। गंगा नदी-बछबाड़ा, तेघड़ा, बरौनी, बेगूसराय, मटिहानी, बलिया एवं साहेबपुरकमाल प्रखंड स'। बूढ़ीगंडक-खोदाबंदपुर, चेरिया बरियापुर, भगवानपुर, बखरी, बेगूसराय, बलिया एवं साहेबपुरकमाल प्रखंड होइत। बेतीबलान-बछवाड़ा, भगवानपुर एवं बरौनी होइत। बाया-बछबाड़ा, तेघड़ा, बरौनी एवं भगवानपुर होइत। चन्द्रभागा-खोदाबंदपुर, चेरिया बरियापुर एवं बखरी होइत बहैछ। एहि पांचो नदी सब स' उद्वह पटौनीक व्यवस्था कयला स' अनुमानतः एक लाख एकड़ अतिरिक्त भूमि सिंचित कयल जा सकैछ। 1999मे 140 राजकीय नलकूप बनल। एकर अतिरिक्त कतेको नलकूप एहि क्षेत्र मे लागल अछि। नलकूपक विद्युतीकरण तथा पक्का सिंचाइ नालाक काज सेहो भेल अछि। 35.65 प्रतिशत अर्थात 683.77 वर्ग कि.मी. भूमि एहि जिलाक सिंचित अछि। भूमिबंधक बैंक, राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा कृषक कें कृषि ऋण उपलब्ध करयबा मे लघु सिंचाइक माध्यम स' ई.आर.पी. सेट द्वारा विभिन्न नदी एवं जलाशय स' पटौनीक अभियान, बांस बोरिंग, चापाकल एवं पम्पसेट ऋण प्रदान कय पटौनी सुविधाक अभियान स' कृषि विकासक मार्ग मे प्रशंसनीय काज भेल अछि। बछबाड़ा स' साहेबपुर कमाल धरि दिआरा

कृषकक हेतु 100 करोड़ रुपयाक योजना छल, किन्तु 1996-97मे 35 करोड़ रुपया आयल जकर उपयोग नहि भेल। एहि क्षेत्रक कृषकक हेतु ई लाभकारी योजना एखन धरि यकथक परल अछि।

मिथिलांचलक एकमात्र जनपद बेगूसराय अछि, जतय औद्योगिक सूर्यक उदय भेल छल। औद्योगिक विकास भ' रहल छलैक मुदा एखन गति बहुत शिथिल भ' गेल छैक। सार्वजनिक उपक्रम अछि- बरौनी तेलशोधक कारखाना- बरौनीक समीप तेघड़ा थानाक जमीरा गाम मे एहि प्रतिष्ठानक निर्माण भेल। 1995मे 950 करोड़ रुपयाक लागत स' काज शुरू भेल। बिहार सरकार 50 लाख रुपया भूमि अर्जन, 5 लाख टाका 100 विस्थापित परिवार कें बसयबा मे तथा 20 लाख टाका बरौनी नगर कें बनयबा मे खर्च कयलक। भारतीय तेल शोधक कारखाना हथिदह मे गंगा पुल योजना स' 15 लाख रुपया मे मकान सब कीनलक। सड़क निर्माण मे पर्याप्त टाका व्यय कयल गेल। राजेन्द्र सेतु स' कारखाना कें जोरि देल गेल। एहि तेलशोधक कारखानाक कार्यक्षमता छल 3 मिलियन टन जे बाद मे 4.2 मिलियन टन भ' गेल। सम्प्रति 6 मिलियन टन कयल गेल अछि। इन्डियन एक्सप्लोसिव लिमिटेडक कानपुर प्रतिष्ठान कें नेप्थाक आपूर्त्ति एतय स' कयल जाइछ। पाराफोन वैक्स एवं अल्फोलेफनक, जे औषधि एवं सुगन्धित पदार्थ बनयबा मे काज अबैछ, उत्पादन आब संभव भ' गेल छैक। भारतीय तेल निगम संयुक्त क्षेत्र मे कुबैत पेट्रोलियम कम्पनीक संग 1105 कि.मी. लम्बा पाइप लाइन 1500 करोड़ रुपया लागत स' पेट्रोनेट इंडियाक संग बनल योजना पर काज चलि रहल छैक। 2002-03 धरि योजना पूरा हेबाक छल। फलस्वरूप अपन क्षमता स' बेसी अशोधित तेल 498कि.मी. बरौनी-हल्दिया पाइल लाइन स' उपलब्ध होयत। 1.5 एम.टी.पी.ए. आसाम बनगाई गांव तेलशोधक कारखाना कें दय देत। हल्दिया जेटीक क्षमता 20,000 स' 30,000 टन बढ़ाओल जा रहल छैक। पुन: एकर कार्यक्षमता मे वृद्धि कयल जा रहल छैक जाहि पर 1700 करोड़ रुपया खर्चक अनुमान छैक। अपना जरूरत स' अधिक ऑप्टिकल फाइबर केबुल टेलीफोन संचार कम्पनी कें आपूर्ति करत। मार्च 2003कें रिफाइनरी परिसर मे 19.20 करोड़ रुपयाक लागत स' एल.पी.जी. बॉटलिंग प्लान्टक आधारशिला राखल गेल। लगभग दू साल मे ई बनिकय तैयार होयत। एहि आधुनिकतम प्लान्टक क्षमता 44,000 मैट्रिक टन प्रतिवर्ष आ 10,500 सिलिंडर प्रतिदिन भरल जायत। 19.2 किलो, 14.2 किलो तथा 5 किलोक सिलिंडरक बॉटलिंग होयत। एकर पूरा लाभ समस्त मिथिलांचल कें भेटत। एहि क्षेत्रक ई पहिल बॉटलिंग प्लान्ट होयत। जनवरी 2002मे ब्रिटिश सेफ्टी परिषद एहि तेलशोधक कारखाना कें 'फाइव स्टार सेफ्टी' पारितोषिक देलक। ओहि स' पूर्व 1999 आ 2000 मे 'नेशनल सेफ्टी एवार्ड' सेहो एकरा भेटल छैक। वित्तीय वर्ष

2001-02 मे एहि उपक्रम स' राज्य सरकार कें 60 करोड़ रुपया इन्ट्री टैक्स प्राप्त भेलैक।

बरौनी खाद कारखाना : ई हिन्दुस्तान उर्वरक निगमक इ एकटा इकाइ अछि। एहि कारखानाक निर्माण ओ आधारभूत संरचना पर 1200 करोड़ रुपया खर्च भेल छैक। प्रतिवर्ष 3 लाख 30 हजार मेट्रिक टन उत्तम कोटिक यूरियाक उत्पादन होइत छल। 700 एकड़ भूमि मे ई कारखाना पसरल अछि। 1200 स' अधिक श्रमिक एहि मे कार्यरत छलाह। ई 1992मे रुग्ण भ' गेल। बी.आई.एफ.आर. मे नवीकरणक प्रस्ताव राखल गेल। बन्द करबाक आदेश भेटल। एकर विरोध मे औद्योगिक ओ वित्तीय पुनर्निमाण अपीली प्राधिकरण मे अपील कयल गेल। राज्य सरकार केन्द्रीय सरकार स' एकरा चालू करबाक हेतु अनुशंसा कयने अछि। नियमत: 9 वर्षक अन्तराल पर खाद कारखानाक नवीकरण अत्यावश्यक होइछ जे नहि कयल गेल। एकटा अनुशंसाक अनुसार 156 करोड़ रुपयाक लागत स' 4,00,000 टनक जगह 10,00,000 टन क्षमता संभव। एहि 6,00,000 टन अधिक उत्पादन स' 540 करोड़ रुपया ओ 15 करोड़ डालरक बचतक संभावना अछि। सम्प्रति एहि कारखानाक जीर्णोद्धार पर 332 करोड़ रुपया खर्चक अनुमान अछि। केन्द्र सरकार कर्मचारीक स्वैच्छिक सेवानिवृतक लेल 30 करोड़ रुपयाक पैकेज देने अछि। कृषि प्रधान मिथिलांचलक एकमात्र कारखाना सेहो रुग्ण परल अछि।

बरौनी ताप विद्युत केन्द्र : 1962-63मे 15 मेगावाट क्षमताक तीनटा इकाइ बनल। एहि मे एक तेल स' आ दूटा कोयला स'। बिजली उत्पादन करैत छल। 1969-70मे 50-50मेगावाट क्षमतावला आओर दूटा इकाइ बनल। प्रदूषण नियंत्रण स' संबंधित एक मशीन ईएसपीक अभाव मे ई बन्द परल अछि। पुन: 1986मे 110-110 मेगावाट क्षमतावला दूटा इकाइ चालू कयल गेल। एहि तरहें बरौनी ताप विद्युत केन्द्रक कुल उत्पादन क्षमता 365 मेगावाट भ' गेल, किन्तु सम्प्रति 40 मेगावाट स' अधिक उत्पादन नहि होइछ। पहिल तीनू इकाइ जर्जर भ' गेल छैक। 50 मेगावाटक एक इकाइ तकनीकी गड़बड़ी स' बन्द अछि। अर्थात् कुल 365 मेगावाट उत्पादन क्षमता मे 95 मेगावाट क्षमता उत्पादनवला इकाइ रुग्णे अछि। 6-7 साल स' रखरखाव ठीक स' नहि भेल छैक। एकर उत्पादन क्षमता मे वृद्धिक हेतु केन्द्र सरकार स' 300करोड़ रुपया मांग कयल गेल अछि। मार्च 2003 धरि 45 करोड़ रुपयाक लागत स' 70-80 मेगावाट बिजली उत्पादनक योजना छल। एकर परिणाम जुलाइ 2003 धरि शून्य अछि। बेगूसराय बिजलीक संबंध मे एहन केन्द्र अछि जे पूर्णिया स' 220 के.वी. लाइन स' जुड़ल तथा मुजफ्फरपुर-बेगूसराय आ बिहारशरीफ-हथीदह बेगूसराय 200 के.वी. लाइन पावर ग्रिड कारपोरेशनक माध्यम स' जुड़ल अछि। मुदा ग्रिड निर्माण नहि

कयल गेल छैक, जाहि स' 220 के.वी.कें 120 के.वी.मे 'पावर कनवर्ट' लाभदायक नहि। राज्य सरकार एहि 365 मेगावाट क्षमतावला विद्युत केन्द्रक उचित रखरखावक अभाव मे विद्युत संकट स्वयं उपस्थित कयने अछि।

बरौनी संयुक्त दूध प्लान्ट : एहि दूध प्लान्टक निर्माण बिहार राज्य डेयरी डेवलपमेन्ट निगम द्वारा कयल गेल छल जकरा 1983-84मे गुजरातक आनन्द पैटर्न पर श्वेत क्रान्ति कें सफल बनयबाक हेतु बिहार स्टेट को-आपरेटिव मिल्क प्रोड्यूसर्स फेडरेशन अपना अधीन मे कयलक। एकरा पूर्ण विकसित कयल गेल छैक। घीक हेतु ई महत्वपूर्ण अछि। दूधक संग पाउडर दूध सेहो तैयार कयल जाइत छल। आब दूध स' निर्मित विभिन्न प्रकारक मिष्ठान बनैत अछि। 45,000 दुग्ध उत्पादक किसान एहि मे सहकारिताक माध्यम स' संलग्न छथि, किन्तु हुनका दूधक उचित मूल्य नहि देल जाइत छनि। मात्र 7-8 रुपया जखन कि स्वयं 14-15 रुपया प्रति लीटर बेचैत अछि। एहि इकाइक क्षमता 1,00,000 लीटर प्रतिदिन छल। आब 30 प्रतिशत दूधसंग्रह, 32 प्रतिशत विक्रय, 16 प्रतिशत चारा बिक्री आ 8 प्रतिशत वार्षिक वृद्धिक लक्ष्य रखने अछि। ई उद्योग सन्तोषजनक विकास कय रहल अछि। निजी क्षेत्र मे छोट-छोट दूधक प्रतिष्ठान सेहो कार्यरत अछि।

कागतक दूटा मिल-बरौनी पेपर इन्डस्ट्रीज लिमिटेड एवं जय चन्द्रिका पेपर मिल्स लिमिटेड, बरौनी कार्यरत अछि। पहिल मिलक कार्यक्षमता 2250 टी.पी.ए. अछि। ई क्राफ्ट पेपर बनबैत अछि। दोसर जयचन्द्रिका पेपर मिलक कार्यक्षमता 1950 टी.पी.ए.। दुनू मिल निजी क्षेत्र मे कार्यरत अछि मुदा पूर्ण विकसित नहि कहल जा सकैत अछि।

लघु उद्योगक समुचित विकास एहि जिला मे नहि भेल। मार्च 2000 धरि एहि जिला मे 4667 लघु औद्योगिक इकाइक निबंधन बिहार सरकारक उद्योग विभाग द्वारा भेल छैक। जी.आइ.पाइप्स, इलेक्ट्रिक सीमेन्ट पोल, पेरिफन वैक्स फैक्टरी, स्टील रीरोलिंग मिल, सीमेन्ट, लकड़ी, लोहा, टीन, मोम, सूत, चमड़ा आदि पर आधारित लघु उद्योग लागल। बिहार सरकार 40 लाख रुपयाक लागत स' एकटा औद्योगिक प्रांगणक निर्माण कयलक। एहि मे शिक्षित बेरोजगार कें विशेष सुविधाक प्रावधान छल। प्लास्टिक एवं रबरक सामान, सिन्थेटिक रबर एवं फाइवर्स, पेन्ट तथा बारनीस, क्लोरिन, रेजिन्स, पोलीथिन, नट्स तथ बोल्ट्स, इलेक्ट्रिक गुड्स, पौल्ट्री फीड, कृषि औजार, साबुन, मोमबत्ती, दियासलाइ, फौण्ड्री, स्टील फर्नीचर, चमड़ा उद्योग, घानी तेल, ताड़ गुड़, खांडसारी, हस्त एवं विद्युत करघा, कोल्ड स्टोरेज आदि उद्योग लगयबाक प्रावधान छलैक। किछु लगबो कयल, किछु चलितो अछि मुदा अधिकांश बन्द अछि। राज्य सरकार जमीन, वित्तीय सहायता, कच्चा माल, विद्युत आपूर्ति, तकनीकी सहायता, विक्रय

प्रबंध आदि सुविधा देने छल। बिहार राज्य वित्तीय निगम द्वारा ऋण, राष्ट्रीय लघु उद्योग विकास निगम द्वारा भाड़ा क्रय प्रणालीक अन्तर्गत मशीन एवं यंत्रक पूर्ति, स्टेट बैंक तथा अन्य राष्ट्रीयकृत बैंक द्वारा कार्यशील पूंजीक व्यवस्था कयल गेल छल। ऋण भेटल, कारखाना लागल, उत्पादन चालू भेल। मुदा वित्तीय संस्थाक ऋण ओ ब्याज वापस नहि कयल गेल। ऋण कें अनुदान बुझि काज भेल। फलस्वरूप पुनः कार्यशील पूंजी बैंक द्वारा निर्गत नहि कयल गेल। पूंजीक अभाव मे अत्यधिक कारखाना बन्द अछि। उद्योगक रुग्णता तथा एकर उपचारक अभाव। बरौनी मे बिस्कोमानक सहकारिता क्षेत्र मे शीत-गृह अछि जकरा चालू करबाक योजना अछि।

आर्थिक विकासक हेतु यातायातक उत्तम प्रबंध परमावश्यक। वस्तु ओ व्यक्तिक आवागमनक हेतु यातायातक सुविधा नहि रहने सामाजिक ओ आर्थिक सम्पर्क सीमित रहैछ। मिथिलांचलक अन्य जिलाक तुलना मे एहि जिलाक यातायात व्यवस्था सामान्यतः व्यवस्थित अछि। दक्षिण बिहार एवं मिथिलांचल कें मिलयबा मे मोकामक राजेन्द्रपुलक पैघ योगदान छैक। राजेन्द्र सेतु पर सड़क तथा रेलमार्ग अछि। यदि रेल लाइन एहि पुल पर दोहरा रहैत त' यातायात मे विशेष प्रगति होइत। गंगा नदी पर 1959मे पुल बनल। केन्द्रीय सड़क निधि स' अररिया-संग्राम-तमोरिया-मधेपुर-टेंगहा-जयंतिपुर दाघ-बहेड़ी- रोसड़ा-समस्तीपुर होइत बेगूसराय धरि सड़कक जीर्णोद्धार पर 7करोड़ 50 लाख रुपया खर्च कयल जा रहल अछि। एहि सड़क कें दुरूस्त भेला स' बेगूसराय स' नेपालक दूरी कम भ' जायत एवं मात्र अढ़ाइ घंटा मे यात्रा पूरा कयल जायत। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 28कें उत्तरप्रदेश-बिहारक सीमा कें बरौनी धरि 267.43 कि.मी. काज कयल जा रहल अछि। उच्चपथ संख्या 31 पर बंगाल ओ आसाम धरि 387 कि.मी. कार्यरत छैक। दिसम्बर 2001मे बखरी मे 39 लाख 15 हजार 3सयक लागत स' सड़कक निर्माण भेल। तेघड़ा कृषि उत्पादन बाजार समिति द्वारा 25 लाख रुपया स' पी.सी.सी. सड़कक निर्माण भेल। साहेबपुरकमाल प्रखंडक विश्वबैंक, आर.ई.ओ. स्थानीय विधायक कोटा स' निर्मित सड़क 1987क बाढ़ि मे ध्वस्त भ' गेल छल। एखन धरि एकर मरम्मति नहि भेल छैक। जनवरी 2002मे सिमरिया-डुमरा पथक निर्माण 52 लाख रुपयाक लागत स' बरौनी तेलशोधक कारखाना द्वारा कयल गेल। अतरुआ तेघड़ा पुलक निर्माण मे एक करोड़ 25 लाख रुपया आंकल गेल, जाहि मे दिसम्बर 2001 धरि मात्र 77 लाख रुपया उपलब्ध भ' सकल। एहि मे 25 लाख रुपया सांसद निधि स', 35 लाख बाजार समिति तेघड़ा द्वारा एवं 17 लाख भगवानपुर पंचायत समिति द्वारा। शोकहारा चौक स' बरौनी फ्लैग धरिक सड़कक स्थिति अत्यन्त जर्जर अछि। जून 2003 धरि कोनो मरम्मति नहि भेल छैक। दिसम्बर 2001मे प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक अन्तर्गत 8.28 करोड़ रुपया एहि जिला कें आवंटित भेल छल। कच्छप गति स' काज चलि रहल

छल। मार्च 2003मे केन्द्र सरकार ई निर्माण कार्य केन्द्रीय एजेन्सी स' करेबाक निर्णय कयलक। एहि योजनाक माध्यम स' 2007 धरि एक हजार धरिक आबादीवला सब गाम कें मुख्य सड़क स' जोड़बाक योजना छैक।

भारतीय रेलक बरौनी एकटा महत्वपूर्ण स्टेशन अछि। बड़ी लाइनक गाड़ीक अबरजात एतय अछि। एतय स' इलाहाबाद, अमृतसर, चेन्नई, कोचीन, दिल्ली, धनबाद, गोरखपुर, गुवाहाटी, ग्वालियर, हावड़ा, जम्मुतवई, कटिहार, लखनऊ, मुम्बई, जमशेदपुर, समस्तीपुर तथा चतुर्दिक रेलगाड़ीक आबाजाही अछि। गढ़हरा रेलवेक पैघ यार्ड छल। बड़ी लाइन स' छोटी लाइन एवं छोटी लाइन स' बड़ो लाइन पर मालक पल्टी एतय कयल जाइत छल। करीब 2200 एकड़ भूमि मे ई पसरल छल जे एखन वीरान छैक। 1996 स' ई काज बन्द अछि एवं रेलवे अपन एहि बहुमूल्य भूमि कें भूतबंगला बनौने अछि। एहि जमीनक सदुपयोग होयबाक चाही। सोनपुर मंडलक बरौनी बाईपास रेल लाइन मे अधिक वक्रताक कारणें मात्र माल गाड़ीक परिचालन होइछ। बरौनी-तिलरथ रेल खंडक दोहरीकरणक संगहि एहि बाईपास रेल लाइनक परिवर्तनक योजना छैक।

बेगूसराय जिला मुख्यालय स' 22 कि.मी. उत्तर विश्वप्रसिद्ध कांवर झील 18,000 एकड़ भूमि मे पसरल अछि। एहि मे 5000-6000 एकड़ भूमि मे सालोंभरि जल रहैत छैक। अक्टूबर स' मार्च धरि साइबेरिया, उजबेकिस्तान तथा पूर्वी यूरोप स' लाखोंक संख्या मे पक्षी एतय अबैत अछि। राज्य सरकार एहि प्रकृति प्रदत्त स्थान कें ने कृषि विहार वा पक्षी विहार बना सकल। ई 40,000 मल्लाहक परिवारक जीवन-यापन करैत अछि। 1951 मे 12 कि.मी. लम्बा नहरि निकालल गेल छल जे एहि क्षेत्रक किसान कें बरदान होइत मुदा नाकाम रहल। 1982-83मे झीलक सौन्दर्यीकरणक योजना बनल। केन्द्र सरकार स' पहिल किस्तक राशि भेटलै जकर उपयोगिता प्रमाणपत्र राज्य सरकार नहि देलक। काज बन्द भ' गेल। 2002-03 मे 15 लाख रुपया सौन्दर्यीकरण पर खर्च कयल जेबाक छलै, किन्तु सौन्दर्यीकरण त' बादक बात पहिने एहि राशि स' की ई विशाल झील साफ भ' सकत। सर्वाधिक पसन्दक पर्यटन स्थलक राज्य सरकार दुर्गति कयने अछि। पक्षीक शिकार ओ बाजारक हेतु मंझोल सब स' पैघ केन्द्र। बेगूसराय, खगड़िया, रोसड़ा तथा समस्तीपुर तक बाजार मे पक्षी उपलब्ध रहैत अछि।

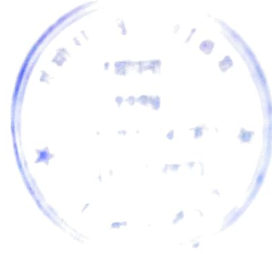
सिमरिया: गंगा स्नानक हेतु ई प्रसिद्ध अछि। एतय कातिक मे मास कयल जाइछ।

कायाथान : बछवाड़ा लगहक गाम-जादू-टोनाक लेल प्रसिद्ध अछि।

रागी: आदिकवि सिद्ध सरहपाक जन्मस्थान, तें विख्यात।

■

दरभंगा



दरभंगा मिथिलाक एकटा प्राचीन जिला अछि। दरभंगाक नामकरणक पाछू कतेको मर्त अछि। किछु गोटेक मत छन्हि जे मुसलमान दीवान दरभंगी खांक नाम पर ई नाम पड़ल। मुदा ई दीवान साहेब कम दिनक थिकाह। द्वारबंग स' दरभंगा सेहो कहल जाइछ जे ऐतिहासिक दृष्टि स' संगत नहि, कारण बंगालक विभाजन बहुत बाद मे भेल। भृङ्गदूत काव्यक 55म श्लोक मे दरभंगाक चर्चा छैक जाहि स' यैह नामकरण भेल। खण्डबला कुलक राजधानी महेश ठाकुर भौर मे बनौलनि जकरा माधव सिंह भौर स' हटाकय दरभंगा मे अनलनि। एहि महाराजक नाम पर माधवेश्वर एखनो प्रसिद्ध अछि। किन्तु, ओइनवार कुलक महाराज शिवसिंह लक्ष्मण संवत् 297 मे सुल्तान इब्राहिम शाहक संग युद्ध मे परास्त भेला। हिनक सेनानी जखन भागय लागल तखने दलभागा कहल गेल छल जे बाद मे दरभंगा भेल। दरभंगाक शिवधारा मे युद्ध भेल छल एवं मृत सेनानी मे मुसलमान कें जतय कब्र राखल गेल से कबराघाट कहौलक। कबराघाट एहि शहरक एक मोहल्ला थिक। मृत हिन्दू सैनिक ओहिना परल रहल आ बाद मे मात्र हाड़ रहि गेलै। यैह स्थान हड़ाही नाम स' प्रसिद्ध अछि। एकरे पूबारि भीड़ पर दरभंगा रेलवे स्टेशन बनल अछि। 1875 मे दरभंगा कें जिलास्तर देल गेलैक जे पहिने तिरहुत प्रमंडलक एक भाग छल। 14 नवम्बर 1972 के समस्तीपुर आ 7 दिसम्बर 1972 कें एहि जिला स' पृथक कय मधुबनी कें सेहो स्वतंत्र जिलाक स्तर देल गेल। अक्टूबर 1973 मे दरभंगा प्रमंडल बनल जाहि मे दरभंगा, समस्तीपुर, मधुबनी ओ बेगूसराय जिला अछि।

दरभंगा जिला 26°10' उत्तरी अक्षांश आ 85°54'

देशान्तर रेखाक मध्य अछि। एहि जिलाक उत्तर मे मधुबनी, दक्षिण मे समस्तीपुर, पूब मे सहरसा आ पश्चिम मे मुजफ्फरपुर आ सीतामढ़ी जिला अछि। तीनटा अनुमंडल-दरभंगा सदर, बेनीपुर आ बिरौल। बिरौल कें बाद मे अनुमंडल बना देल गेल। 2279 वर्ग कि.मी. क्षेत्र मे ई जिला पसरल अछि। एहि जिला मे कुल 18 प्रखंड आ 329 पंचायत अछि। दरभंगा मे 23 पंचायत, केवटी मे 26, मनीगाछी मे 22, जाले मे 26, सिंहवाड़ा मे 25, कुशेश्वर स्थान मे 14, बिरौल मे 26, घनश्यामपुर मे 12, बेनीपुर मे 22, अलीनगर मे 11, हनुमाननगर मे 14, हायाघाट मे 14, बहादुरपुर मे 23, बहेड़ी मे 27, कुशेश्वर स्थान पूर्वी मे 10, गौड़ा बौराम मे 13, किरतपुर मे 8, तारडीह मे 13 पंचायत अछि। बागमती एहि जिलाक प्रमुख नदी छथि जे नेपाल मे सप्तबागमतीक नाम स' जानल जाइत छथि। सीतामढ़ी जिलाक ग्राम सखतिया लग ई मिथिलांचल मे प्रवेश करैत छथि तथा हायाघाटक पूब करेह नदीक मार्ग स' प्रवाहित होइत खगड़िया जिला मे खोरमा घाट लग कोसी मे विलीन भ' जाइछ। सम्प्रति हायाघाट स' नीचा कोसीक संगम धरि तटबंध बनल अछि। ढेंग लग प्रस्तावित बराज स' रून्नीसैदपुरक पश्चिमोत्तर आ मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी मार्गक पश्चिम धरि तटबंधक निर्माण भ' गेल अछि, किन्तु रून्नीसैदपुर स' हायाघाट धरि लगभग 79 कि.मी. धरि निर्माण काज कें पूरा नहि कयल गेल। फलस्वरूप तटबंधक कारण सुरक्षित बैरगनिया प्रखंड (सीतामढ़ी जिला), हायाघाट-एकमीघाटक पार्श्ववर्ती गाम तथा दरभंगा-नरकटियागंज रेल लाइनक उत्तर ओ दक्षिण बसल गाम सभ मे लगभग 5-6 मास धरि जलजमाव रहैछ। बागमती बाढ़ि नियंत्रण परियोजनाक अन्तहीन कथा एखनो चलि रहल अछि। संभवत: पहिने बागमती दरभंगा बागमतीक मार्ग स' प्रवाहित होइत छल। बागमती बेसिनक जलसंग्रहण 7081 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे, 12141 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे मोइन तथा कुल 3924 पोखरि जाहि मे 2301 निजी पोखरि अछि।

बागमती नदीक घाटी मे अभिनव जलोढ़ माटि अछि। जकरा खादड़ सेहो कहल जाइछ। बागमती-अधवारा ओ कमला बेसिन मे प्रधानत: मृतिका (क्ले लोयम) पाओल जाइछ। ई माटि अति उर्वर होइछ। मध्य जून स' मध्य अक्टूबर धरि वर्षा ऋतु रहैत अछि तथा 1100-1300 मि.मी. वर्षा होइछ। हथिया ओ आर्द्रा नक्षत्र मे वर्षाक विशेष प्रभाव। शीत ओ ग्रीष्म ऋतु मे कम वर्षा। प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। एहि जिला मे कुल भौगोलिक क्षेत्र मे मात्र 56.80 कि.मी. वन क्षेत्र अछि जे मात्र 2.50 प्रतिशत भेल। सम्प्रति सरकार वृक्षक कटाई पर क्रमबद्ध आंशिक प्रतिबंध लगौने अछि तथा प्राकृतिक वनक प्रबंधन एवं विकास, गैर प्रसार वानिकीक अन्तर्गत वन एवं गैर क्षेत्र मे वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण एवं प्रदूषण नियंत्रण पर विशेष कार्यक्रम चला रहल अछि।

वर्ष 2001क जनगणना मे एहि जिलाक जनसंख्या 32, 85, 473 आंकल गेल, जाहि मे पुरुषक संख्या 17, 16, 640 ओ महिलाक संख्या छल 15, 68, 833। 1991 मे एहि जिलाक आबादी 25, 10, 959 छल। वर्ष 2001 मे एहि जिलाक आबादी गत जनगणनाक तुलना मे 30.85 प्रतिशत वृद्धि भेल जखन कि बिहारक आबादी मे 28.43 प्रतिशत तथा राष्ट्रीय जनसंख्या वृद्धि 21.34 प्रतिशत अछि। कुल साक्षरता 44.32 जाहि मे पुरुष साक्षरता 57.18 प्रतिशत ओ महिलाक 30.35 प्रतिशत। एहि जिलाक कुल साक्षरता समस्त बिहारक साक्षरता स' 3.21 प्रतिशत कम ओ देशक तुलना मे 21.06 प्रतिशत कम। एहि जिला मे जनसंख्याक घनत्व 1442 अछि, जखन कि बिहार मे मात्र 880 ओ देश मे 324 व्यक्ति। आबादीक घनत्व मे ई जिला प्रथम स्थान पर अछि।

नदीक बहाव स' निर्मित एहि जिलाक भूमि उपजाऊ अछि। माटि बलुआर, दोरस, मटियार, चिकनी ओ उसर छैक। धान, गहूम, मकई प्रमुख फसिल होइछ। मड़ुआ, खेसारी, केराव, मसूरी, मटर, बदाम, मूंग, कुर्थी, राहड़ि, जौ, कोदो, काउन, साम, चीन, जनेर, सरिसो, तीसी, अंडी, तील, तमाकू, पटुआ, मखान, कुसियार आदि फसिल होइछ। एहि मे बहुतो फसिल नाममात्र लेल होइछ। लतामक खेती व्यावसायिक रूप मे भ' रहल अछि। वाणिज्यिक फसिल कुसियार छल, मुदा चीनी मिल सब बन्द रहबाक कारण कुसियारक उत्पादन कृषक कम कय देने छथि। मिल समय पर कृषक कें भुगतान नहि करैत छल। एहि स' गहूमक खेती मे वृद्धि भेल छैक। बागमती नदीक पूबक क्षेत्र मे दलहनक उपज कम होइछ, तथापि एहि जिलाक सम्पूर्ण कृषि क्षेत्रक 20 प्रतिशत क्षेत्र मे दालि उपजाओल जाइछ। बागमती नदीक पश्चिम सर्वोत्तम कुसियार क्षेत्र अछि। आलू उपजाओल जाइछ जे एक नाशवान फसिल थिक। शीतगृहक समुचित व्यवस्था नहि भेल छैक। एहि जिलाक जलोढ़ माटि पर मिरचाइ उपजाओल जाइछ। हरदि, धनी, आद ओ लहसुन एकरे संग उपजाओल जाइत छैक।

1956 मे जमीन्दारी प्रथाक अन्त भेल। एहि जिलाक सब स' पैघ जमीन्दारक जमीन्दारी कानून बनाय कें लय लेल गेल। 23 अगस्त 1984 कें लोकसभा द्वारा पारित बिहारक 14टा भूमि सुधार अधिनियम कें नवम सूची मे शामिल कयल गेल। भूमि कें जोतयवलाक स्वामित्व, उचित मात्रा मे लगानक भुगतान एवं जोतक सीमाक निर्धारण, जे एक आदर्श भूमि व्यवस्थाक गुण मानल जाइछ, अद्यावधि कार्यान्वन नहि भेल अछि। राज्य प्रशासन तंत्र एहि भूमि सुधार व्यवस्था पर अत्यंत शिथिल अछि। भूमिहीनक बीच हदबन्दी सीमा स' फाजिल भूमि बांटल नहि गेल छैक। जखन कि नियमत: 30 या 40 बीघा (सिंचित तथा असिंचित) स' अधिक भूमि नहि राखि सकैत छथि।

भूदान मे एहि जिला मे सेहो भूमि भेटल। एकर खतियान राज्य सरकार लग नहि छैक। दिसम्बर 2002 मे सरकार आंकड़ा तैयार करौलक अछि जे दान मे कतेक जमीन भेटल, किनका स' भेटल, किनका देल गेल नाम पता रकबाक संग। एहि जिला मे भूदान स' 7100.91 एकड़ भूमि प्राप्त भेल, जाहि मे 6225.12 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच बांटल गेल आ बाद बाकी भूमि ओहिना परल अछि। कतेको ठाम भूदान कृषक कें बेदखल कय देल गेल छैक।

सिंचाइक लेल आवश्यक जलक मात्रा माटि ओ फसिलक प्रकृति, भूमिक ढाल, जलवायवीय स्थिति पर निर्भर करैछ। एहि जिला मे धान सर्वप्रमुख फसिल अछि जाहि हेतु 1000 मि.मी. वर्षाक आवश्यकता। अनियमित वर्षा भेला पर सिंचाइक समुचित व्यवस्था आवश्यक। रबी फसिल मे प्रमुख गहूम अछि जे पूर्ण सिंचित फसिल थिक। तीन बेर पटौनी लगैछ। पहिने पोखरि, नदी ओ कूप द्वारा पटौनी होइत छल। एहि जिला मे 3924 पोखरि अछि जाहि मे 2301 निजी। कूप ओ इनार स' कम पटौनी एहि क्षेत्र मे होइत छल। छोट-छोट नाला कें बान्हि खेत मे पटौनी कयल जाइत छल। पश्चिमी कोसी नहरि वृहद सिंचाइ परियोजना, जाहि स' दरभंगा आ मधुबनी जिलाक 234.80 हजार हेक्टेयर भूमिक सिंचाइ होइत, वर्ष 1962 मे प्रारम्भ कयल गेल। एखन धरि पूरा नहि कयल गेल अछि। ई 1997 मे पूरा करबाक छल। बूढ़ी गंडक नदी मे तटबंध छैक मुदा पटौनीक समुचित व्यवस्था नहि। यदि बागमती नदीक दहिना नहरि स' मीनापुर प्रखंड कें संयोचित कयल जाइत त' मुजफ्फरपुर जिलाक किछु प्रखंडक अलावा एहि जिलाक कल्याणपुर, बिरौल ओ पूसा मे पटौनीक व्यवस्था भ' जाइत। तहिना लखनदेइ नदी मे सैदपुर स' आगू दियर बनायल जाइत तखन मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी जिलाक अतिरिक्त एहि जिलाक कल्याणपुर ओ जाले प्रखंड मे सिंचाइक व्यवस्था भ' सकैत छल। मधुबनी जिलाक खजौली लग कमला सिफनक निर्माण पूरा भेला स' एहि जिला मे अतिरिक्त सिंचाइक व्यवस्था संभव अछि। सम्प्रति राजकीय नलकूप स' सिंचाइ व्यवस्था सेहो भेल अछि। 1999 मे प्रमुख राजकीय नलकूप बथुआ-लदनियां क्षेत्र मे लगाओल गेल। छिटफुट स्थान पर सेहो राजकीय नलकूप लगायल गेल। कार्यशील बहुत कम नलकूप अछिं। एहि जिला मे सिंचित क्षेत्र मात्र 18.49 प्रतिशत छैक। मिलियन शैलो ट्यूबवेल स' अतिरिक्त सिंचाइ योजना असफल रहल।

अतिवृष्टि ओ बाढ़ि स' प्रत्येक वर्ष एहि जिला मे लाखो टाकाक सम्पत्ति ओ जान-मालक क्षति होइत अछि। बाढ़िक रोकथाम एवं पटौनीक व्यवस्था एखन धरि नहि भेल छैक। वर्ष 2003 मे बाढ़ि स' क्षतिग्रस्त तटबंधक मरम्मतिक लेल दरभंगा जिला मे सातटा स्थानक चयन कयल गेल

छल। 21 जनवरी 2003 धरि एहि पर 1.06 करोड़ रुपया व्यय कयल गेल तथापि बाढ़िक तांडव पूर्ववत। 2002 मे दरभंगाक सड़क पर नाव चलैत छल। सबस' भयावह बाढ़ि 1987 मे आयल छल। 30-40 वर्ष पूर्व मे बाढ़ि नियंत्रण लेल बनल तटबंध बेकार भ' गेल छैक। बाढ़ि अवधिक प्रारम्भ मे 23 जुलाइ 2002क ठेंगहाक निकट कमला बलानक दहिना तटबंध, असमा मे कमला बलानक बामा तटबंध तथा 25 जुलाइ 2002क' खिरोई नदी (दरभंगा) पर बनल तटबंध चारि ठाम टूटि गेल। 5 जुलाइ 2003 मे बागमती वाटरवेज तटबंध लहेरियासराय स' एकमी बान्ह (वाटरवेजक उत्तरी बान्ह)क बीच डरोरी स' जटमलपुर धरि 50 कि.मी.क चौर अछि जे लगभग एक दर्जन (कमला-बलान, शांति ओ बागमती) नदीक विनाशकारी संगम अछि। 1987 मे 350 मीटर कटान भेल छल। 2000क बाढ़ि मे सोरमार हाट स' कुशियारी चौक धरि मुख्य सड़क टूटि गेल। जीरो माइल स' पश्चिम (हजपुरवा) जायवला खड़ंजा सड़क बहि गेल। आब ई स्थान नदीक मुहान बनि गेल छैक। सड़क एखन धरि नहि बनल अछि। दरभंगा ओ समस्तीपुर जिलाक बीच सीमा विवाद भ' गेल छैक। 1988 मे सन्याल कमेटी बनल छल। स्लूईस गेट बनय वला छल जे गतालखाता मे चलि गेल। बान्हक मरम्मति राजनैतिक रूप लय लेने अछि। यैह विवाद 2002 मे खरसुंड पंचफुटिया बान्ह लेल उभरल छल। 2003 मे बान्हक निर्माण लेल संघर्ष भेल जाहि मे चारि दर्जन लोक घायल भेलाह। यदि बान्ह कें उच्च कय देल जाइत त' करेह नदीक तबाही स' इलाका बचि जाइत। एहि वर्ष 16 जुलाइ 2003कें दरभंगा नगरक निचला इलाका मे बाढ़िक पानि प्रवेश कय गेल छल। वार्ड संख्या 8,16 ओ 17 प्रभावित भेल। प्रत्येक वर्ष दरभंगा-निर्मली ओ दरभंगा-जयनगर रेलखंड पर बाढ़िक पानि आबि गेला स' रेल परिचालन बन्द रहैत अछि। 15 जुलाइ 2003 कें सपहा-लौहरेन तटबंध टूटि गेला स' बिरौल प्रखंडक डेढ़ दर्जन गाम मे बाढ़िक पानि प्रवेश क' गेल। बुआरी तथा कटैया गामक निकट पानिक तेज धारक कारणें तटबंध क्षतिग्रस्त भ' गेल। 2 अगस्त 2003 कें परड़ी गाम लग कमला-बलान 30 फुट टूटि गेल। घनश्यामपुर प्रखंडक कतेको गाम मे पानि प्रवेश कय गेल। मनीगाछी, घनश्यामपुर मुख्य मार्ग पर लगभग तीन फुट पानि बहय लागल। फलस्वरुप, एहि क्षेत्रक लोक नारकीय जीवन जीवाक हेतु बाध्य भ' जाइत छथि।

उद्योगक आधार पर कोनो क्षेत्रक आर्थिक विकास नापल जाइछ। एहि स' सम्पन्नता आ प्रति व्यक्ति आय मे वृद्धि तथा सामाजिक प्रगतिक नव मार्ग प्रशस्त होइछ। एहि मे दरभंगा जिला सेहो पछुआयल अछि। वर्ष 1999-2000 धरि एहि जिला मे 6919 लघु औद्योगिक इकाइ राज्य सरकार स' निबंधित छल। कार्यरतक संख्या अज्ञात अछि। अधिकांश बन्द छैक।

कृषि आधारित उद्योगक प्रबल संभावना। चीनी, जूट, तमाकू, कागत, सूती वस्त्र, हस्तकरघा, खाद्य प्रसंस्करण, बागवानी उद्योगक पूर्ण संभावना। कृषि आधारित उद्योग मे चीनी उद्योग प्रमुख अछि आ एकर एकमात्र कच्चा माल कुसियारे अछि। पहिने एहि क्षेत्रक कुसियार दरभंगा सुगर कम्पनी लिमिटेडक सकरी चीनी मिल मे जाइत छल। ई चीनी मिल राज दरभंगाक अधीन छल। क्रमिक रुग्ण भ' गेल। राज्य सरकार एहि उद्योगक बहुमुखी विकास लेल बिहार स्टेट सुगर निगमक अधीन कयलक । विकासक बदला ई उद्योग नष्ट भ' गेल। कृषक कें कुसियारक मूल्य नहि चुका सकल आ अन्ततः बन्द भ' गेल। चीनी उद्योग चौपट भ' गेल। आब गूड़ बनाओल जाइछ। विकसित ओ पूर्ण व्यावसायिक नहि भ' सकल अछि। कुसियारक बहुतायत स' कागज ओ औषधिक कारखाना बनाओल जा सकैछ। चीनी स' (सोरभोटोल) एसकोरबिक एवं रोबोफ्लेबिन बनाओल जा सकैत अछि। मात्र चीनीक एक संयुक्त प्लान्ट स' प्रति माह पांच टन उत्पादन क्षमताबला एक कारखाना 45 लाख रुपया स' बनि जायत, जाहि मे 24 लाख टाका विदेशी पूंजी लागत। 100 श्रमिक कें तत्काल काज भेटि जायत। कुसियारक सिट्ठी जे फर्नेस मे जराओल जाइछ ओहि स' कागज बनि जायत। छोआ स' अलकोहल बनत। जूटक उत्पादन मे वृद्धि भेल अछि, किन्तु एकर मूल्य कें एक स्तर पर कायम रखबाक प्रयास भेल 1971 मे भारतीय जूट निगमक स्थापना कयकें। जूटक मूल्य मे स्थायित्व अनबाक दिशा मे प्रयास भेल, मुदा कृषक कें बिचौलियाक हाथे माल बेचबाक लेल बाध्य कयल जाइत छैक, जाहि स' कृषक कें उचित मूल्य नहि भेटैत छैक। समस्तीपुर मे एक आधुनिक ढंगक मिल अछि, जतय कच्चा जूट जाइत अछि। एहि जिला मे आधुनिक ढ़गक मिल नहि अछि। पहिने हाथ स' बोरा छल। सुतरी सेहो बनैत छल। दरभंगा मे 3000 एम.टी.क जूट ट्वाइन प्लांट अछि। छोट कारखाना बनाओल जा सकैछ। आर्थिक विकासक दृष्टि स' उपयुक्त होयत।

पूर्व मे एहि अंचल मे हस्तनिर्मित कागज बनैत छल। पाटक गद्दा बनाय चून ओ मांडक प्रयोग स' चिक्कन कागज बनैत छल, जे बाद मे 1953 मे खादी ग्रामोद्योग बोर्ड करय लागल। मुदा मशीनी कागज मिलक संग प्रतिस्पर्द्धा नहि कय सकल। सम्प्रति हस्तनिर्मित कागज उद्योग मृतप्राय अछि। 1957 मे दरभंगा-लहेरियासराय स' 7 मील दक्षिण करेह नदीक उत्तरी तट पर रामेश्वरनगर मे 320 एकड़ भूमि पर अशोक पेपर मिल्स लिमिटेड कम्पनीक कारखाना बनब शुरू भेल। फ्रांसक कम्पनीक तकनीकी सहयोग, राज दरभंगा, बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन ओ वित्तीय संस्थाक सहयोग स' 15,000 टन प्रति वर्ष कागजक उत्पादनक लक्ष्य निर्धारित कयल गेल। 1965 मे आर्थिक संकट उपस्थित भेल। काज रूकि गेल। बाद मे आसाम ओ बिहार सरकार ध्यान देलक। पल्प प्लांट रामेश्वरनगर स' आसामक

जोगी गप्पा चलि गेल। कागज बनय लागल। पुनः आर्थिक संकट भेल कागज बनब बन्द भेल आ 1982 मे 200 कार्यरत श्रमिक बेरोजगार भ' गेलाह। पुनः 1989 मे सर्वोच्च न्यायालयक निर्णय स' मिलक निजीकरण कयल गेल। मुम्बईक एक उद्योगपति साहस कयलनि। मिल पूर्ण उत्पादन लक्ष्य प्राप्त नहि कय सकल। अगस्त 2003 मे पुनः सरकारी तंत्र ओ नेताक चक्कर मे बन्द भ' गेल। दोसर कारखाना दोनार (दरभंगा)क आद्यौगिक प्रांगण मे निजी क्षेत्र मे आर्यभट्ट पेपर मिल्स लिमिटेड 1800 टी.पी.ए. क्षमता बला कार्यरत छल। एहि मे पैकिंग ओ क्राफ्ट पेपर सेहो बनैत छल। आर्थिक ओ गलत कार्यपद्धतिक कारणें इहो कारखाना बन्द भ' गेल।

सूत काटब ओ बूनब एतयक प्राचीन विकसित उद्योग छल। सूती, रेशमी ओ मोटिया कपड़ा बनाओल जाइत छल। समाजक एक विशेष वर्ग एहि उद्योग मे लागल छलाह। स्वदेशी ओ चर्खा आन्दोलनक क्रम मे एहि उद्योग मे विकास भेल। हस्तकरघा उद्योग द्वारा वस्त्रक उत्पादन भ' रहल अछि। आंचलिक वस्त्रक बढ़ैत लोकप्रियता, वस्त्रक डिजाइन मे सदैव नयापन विदेशी मुद्रा अर्जन मे सेहो सहायक भेल अछि। हस्तकरघा उद्योग मे लागल अधिकांश बुनकर असंगठित क्षेत्र मे छथि। सूतक हेतु मधुबनी जिलाक पंडौल मे स्पीनिंग मिल स्थापित कयल गेल छल जे 1992 स' कार्यशील पूंजीक अभाव मे बन्द भ' गेल। लघु उद्योगक विकास हेतु 1976 मे दरभंगा मे औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकारक स्थापना भेल। दरभंगाक बेला ओ दोनार मे भूखंडक विकास, शेड निर्माण, आधारभूत सुविधा, कच्चा मालक आपूर्ति, वित्तीय सुविधा ओ उत्पादित मालक बिक्री मे सहयोग भेटल। कतेको छोट-पैघ उद्योग लागल। उद्यमिताक अभाव ओ दुरुपयोग, वित्तीय असंतुलन, बिजली ओ यातयातक असुविधा। फलस्वरुप कतेको इकाइक अकालमृत्यु भ' गेल आ अधिकांश रुग्णावस्था मे अछि। निजी ओ सार्वजनिक क्षेत्र मे मात्र 5 प्रतिशत उद्योग कार्यरत अछि। बिहार सरकार 1985-86 मे मेगा ग्रोथ सेन्टर दरभंगा मे स्थापित करबाक स्वीकृति केन्द्र सरकार स' प्राप्त कयने छल जकरा 1993-94 धरि पूरा करबाक निर्देश छल। मुदा, 27 अगस्त 2003 धरि एहि योजना पर कार्य प्रारम्भ नहि भेल अछि, जखन कि केन्द्र सरकार प्रत्येक केन्द्र हेतु 50 लाख रुपया स्वीकृत कयने छल। दसम पंचवर्षीय योजना में राज्य विभाजन स' आर्थिक क्षतिपूर्तिक हेतु एहि जिला मे बागवानीक अन्तर्गत आमक विकास हेतु कार्ययोजना स्वीकृत कयने अछि। दरभंगा मे प्रशिक्षण केन्द्रक स्थापना भ' चुकल अछि। केन्द्र सरकार आम विकास योजना पर 36 करोड़ रुपया खर्च करत। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगक भविष्य उज्ज्वल अछि। उद्यमी कें प्रोत्साहन भेटबाक चाही। एहि जिलाक प्रधान भोजन भात अछि। उत्पादित धानक कुटाई नहि भ' रहल अछि। एहि क्षेत्रक मिल बिजलीक अभाव मे धानक

भूसी ओ डीजल चालित अछि। दरभंगा मे चाउर खरीद केन्द्र खोलल गेल छैक, मुदा आधुनिक ढंगक चाउर मिलक अभाव छैक। चाउर मिलक स्थापनाक हेतु सहकारिता विभाग सहयोग करत। चाउर मिल कें बहुआयामी बनाओल जा सकैछ। एहि मे दालि, तेल ओ चूरा कुटबाक प्रावधान सेहो छैक। दरभंगा शहर मे मात्र एकटा आधुनिक आंटा-मैदा मिल अछि। 1962 मे मिथिला चित्रकला मधुबनी पेंटिंग नाम स' विख्यात भेल आ व्यावसायिक रूप धारण कयलक। देवाल पेंटिंग, कागज ओ कपड़ा पर कलाकार काज करय लगलाह। ग्रीटिंग, नववर्ष, विवाह, यज्ञोपवीतक अवसर पर कार्ड बनय लागल। कपड़ा, साड़ी ओ अन्य परिधान पर कला प्रदर्शित भ' रहल छैक। ई विदेशी मुद्रा सेहो उपार्जन करैत अछि। एहि जिलाक मुख्य-मुख्य स्थान पर बिक्री केन्द्रक स्थापना ओ कलाकार कें उचित मूल्य भेटनि तकर व्यवस्था करय परत। संगहि आर्थिक साहाय्य-वित्तीय ऋणक प्रावधान सेहो आवश्यक अछि। एहि स' आर्थिक विकास हैत। बेकारी समस्याक निदान होयत। अही तरहें कसीदा उद्योग कें विकसित कयल जा सकैछ। मत्स्य उद्योग एहि जिला मे बड़ पुरान अछि। किन्तु, मत्स्यपालनक वैज्ञानिक विधिक अज्ञानताक कारणें कम उत्पादन होइछ। पश्चिम बंगाल ओ आन्ध्र प्रदेश मे प्रतिवर्ष प्रति एकड़ मत्स्य उत्पादन 3500-4000 किलोग्राम अछि, जखन कि एहि जिला मे उत्पादन वृद्धि कें ध्यान मे नहि राखल गेल। पोखरि, जलाशय, नदी ओ चौरक अभाव नहि। फलस्वरूप, हमरा गामक हाट पर आन्ध्र प्रदेश स' आयातित माछ बिकाय लागल। समेकित कृषि आधारित उद्योगक भविष्य उज्ज्वल अछि। पानक खेतीक विकास सेहो जरूरी अछि। पशु आहार उत्पादन उद्योग, दुग्ध ओ एहि स' बनल सामान, पशुपालनक विकास आर्थिक विकास मे सहायक होयत। दिसम्बर 2002 मे विश्व बैंक बरसाती भूमि (वेटलैंड)क विकासक अध्ययनक सुझाव देलक एहि जिलाक घनश्यामपुर ओ कुशेश्वरस्थानक 12,141 हेक्टेयर एहन क्षेत्र अछि, जाहि मे मखान, माछ, खोबी, सिंघाड़ा, रामदाना, कोहिला, केसौर, करमी आदि उत्पादन होयत जे एहि क्षेत्रक आर्थिक विकास मे बड़ पैघ वरदान साबित होयत। मखानक उत्पादन, उन्नत बीज, उर्वरक, भंडारणक सुविधा ओ यांत्रिक पैकेजिंग हेतु योजना आयोग मधुबनी जिला मे 33 करोड़ रुपयाक लागत स' केन्द्र बना रहल अछि। एहि स' तकनीकी कौशल ओ व्यावसायिक लाभ स' ई जनपद सेहो लाभान्वित होयत। खादी आ ग्रामोद्योगक अनेक केन्द्र कार्यरत छल। खादी कपड़ाक अलावा ग्रामोद्योगी वस्तु यथा तेल, साबुन, जूता आदि बनैत छल। वर्तमान सरकार खादी वस्त्र पर जे साहाय्य दैत छल से बन्द कय देलक। करोड़ो रुपया एहि उद्योग मे लागल संस्था कें नहि देलक। खादी उद्योग नष्ट भ' गेल। सारा मोहनपुर, दरभंगा मे एक केन्द्र एखनो चलि रहल अछि। एहि स' ग्रामीण क्षेत्र मे बेरोजगारी बढ़ल।

कोनो जनपदक आर्थिक विकास मे यातायात साधनक बैह महत्व अछि जे मानवक शरीरमे रक्त-संचालनक धमनीक। यातायात साधनक मानव-जीवनक विकास स' घनिष्ट संबंध छैक। उत्पादित वस्तु ओ सेवाक विनिमय ओ वितरण मे यातायातक सर्वोपरि स्थान छैक। 19म सदीक पूर्वार्द्ध धरि एहि जिला मे सड़कक अत्यन्त अभाव छल। नीलक खेती मे लागल कोठीवला साहेब सभ किछु सड़कक निर्माण कयलक। 1873-74 मे अकाल सहायता काजक अन्तर्गत प्राचीन दरभंगा ओ मुजफ्फरपुर जिलाक अन्तर्गत 555 मील सड़क बनल। 20म शताब्दीक आरम्भ मे दरभंगा-समस्तीपुर-मधुबनी मे 1734 मील सड़क बनल छल। स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद सेहो किछु सड़क बनल। 1961-62 मे दरभंगा-रहिका-जयनगर (35 मील), दरभंगा-समस्तीपुर (28 मील), दरभंगा-सकरी (13 मील), सकरी-बहेड़ा (10 मील), दरभंगा-मुजफ्फरपुर (एहि जिलाक सीमा धरि 10 मील) ओ दरभंगा-बहेड़ी-सिंघिया-रोसड़ा सड़क बनल। चीनी मिलक अधीन सेहो सड़क छल। कच्ची सड़क मे बहेड़ा-बिरौल-कुशेश्वरस्थान (5 मील), दरभंगा-बहेड़ी-सिंघिया-रोसड़ा (33 मील) तथा अन्य कच्ची सड़क छल। 1977-78 धरि दरभंगा जिला मे मात्र 461 कि. मी. सड़क छल, जाहि मे राज्य पथ 102, जिला सड़क मेजर 179 कि. मी. तथा जिला सड़क अन्य 180 कि. मी.। छठम पंचवर्षीय योजना (1980-85) मे ग्रामीण सड़क निर्माण कें प्रमुखता भेटल। जाहि मे एहि जिलाक 277 गामक 734 कि. मी. लम्बा सड़कक निर्माणक लक्ष्य छल। योजना छल जे डेढ़ हजार आबादी बला सब गाम कें जोड़ि देल जाय। काज पूरा नहि भेल। दरभंगा-समस्तीपुर पथ मे समस्तीपुर लग बूढ़ी गंडकक मगरदही घाट पर आर.सी.सी. पुल 641 लाख रुपयाक लागत स' बनाओल गेल अछि। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 57 जे 295 कि. मी. मुजफ्फरपुर-दरभंगा-झंझारपुर- फारबिसगंज- अररिया-पूर्णिया मे काज चलि रहल अछि। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 105 जे उच्च पथ संख्या 57क दरभंगा जंक्शन स' औंसी-जयनगर (नेपाल सीमा) धरि 66 कि.मी. मे काज चलि रहल छैक। सी.आर.एफ.क (डीजल पेट्रोल पर अधिशेष स' गठित कोष) दरभंगा- कुशेश्वरस्थान रोडक 2 करोड़ 11 लाख रुपया स' जीर्णोद्धार भ' रहल छैक। प्रधान मंत्री सड़क योजना (एक हजार आबादी वला सब गाम ओ 500 आबादी वला सब टोल कें हर मौसम लायक सड़क स' जोड़बाक योजना) एहि जिला मे बहुत मन्द गति स' काज भ' रहल छैक। एहि मद मे आवंटित राशि राज्य सरकार खर्च नहि कय पबैत अछि। 2002 मे मात्र 26.22 प्रतिशत खर्च भेल ओ बाद बाकी टाका केन्द्र सरकार कें घुमा देबय परल। एहना स्थिति मे सड़क यातायात मे सुधारक कोन आशा। एहि योजनाक अन्तर्गत दरभंगाक 6 योजना पर 337.06 लाख रुपया एवं बेनीपुरक 4 योजना पर 254.04 लाख रुपया

खर्चक स्वीकृति भेल छैक। वर्ष 2002 मे सांसद कोटा स' बेनीपुरक 11, मनीगाछीक 11, सदर प्रखंडक 9, केवटीक 8, हायाघाट, सिंहवाड़ा, बहादुरपुरक प्रत्येक 5 योजना स्वीकृत भेल छल। विधायक कोटा स' कुशेश्वरस्थानक 15, बिरौलक 8, बहेड़ीक 7, गौड़ा-बौरामक 7, घनश्यामपुरक 5 ओ किरतपुरक 3 योजना स्वीकृत भेल छल। वर्ष 2002 मे बेनीपुर प्रखंडक बहेड़ा पंचायत मे सुनिश्चित रोजागर योजनाक अन्तर्गत 5,74,000 रुपयाक लागत स' बहेड़ाक लाट साहेबक घर स' धरौड़ा मुसहरी धरि सड़कक निर्माण भेल।

प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजनाक जिम्मेदारी देल गेल ग्राम्य अभियंत्रण संगठन कें। वित्तीय वर्ष 2000-01 मे दरभंगा अंचलक हेतु 3 करोड़ 23 लाख 26 हजार रुपया, बेनीपुर अंचलक लेल 2 करोड़ 48 लाख 28 हजार रुपया, जाले मे पीडब्ल्यूडी सड़क स' तरियानी रजौन पथ धरि लेल 55.31 लाख रुपया स्वीकृत छल एवं अन्य सड़कक स्वीकृति एहि तरहें छल।

		दूरी	लाख रुपया
1.	दरभंगा मे पीडब्ल्यूडी मब्बी स' गनौली-मनियारी सड़क	2½ कि. मी.	58.41
2.	हवाई अड्डा स' बलहामनि	2½ कि. मी.	54.468
3.	केवटी प्रखंडक असराहा-भटौरा	2½ कि. मी.	56.29
4.	हनुमाननगर मे डीलाही स' काली पटोरी	2 कि. मी.	53.64
5.	तारडीह मे ककोढ़ा स' मथुरापुर	2½ कि. मी.	55.17
6.	बेनीपुर अंचलक अलीनगर प्रखंड मे घमसाइन गरौल-इजरहटा	2½ कि. मी.	57.21
7.	घनश्यामपुर मे पाली-पोहद्दी	2.32 कि. मी.	57.95
8.	बघौन (बहेड़ी)-उधरा उसारी इनाई (बिरौल)	3.14 कि. मी.	78.89
9.	भदहर (बिरौल) नदियामी (कुशेश्वरस्थान)	2.14 कि. मी.	54.41
	वर्ष 2001 - 02 मे		
10.	जाले प्रखंडक पीडब्ल्यूडी बजरंग चौक-कटैया	2.35 कि. मी.	53.99
11.	दरभंगा मे रसलपुर-सरैया	3.6 कि. मी.	100.00
12.	केवटी मे खिरमा-जलवारा	2.5 कि. मी.	61.14
13.	बहादुरपुर मे हरिपट्टी-मोगियारा	2.7 कि. मी.	66.15
14.	बहेड़ी मे समधपुरा-आधारपुर	2.4 कि. मी.	
15.	शिवरामपुर-मिटनिया	1.9 कि. मी.	45.77

उपरोक्त सड़क निर्माण योजना मे काज नगण्य भेल छैक तथा सड़क खेत-खधिया मे विलीन भ' गेल अछि।

वायुमार्गक एक विमान पतन अड्डा निजी क्षेत्र मे दरभंगा मे छल जकरा रक्षा मंत्रालय भारत सरकार अपना अधीन कयलेलक। सीमावर्ती जिला होयबाक कारणें वायुमार्गक विकास आवश्यक।

नवम्बर 1875मे दलसिंहसराय-समस्तीपुर-दरभंगा रेल पथक निर्माण भेल। अकाल पीड़ित कें राहत पहुंचयबाक हेतु। पहिने अवध-तिरहुत रेलवेक नाम स' जानल जाइत छल। आब पूर्व मध्य रेलवे कहल जाइछ एवं समस्तीपुर रेल मंडलक अधीन अछि। छोटी लाइन कें बड़ी लाइन मे परिवर्तन भ' रहल अछि। दरभंगा स' जयनगर, दरभंगा स' निर्मली, दरभंगा-नरकटियागंज, दरभंगा-समस्तीपुर मुख्य रेलमार्ग अछि। दरभंगा पूर्व मध्य रेलवेक प्रमुख व्यावसायिक स्टेशन एखन धरि नहि बनि सकल अछि। यद्यपि दरभंगा रेलवे स्टेशन सम्प्रति कलकत्ता, दिल्ली, मुम्बई स' जोड़ि देल गेल अछि।

आधारभूत संरचना मे ऊर्जाक महत्वपूर्ण स्थान अछि। पूर्व मे निजी क्षेत्र मे एक बिजली कम्पनी कार्यरत छल जे शहर मे विद्युत आपूर्ति करैत छल। राज्य विद्युत बोर्ड द्वारा अधिगृहीत भ' गेल। ऊर्जाक स्थिति एहि जिला मे अत्यन्त खराब अछि। नवम्बर 2003 मे एहि जिलाक अहिल्यास्थान परिसर मे 33/11 के. वी. विद्युत उप केन्द्रक निर्माण काज शुरू कयल गेल अछि तथा एहि जिलाक हेतु 59.86 करोड़ रुपयाक स्वीकृति केन्द्र सरकार द्वारा कयल गेल अछि। 220/33 के. वी. क एक सुपर पावर ग्रिडक स्थापना कयल जा रहल अछि। कमतौलक निर्माणाधीन उपकेन्द्र कें गंगवारा ओ बेनीपट्टी उपकेन्द्र स' जोड़ल जायत। एहि दुनू योजनाक कार्यान्वयन भेला पर ऊर्जाक स्थिति मे सुधारक संभावना अछि।

मार्च 2002क उपलब्धिक संबंध मे बिहार सरकारक सांस्थिक वित्त एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन विभाग 20 सूत्री कार्यक्रमक कोटिकरण भारत सरकारक निर्धारित मापदंडक अन्तर्गत कयलक आ दरभंगा जिला चारिम स्थान पौलक। 76.19 अंक प्राप्त भलैक। एहि मे अधिशेष भूमिक वितरण, पेयजल समस्या, बच्चाक टीकाकरण, अनुसूचित जाति ओ जनजाति कें साहाय्य, कमजोर वर्गक लेल मकान, मलिन बस्तीक सुधार, वृक्षारोपण, ग्रामीण विद्युतीकरण, बायोगैसक आकलन कयल गेल छल।

एहि जिलामे पर्यटन उद्योगक विकास लेल कोनो काज नहि भेल छैक।

कुशेश्वरस्थान : ई बिरौल अनुमंडलक अधीन अछि। नजदीकी रेलवे स्टेशन हसनपुर ओ रोसड़ा स्टेशन छैक। 29.23 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे पसरल अछि आश्रयणी। पक्षी विहार अविकसित अछि। एतय कुश ऋषिक स्थापित शिवलिंग छनि। मकर मे तथा शिवरात्रि मे मेलाक आयोजन होइछ। कोनो विकास नहि कयल गेल छैक। एतय नौकायन आ मत्स्य उद्योगक विकास

लाभकारी सिद्ध होयत।

अहिल्या स्थान : कमतौल रेलवे स्टेशन स' दू कि.मी. पर अछि अहिल्याक मन्दिर। एक शिलाखंड ओ अहिल्याक पीड़ी बान्हल छन्हि। एहिठाम गौतम मुनिक शाप स' पाथर भेल अहिल्या कें जनकपुर जयबाकाल विश्वामित्रक उपदेशानुसार भगवान रामचन्द्र निजपादस्पर्श स' शापमुक्त कय दिव्यमूर्ति बनौलन्हि। मन्दिरक समीप मे अहिल्याहद अछि। रामनवमी मे एक विराट मेलाक आयोजन होइत अछि। साड़ी, लहठी, सिन्दुर-द्रव्य आदि चढ़ाओल जाइछ। एतय स' दू कि. मी. पर गौतमकुण्ड ब्रह्मपुर मे अछि। गौतम मुनि नास्तिक मतखण्डनार्थ पंचाध्यायात्मक न्यायसूत्रक प्रणयन कयलन्हि। इहो स्थान अविकसित अछि।

हड़ाही - दिघी - गंगासागर : दरभंगा शहरक मध्य मे ई तीनू पोखरि अछि। तीनू कें जोरि देला स' रमणीय नौकायन लेल एकरा उपयुक्त बनाओल जा सकैछ। सरकारक योजना छल, मुदा कार्यान्वयन नहि भेल। एहि मे मत्स्य उद्योग विकसित कयल जा सकैछ। गंगासागर महाराज गंगदेवक खुनाओल पोखरि अछि।

रजोखरि : महाराज शिवसिंह द्वितीयक स्थान तरौनी - राघोपुर स' महाराज हरिसिंह देव स्थान रजवाड़ा टोलक उत्तर भाग मे स्थित छल। राजधानीक चिन्ह एतय पाओल जाइछ। ओहि स' पूब हुनक घोड़दौड़ पोखरि जे नेहरा गामक उत्तर स' गोढ़ियारी गामक दक्षिण धरि 48.97 एकड़ मे पसरल अछि। सम्प्रति मनीगाछी अंचल मे अछि। आधा जलकर सरकारी ओ आधा रैयती छैक। मत्स्य उद्योग ओ पर्यटनक हेतु एकरा विकसित कयल जा सकैछ।

जरहटिया : महाराज भैरवसिंह देव शताबधि पोखरि खुनौलन्हि। सभ स' पैघ पोखरि यैह छल। राजा-महाराज ओ विद्वान सभ एकत्रित भेल छलाह एकर यज्ञ मे। लंकाक राजा सेहो आयल छलाह। विशाल पाथरक जाठि लेने आयल छलाह। जखन जाठि बैसयबाक मुहुर्त आयल तखन यज्ञशाला मे वाचस्पति मिश्र, पक्षधर मिश्र, शंकर मिश्र एवं अन्य विद्वानक संग कनाह रघुनाथ शिरोमणि सेहो उपस्थित छलाह। शर्त छल जे यज्ञशाला मे कोनो कनाह पुरुष रहताह त' जाठि नहि बैसत। जाठि नहि बैसल, झुकले अछि। एहि विशाल पोखिरि कें पर्यटनक हेतु सजाओल जा सकैछ तथा मत्स्य उद्योग विकसित कयल जा सकैछ।

■



मधुबनी

प्राचीन काल स' मधुबनी मिथिलाक एक गौरवमयी सांस्कृतिक केन्द्र रहल अछि। मधुबनीक समीपतम गाम अछि- मंगरौनी-मंगलबनी। पहिने मंगरौनी भेल तखन मधुबनी। एहिठाम वन छलैक। ओहि मे मधुमांछीक खोंता बहुत छल। बोन कें कटबाय महाराज नरेन्द्र सिंह एकरा अपन राजधानी बनबौलनि तें एकर नाम मधुबनी पड़ल। एहि महाराजाक राजकाज 1743-1760 धरि छल। वर्ष 1866मे मधुबनी अनुमंडल बनल आ दिसम्बर 1972कें एकरा जिला बनाओल गेल। 4 अनुमंडल-फुलपरास, जयनगर, बेनीपट्टी एवं झंझारपुर। 20 प्रखंड ओ 397 पंचायत अछि। मधवापुर मे 13, हरलाखी मे 17, बिस्फी मे 28, बेनीपट्टी मे 33, बासोपट्टी मे 15, जयनगर मे 15, लदनियां मे 15, रहिका मे 22, पण्डौल मे 26, राजनगर मे 25, खजौली मे 25, बाबूबरही मे 20, अन्धराठाढ़ी मे 18, झंझारपुर मे 17, लखनौर मे 17, मधेपुर मे 26, खुटौना मे 18, लौकही मे 18, फुलपरास मे 14 एवं घोघरडीहा प्रखंड मे 17 पंचायत अछि। एहि जिलाक उत्तर मे नेपाल, पूब मे सुपौल, दक्षिण मे दरभंगा ओ पश्चिम मे सीतामढ़ी आ दरभंगा जिला अछि। कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3501 वर्ग कि.मी. अछि। 82 मील धरि अन्तर्राष्ट्रीय सीमा छैक। प्रमुख नदी कमला आ भूतही बलान अछि। कोसी एहि जिलाक सीमावर्ती इलाका होइत सहरसा जिला मे प्रवाहित होइत कुल 254 कि.मी. क यात्रा करैत कटिहार जिलाक कुरसेला लग गंगा मे समाहित होइछ। ई नदी अपन धार परिवर्त्तन करैत 1952मे मधुबनी जिलाक सीमा पर पहुंच गेलीह। नदीक निक्षेप द्वारा निर्मित समतल भूमि अछि। एकर उंचाइ समुद्रतल

स' 75मी. स' कम छैक। कमला बेसिनक जल संग्रहण 6,630 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे तथा 764 पोखरि जाहि मे 157 निजी पोखरि अछि।

ई कृषि प्रधान जिला अछि। अतः माटि अतिमहत्वपूर्ण संसाधना नदी द्वारा लायल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल एतयक माटि। नदीक उत्पत्ति-क्षेत्र मे भूमिक उंचाइ, नदीक दीर्घ परिच्छेदिकाक ढाल, बाढ़िक आवर्तता ओ उंचाइ तथा क्षेत्रीय धरातलक भिन्नताक कारणें नदी-निक्षेपक प्रकृति मे भिन्नता पाओल जाइछ। एहि जिला मे बाढ़ि ओ जलाप्लावनक, कारणें वर्षा ऋतु मे माटि अत्यधिक नरम पाओल जाइछ। माटि मे बालू ओ गादक सम्मिश्रण प्रचुर पाओल जाइछ। बालूक संग सूक्ष्म गादक निक्षेप। उत्तम जलसंचार। शरदकालीन ओ रब्बी फसिलक लेल उत्तम माटि। अभिनव जलोढ़ माटि। कमला नदीक घाटी मे यैह माटि छैक। साधारणतया उपजाऊ माटि। धानक बढ़िया फसिल होइछ। अधिकांश भूमि दू फसिला अछि। लगभग 67 प्रतिशत भूमि मे खेती कयल जाइछ।

एतय प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। कृषि भूमि मे फसिल उपजाओल जाइछ। कृषि क्षेत्रक बाहर बगीचा, उद्यान, खेत-आहर-पइनक अलंग, परती भूमि, सड़क ओ रेललाइनक काते-कात, गैर कृषि भूमि ओ बंजर भूमि पर ताड़, खजूर, बबूर, महुआ, सिमर, तेतरि, आम, नीम, बड़, पीपर, पाकड़ि, बांस, मूंज आदि पाओल जाइछ। सड़क ओ तटबंध आदिक कछेड़ मे लागल वन कें सुरक्षित वन घोषित कयल गेल छैक। एहि जिला मे वन क्षेत्र नगण्य अछि। बाढ़िक प्रभाव भयंकर रहैछ। गाछ-वृक्ष सुखा जाइछ। वन क्षेत्र कें बढ़यबाक हेतु वन विभाग नियमित रूप स' वनरोपण ओ वन महोत्सवक आयोजन करैत अछि। सामाजिक वानिकीक प्रचार-प्रसार भेल छैक। बिहार सरकार वृक्षक कटाइ पर क्रमबद्ध रूप स' आंशिक प्रतिबंध (खैर आ बांस कें छोरिकय) लगौने अछि।

तीन प्रमुख ऋतु- शीत, ग्रीष्म, ओ वर्षा स' ई जिला प्रभावित होइत अछि। पृथ्वीक वार्षिक गतिक कारण भगवान भास्करक दक्षिणायन ओ उत्तरायण भेला पर ऋतुचक्र प्रभावित होइत छैक। मध्य अक्टूबर स' फरवरी तक शीत ऋतु, मार्च स' 15 जून तक ग्रीष्म ऋतु ओ मध्य जून स' मध्य अक्टूबर तक वर्षा काल रहैत अछि। जनवरी मे शीतलहरि सामान्यतः प्रथम सप्ताह स' तेसर सप्ताह तक रहैछ। कखनो शीतलहरिक संग वर्षा सेहो भ' जाइछ। अत्यन्त अनिश्चित वर्षा एवं मन्द हवा एहि मौसमक विशेषता अछि। ग्रीष्म ऋतु मार्च मास मे प्रारम्भ होइछ ओ मानसूनी वर्षा धरि रहैछ। निरन्तर बढ़ैत तापमान, निरन्तर कम होइत वायुभार, अल्प आर्द्रता, ऊंच तापमान ओ शुष्क वायु एहि ऋतुक विशेषता छैक। मइ-जून स' मध्य अक्टूबर धरि वर्षा ऋतु रहैछ। दक्षिण-पश्चिम मानसून स' वर्षा होइछ। लगभग 1223मि.मी. वर्षा अर्थात वार्षिक वर्षाक 85 प्रतिशत वर्षा एहि ऋतु

मे होइछ। हिमालयक दक्षिणी ढालपर घनघोर वृष्टि होइछ जाहि स' नदी सब मे बाढ़ि आबि जाइछ। कृषि प्रधान जिला होयबाक कारणें 86 प्रतिशत लोकक जीविका प्रत्यक्ष रूप स' कृषि पर निर्भर रहैछ। वर्षाक मात्रा, ओकर वितरण, विश्वसनीयता एवं परिवर्तनशीलताक प्रत्यक्ष प्रभाव लोकक आर्थिक जीवन पर परैछ। वर्षाक परिवर्तिता ओ सिंचाइ मे सोझ संबंध छैक। वर्षाक कमी भेला पर सिंचाइक आवश्यकता होइछ।

वर्ष 2001क जनगणना मे मधुबनी जिलाक जनसंख्या 35,70,651 आंकल गेल, जे वर्ष 1991मे 28,32,024 छल। अर्थात गत दस वर्षक तुलना मे जनसंख्या मे कुल वृद्धि 7,38,627 भेल जे 20.69 प्रतिशत अछि। कुल पुरुषक संख्या 18,37,361 एवं महिला छथि 17,33,290। जनसंख्याक घनत्व 1020, बिहार मे 880 तथा भारत मे 324। ई पैघ आबादीबला जिला अछि। प्रति हजार पुरुष पर महिलाक संख्या 943 अछि एहि जिला मे। कुल साक्षरता 42.35 प्रतिशत, जाहि मे 57.26 प्रतिशत पुरुष साक्षर छथि ओ महिला 26.56 प्रतिशत मात्र। कुल आबादीक दृष्टि स' जनसंख्या वृद्धि मे एहि जिलाक तेसर स्थान छैक। द्रुतगति स' बढ़ैत जनसंख्या एतयक आर्थिक विकासक मार्ग मे पैघ अवरोधक अछि। रोजगारक अभाव मे बढ़ैत श्रमशक्ति एहि क्षेत्रक पैघ समस्या छैक।

कमला नदी प्रमुख नदी छथि एहि जिलाक। ई नेपालक सगरमाथा अंचलक उदयपुर जिलाक उत्तरी छोड़ मे हिमालय पहाड़क महाभारत पर्वतमाला शिखर स' निःसृत होइत छथि। पहाड़ मे 29कि.मी. नेपालक तराइ मे 32कि.मी. बहलाक बाद एहि जिलाक जयनगर मे प्रवेश करैत छथि। कुल जलग्रहण क्षेत्र 5545 वर्ग कि.मी. छैक जाहि मे मिथिलांचल मे 3000 वर्ग कि.मी. एवं बाकी नेपाल मे छैक। नदी अपन जलधारा मे परिवर्तन करैछ। 1954मे एहि जिलाक 4.73 लाख एकड़ भूमिक सुरक्षा हेतु कमला बलान तटबंधक निर्माण निश्चित भेल। 1956 मे 1.11 करोड़ रुपया स' तटबंधक काज प्रारम्भ भेल ओ 1959मे प्रथम चरणक काज सम्पन्न भेल। द्वितीय चरणक काज तृतीय पंचवर्षीय योजना काल मे चालू भेल। 'किंग्स नहर प्रणाली'क, जे 1897मे बनल छल, जीर्णोद्धार 1951 मे कयल गेल। कमला बलानक उत्तरी सीरा मे 48.67 लाख रुपयाक लागत स' 300 मीटर लम्बा बीयर बनायल गेल एवं बीयरक दुनू छोर स' एक मुख्य नहरि निकालल गेल जकरा किंग्स कैनल स' जोरि देल गेल। एहि तरहें 45कि.मी. लम्बा किंग्स कैनल, 24.20 कि.मी. लम्बा मुख्य नहरि आ 163कि.मी. लम्बा शाखा नहरि स' सम्पूर्ण कमला-बलान नहरि प्रणाली तैयार भेल। एकर कुल कमांड क्षेत्र 1.69 लाख एकड़ अछि। कमला सिफनक खजौली गाम लग निर्माण भेल अछि। एहि स' दरभंगा, समस्तीपुर ओ मधुबनी जिला लाभान्वित भेल अछि। बलान नदी उदयपुर गढ़ीक दक्षिण-पश्चिम स' निकलैत अछि एवं मुखसरी मे मैदान मे प्रवेश करैछ। कमलाक मुख्य धार बाबूबरही लग बलान स'

मिलैछ एवं दुनू नदीक संयुक्तधार भीठ-भगवानपुरक दक्षिण कोसी मे विलीन भ' जाइछ। भुतही-बलान उदयपुरगढ़ीक दक्षिण स' निकलैत अछि ओ निर्मली-घोघरडीहाक बीच रेलवे लाइन कें पार करैत कोसी मे विलीन भ' जाइछ। तटबंध बनल अछि। तिलयुगा उदयपुरगढ़ीक पूब महाभारत पहाड़ स' निकलैत अछि ओ निर्मलीक उत्तर-पूब कोसी मे विलीन भ' जाइछ। समस्त नदी आब कोसीक पेट मे समाहित भ' गेल अछि। पश्चिमी कोसी नहरि जाहि स' पटौनीक उत्तम व्यवस्था एहि जिला मे संभव होइत, एखन धरि लसकले अछि। आब एहि योजनाक निर्माण हेतु 830.69 करोड़ रुपयाक स्वीकृति दिसम्बर 2003मे देल गेल छैक। मार्च 2006 धरि एहि परियोजना कें पूरा करबाक संकल्प छैक। 2,34,800 हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइक लक्ष्य छैक। क्षतिग्रस्त मुनहरा बराज 13 करोड़ रुपयाक लागत स' बनि रहल छल। 2736 हेक्टेयर खरीफ ओ 684 हेक्टेयर रबी फसिलक सिंचाइ होयत। लदनिया ओ खुटौना प्रखंड मुख्य रूप स' लाभान्वित होयत। जून 2003कें राज्य सरकारक उच्चस्तरीय समिति मे कहल गेल जे 295मे 275 बाढ़ि निरोधक योजना पूरा कय लेल गेल छैक तथा एहि जिलाक 32 योजना पर 5.27 करोड़ रुपया व्यय कयल गेल। राज्यक कोनो क्षेत्र मे बाढ़िक स्थिति नहि। 29 जून 2003मे मधुबनी मे बाढ़िक तांडव मचल। कमला-बलान झंझारपुर मे खतराक निशान स' 1.8 मीटर ऊपर बहि रहल छल ओ वृद्धि जारी छल। कमला-बलनाक दुनू तटबंध पर खतरनाक दबाव। फुलपरासमे भुतही-बलान उफान पर। घोघरडीहा-निर्मली रेलपथ मे परसा हाल्टक आगू कतेको ठाम बाढ़िक पानि रेलवे लाइनक ऊपर बहि रहल छल। रेलक परिचालन बन्द। तिलयुगा नदी पर बनल चचरी पुल ध्वस्त भ' जयबाक कारणें आवागमन बाधित भ' गेल। कमला नदीक उफान स' जयनगर-जनकपुरधाम ट्रेन सेवा बाधित। धौंस तथा रातो नदी मे उफानक कारणें मधवापुर प्रखंड मे जलप्रलयक दृश्य। दर्जनो गाम द्वीप मे परिणत भ' गेल। कमला-बलानक कछेड़ मे बसल एहि जिलाक बनौर गाम अछि। एहि वर्ष एहि नदीक पूर्वी ओ पश्चिमी तटबंधक बीच बान्हल नदी सात फुट ऊपर बहि रहल छल। 23 जुलाइ 2002 मे सेहो एहि गाम लग नदी अपन तांडव मचौने छल। हजारो एकड़ उपजाऊ जमीन बेकार भ' गेल। पोखरि, इनार, दर्जन स' बेसी बोरिंग मे 5-7 फुट बालु। तटबंध कें गत वर्ष मे ऊंच नहि कयल गेल। जयनगरक शून्य कि.मी. स' प्रारम्भ बनौरक 37 कि.मी. पर कमला बलानक पश्चिमी तटबंधक दूरी 27कि.मी.। 28 जून 2004क' पानिक लेबुल 52.80 मीटर धरि पहुंच गेल। बान्हक तलहटी (बेड) 90 मीटर धरि कटि गेल। रामखेतारी स' बनौर धरि लगभग 50 कि.मी. धरि पानि फैलि गेल। कतेको गामक नामोनिशान मेटा गेल। यदि मोतीपुर-नीलकोठी स' हरना धरि 4,000 फुटक चैनल बना देल जाइत त' बान्ह पर स' पानिक लोड कम भ' जाइत। कमला-बलानक पश्चिमी तटबंध उजड़ल लोकक

आवास बनि गेल। गत वर्ष बिहारक राजा आश्वासन देलक जे जमीन खरीद कय नव गाम बसाओल जायत आ पक्का मकान देल जायत। एक वर्ष बीत गेल मुदा कोनो काज नहि भेल। फलस्वरूप, अहू वर्ष बाढ़िक तांडव जिला मुख्यालय स' 22 कि.मी. उत्तर-पूब कमला नदीक पश्चिमी तटबंधक भीतर बसल कन्हौलीक तुरकाहा टोलक 50स' ऊपर घर 26 जुलाइ 2003कें कमला अपना पेट मे लय लेलनि। गाम सभक सुरक्षाक लेल महराजी बान्ह बान्हल गेल छल। बान्ह पर सखुआ, पलाश, बनबैर ओ पीपरक जंगल। 1985स' एहि बान्हक कोनो मरम्मत नहि भेल। एहि क्षेत्र मे वानपुरा पुबारि टोल कें बचयबाक हेतु रिंग बान्ह बनाओल गेल। पछबारि टोलक लोक विरोध कयलक। धीरेन्द्र ब्रह्मचारीक राजशक्तिक जीत भेल। पाली पंचायतक हाल बेहाल। सब वर्ष यैह हाल रहैत अछि। माटि बालु मे परिणत। फसिल मरहन्ना। अतिवृष्टि ओ नेपाल द्वारा पानि छोड़ि देला पर बाढ़िक अन्तहीन कथा एहि जिलाक संग जुड़ि जाइत अछि। समाधान छैक किन्तु बिना राजशक्तिक संभव नहि। नेपाल मे रिजर्वबायरक बिना बाढ़िक संकट दूर नहि भ' सकत।

कृषि एहि जिलाक विशाल जनसंख्याक जीविकाक प्रधान साधन अछि। आर्थिक विकास कृषिक विकासक बिना संभव नहि। कृषिक्रान्ति औद्योगिक क्रान्तिक पूर्वाधार अछि। अगहनी फसिल सर्वप्रमुख फसिल अछि। कृषियोग्य भूमिक लगभग 83 प्रतिशत क्षेत्र मे धान उपजाओल जाइछ। धान, गहूम, मकई ओ साग-सब्जी एहि जिला मे उपजाओल जाइछ। दलहन मे खेसारीक उत्पादन कम भ' गेल अछि। कुसियार सेहो होइछ। बेनीपट्टी अंचल मे तमाकू कयल जाइछ। मखान, तीसी, सरिसो, तिल, अंडी, आलू, अल्हुआ उपजाओल जाइछ। हरितक्रान्तिक सर्वाधिक प्रभाव गहूमक खेती पर परल छैक। उन्नत प्रभेदक बीज, उर्वरक, कीटनाशक दवाइ ओ पटौनीक उपयोग अधिकतम गहूमक खेती मे भ' रहल अछि। उपजा सेहो सन्तोषजनक छैक। मड़ुआक खेती आब कम भ' गेल अछि। जूटक खेतीक विस्तार भेल छैक।

भूमि सुधार अर्थात छोट कृषक, कृषि श्रमिक ओ भूमिहीनक लाभार्थ भूमि स्वामित्वक पुनर्वितरण एहि जिला मे नहि भेल छैक। एखनो लोकलग हजार बीघा स' ऊपर जोत जमीन छैक। उचित सीमा स' बहुत बेसी। भूमि अधिग्रहण कय भूमिहीन मे बांटल नहि गेल। एहि जिला मे भूदान स' 17,530.02 एकड़ भूमि प्राप्त भेल और 15,725.45 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच बांटल गेल। किन्तु भूमिहीनक बीच आवंटित भूमि मे मामिला-मोकदमा सेहो भेल छैक। फाजिल जोत जमीन जाधरि भूमिहीनक बीच नहि बांटल जायत, भुखमरी रहत ओ कृषि श्रमिकक पलायन एहि क्षेत्र स' होइत रहत।

एहि जिलाक औद्योगिक विकास नहि भेल छैक। चीनी मिल-लोहट

सकरी ओ रैयाम मे अछि। राज दरभंगाक प्रबन्ध मे सकरी ओ लोहट चीनी मिल छल। 1914मे निर्मित तीनू मिल रुग्ण भ' गेल। राज्य सरकारक बिहार राज्य चीनी निगम एकरा अपना अधीन क' लेलक। तीनू मिलक स्थिति आरो खराब भ' गेल। कुसियार उत्पादक कृषकक करोड़ो रुपया बांकी राखि लेलक। तीनू मिलक आधुनिकीकरण आवश्यक अछि। संगहि कुसियारक सिट्ठी स' कागज ओ राब (शीरा)स' शराबक कारखाना लगाओल जा सकैछ। जयनगर मे 12टा एवं घोघड़डीहा मे 8टा चाउरक मिल छल। आधुनिक ढंगक चाउर मिल नहि अछि। मधुबनी ओ झंझारपुर मे बेल मेटल इन्डस्ट्रीज छल। झंझारपुर मे कांसकार इन्डस्ट्रीयल कोआपरेटिव बनल छल 1956मे। सन्तोषजनक काज नहि कयलक। हरलाखी एवं पंडौल मे चमड़ाक ट्रेनिंग कारखाना सहकारिता क्षेत्र मे बनल। उचित काज नहि कयलक। सागरपुर मे चमड़ाक कारखाना छल। 1956मे बिहार राज्य लघु उद्योग विकास निगमक अन्तर्गत सकरी मे चमड़ा ओ खपड़ाक कारखाना बनल छल। काज सन्तोषजनक छलैक। सम्प्रति मरणासन्न अछि। आधुनिक ढंगक चमड़ाक कारखाना बनाओल जा सकैछ। माल-जाल अत्यधिक संख्या मे एहि क्षेत्र मे अछि। खादी ओ ग्रामोद्योगक महत्वपूर्ण क्षेत्र अछि ई जिला। सागरपुर, पंडौल ओ मधुबनी मे देशक सब स' उत्तम कोटिक सूती ओ रेशमी कपड़ा बनैत छल। बिहार खादी समिति 37 गोट शाखाक माध्यम स' काज करैत छल। चमड़ाक सामान, तेल, मधु, गूड़, साबुन आदि सेहो बनैत छल एवं स्थानीय बाजार मे एकर खपत होइत छल। सरकारी साहाय्य भेटैत छल जे राज्य सरकार 14 वर्ष स' लटपटौने अछि। एहि क्षेत्र मे जोलहा बुनकर अत्यधिक छथि। मात्र भौर मे 2000 बुनकर छथि तथा 100 बुनकर सहयोग समिति छल। बुनकर कें समय पर सस्त ओ सुलभ सूत देबाक हेतु सरकार पंडौल कोआपरेटिव स्पिनिंग मिल आधुनिक ढंगक बनौलक। उत्पादन उत्तम कोटिक छल। राजनीति मे बर्बाद भ' गेल। कार्यशील पूंजीक अभाव। सम्प्रति बन्द अछि। पंडौल मे औद्योगिक प्रांगण बनि रहल छल। सफल नहि भेल। भूमि अधिग्रहण भ' चुकल छल। मधुबनी जिला मे योजना आयोग मखानक उत्पादन ओ उद्योग कें प्रोत्साहनक हेतु 33 करोड़ रुपया खर्च करय जा रहल अछि। प्राकृतिक तेलक संभावना एहि क्षेत्रक बेनीपट्टी ओ मधुबनी मे प्रचुर छैक। प्रारम्भिक जांच-पड़ताल भ' चुकल छैक। सर्वेक्षणक काज ब्रिटिश फर्म कैरन पैट्रोलियम इंडिया लिमिटेड कें सुपुर्द कयल गेल अछि। सफलता भेटला पर पेट्रोलियमक अतिरिक्त लघु सहायक उद्योगक एतय विकास होयत। बांसक उत्पादन ओ उद्योग कें प्रोत्साहित एवं विकसित कयल जा सकैछ। नदी जतय गाद जमा कय अपन धार बदलैत अछि ओहि भूमि पर बांस बढ़िया उपजैत छैक। सहकारिता क्षेत्र मे राजनगर, फुलपरास, पंडौल मे पटिया एवं सीकी उद्योग विकसित छल। एकर पुनरूद्धार परमावश्यक। खाद्य प्रसंस्करण उद्योगक भविष्य बढ़िया छैक। कृषि आधारित उद्योग कें

प्रोत्साहन स' रोजगारक अवसर मे वृद्धि होयत। जयनगर मे दियासलाइ कारखाना बनाओल जा सकैछ। एकीकृत हस्तकरघा योजनाक अन्तर्गत बुनकर कें करघा प्रदान, कार्यशालाक निर्माण ओ कार्यशील पूंजी उपलब्ध कराओल जाइछ। एहि योजना पर सघन काजक आवश्यकता छैक। मिथिला चित्रकला-मधुबनी पेंटिंग ईसा स' लगभग 200 वर्ष पूर्व एहि क्षेत्र मे व्याप्त छल- भित्ति चित्रक रूप मे। 1962मे एहि उद्योगक व्यवसायीकरण भेल। देवाल पेंटिंग स' कागत ओ कपड़ा पर काज होबय लागल। बाद मे सनमाइका सेहो जुड़ल। ग्रीटिंग कार्ड बनय लागल। ई मधुबनी, भवानीपुर, जितवारपुर, रांटी, रैयाम, सिमरी, लहेरियागंज मे मुख्य रूप स' केन्द्रित अछि। छिटफुट सभठाम बनैत अछि। पैघ दोकान ओ शोरूमक अभाव छैक। प्रदर्शनीक आयोजन नहियेक बराबर अछि। व्यापारी लोकनि उचित मूल्य नहि दय कलाकार कें ठकैत छथि, जखन कि यूरोपीय देश, रूस, अमेरिका ओ फ्रांस मे एकर बढ़िया बाजार अछि। आल इंडिया हैण्डीक्राफ्ट बोर्डक एक शाखा कार्यालय मधुबनी मे अछि, मुदा कलाकार कें आर्थिक साहाय्य ओ विपणनक उचित सुविधा नहि भेटि रहल अछि। बिस्कोमानक अधीन पंडौल मे शीतगृह छल, जे बन्द अछि। लीज पर देल गेल छैक। 1997मे केन्द्रीय भंडारण निगम मधुबनी मे कोल्ड स्टोरेजक निर्माणक स्वीकृति देने छल। मत्स्य उद्योगक विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा रामपट्टी मे आधुनिक ढंगक हेचरीक निर्माण भ' रहल छल। पानिक व्यवस्थाक कारणें योजना असफल भेल। मत्स्य उद्योगक विकास लाभकर होयत।

कोनो क्षेत्रक सामाजिक, आर्थिक ओ औद्योगिक विकास मे ऊर्जाक महत्वपूर्ण स्थान छैक। संगहि जीवन सुखमय बनयबाक लेल बिजली आवश्यक। ताप विद्युत गृह एहि क्षेत्र मे नहि अछि। प्रथम पंचवर्षीय योजना काल मे 10 मेगावाट क्षमताबला डिजिल विद्युत केन्द्र सकरी मे खोलल गेल छल। आब निष्क्रिय अछि। पंडौल ग्रिड स्टेशन अछि। संचरण ओ वितरण व्यवस्था चौपट छैक। सुपौल जिलाक कटैया जल विद्युत गृह स' एहि समीपवर्ती जिला कें कोनो लाभ नहि छैक। सप्तकोसी हाई डैमक सफल कार्यान्वयन भेने बिना ऊर्जाक समस्याक समाधान संभव नहि अछि। करनाली नदी पर प्रस्तावित शीशापानी बांध स' विद्युत उत्पादन क्षमता 16000 मेगावाट, महाकाली पर पंचेश्वर बांध स' विद्युत उत्पादन क्षमता 2000 मेगावाट तथा बराह क्षेत्र स' 3300 मेगावाट बिजली आपूर्ति होयत। तखनहि एहि क्षेत्र मे सस्त ओ प्रचुर ऊर्जा शक्ति उपलब्ध भ' सकत। अपारम्परिक ऊर्जा स्रोत मे बायो गैस एकटा प्रमुख साधन भ' सकैछ। किछु गोटे एकर व्यवस्था कयने छथि। पर्याप्त गोबर स' ई संयंत्र चलैत छैक। 85 घन मी. क्षमताक एक संयंत्र स' लगभग चालीस टा परिवारक भोजन बनबय योग्य गैसक आपूर्ति संभव छैक। पटौनी ओ बायोगैस लैम्प स' इजोतक व्यवस्था सेहो होइत छैक।

यातायात साधनक विकासक बिना कोनो क्षेत्रक आर्थिक विकास नहि भ' सकैत अछि। एहि मे सड़क मार्ग मुख्य अछि। एखन सड़क पर आड़ा-तिरछा डेढ़ स' दू फीट खाधि अछि। अलकतराक नामोनिशान नहि। वाहनक कोन कथा पैरे चलब संहो कष्टकर। मधुबनी जिलाक तीनटा राष्ट्रीय उच्च पथ 57, 104, 105 ओ अन्य ग्रामीण सड़कक यैह हाल। राष्ट्रीय उच्च पथ पर काज भ' रहल अछि मुदा गति सुस्त अछि। जिलाक दू लोकसभा ओ विधानसभा क्षेत्र कें भारत-नेपाल सीमा स' जोरयवला तीनू पथ कें राष्ट्रीय उच्चपथ मे परिवर्तन तीन साल पहिने कयल गेल। चारि लेन मे विस्तारवला राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 57-सकरी-झंझारपुर-फुलपरास धरि जायवला, जे 60 कि.मी. लम्बा छैक, दू अनुमंडल मुख्यालय झंझारपुर ओ फुलपरास कें जोड़ैत छैक। एहि मे मनीगाछी स' गंगौली, पाहीपुल स' नरूआर, गंगौली स' पाही पुल धरि करोड़ो रुपयाक लागत स' मरम्मति चलि रहल छैक। विदेश्वरस्थान स' पाही पुल धरि सड़कक नामोनिशान नहि छैक। यैह हाल छैक भारत-नेपाल सीमाक लगभग समानान्तर राष्ट्रीय उच्च पथ 104क, जे वासुकी बिहारी मे प्रवेश कय उमगांव, हरलाखी, बासोपट्टी, जयनगर, लदनियां, लौकहा स' लौकही मे नरहिया मे जा कय खत्म होइछ। वर्ष 2002-03मे 1 करोड़ 10 लाख रुपया स' उमगांव स' हरलाखी धरि सड़क निर्माण काज चलि रहल छैक। हरलाखी स' जयनगर धरि सड़क चौड़ीकरण हेतु 6 करोड़ 95 लाख रुपया स' काज भ' रहल छैक, जाहि मे जयनगर शहर मे 10 फीट चौड़ा ड्रेन ओ फुटफाथ सेहो अछि। जयनगर स' लदनियां धरि 2 करोड़ 89 लाख रुपया, लदनियां स' लौकहा धरि 5 करोड़ 18 लाख रुपया तथा लौकहा स' नरहिया धरि 5 करोड़ 20 लाख रुपयाक प्राक्कलन कयल गेल छैक। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 105 चारि लेनवला एनएच 57 एवं एनएच 104कें सोझे उत्तर स' दक्षिण धरि जोड़ैत अछि। वर्ष 2002-2003मे तीन करोड़ रुपयाक लागत स' पाराडीह स' मुरैठ 22 कि.मी. सड़क बनि गेल छैक। एकर बाद जयनगर धरि सड़क टूटले छैक। सड़क निर्माण विभागक अधीन 400 कि.मी. सड़क छैक। रहिका-पुपरी पथ-10कि.मी. जे गत वर्ष बनल छल, टूटि रहल छैक। कमतौल-बसैठा-मधवापुर पथक कय वर्ष स' मरम्मति नहि भेल छैक। मधुवनी-सकरीक बीच 15 कि.मी. पथ 13म ओ 15म कि.मी. पर सड़क कें सड़क नहि कहल जा सकैछ। जून 2002मे झंझारपुर रेल सह सड़क पुलक दुनू दिस रास्ता अपन जर्जरताक सीमा पार कय चुकल छैक। मनीगाछी स' झंझारपुर एवं खोपा चौक स' घोघड़डीहा, कृष्णापट्टी, निर्मली, कुनौली जायवला सड़क अपन जर्जरताक पराकाष्ठा कें पार कय चुकल अछि। दिसम्बर 2001मे बेनीपट्टी अनुमंडलक सब मुख्य सड़क ओ काठपुल बदहाल स्थिति मे छल। यात्रा सर्वाधिक कष्टकर। सरिसब, नवटोल, धकजरी, रहिका ओ जीवछघाटक लकड़ी पुल जर्जर छैक। यैह हाल

बेनीपट्टी अनुमंडलक प्रसिद्ध सिद्धपीठ उच्चैठ होइत भारत-नेपाल सीमा पर स्थित मधबापुर प्रखंड धरिक सड़कक छैक। बासुकी मोड़ पर लकड़ीक पुल टूटय बला अछि। अनुमंडल मुख्यालयक उमगांव स्थित हरलाखी प्रखंड मुख्यालय होइत जनकपुर (नेपाल) धरि सड़क अत्यधिक बदहाल। अंधराठाढ़ी प्रखंडक कर्णपुर स' हररी धरि सड़क सांसद कोटा स' 10 लाख रुपया स' निर्मित भेल मुदा अपूर्ण अछि। 10 लाखक लागत स' निर्मित राजनगर-मधुबनी भाया बेलवाड सड़कक मरम्मति ओ सुदृढ़ीकरण भेल, मुदा काज असन्तोषजनक। जनवरी 2002मे फुलपरासक विधायक कोटा स' 75 लाख रुपया अनुशंसित कयल गेल, जाहि मे पिपरौलिया स्थित आरसीसी पुल 10 लाख रुपया स', घोघड़डीहा-इनरबा-महादेवपथ पुल 14 लाख रुपया स', ब्रह्मपुर-महादेवपथ 2 लाख 14 हजार रुपया, घोघड़डीहा तिलाठ स' पूब लकड़ी पुल 97 हजार रुपया, फुलपरास पुबारि टोल बासंती पथ मे आरसीसी पुल 14 लाख रुपया, भदना-फुलपरास बाढ़िग्रस्त पुल 2 लाख 64 हजार रुपया स' बनयवला छल। दरभंगा-फारबिसगंज अन्तर्गत फुलपरास ओ नरहियाक बीच 10 करोड़ रुपया स' सड़क सह टूटा पुलक काज जनवरी 2002 मे शुरू भेल। एहि मे छोट-पैघ 36 टा पुल छैक। भुतहाक पास कोसी मे बनयवला लम्बा पुलक माडल पूना मे तैयार भ' रहल छल।

रेलमार्ग मे मीटरगेज प्राचीन काल स' चलि आबि रहल अछि। सकरी स' निर्मली ओ जयनगर धरि रेल लाइन जाइत अछि। आमान परिवर्तनक काज चालू अछि। 22 फरवरी 1974मे सकरी-हसनपुर रेललाइन, जे 75 कि.मी. लम्बा ओ 7 करोड़ टाका स' निर्माण होइत, तत्कालीन रेलमंत्री द्वारा शिलान्यास भेल छल। एखन धरि (गत तीस वर्ष मे) शुभारम्भ नहि भेल अछि। 31 मार्च 1974 कें झंझारपुर-लौकहा 42 कि.मी. रेललाइनक शिलान्यास भेल छल जे बनि कय तैयार अछि ओ पटरी पर रेलगाड़ी चलैत अछि। जानकी एक्सप्रेस स' जयनगर ओ निर्मली कें जोड़ल गेल। सकरी स्टेशन होइत दुनू रूट मे ट्रेन जाइत छल। नरकटियागंज-जयनगर कें सेहो जोड़ल गेल गंडक एक्सप्रेस स'। वायुमार्ग विकसित नहि भेल छैक।

जुलाइ 2002मे बीस सूत्री कार्यक्रमक कार्यान्वनक मूल्यांकन कयल गेल छल भारत सरकारक निर्धारित मापदंडक आधार पर। एहि मे कमजोर वर्गक लेल मकान, अल्प आयवर्ग कें आवास, वृक्षारोपण, अधिशेष भूमिक वितरण, पेयज़ल समस्या, बायो गैस एवं अन्य योजना शामिल छल। मधुबनी जिला पन्द्रहम स्थान पर रहल। निर्धारित मापदंडक अन्तर्गत देश मे 100 जिला अत्यन्त पिछड़ल पाओल गेल जाहि मे मधुबनी जिला सेहो छल। आधारभूत सुविधा बढ़यबाक अनुशंसा कयल गेल छल।

पर्यटन उद्योगक विकास हेतु राज्य सरकार एखन धरि सांस्कृतिक ओ पुरातात्विक अवशेषक विकास हेतु एहि जिला मे कोनो काज नहि कयने अछि, जखन कि बिहार सरकार पर्यटन कें उद्योगक श्रेणी मे मानि चुकल अछि।

बलिराजगढ़ : ई बाबूबरही प्रखंड मुख्यालय स' 3 कि.मी. पूब मे 350 एकड़ भूमि मे पसरल अछि। 1916 मे राष्ट्रीय स्मारक एवं 1993 मे बिहार सरकार द्वारा पर्यटन स्थल घोषित तीनटा महत्वपूर्ण कालक प्राचीन इतिहास कें समेटने बलिराजगढ़ कोनो उद्धारकक बाट जोहि रहल अछि। सर्वप्रथम 1916 मे तत्कालीन अनुमंडल पदाधिकारी जार्ज ग्रियर्सनक नजरि एहि ऐतिहासिक भूखंड पर परलनि एवं एकरा राष्ट्रीय स्मारक घोषित कयलनि। 1962-63 मे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग उत्खनन कयलक एवं तीनटा सांस्कृतिक कालक अनुसन्धान भेल। प्रथम ईशा स' पूर्व 200 शताब्दी स' 200 ई. धरि। दोसर 200ई. स' 600 ई. धरि एवं तेसर सांस्कृतिक काल ओ ओकर बाद। प्रकृतिक सौम्य वातावरण मे प्राकृतिक सुषमा स' अलंकृत ई सांस्कृतिक विरासत असुर शासक रजा बलिक राजधानी छल। किलाक भीतर प्रवेश कयला पर नियोजित नगर व्यवस्था ओ रिहायसी मकानक अवशेष मौजूद अछि। कृष्णमार्जित मृदभांडक टुकड़ा, कॉपरकास्ट क्वाइन्स, टेराकोटा सिंग, माटिक वर्तन एवं अन्य पुरातात्विक अवशेष उत्खनन मे भेटल छैक। प्रवेश द्वारक अवशेष सेहो अछि।

- **भौर** : ई महाराज महेश टाकुरक राजधानी छल। 200 वर्ष धरि एहि राजक राजधानी।
- **भीठ** : भगवानपुर मधेपुर थानाक ई गाम मल्लदेवक राजधानीक लेल प्रसिद्ध अछि।
- **उच्चैठ** : भगवतीक सिद्धपीठ मन्दिर जतय कवि कालिदास अपन कतेको साहित्यक रचना कयलनि। हुनक डीह एखनो अछि।
- **जगवन** : महर्षि याज्ञवल्क्यक आश्रम- दू बीघा मे पसरल अक्षयवट वृक्ष ओ राजा जनकक कूपक लेल प्रसिद्ध अछि।
- **सरिसव पाही** : पक्षधर मिश्र ओ अयाची मिश्रक डीह। अयाचीक पुत्र शंकरक दान स' चमनिया पोखरि दर्शनीय।
- **अन्धराठाढ़ी** : अद्वैतवेदान्ती वाचस्पति मिश्रक जन्मस्थान। भामती टीका एतहि लिखल गेल। सम्प्रति वाचस्पति नगर स्टेशन।
- **पाली** : वर्णरत्नाकरक लेखक पं. ज्योतिरीश्वर ठाकुरक जन्मभूमि
- **मंगरौनी** : नव्यन्यायक प्रर्वत्तक गंगेश उपाध्यायक जन्मभूमि।
- **नवानी** : नव्यन्यायक प्रणेता पं. बच्चा झाक कर्मभूमि।
- **द्वालख** : मधेपुर थानान्तर्गत ऐतिहासिक गाम। राजा नान्यदेवक पुत्र गंगदेव ओ मल्लदेव बंगालक बल्लाल सेन कें युद्ध मे परास्त कयने छलाह।
- **विस्फी** : महाकवि विद्यापतिक जन्मभूमि।
- **भवानीपुर** : महादेवक मन्दिर। विद्यापतिक उगना महादेवक रूप मे प्रसिद्ध अछि।

■

समस्तीपुर



किंवदन्ती अछि जे मुगलकाल मे समसुद्दीन अल्तमसक नाम पर एहि स्थानक नाम समसुद्दीपुर राखल गेल छल, जे बाद मे समस्तीपुरक नाम स' प्रख्यात भेल। ई 1 दिसम्बर 1875 कें अनुमंडल बनल एवं 14 नवम्बर 1972 कें एकरा जिला बनाओल गेल। एहि स' पहिने ई दरभंगा जिलाक एकटा अनुमंडल छल। एखन दरभंगा प्रमंडलक एकटा जिला अछि। जिला मुख्यालय समस्तीपुर मे अछि। चारि अनुमंडल-समस्तीपुर, दलसिंहसराय, रोसड़ा एवं पटोरी। कुल 20 प्रखंड आ 380 पंचायत। मोरवा मे 17 पंचायत, वारिसनगर मे 20, सरायरंजन मे 23, मोहउद्दीननगर मे 17, शिवाजीनगर मे 17, पूसा मे 13, पटोरी मे 17, हसनपुर मे 20, विद्यापतिनगर मे 14, विथान मे 13, सिंघिया मे 17, रोसड़ा मे 16, ताजपुर मे 16, दलसिंहसराय मे 16, विभूतिपुर मे 29, कल्याणपुर मे 31, समस्तीपुर मे 26, उजियारपुर मे 28, खानपुर मे 19 तथा मोहनपुर मे 11 पंचायत अछि। एहि जिलाक उत्तर मे दरभंगा जिला, पूब मे दरभंगा-खगड़िया, दक्षिण मे बेगूसराय आ पश्चिम मे वैशाली-मुजफ्फरपुर जिला अछि। 2904 वर्ग कि. मी. क्षेत्रफल मे ई जिला पसरल अछि। 21°58' 10" ओ 27°31' 15" उत्तर अक्षांश तथा 83° 19' 50" ओ 88°17'40" पूर्वीय देशान्तर बीच विस्तृत अछि। एहि जिला मे बूढ़ी गंडक ओ कमला बलान प्रमुख नदी बहैत छैक। नदी स' विनाशकारी बाढ़ि प्रतिवर्ष अबैछ, किन्तु एकर पोर-पोर कें उर्वरक माटि ओ पानि स' सिंचित सेहो करैछ। वर्षा औसतन 1075 मि. मी. होइछ। 60 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे मोइन अछि।

वर्ष 2001क जनगणना मे एहि जिलाक जनसंख्या 34,13,413 आंकल गेल, जे 1991 मे 27,15,297 छल। एहि वर्षक जनगणना मे कुल जनसंख्या 6,098,116 वृद्धि भेल। अर्थात, एहि अवधि मे 25.71 प्रतिशत जनसंख्या वृद्धि भेल। बिहारक तुलना मे 2.72 प्रतिशत कम ओ देशक तुलना मे 4.37 प्रतिशत वृद्धि भेल छैक। जनसंख्याक घनत्व 1175, बिहारक 880 तथा भारक 324। एहि जिलाक जनसंख्याक घनत्व देशक तुलना मे साढ़े तीन गुणा अधिक अछि। कुल पुरुषक संख्या 17,71,249 ओ कुल महिलाक संख्या 16,42,1641 प्रति हजार पुरुष पर महिलाक संख्या 927 अछि एहि जिला मे। कुल साक्षरता 45.76 प्रतिशत, जाहि मे पुरुष 57.83 प्रतिशत ओ महिला 32.69 प्रतिशत शिक्षित छथि। साक्षरताक दृष्टि स' किछु सुधार अछि, किन्तु समग्र बिहार स्वयं 35म स्थान पर, जे अंतिम स्थान थिक राष्ट्रीय तुलना मे। श्रम शक्ति मे वृद्दि तखने हितकर जखन रोजगार उपलब्ध कराओल जा सकय अन्यथा बेकारी मे वृद्धि।

ई भूभाग नदीक क्रीड़ा-क्षेत्र अछि। नदी द्वारा लायल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल। बाढ़ि आ जलाप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि अत्यधिक नरम पाओल जाइछ। नदीक कछेड़ मे वाहित बालु ओ दोआब क्षेत्र मे चिक्कन, सूक्ष्म गाद तथा मृतिकाक निक्षेप पाओल जाइछ। पुरातन जलोढ़ मे मृतिकाक मात्रा अधिक रहैत छैक। पश्चिमी समस्तीपुर जिला मे स्थित बांगड़ माटि मे 30 प्रतिशत स' अधिक चून पाओल जाइछ। एतयक माटि मुख्यतः बलुआर, बालसुन्दरी, दोरस, मटियार ओ चिक्कन अछि।

कृषि प्रधान जिला समस्तीपुर मे प्राकृतिक वनस्पति वनक रूप मे पाओल जाइछ छल, किन्तु प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक हेतु साफ कय देल गेल छैक। कृषि क्षेत्रक बगीचा, उद्यान, खेत-आहर-पाइनक अलंग, परती भूमि, सड़क, रेलवे लाइनक कात, गैर कृषि भूमि ओ बंजर भूमि मे तार, खजूर, बबूर, महुआ, कहुआ, सिमर, तेतरि, आम, नीम, बड़, पीपड़, पाकरिक गाछ, बांस, मूंज ओ झाड़ी अछि। एहि जिला मे वन क्षेत्र 46.62 कि.मी. अर्थात 1.61 प्रतिशत। वन क्षेत्र कें बढ़यबाक हेतु राज्य सरकार बीस वर्षीय महत्वाकांक्षी योजना बनौलक अछि। वर्तमान समय मे वृक्षक कटाइ पर क्रमबद्ध रुप स' आंशिक प्रतिबंध लगौने अछि। खैर ओ बांस एहि प्रतिबंध मे नहि। सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी ओ वनरोपण वन-रक्षणक दिशा मे उत्तम प्रयास भेल अछि।

समशीतोष्ण कटिबंध मे स्थित अछि ई जिला। जलवायु उपोष्ण एवं आर्द्र। हिमालयक ऊपर प्रवाहित होमयवला पवनक दिशा एकर जलवायु कें प्रभावित करयबला वायु-राशि एवं वर्षाक वितरण प्रभावित करैछ। समुद्र तल स' सामान्य उंचाइ 75 मी. स' कम अछि। सामान्यतः 15 जून धरि तथा मध्य जून स' अक्टूबर धरि वर्षा ऋतु रहैछ। मानसूनक आगमनक तिथि

अत्यन्त अनिश्चित छैक। वर्षाक आगमन मानसूनक संग तथा समाप्तियो ओकरे संग। शीत काल मे सामान्य वर्षा होइछ। एहि जिला मे 1100-1300 मि.मी. वर्षा होइछ। 1966 मे भयानक रौदी भेल छल। ओहि वर्ष एहि जिला मे 66-70 प्रतिशत वर्षा भेल छल।

समस्तीपुर जिलाक वर्तमान आर्थिक, सामाजिक ओ राजनैतिक स्थिति मे कृषि विकासक अनिवार्यता निर्विवाद अछि। एहि जिलाक लेल कृषि अर्थतंत्रक धूरी तथा आर्थिक विकास कृषि विकासक बिना संभव नहि। कृषि क्रान्ति औद्योगिक क्रान्तिक पूर्वाधार अछि। कृषि उत्पादन मे वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार एवं आयक अवसर मे वृद्धि तथा आत्मनिर्भरता प्राप्तिक हेतु कृषिक आधुनिकीकरण परमावश्यक। आर्थिक विकास कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि द्वारा संभव। किंवदन्ती अछि जे अकबरक दरबार मे एहि जिलाक माटिक अपन विशेषता छल। चाउर एतहि स' जाइत छलनि। 1500 सिक्काक लीज पर घोड़ा पोसबाक हेतु जमीन लय 5 जुलाइ 1784 मे फार्मक स्थापना कयल गेल। पूसा कृषि अनुसन्धान केन्द्र 1200 एकड़ भूमि मे 1904 मे खोलल गेल छल। नव-नव किस्मक अन्न एवं अन्य फसिलक अन्वेषण ओ उत्पादन कय प्रदर्शित कयल जाइत छल। 1934क भूकम्प मे क्षतिग्रस्त भ' गेल। राजनैतिक षड्यंत्र स' एकरा उठा क' दिल्ली ल' जायल गेल। 7 नवम्बर 1936 कें नव संस्थान न्यू पूसा रोडक नाम स' उद्घाटन कयल गेल। राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय बनला पर एतुका फार्म एकरा अधीन कयल गेल। पटनाक शेखपुरा मे एहि फार्म कें चलायल जाइत छल। पुनः शेखपुरा फार्म इंदिरा गांधी अस्पताल कें दय देल गेल। एतयक माटि बलुआर, बालसुन्दरी, दोरस, मटियार ओ चिकनी अछि। बूढ़ी गंडकक दक्षिणक बलुआर माटि रब्बी फसिलक हेतु उत्तम छैक। बूढ़ी गंडक आ बागमतीक दोआब मे ऊंच भूमि अछि। जाहि मे पटोरी, दलसिंगसराय ओ मोहद्दीननगरक प्रसिद्ध चौर अछि। धान, तमाकू, कुसियार, आलू, पटुआ, मिरचाई, हरदि गहूम, मकइ, जौ ओ मरुआ खास फसिल अछि। लगभग एक तेहाइ भाग मे धान होइछ। समस्तीपुर, दलसिंहसराय ओ वारिसनगर मे तमाकू, तेलहन, मिरचाई। दलिहन मे राहड़ि ओ खेसारी प्रधान अछि। मरुआ ओ खेसारीक खेती मे ह्रास भेल अछि। मात्र 20 प्रतिशत कृषि क्षेत्र मे दलिहन उपजाओल जाइछ। मिरचाई ओ मसाला सर्वाधिक एहि जिला मे उपजाओल जाइछ। विश्वप्रसिद्ध सरैसा तमाकू एहि क्षेत्र मे होइछ। फल ओ सब्जी सेहो उपजाओल जाइछ। वाणिज्यिक फसिलक हेतु मिथिलांचलक ई प्रमुख क्षेत्र अछि।

भूमिक स्वामित्व, अधिकार एवं दायित्व निर्धारण नहि भेल छैक। भूमि कें जोतयवलाक स्वामित्व, उचित मात्रा मे लगानक भुगतान, भूमिक हस्तांतरणक स्वतंत्र व्यवस्था एवं जोतक सीमाक निर्धारण एक आदर्श भूमि

व्यवस्थाक गुण मानल जाइत छैक। एखनो हजार बीघा स' ऊपर जोतयवला कतेको छथि। राज्य प्रशासन अत्यधिक शिथिल अछि। भूदान स' एहि जिला मे कतेक जमीन आवल एवं वितरित भेल कोनो खतियान राजस्व एवं भूमि सुधार विभाग लग नहि अछि। आब तैयार कयल जा रहल अछि। समस्तीपुर जिला मे भूदान मे 5537.84 एकड़ भूमि प्राप्त भेल जाहि मे मात्र 4585. 24 एकड़ भूमि भूमिहीन मे वितरित भेल। भूदान किसान कें कतेको मामिला-मोकदमा झेलय परि रहल छनि।

अतिवृष्टि ओ अनावृष्टि स' लाखो टाकाक सम्पत्ति ओ जान-मालक क्षति होइछ एहि जिला मे। कोसी, कमला तथा करेहक बाढ़ि कहर मचौने रहैछ। समस्तीपुर जिलाक विथान आ हसनपुर प्रखंड तथा दरभंगा जिलाक कुशेश्वरस्थान बाढ़ि स' भयंकर रूपें प्रभावित होइत अछि। तहिना गांगाक बाढ़ि स' मोहद्दीनगर, पटोरी ओ दलसिंगसराय प्रखंडक किछु भाग क्षतिग्रस्त होइछ। कोनो स्थायी प्रबंध बाढ़ि स' बचयबाक हेतु एखन धरि नहि कयल गेल छैक। राज्य जलसंसाधन विभागक अनुसार 18 जून 2003 धरि एहि जिला मे स्वीकृत 81 बाढ़ि निरोधक योजना मे 72 पूरा कयल गेल छल, तथापि बाढ़िक तांडव पूर्ववते। हसनपुर-सखवा पथ स' जुड़ल वाटरवेजक तटबंध समस्तीपुरं शहर स' 70 कि. मी. पर अछि। 1958 मे ई तटबंध बनल। दुनू तटबंधक बीचक दूरी दू कि. मी. चौड़ा अछि। दुनू तटबंधक बीच अधवारा समूहक करेह नदी बहैछ। करेह मे आगू चलिकय कोसी आ कमलाक प्रलय जुटि जाइछ। वाटरवेजक बामा तटबंधक कन्ट्री साइड मे दरभंगा, सहरसा ओ खगड़िया जिलाक सैकड़ो गाम अछि। दहिना तटबंधक कन्ट्री साइड मे समस्तीपुर जिलाक सैकड़ो गाम। ई तटबंध हायाघाट स' चलिकय राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 31 मे खगड़िया लग मिल जाइछ। बामा भागक तटबंध विथान प्रखंडक सलहा धरि अछि। 24 फरवरी 1993 कें एहि जिलाक अन्तर्गत गढ़पुरा-सखवा ग्रामीण पथ मे लड़झा घाट मे वाटरवेजक तटबंधक बामा ओ दहिना तटबंध कें जोड़बाक हेतु तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा शिलान्यास कयल गेल। ई एखन धरि नहि बनल अछि। यदि पुल बनि जाइत त' पांच लाख स' ऊपरक आबादी कें यातायातक रास्ता भेटि जाइत। 1987 मे पानिक दबाव स' डरोरी गाम लग 350 मीटर कटाव भ' गेल छल। वर्ष 2000 मे बाढ़िक पानिक कारणें सोरमार हाट स' कुशियारी चौक धरि मुख्य सड़क टूटि गेल छल। जीरो माइल स' पश्चिम हजपुरवा जायवला सड़क बहि गेल। तटबंध स' सटल गाम नामापुर, बघला, कलौंजर, रुपौली आदि गाम कें जोड़यबला पुल तीन साल स' अधूरा अछि। 2002क बाढ़ि मे कोल्हुआ घाट मोर लग, जतय तटबंध घूमि जाइछ, 100 फुट कटाव भेल छल। एखन धरि मरम्मति नहि भेल छैक। कुपही टोल लग बांध क्षतिग्रस्त अछि। भगौत, भटवन, बल्लहपुर, सखबा, मिखनौलिया,

करांची आर सिरसिया धरि कतेको छोट-मोट कटाव छैक। एकर मरम्मति नहि भेल छैक। निष्कर्ष जे तटबंधक बचावक कोनो काज नहि होइछ। 10 सितम्बर 2003 मे गंगाक पानि मोहद्दीनगर-महनार मार्ग पर तीन फीट ऊपर बहि रहल छल। एहि जिलाक मोहनपुर प्रखंडक मानचित्र गंगाक कटाव मे विलुप्त भ' रहल अछि। ई प्रखंड मुख्यालय स' 63 कि. मी. दूर छैक। विलुप्त भ' रहल अछि रसलपुर गाम। एखन धरि 1500 परिवार विस्थापित भ' चुकल अछि। एहि गामक पश्चिमी भाग बहुत पूर्वहि काल मे गंगा मे विलुप्त भ' चुकल छैक। तटबंध रेजिंग ओ बेडवार निर्माणक सरकारी प्रयास पस्त भ' गेल छैक। अपन कठिन कमाइ स' निर्मित घर द्वारि छोड़िकय लोक सब भागि रहल अछि। यैह स्थिति भेल छल जखन लड़झा गाम आ ओकर समीपवर्ती गाम नदीक कटाव मे विलुप्त भ' रहल छल।

एहि जिला मे बहयवाली नदी पर किछु तटबंध बनल, किन्तु नहरि निकालि सिंचाइक व्यवस्था नहि भेल। वाटरवेजक तटबंध बनल शहर स' 70 कि. मी.क दूरी पर मुदा बामा ओ दहिना वाटरवेज तटबंध कें जोड़ल नहि गेल। फरवरी 1993 मे लड़झा गाम मे मात्र शिलान्यास भेल। गंडक स' 165 कि. मी. लम्बा तिरहुत नहरि स' 16,95,000 एकड़ भूमि मे सिंचाइक योजना बनल छल जे पूरा नहि कयल गेल। बागमती नदी पर हायाघाट स' नीचा कोसीक संगम धरि तटबंध बनल अछि। अधवारा समूहक दूटा प्रमुख धार एकमी घाट मे मिलैत अछि एवं आगू जा कय हायाघाट लग बागमती मे समाहित भ' जाइछ। 1976 मे मब्बी स' सिरनिया धरि तटबंध बनाओल गेल आ एकरा करेहक बामा तटबंध स' जोरि देल गेल। लखदेई नदी मे सैदपुर स' आगू राजखंडक समीप उपयुक्त स्थान पर बियर बनाकय पटौनीक व्यवस्था कयल जाय तखने कल्याणपुर प्रखंडक पूसा ओ समस्तीपुर सेहो लाभान्वित होयत। एहि बियर स' एहि प्रखंडक अतिरिक्त मुजफ्फरपुरक किछु क्षेत्र ओ दरभंगा जिलाक जाले सेहो पटौनी स' लाभान्वित होइत। बूढ़ीगंडक पर बाढ़ि सुरक्षा तटबंध दुनू कात बनल अछि, मुदा नहरि निकालि क' सिंचाइक व्यवस्था स' ई क्षेत्र एखनो वंचिते अछि। एहि जिला मे कुल सिंचित क्षेत्र मात्र 29.07 प्रतिशत अछि।

औद्योगिक दृष्टि स' समस्तीपुर एखन धरि अविकसित अछि। साधनक अभाव नहि अछि। विकासक सपना कें मरि जायब अछि। दू गोट चीनी मिल समस्तीपुर ओ हसनपुर मे अछि। 1917 मे एक अंग्रेजक कम्पनी द्वारा 11,99,965 रुपयाक लागत पूंजी स' समस्तीपुर सुगर फैक्ट्रीक निर्माण भेल छल। लगभग 16,00,000 मन कुसियार पेराइ होइत छल। चीनीक उत्पादन लगभग 1,65,000 मन आ कुसियार स' 10.60 प्रतिशत चीनी प्राप्त होइत छल। 1127 श्रमिक काज करैत छलाह ओ 800 टन कुसियार पेरबाक क्षमता छल। 1961-62 मे 1000 टन कुसियार पेरवाक प्रयास भेल, से पूरा

नहि भ' सकल। 1974-75 मे बिहार स्टेट सुगर कॉरपोरेशन बनल आ एहि मिल कें अपना अधीन क' लेलक। 1996-97 मे ई मिल बन्द भ' गेल। चीनीक उत्पादन बन्द भ' गेल। श्रमिक सभ बेरोजगार भ' गेल। बन्दी स' कारखानाक छत नष्ट भ' गेल। कीमती विदेशी मशीन सभ खुल्ला पड़ल अछि तथा ओहि पर छोट-छोट गाछ जनमि गेल छैक। बैह भेल राज्य सरकारक प्रयास स' चीनीक उत्पादन। दोसर चीनीक कारखाना हसनपुर मे बिड़ला ब्रदर्सक व्यवस्था मे अछि। दि न्यू इंडिया सुगर मिल्सक लागत पूंजी 18,37,700 रुपया छल। 23,45,000 मन कुसियारक पेराइ होइछ। चीनीक उत्पादन 2,45,000 मन। कुसियार स' 10.28 प्रतिशत चीनी प्राप्त होइत अछि। कुसियार पेरबाक क्षमता 1200-1300 टन प्रतिदिन। लगभग 923 श्रमिक काज करैत छथि। मिल चालू अवस्था मे छैक। विकसित नहि कयल जा रहल छैक। उपउत्पादक यथा मोलैसस-छोआ स' शराब, दवाइ आदि बनयबाक व्यवस्था नहि अछि। कुसियारक सिट्ठी स' कागज नहि बनाओल जाइछ। ओकरा जरा देल जाइछ। एहि जिलाक चीनी मिलक संग डिस्टीलरी मिलक संयोग अपेक्षित अछि। कुसियारक खेतीक नव-नव भेद ओ प्रभेदक संग, खेती मे अत्यधिक मात्रा मे उपकरणक प्रयोग, मिल धरि यातयातक सुविधा, उत्तम कोटिक कुसियारक उत्पाद कें प्रोत्साहन, उपउत्पादक सुन्दर उपयोग, यंत्र एवं उपकरणक प्रतिस्थापन मे आर्थिक साहाय्य, कुसियारक सिट्ठी आ छोआ स' उपउत्पादन अनिवार्य अछि, एहि उद्योगक विकासक हेतु।

समस्तीपुर स' 5 कि.मी.क दूरी पर मुक्तापुर मे एक जूट मिल रामेश्वर जूट मिल्स लिमिटेट 1920 मे बनल। तखन एकर नाम बिहार जूट मिल्स लि. छल। 1922 मे दरभंगा महाराज द्वारा कीनि लेल गेल। 1935 स' 1953 धरि मैकनेल बेरी कम्पनीक व्यवस्था मे छल। एकर बाद बिड़ला ब्रदर्सक मातहत मे ई अछि। 215 लूम, तीन सत्र मे काज, 1200 मिलियन टन प्रतिमाह उत्पादन 1971-72 मे छल। 27 लाख रुपयाक लागत पूंजी। सीमेन्ट ओ चीनी मिलक लेल बोरा ओ जूटक कपड़ा पैकिंगक हेतु बनैत छल। फारबिसगंज, गुलाबबाग, झंझारपुर ओ सुपौल स' पटुआ कीनल जाइत छल। मिलक आधुनिकीकरण भेल छल। 40-45 टन स' उत्पादन बढ़ि कय प्रतिदिन 75-80 टन भ' गेल छल। वर्ष 1996-2003 धरि लगभग 2 करोड़ 10 लाख राजस्व कृषि उत्पादन बाजार समिति कें, प्रतिमाह 12-15 लाख व्यावसायिक कर, विद्युतक 30 लाख प्रतिमाह तथा अन्य राजस्व राज्य सरकार कें भेटैत छल। बिहारक एकमात्र चालू जूट मिल मे 14 जुलाइ 2003 कें प्रबंधन द्वारा तालाबन्दी क' देल गेल। 4000 मजदूरक समक्ष रोजी-रोटीक समस्या आ लगभग 80 एकड़ भूमि मे स्थित मिल मे अनिश्चितकालीन तालाबंदी। मिल कें पुन: चालू करबाक प्रयास नहि भेल छैक।

वर्ष 1955 मे जितबारपुर (समस्तीपुर) मे रामबहादुर ठाकुर एण्ड कम्पनीक सक्रिय सहयोग स' एक कागज कारखाना ठाकुर पेपर मिल्स लिमिटेड 40 लाख टाकाक अंश पूंजी स' खूजल। मिल कें भारतीय औद्योगिक वित्त निगम 19 लाख ओ बिहार राज्य वित्त निगम 10 लाख टाका कर्ज देलक। 10 टन प्रतिदिन उत्पादन क्षमता छल एहि मिलक। पुआर आ घास तथा जापानी तकनीक स' बनल कारखाना अपन पूर्ण क्षमता धरि कागज बनबैत छल। बाजार मे कागजक बढ़िया माँग छल। कार्यशील पूंजीक अभाव मे मिल बन्द भ' गेल। एखनो बन्दे अछि।

एहि जिला मे संगठित क्षेत्र मे दू चीनी मिल, एकटा जूट मिल आ एकटा कागजक कारखाना छल। एकटा चीनी, जूट ओ कागज मिल बन्द अछि। हसनपुरक चीनी मिल चालू अवस्था मे अछि मुदा विकास ओ आधुनिकीकरण नहि कयल जा रहल अछि। 1974 मे राज्य सरकारक सहयोग स' 14 करोड़ रुपयाक निवेश स' ग्रेफाइट इलेक्ट्रोड्सक कारखाना बनयबाक योजना छल, मुदा अहू पर ग्रहण लागि गेल।

छोट-छोट उद्योग अछि मुदा विकसित नहि। 1959-60 मे पटोरी केमिक्लस कारखाना बनल। एहि मे नाइट्रिक एसिड, डिस्टिल्ड वाटर ओ बैटरीक निर्माण होइत छल। समस्तीपुर, विद्यापतिनगर मे कोल्ड स्टोरेज कम्पनी अछि। प्रधानत: आलू राखल जाइछ। पूसा मे एकटा सहकारिता समिति जूता, चप्पल, सूटकेश आदि बनबैत छल। जोल्हा सभहक एक दर्जन सहयोग समिति अछि । पूसा ओ रोसड़ा मे मधु बनाओल जाइछ। समस्तीपुर मे संगीत-वाद्य यंत्रक कारखाना अछि। हारमोनियम एवं अन्य वाद्य यंत्र बनैत छल। समस्तीपुर मे मध्य पूर्व रेलक एक पैघ कारखाना अछि। लगभग 1000 श्रमिक कार्यरत छथि। कारखानाक आधुनिकीकरण आवश्यक अछि। दलसिंगसराय ओ शाहपुर पटोरी मे तमाकू उद्योग विकसित छल। एहि क्षेत्र मे आधुनिक ढंगक सिगरेटक कारखाना लगाओल जा सकैछ। योजना आयोग समस्तीपुर जिला मे 33 करोड़ रुपयाक मसाला उद्योग कें आधुनिकीकरण ओ विकसित करबाक योजना बनौने अछि। एहि जिला मे मत्स्य पालन योजना पंचायतक माध्यम स' पोखरि, झील ओ चौर कें गहींर बनाकय कयल जा रहल अछि। कछेड़ मे विटामिनक पौधा सेहो लगाओल जायत। माछक बाजारक वृद्धि कयल जायत। तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा मुक्तापुर ओ दलसिंहसराय बाजार समितिक प्रांगण मे 1000 मे. टन क्षमतावला कोल्ड स्टोरेजक अक्टूबर 1977 मे शिलान्यास भेल मुदा निर्माण नहि भ' सकल। एहि जिला मे वर्ष 1999-2000 धरि 5332 लघु औद्योगिक इकाई निबंधित छल। अधिकांश कार्यरत नहि अछि।

राष्ट्रीय उच्चपथ 28 समस्तीपुर, बेगूसराय, रोसड़ा, पूसा सहित अन्य इलाका कें जोरैत दरभंगा, मधुबनी, जयनगर ओ नेपाल कें छूबैत अछि।

मुसरीघरारीक समीप दरभंगा-समस्तीपुर कें जोड़यबला सड़क मगरदही घाट (समस्तीपुर) के पार कय कल्याणपुर ओ दरभंगा दिस जाइत अछि। मगरदही पुल कें पार कय मथुरापुर झिल्ली चौक लग सड़कक नामोनिशान नहि अछि। सड़क नहि पैघ खत्ता। यैह हाल अछि एहि सड़कक कल्याणपुर प्रखंडक सीमा स' 22 कि. मी. लम्बा सड़कक जठमलपुर धरि। समस्तीपुर-दरभंगा-मधुबनी- हाजीपुर धरि सड़क 900 करोड़ रुपयाक लागत स' होइवे मे परिणत होयबाक संभावना छैक। वर्ष 2000-01 मे प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजनाक अन्तर्गत 251 करोड़ 89 लाख रुपयाक लागत स' निर्माण स्वीकृत छल। एहि मे चांदीपट्टी-पितौझिया 13.86 लाख रुपयाक लागत स', लभट्टा-सतमलपुर 2.70 कि.मी. 5.14 लाख रुपया, सरारी-माधोपुर-1. 63 कि. मी. 41.68 लाख रुपया, मुर्गियाचक एन. एच. 28 बचघाट-3 कि. मी. 56.05 लाख रुपया तथा टारा चौक-सोमनाहा - 2.8 कि. मी. 51.94 लाख रुपया स' निर्माण होबयबला छल। मुदा, कोनो कार्य पूर्ण रूप स' 8 जनवरी 2004 धरि संपन्न नहि भेल छैक। वर्ष 2001-02 मे एहि योजनाक अन्तर्गत हसनपुर पेपर मिल स' जितवारपुर लगुनिया पथ 2.60 कि. मी. 61. 51 लाख रुपया स', खानपुर प्रखंडक सिरोपट्टी भोला महतोक घर धरि-39.02 लाख रुपया स' तथा बारिसनगरक लभट्टा स' सतमलपुर पथक 0.38 स' 11.95 कि. मी. पथ 11.95 लाख रुपया स' बनयवला छल। मुदा निविदा खारिज भ' गेल। कल्याणपुर प्रखंडक टारा चौक स' सोमनाहा घाट - 2.20 कि. मी. धरि 58.21 लाख रुपयाक लागत स' मेटल ग्रेड एकक काज भ' गेल अछि। ताजपुर प्रखंडक एन. एच. 28 मुर्गियाचक स' बचघाट 1.81 कि. मी. 46.345 लाख रुपया तथा हसनपुर प्रखंडक पुकार चौक स' गुहा तक 3 कि. मी. 59 लाख रुपयाक लागत स' बनयवला सड़क मे माटिक काज भेल छैक। पूसा प्रखंडक ठहरा गोपालपुर चौक स' ठाकुर टोल नवोदय विद्यालय बिरौल धरि 2.20 कि. मी. 56.460 लाख रुपया स' बनयबला सड़क मे काज शुरु नहि भेल अछि। काकड़-दसौत पथ मे 6 कि. मी. सड़क मे मात्र माटिक काज भेल छैक। एहि तरहें एहि योजनाक अन्तर्गत अधिकांश सड़कक काज अपूर्ण अछि।

सड़क मार्ग यातायातक मुख्य साधन अछि। पक्की सड़क कच्ची सड़कक तुलना मे एखनो कम अछि। समस्तीपुर स' कुशेंश्वरस्थान धरि 80 मील दरभंगा जिलाक यात्रा कयने बिना नहि पहुंचल जा सकैछ। रोसड़ा-सिंघिया पथक मध्य कोल्हुआ घाट पुलक निर्माण वर्षों पहिने पूरा भ' गेल छैक। पहुंच पथ एवं कोल्हुआ घाट पूर्वी चौक स' वाटरवेज सड़कक निर्माण लम्बित छैक। मात्र पहुंच पथक निर्माण स' दूरी 30 मील रहि जायत। एहि स' सिंघिया सेहो सुविधा स' जुड़ि जायत। रोसड़ा-सिंघिया पथ, सिंघिया-लहेरियासराय एवं सिंघिया-कुशेश्वरस्थान सड़क जर्जर छैक। मोहद्दीनगर

स' समस्तीपुर धरि सड़क पथक सुविधा ठीक नहि। मोहद्दीनगर-विद्यापतिनगर-दलसिंगसराय-समस्तीपुर कच्ची सड़क एखनो अछि। नोअन नदी पर पुल बनि गेला स' सुविधा होयत। सरायरंजन-समस्तीपुर पुल 10 मील पक्की सड़क मरम्मति मांगि रहल अछि। दिसम्बर 2000 मे रोसड़ा-समस्तीपुर 14 कि. मी. सड़क बनल। बाढ़ि नियंत्रण योजनाक अधीन बछबारा-हाजीपुर सड़क पक्की भेल। पटोरी स' मोहद्दीनगर, महनार स' पटोरी, समस्तीपुर-हसमनवारा सड़क जे रोसड़ा धरि जायत, हसनपुर स' रोसड़ा, नयानगर होइत बहेड़ी-सिंघिया-रोसड़ा सड़क, हसनपुर स' सखुआ घाट धरि सड़कक निर्माण परमावश्यक अछि। राष्ट्रीय उच्च पथ 28 मे बरौलीक समीप 60 कि.मी. सड़क उच्च पथ 19 मे बानीपुर-महराजगंज कें जोड़ल जा रहल अछि। हाजीपुर-मूसड़ीघरारी सड़क कें केन्द्रीय सरकार राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 103 घोषित कयलक अछि। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना मे 1000 धरि आबादीवला सब ग्राम कें 2007 धरि जोड़यवला काज राज्य सरकार केन्द्रीय एजेन्सी राइट्स कें सुपुर्द क' देलक। काजक गति असन्तोषजनक छल। महनार-मोहद्दीनगर-बछबाड़ा रोडक हेतु 1.71 करोड़ आवंटित अछि। सेन्ट्रल रोड फंड स' पूसा-ताजपुर-समस्तीपुर रोडक जीर्णोद्धार होयत। समस्तीपुर स' पटोरी अनुमंडल जायबला सड़क चकलाल शाही लग नून नदी पर बनल पुल क्षतिग्रस्त रहला स' 6 माह आवागमन बाधित रहैत अछि। समस्तीपुर-दरभंगा पथक बूढ़ीगंडकक मगरदही घाट पर पुल ओ पहुंच पथक निर्माणक स्वीकृति केन्द्रीय भूतल परिवहन मंत्रालय 1992 मे देलक। केन्द्रीय सड़क निधि स' 164.18 लाख ओ राज्य योजना स' 130. 73 लाख रुपया अर्थात् 295 लाख रुपया खर्च भ' गेल, किन्तु काज पूरा नहि भेल छैक। दरभंगा-समस्तीपुर पथ मे समस्तीपुर लग बूढ़ी गंडकक मगरदही घाट पर जून 2002 मे 64.1लाख रुपया स' आर. सी. सी. पुलक निर्माण पूरा करबाक हेतु पुनरीक्षित राशि प्राधिकृत समिति द्वारा स्वीकृत कयल गेल छल।

नवम्बर 1875 मे दलसिंहसराय स' बरास्ता समस्तीपुर-दरभंगाक बीच प्रथम रेलपथक निर्माण भेल। अकाल पीड़ित कें राहत सामग्री पहुंचेबाक हेतु। कालान्तर मे तिरहुत रेलवे, अवध-तिरहुत पेनुनसुला रेलवे, पूर्वोत्तर रेलवे आ आब पूर्व मध्य रेलवेक नाम स' ई जानल जाइछ। किन्तु, दलसिंहसराय पूर्व मध्य रेलवेक एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक रेलवे स्टेशन एखन धरि नहि बनि सकल अछि। पूर्व मध्य रेल जोनक 5 मंडल मे समस्तीपुर एक मंडल अछि। एहि मंडल मे 164 रेलवे स्टेशन, 280 कि. मी. बड़ी लाइन ओ 765 कि. मी. छोटी लाइन अछि। छोटी लाइन दरभंगा-सीतामढ़ी, रक्सौल-नरकटियागंज, दरभंगा-जयनगर कें बड़ी लाइन मे परिवर्तन कयल जा रहल छैक। हसनपुर-सकरी रेल पथ निर्माणाधीन अछि। सकरी स'

कुशेश्वरस्थान धरि माटिक काज पूरा भ' गेल छैक। कुशेश्वरस्थान स' हसनपुर धरि अग्रिम वर्ष काज होयत। समस्तीपुर मंडलक राजस्व वर्ष 2002-03 मे 181 करोड़ रुपया छल जे गत वर्ष मात्र 140 करोड़ रुपया छल। समस्तीपुर स' हाजीपुर जिला मुख्यालय धरि रेल पथक पैघ मांग छैक। 70 कि. मी. लाइन होयत। महुआ, पातेपुर आ ताजपुर प्रमुख रेलवे स्टेशन। एहि स' समस्तीपुर स' हाजीपुरक दूरी 40 कि.मी. कम भ' जायत। 14 दिसम्बर 1994कें हाजीपुर स' समस्तीपुर वाया महुआ, पातेपुर बड़ी लाइनक सर्वेक्षण भेल छल। रेल मंत्रालय मे ई लटकल अछि। एहि जिला मे प्रति एक सय वर्ग कि. मी. मार्गक लम्बाइ 7.4 प्रतिशत अछि।

आधारभूत संरचना मे ऊर्जाक महत्वपूर्ण स्थान छैक। बरौनी ताप विद्युत गृहक सातटा इकाइक 145 मेगावाट बिजलीक उत्पादनक क्षमता छैक, मुदा ई जर्जर स्थिति मे अछि। ग्रामीण विद्युतीकरणक दिशा मे प्रगति निराशाजनक अछि। मार्च 1987 धरि मात्र 1018 गाम मे बिजली पहुंचल छल। बिजलीक खम्भा गारल गेल, किन्तु लाइन नहि छैक। यदि लाइन छैहो त' कखन बिजली भेटत तकर ठेकान नहि। बिजली नहि रहला स' डीजल स' पटौनी होइछ। बेगूसराय स' समस्तीपुर धरि नवीन संचरण व्यवस्था भ' रहल छैक। एकरा भूटानक ताला हाइड्रोइलेक्ट्रिक परियोजना स' जोड़ल जा रहल छैक।

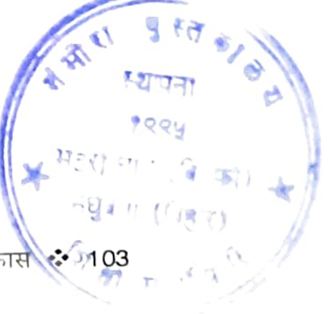
देशक 100 निर्धनतम जिलाक श्रेणी मे समस्तीपुर जिला सेहो अछि। पिछड़ापन दूर करबाक हेतु आधारभूत सुविधाक अनुशंसा कयल गेल अछि। सर्वांगीण विकासक लेल बीस सूत्री कार्यक्रमक उपलब्धि मे समस्तीपुर मात्र 40 प्रतिशत अंक प्राप्त कयने अछि। ई जून 2002 मे कयल गेल मोनेटरिंगक परिणाम थिक। जिला मे 380 पंचायत अछि जे पूर्ण अविकसित अछि। एकटा अछि बिथान प्रखंडक सखबा पंचायत। सखबा, चन्दौली, मालसर, बखारी, भिखनौलिया, मुरौल एवं धबौलिया गाम। 15,000क आबादी। मूलभूत सुविधा स' वंचित। यादव ओ मल्लाह जातिक लोक बहुसंख्यक छथि। दलित जाति मे चमार, मुसहर, डोम ओ पासवान लगभग 25 प्रतिशत छथि। शिक्षा, स्वास्थ्य, यातयात, बिजली, शुद्ध पेयजल तथा विभिन्न लाभकारी सरकारी योजना स' ई सभ वंचित छथि। प्रत्येक वर्ष प्रलयकारी बाढ़ि, कटाव ओ सुखाड़ग्रस्त अछि ई क्षेत्र। उद्योग-धंधाक कोनो नामोनिशान नहि। धबौलिया-चन्दौली पुल टूटल अछि। रोगी कें अस्पताल खाटे पर ल' जायब संभव। रोजी-रोटीक खोज मे अन्य प्रदेश जयबाक लेल लोक मजबूर अछि। उच्च विद्यालय समेत 6 प्राथमिक विद्यालयक भवन जर्जर तथा शिक्षक विहीन अछि।

एहि जिलाक प्राचीन सभ्यता, संस्कृति ओ सौन्दर्यक अनेक स्थल, ऐतिहासिक धरोहर, खंडहर, तीर्थस्थल पूर्ण अविकसित अछि। पर्यटन उद्योग

पर कोनो काज नहि भेल छैक। आर्थिक विकासक संगहि सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता मे एहि स' बल भेटत।

परमर्षिकल्प उदयनाचार्यक करियौन : शिवाजीनगर प्रखंडक करियन पंचायत। उदयनाचार्यक निवास स्थान। 10-11म शताब्दीक काल मे बौद्ध धर्मक प्रभाव प्रबल भेल। ब्राह्मण धर्म ओ धर्मशास्त्रक जे उजाहि उठल तकर समस्त प्रवाह कें आत्मसात कय एहि समय मे उदयन उदित भेलाह। कहल जाइछ बौद्धधर्मक आचार्य अपन शिष्यक संग तीरभुक्तिक राजाक ओतय अपन सिद्धान्तक प्रचार हेतु अयलाह। राजा कें संवाद देल जे वेद एवं तदनुगामी शास्त्र स' वृथा भ्रान्त छी। मिथिलाक सम्पूर्ण विद्वद्मंडली एकत्रित भेलाह। शास्त्रार्थ भेल। उदयनाचार्य शास्त्रार्थ मे सक्रिय भेलाह। हुनक मत छल 'सत्यारुढ़' अर्थात बौद्धमत मे दीक्षित नहि छथि। तें शास्त्रार्थक योग्य नहि। शालिग्राम शिला कें सोनाक भाजन मे स्थापित कयल गेल। बौद्धाचार्य शालिग्राम शिला दिश तकैत अपन मत उत्पादन कयलनि। तत्क्षण शिलाक जल खतम भ' गेल तदनन्तर उदयनाचार्य बौद्ध सिद्धान्तक खंडन कयलनि। खंडनक उपरान्त जल पुनः पूर्ववत शिला मे परिणत भ' गेल तखन बौद्धाचार्यक मत सत्य आ कि उदयनाचार्यक। तालवृक्ष पर चढ़बाक प्रस्ताव भेल। जे बांचि जयताह हुनक धर्म मान्य। उदयनाचार्य 'वेदा प्रमाणम्' कहि तारक गाछ स' सुरक्षित कुदलाह बौद्धाचार्य घड़मुड़िया दैत खसलाह 'वेदाः अप्रमाणम' कहैत। परलोक गेलाह। तदनन्तर राजा वेद एवं तदनुगामी शास्त्र कें सत्य मानि तदनुकूल धर्मक अपना राज्य मे आचरण करय लगलाह। यैह स्थिति आचार्य कें जगन्नाथपुरी मे भेलनि। चारु पट बन्द भ गेलनि। हिनक एक वचन स' सभ कपाट खुजि गेल। आचार्य दर्शन कयलनि। एहि क्षेत्रक लोक एखनो एहि डीहक माटि स' अक्षराम्भ करैत छथि। (उदयनार्थ-विद्यावाचस्पति पं. दुर्गाधर झा, मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित वर्ष 1984 मे)। आजुक पीढ़ी एहि भूमि कें एखनो अविकसित रखने अछि। महामहोपाध्याय चित्रधर मिश्रक भूमि पण्डित टोल टभका सेहो एखन धरि अविकसते अछि।

शाहपुर पटोरीक पक्षी विहार : राष्ट्रीय महत्वक स्थान। अनुपम संभावनाशाली पक्षी अभ्यारण्य। बिहार सरकारक वन एवं पर्यावरण विभागक उपेक्षाक शिकार। प्रवासी पक्षीक पलायन। अवैध शिकारक क्रम जारी अछि।



मुजफ्फरपुर

मुजफ्फरपुर जिला बिहारक मानचित्र पर 18म सदी मे आयल। मुजफ्फर खान नामक एक विशिष्ट अधिकारीक नाम पर एकर नामकरण भेल। राजर्षि जनक एहि क्षेत्रक सम्राट छलाह आ जनकपुर हुनक राजधानी छल। ह्वेनसांगक भ्रमण ओ पालवंशक उदय धरि महराज हर्षवर्धनक अधीन ई क्षेत्र रहल। कालक्रमे एहि क्षेत्रक महाराज हरिसिंह देव भेला, जिनका वर्ष 1324 मे दिल्लीपति बादशाह गयासुद्दीन तुगलक स' युद्ध भेलनि। हारि गेला पर सुलतान पकरि कें हरिसिंह देव कें दिल्ली लय गेलनि। तिरहुत कें बिहारक सुबेदारक अधीन कयल गेल। किछु दिनक बाद मंत्री चण्डेश्वरक प्रयास स' छुटि कें फेर तिरहुत राज्य कें स्वाधीन कयलनि। तत्पश्चात शाके 1248 पौष शुक्ल दशमी मंगल कें अपन राजधानी छोरि नेपालक पहाड़ मे प्रवेश कय गेलाह। कर्णाटवंशीय क्षत्रिक राज तिरहुत मे खतम भ' गेल। एकर बाद ओइनवार मूलक मैथिल ब्राह्मण कुलक राज्य आयल। वर्ष 1764 मे बक्सरक युद्ध मे ईस्ट इंडिया कम्पनीक जीत भेलै। बंगालक नवाब दाऊद खानक आधिपत्य खतम भेल आ बिहारक उदय भेल जकर तिरहुत एकटा मुख्य अंग छल। 1875 मे तिरहुत जिला कें दू भाग मे बांटल गेल प्रशासकीय सुविधाक हेतु एवं अही वर्ष मुजफ्फरपुर स्वतंत्र जिला भ' गेल। दोसर भाग दरभंगा जिला कहौलक। 13 नवम्बर 1972 कें वैशाली एवं 11 दिसम्बर 1972 कें सीतामढ़ी कें फराक जिला घोषित कयल गेल। एहि जिला ओ तिरहुत प्रमंडलक मुख्यालय मुजफ्फरपुर अछि। एहि जिलाक उत्तर मे सीतामढ़ी ओ पूर्वी चम्पारण, दक्षिण मे वैशाली ओ सारण, पूब मे दरभंगा ओ समस्तीपुर तथा पश्चिम मे सारण तथा गोपालगंज जिला अछि। दूटा अनुमंडल-मुजफ्फरपुर पूब ओ पश्चिम। प्रखंड-16 तथा कुल पंचायत-388 अछि। बन्दरा प्रखंड मे 12 पंचायत, मुरौल मे 9, बोचहा मे 20, औराई मे 26, मुशहरी मे 26, सरैया मे 30, पारू मे 34, कांटी मे 21, गायघाट मे 23, साहेबगंज मे 23, मीनापुर मे 28, सकरा मे 28, कटरा मे 22, मोतीपुर मे 32, कुढ़नी मे 39 तथा मड़वन मे 15 पंचायत अछि। भौगोलिक क्षेत्रफल एहि जिलाक अछि 3172 वर्ग कि. मी.। प्रमुख नदी बूढ़ी गंडक, बागमती ओ लखनदेई अछि। उत्तर अक्षांश रेखा 25°54'-26°23' ओ पूर्वी देशान्तर रेखा 84°53'-85° 45'क बीच अछि ई जिला। एहि जिला मे 1811 गाम अछि। एहि जिला मे कुल पोखरिक संख्या 928, जाहि मे निजी 184 पोखरि। 788 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे मोइन ओ 680 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे चौर अछि। समुद्र तल स' समान उंचाइ 170 मी. अछि। औसत 11.87 से.-मी. वर्षा होइछ।

सैन्धव घाटी सभ्यता काल मे मुजफ्फरपुर जिला मे कृषि कार्य प्रारम्भ भेल छल। नदी द्वारा लायल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल माटि। बाढ़ि ओ जलाप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि मे अत्यधिक नमी पाओल जाइछ। बांगड़ माटि मे 30 प्रतिशत स' अधिक मात्रा मे चून छैक। माटिक संग आंकड़-पाथर सेहो पाओल जाइछ। जलोढ़ माटि अछि तें साधारण उपजा होइछ। धानक फसिल बढ़िया होइछ। नदीक जलग्रहण क्षेत्र मे वनस्पति नष्ट भ' गेल अछि। पहाड़ी ढाल पर अनियमित खनन स' मृदा अपक्षरण होइछ। कृषि भूमि नष्ट होइछ तथा जलाशय मे गाद जमा होइछ। माटि मे लवण ओ क्षार पाओल जाइत छैक। बालुक संग सूक्ष्म गादक निक्षेप स' उत्तम जलसंचार पाओल जाइत अछि। धान, गहूम, मकई, कुसियार ओ आलूक उपजाक लेल उपयुक्त माटि अछि। प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। एत' सवाना या उद्यान प्रकारक वनस्पति पाओल जाइछ। एहि जिला मे 42.62 कि. मी. वनक्षेत्र अछि।

जिला समशीतोष्ण कटिबंध मे स्थित अछि। जलवायु उपोष्ण एवं आर्द्र। न्यूनतम तापमान 5° सें, अधिकतम 44° सें तथा आर्द्रता 50-75 प्रतिशत रहैत छैक। तीन प्रमुख ऋतु। ग्रीष्म ऋतु मार्च मे प्रारम्भ ओ सामान्यत: 15 जून धरि रहैछ। निरन्तर बढ़ैत तापमान, निरन्तर कम होइत वायु भार, अल्प आर्द्रता, उच्च तापमान ओ शुष्क वायु एहि ऋतुक विशेषता। मइ सर्वाधिक गर्म ओ शुष्क मास। वर्षा ऋतु मध्य जून स' मध्य अक्टूबर धरि रहैत अछि। दक्षिण-पश्चिम मानसून स' वर्षा होइछ। जुलाइ ओ अगस्त मे सर्वाधिक वर्षा। 1100-1300 मि. मी. वर्षा एहि जिला मे होइत छैक। वर्षा मानसूनक संग अबैछ ओ ओकरे संग समाप्त भ' जाइछ। वर्षा अनियमित आ अल्प काल मे सीमित क्षेत्र मे भारी वर्षा भेला पर जल नदीक वाहिका मे अंटि नहि पबैछ, नदी मे उफान आ बाढ़ि आबि जाइछ। बाढ़िक आवर्तता तथा बाढ़िग्रस्तता मे वृद्धि भेल छैक। मध्य अक्टूबर स'

फरबरी धरि शीत ऋतु रहैत अछि। सूर्य कें दक्षिणायन भ' गेलाक कारणें तापमान घटि जाइछ।

वर्ष 1991 मे एहि जिलाक जनसंख्या 29,53,903 छल जे वर्ष 2001 क जनगणना मे बढ़ि कय 37,43,836 भ' गेल। अर्थात् 1991क तुलनामे 2001 मे जनसंख्या मे वृद्धि भेल। जिला मे पुरुषक संख्या 19,41,480 तथा महिलाक 18,02,356 अछि। जनसंख्या घनत्व 1180 जे सम्पूर्ण देश मे मात्र 324। जनसंख्याक दृष्टि स' मिथिला मे ई दोसर जिला अछि। कुल साक्षरता 48.15 प्रतिशत। एहि मे पुरुषक साक्षरता 60.19 एवं महिला साक्षर छथि 35.20 प्रतिशत। महिला साक्षरता सम्पूर्ण देश मे 54.16 प्रतिशत अछि। जनसंख्या वृद्धिक संग सामाजिक-आर्थिक समस्या सेहो बढ़ल अछि। परिवार नियोजन कार्यक्रम सफल नहि भेल अछि। अशिक्षा ओ रूढ़िवादी संस्कार व्याप्त अछि। नगरीय जनसंख्या मे अप्रत्याशित वृद्धि भेल छैक। स्वच्छ जल, सफाइ, शौचालय ओ बिजलीक समस्या बढ़ल छैक। छोट-छोट नगरक विकास अपेक्षित छैक।

लखनदेई सिन्धुल गढ़ीक दक्षिण-पश्चिम पहाड़ स' निःसृत भ' भारसंक लग मिथिलाक सीमा मे प्रवेश करैछ। ई नदी मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी सड़क कें सैंदपुर लग पार कय राजखंड होइत कलेंजर धारक समीप बागमती मे विलीन भ' जाइछ। नेपाल तराइ मे 42 मील एवं मुजफ्फरपुर जिला मे 93 मील लम्बा बहैत अछि एवं एहि मे सालोभरि पानि रहैछ। एहि नदी मे जं सैदपुर स' आगू राजखंडक समीप कोनो उपयुक्त स्थान पर वियर बनाकय पटौनीक व्यवस्था कयल जाय त' बागमती योजना स' वंचित दक्षिण ओ पूवक क्षेत्र मे पटौनीक व्यवस्था भ' सकैछ तथा एहि जिलाक सैदपुर, औराई, राजखंड लाभान्वित भ' सकैछ। बूढ़ी गंडक नदी एहि जिलाक एक प्रमुख नदी अछि। बाढ़ि एहि क्षेत्र कें अत्यन्त प्रभावित करैत अछि। चम्पारण स' खगड़िया धरि बाढ़ि सुरक्षा तटबंध दुनू कात बनल छैक। तटबंध स' एहि जिला मे बाढ़ि सुरक्षा भेल मुदा नहरि निकालि क' सिंचाइक व्यवस्था स' ई क्षेत्र वंचिते अछि। एहि नदीक समानान्तर जं बाम भाग स' एकटा नहरि निकालि मधुवन प्रखंड होइत बागमती नदीक दहिना नहरि स' मीनापुर प्रखंड कें संयोजित कयल जाय त' मुजफ्फरपुर जिलाक बोचहा, गायघटी, कटरा ओ राजखंड मे सुविधापूर्वक पटौनीक व्यवस्था कयल जा सकैछ। गंडक तिरहुत मुख्य नहरि स' एहि जिलाक किछु भाग में लगभग 14,150 हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइक व्यवस्था भ' गेल छैक। 82964 हेक्टेयर भूमि मे मात्र सिंचाइक व्यवस्था एहि जिला मे भेल छैक। प्रमुख राजकीय नलकूप बेलसंड-मोतीपुर गोरौल क्षेत्र मे कार्यरत छल। 252 नलकूप मे 187खराब पड़ल अछि। उद्वह सिंचाइ योजना स' 5900 हेक्टेयर मे सिंचाइ व्यवस्था दियारा विकास योजनाक अन्तर्गत साहेबगंजक 575 एकड़, सरैया मे 470 एकड़ तथा पारू प्रखंड मे 268 एकड़क लेल 6,20,000 रुपया

स्वीकृत भेल छैक, जे दशम वित्त आयोग द्वारा स्वीकृत कयल गेल छल। गंडकक मेन कैनलक अनियंत्रित पानिक जमाव स' कुढ़नी प्रखंडक 4000 एकड़ भूमि अनुपयोगी भ' गेल छैक।

बाढ़ि सुरक्षात्मक सातटा योजना पर 32 लाख टाका जनवरी 2003 धरि एहि जिला मे खर्च कयल गेल, मुदा बाढ़ि आयल तथा अहू बेर तहस-नहस कयलक। 28 जून 2003क' बागमती तटबंध बंदौली, खरका, शिवनगर ओ रक्सिया मे कतेको जगह कटल, जाहि स' कटौंझा ओ जनाढ़क क्षेत्र मे बाढ़िक पानि पसरि गेल। रक्सिया मे दू जगह ओ शिवनगर मे तीन जगह परुकां बांध टूटल छल। 2 जुलाइ 2003 मे सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुर एन.एच. 77 पर बाढ़िक जलक बहाव तेज छल। मुजफ्फरपुर-शिवहर पथ पर कतेको ठाम सड़क स' ऊपर तीन फीट बाढ़िक जल बहि रहल छल आ यातायात अवरूद्ध छल। बोचहा प्रखंडक आथर गाम तथा मुशहरी प्रखंडक कोठिया मे बूढ़ी गंडकक कटाव स' पचासो घर बिला गेल। कर्णपुर दक्षिणी पंचायतक सवानीचक एवं भगवानपुर डढ़िया गामक दस घर नदी मे विलीन भ' गेल। बागमती ओ लखनदेई नदीक जलस्तर मे वृद्धि स' औराई तथा कटरा प्रखंडक सड़क सम्पर्क पूर्णतः भंग भ' गेल। 8 सितम्बर 2003 क कुढ़नी प्रखंडक मोहनी पंचायत अन्तर्गत मल्लिकपुर शाखा तटबंध 25 स' 30 फीट टूटि गेला स' दर्जनों गाम मे बाढ़िक पानि प्रवेश कय गेल तथा सैकड़ों एकड़ मे लागल फसिल नष्ट भेल। बाढ़िक अन्तहीन कथा अछि। प्रशासन बाढ़िक रोकथाम मे असफल साबित भेल अछि।

भूमि सुधार ओ भूमि व्यवस्था एखन धरि एहि जिला मे नहि भेल अछि। जोतक सीमा निर्धारित अछि, मुदा ओकर कार्यान्वयन नहि भेल छैक। अधिशेष भूमि भूमिहीनक बीच वितरित नहि भेल। किछु वितरण भेलाक बादो हुनका सभक अधीन भूमि नहि रहय देल गेल। हजार बीघा जोतयबला एखनो कतेको लोक छथि। प्रशासन सक्रिय रूप स' भूमि व्यवस्था नहि कय रहल अछि। भूदान मे एहि जिला मे 5646.65 एकड़ भूमि प्राप्त भेल छल। जाहि मे 3670.68 एकड़ भूमि भूमिहीनक बीच बांटल गेल। किनका स' भेटल, किनका देल गेल ओकर नाम, पता, रकबा राजस्व एवं भूमि सुधार विभागक रेकर्ड मे उपलब्ध नहि छैक। सम्प्रति करायल गेल छैक। भूदान किसानक जमीन हरपि लेल गेल छनि आ ओ सभ बेदखल क' देल गेल छथि। न्यायालय मे विचारार्थ कतेको मामला परल अछि।

कृषिक्रान्ति औद्योगिक क्रान्तिक पूर्वाधार अछि। कृषि उत्पादन बढ़ायब, ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार तथा आयक अवसर मे वृद्धि एवं आत्मनिर्भरता बढ़ेबाक लेल कृषिक आधुनिकीकरण आवश्यक अछि। जिलाक कृषि बहुफसली अछि। अगहनी धान मुख्य फसिल। धान नवम्बर-दिसम्बर मे काटल जाइछ। भदै धान 12-14 प्रतिशत क्षेत्र मे उपजाओल जाइछ। अगहनी धान भदै स' अढ़ाई गुणा अधिक उपजैत अछि। बासमती धानक उत्पादन

मीनापुर प्रखंडक पीपराहा पंचायत मे जोर-शोर स' शुरू कयल गेल अछि। हरितक्रान्तिक सर्वाधिक प्रभाव गहूमक खेती पर परल छैक। ई जिलाक एक प्रमुख खाद्यान्न भ' गेल अछि। मकईक खेती आब भ' रहल छैक तथा लगभग 8.5 प्रतिशत क्षेत्र मे उपजाओल जाइछ। जौक खेती एहि जिला मे कयल जाइछ। दलहन मे राहरि उपजाओल जाइछ। वाणिज्यिक फसिल मे कुसियारक खेती होइछ। आलू उपजाओल जाइछ। 247721 हेक्टेयर भूमि मे कृषि कार्य होइत छैक। 52,270 हेक्टेयर भूमि कृषियोग्य नहि।

मोतीपुर चीनी मिल पुरान ओ रूग्ण भ' गेल अछि। बिहार राज्य चीनी निगम एहि मिलक रूग्णता दूर करबाक हेतु अपना अधीन कयलक। निगम स्वयं रूग्ण भ' गेल अछि। मिल 1997-98 स' पूर्णत: बन्द अछि। रेलवेक काज मे भारत वैगन एण्ड इन्जीनियरिंग कम्पनी लिमिटेड कतेको वर्ष स' काज करैत छल। 1978 मे रेलवे वैगनक काज करय लागल। एहि कम्पनीक मुजफ्फरपुर मे 60 करोड़ रुपयाक अचल सम्पत्ति आ 750 कर्मचारी कार्यरत छथि। एहि मे कापलर एवं बोगी बनैत छल। वैगन बनय लागल मुदा निजी क्षेत्र स' प्रतिस्पर्द्धा मे नहि सकल। अंग्रेजी दवाइक प्रमुख कम्पनी भारत सरकारक इंडियन ड्रग्स एण्ड फार्मास्यूटिकल्स (आईडीपीएल) एतय कार्यरत छल। निजी ओ बहुराष्ट्रीय कम्पनीक संग प्रतिस्पर्द्धा मे इहो नहि ठठि सकल। मृतप्राय अछि। राज्य सरकार द्वारा निर्मित बिहार फिनिस्ड लेदर्स लिमिटेडक निर्मित माल विश्व बाजार मे ख्याति प्राप्त कयलक। एसियाक औद्योगिक मेला मे स्वर्णपदक प्राप्त कयने छल। सरकारक दोषपूर्ण प्रबंधन नीतिक कारणें बन्द परल अछि। निजी क्षेत्र मे कागजक एकटा मिल उपेन्द्र पेपर मिल्स प्राइवेट लिमिटेड, जकर उत्पादन क्षमता 900 टी.पी.ए. छल, कार्यरत नहि अछि। मुजफ्फरपुर बेला औद्योगिक क्षेत्र मे उत्तर बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकर अपन कार्यालय रखने अछि, जकर कार्य क्षेत्र मुजफ्फरपुर, हाजीपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, पूर्वी चम्पारण तथा पश्चिमी चम्पारण जिला अछि। बेला प्रांगण मे 310 एकड़ मे भूमि अधिगृहीत अछि तथा लगभग 400 लघु ओ मध्यम उद्योग कार्यरत अछि। वित्तीय स्थिति ठीक नहि रहलाक कारणें अधिकांश बन्द अछि। मुजफ्फरपुर मे बिहार सरकार मेगा ग्रोथ सेन्टरक निर्माण कय रहल अछि। उद्योग हेतु विश्वस्तरीय आधारभूत संरचना उपलब्ध कराओत। वर्ष 1999-2000 धरि एहि जिला मे 8436 लघु औद्योगिक इकाइक निबंधन राज्य सरकारक कार्यालय मे छल। अधिकांश मृतप्राय अछि। राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) किछु व्यावसायिक बैंक, उद्योग निदेशालय तथा जिला उद्योग केन्द्रक सहयोग स' फल ओ सब्जी प्रसंस्करण उद्योग कें विकसित करबाक योजना तैयार कयलक अछि। मुजफ्फरपुर मे कृषि उत्पादन ओ प्रसंस्करण स' संबद्ध 1219 इकाइ जिला उद्योग केन्द्र स' निबंधित छैक, जाहि मे मात्र 14 इकाइ

14 सितम्बर 2001 धरि कार्यरत छल। दसम पंचवर्षीय योजना मे 336 करोड़ रुपया निवेशक जरुरत छैक। 236.58 करोड़ रुपया कार्यशील पूंजी तथा 95.34 करोड़ रुपया निवेश ऋणक रुप मे। एहि जिला मे 2.98 टन फल तथा 5.58 लाख टन सब्जीक उत्पादन भ' रहल अछि। लीची, आम लताम, अनारस, आलू, टमाटर, मिरचाई, मशरुम, मखान तथा प्राकृतिक मधुक प्रसंस्करणक भरपूर संभावना छैक। वर्ष 2002 मे 10 मिलियन डालर मूल्यक 'शाही लीची' यूरोप तथा पश्चिम एसियाइ देश मे निर्यात कयल गेल। मुशहरी क्षेत्र मे 100 एकड़ जमीन पर लीची अनुसन्धान केन्द्रक स्थापना कयल गेल छैक। लीची पल्प सेहो निर्यात होइछ। कम्पकेड एहि मे उचित सहयेग कय रहल अछि। मीनापुरक पीपराहां असली पंचायत मे 5 एकड़ स' अधिक धानक खेती करयबला 40 किसान कें बासमती धान उत्पादनक विशेष जानकारी देल गेल अछि। धानक प्रोसेसिंग एखन हरियाना मे होयत तथा बासमती चाउर जर्मनी निर्यात कयल जायत। क्रमिक मकई तथा मूंगक निर्यात सेहो होयत। मत्स्य उद्योगक विकास मे स्वयंसेवी संस्था अदितिक सहयांग स' सराहनीय काज भेल अछि। भूसारा मोनि मे 12 लाखक लागत स' 100 मलाहिन एहि काज मे श्रेयस्कर योगदान कयने छथि। मीनापुर प्रखंड मे 18 लाख रुपयाक लागत स' आधा दर्जन चबूतरा आ पम्पिंग सेटक व्यवस्था भेल छैक। मत्स्य विभाग बिहार सरकारक असहयोगक कारणें जिलाक 1827 हेक्टेयर जलकर मे मत्स्य पालनक उचित व्यवस्था नहि रहला स' आन्ध्र स' माछ एहि जिला मे अबैत अछि। गायघाट प्रखंडक भुसार मे घर-घर सुजनी बनौल जाइत अछि तथा आब एकर निर्यात सेहो भ' रहल अछि। महिला विकास सहयोग समिति एहि धंधा मे सराहनीय काज कयने अछि। मुजफ्फरपुरक तिरहुत दुग्ध उत्पादक केन्द्र दूधक व्यवसाय मे उत्तम काज कय रहल अछि। प्रारम्भ मे मात्र पेड़ा बनाओल जाइत छल। आब लस्सी, रसगुल्ला, गुलाब जामुन एवं अन्य मधुर बनाओल जाइछ तथा सम्पूर्ण राज्य मे एकर बिक्री केन्द्र छैक। कोल्ड स्टोरेज 6 टा अछि जकर क्षमता 142600 मे. टन. तथा चारिटा सरकारी गोदाम अछि जकर क्षमता 33714 मे. टन. ओ 8 निजी गोदामक क्षमता 626,000 मे. टन छैक। खादी ग्रामोद्योगक मुजफ्फरपुर मे पैघ केन्द्र छल। विभिन्न प्रकारक खादी वस्त्र ओ ग्रामोद्योगी वस्तु बनैत छल। एखन सरकारक असहयोगक कारणें विकसित स्थिति मे नहि अछि।

सुलभ, सुदृढ़, सस्त निर्भर योग्य ऊर्जा साधनक उपलब्धि पर कोनो भूभागक आर्थिक विकास संभव छैक। एहि दृष्टिएं 1988 मे मुजफ्फरपुरक कांटी नामक स्थान मे 220 मेगावाट (2×110) ताप विद्युत केन्द्र स्थापित भेल जकर एकटा यूनिट तकनीकी गड़बड़ीक करणें बन्द अछि। दोसर यूनिट अपन क्षमताक अनुरुप कहियो बिजली उत्पादन नहि कय रहल अछि। मात्र

40 मेगावाट बिजलीक उत्पादन संभव भ' रहल छैक। केन्द्रीय ऊर्जा मंत्रालय एवं राज्य सरकारक बीच 30 वर्षक हेतु लीज पर कांटी स्थित थर्मल इकाइ एन.टी.पी.सी. के देबाक निर्णय भ' चुकल अछि। एन.टी.पी.सी. कांटी थर्मलक क्षमताक विस्तार करत तथा पी.एल.एफ. साल भरि मे 50 तथा दोसर वर्ष मे 60 करत जे एखन मात्र 15 पर अछि। 421 करोड़ रुपयाक व्यय अनुमानित छैक। सम्प्रति कांटी थर्मल मे उत्पादित बिजली पर लागत 4.18 रुपया प्रति यूनिट अबैत अछि जखन कि बाहर स' बिजली प्रति यूनिट मात्र 1.30 रुपया मे उपलब्ध भ' जाइत छैक।

एहि जिला मे यातायातक प्रमुख साधन सड़क अछि, मुदा एकर स्थिति दयनीय छैक। पैर पूछैत छैक जे सड़क कत' अछि। सुदूर गाम कें मुख्य मार्ग स' जोरयबला प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजनाक अन्तर्गत 84.25 कि.मी. लम्बा 29टा ग्रामीण सड़कक चयन कयल गेल छैक। दू चरण मे निर्माणक हेतु 15.71 करोड़ रुपया स्वीकृत कयल गेल छै, जखन कि 31 दिसम्बर 2003 धरि मात्र 2.74 करोड़ रुपया खर्च कयल गेल। प्रथम चरण मे 11 प्रखंडक 23.138 कि.मी. सड़क निर्माण पर 5.56 करोड़ रुपया खर्चक प्राक्कलन छल जे दू वर्ष बीतलाक बाद, एन. एच. 28 दिघरा स' नारायणपुर अनंत तथा सरबदीपुर स' गुरमी जायबला दू सड़कक कुल 4.4 कि. मी. धरि कालीकरण कयल गेल। प्रथम चरणक चयनित 11 योजना अपूर्ण अछि तथा 3.72 करोड़ रुपया परल छैक। रामपुर चौक स' शाहपुर तथा सिहो वरियारपुर स' मुरनीपुर-महमदपुर सड़क निर्माणक प्रगति शून्य अछि। गायघाट प्रखंडक सीमा स'-कनीया इनार, रेपुरा नारंगी-जीवनाथ देवरिया, गोवधर चौक-नीरपुर, मोतीपुर चौक-उजालाकोट, नारायणपुर-भेड़ियाही, जनाढ़-नयागांव तथा बनधारा पी.डब्ल्यू.डी. रोड स' धरमपुर जायबला चयनित सड़कक स्थिति सेहो दयनीय अछि। द्वितीय चरण मे 8 पैकेज मे 18 ग्रामीण सड़कक चयन कयल गेल। कुल 56.12 कि.मी. ग्रामीण सड़कक हेतु 10.14 करोड़ रुपयाक मंजूरी भ' गेल छैक। काज एकोटा पर नहि शुरु भेल। दलसिंगसराय स' एन.एच.-28, बीएमपी-6 कनहौली कलकत्तीया गाछी, सिवाइपट्टी-घोसौल, अस्पताल पथ, प्रयागबाड़ी बोरू आरी, बरियारपुर-शाहपुर, मुतलपुर-हत्था, जहांगीरपुर-इटहां तथा बरियारपुर-कुतुबपुर पथ जर्जर अछि। केरमा रघुनाथ स' सोनवर्षा, अकराहा-जमील कमतौल पथ, विश्वम्भरपुर-क़रजा, वरूराज-देवरिया-बीड़पुर, लक्ष्मीपुर-फन्दा, दाउदपुर-भोजपट्टी, पारूथाना-गरहां पम्प, समस्तीपुर-पितामनढ़ाला पथ, बड़कागाम-मोतीपुर तथा बोधनाथपुर स' माधोपुर हजारी पथक संबंध मे ग्राम्य अभियंत्रण संगठन कार्य प्रगति पर होयबाक दावा करैत अछि, मुदा वास्तविकता भिन्न अछि। 10 प्रतिशत स' बेसी काज नहि भेल छैक। राष्ट्रीय उच्च पथ 28-यू.पी. बोर्डर-गोपालगंज-पीपराकोठी- मुजफ्फरपुर बरौनी-267 कि.मी., पथ संख्या 57- मुजफ्फरपुर- दरभंगा- फारबिसगंज- पूर्णिया- 295 कि.मी., पथ संख्या 77- हाजीपुर- मुजफ्फरपुर- सीतामढ़ी- सोनवर्षा-

139.55 कि.मी. तथा पथ संख्या 102- छपरा (एन. एच. 19)- रेवाघाट- मुजफ्फरपुर (एन. एच. 28)- 80 कि.मी. एहि जिला स' होइत जाइत अछि।

रेलपथ प्राचीन अछि। पहिने छोटी लाइनक गाड़ी चलैत छल। आब बड़ी रेल लाइनक गाड़ी चलैत अछि। मुजफ्फरपुर कें देशक अधिकांश भाग स' जोरि देल गेल छैक। जम्मू, अहमदाबाद, मुम्बई, दिल्ली, हावड़ा, लखनऊ, बरौनी, गोरखपुर, धनबाद, कानपुर, रक्सौल, टाटानगर आदि स्थान स'। हाजीपुर- मुजफ्फरपुर रेलखंडक 50 कि.मी. एखन धरि सिंगल लाइन अछि, दोहरीकरण नहि भेल छैक। जखन कि ई व्यस्ततम रुट अछि। मात्र रामदयालुनगर स' मुजफ्फरपुर धरि 5 कि.मी. दोहरीकरण भेल छैक। मुजफ्फरपुर- सीतामढ़ी रेलखंड 62 कि.मी. लम्बा पूर्वहि स्वीकृत भेल छल, मुदा क्रियान्वयन नहि भेल अछि। भूमि अधिग्रहणक काज शुरु भेल छैक। राष्ट्रीय सुरक्षा, निर्धनता आ व्यापारक दृष्टि स' एहि सीमावर्ती क्षेत्र मे रेल सुविधाक विस्तार आवश्यक छैक।

20 सूत्री कार्यक्रमक मूल्यांकन 2002क उपलब्धि पर कयल गेल छल। मुजफ्फरपुर जिला मे 40 प्रतिशत स' कम काज भेल तथा सतरहम स्थान पर ई छल। अत्यन्त पिछड़ल ओ निर्धनतम जिलाक पहचान हेतु केन्द्र सरकार एकटा कमेटी गठित कयने छल। अपन निर्धारित मापदंडक अन्तर्गत ई जिला पिछड़ल ओ निर्धतम जिलाक सूची मे छल। कमेटी नवीन संरचनाक सृजन तथा पुरान संरचनाक रखरखाव पर विशेष ध्यान देबाक सुझाव देने छल मुदा किछु नहि कयल गेल।

पर्यटन विकासक हेतु एखन धरि कोनो काज नहि कयल गेल। 3700 एकड़ मे पसरल खरौनाडीहक ऐतहासिक सांस्कृतिक समृद्धि कें विकसित नहि कयल गेल छैक। खरौनाडीह, बांगरडीह, कमलदह, बोराबारा डीह, बंगराडीह, गोरैयाडीह आदिक आसपास के.पी. जायसवाल शोध संस्थान द्वारा कयल गेल अन्वेषण मे प्राचीन मृदभांड, ईंटा, कूप आदि भेटल छैक। नरासल झील लग गुप्तकालीनं उत्तर पृष्ठमार्जित मृद्भांड भेटल छल। झीलक पूर्वी कछेड़ मे स्थित 10,000 वर्गमीटर क्षेत्र मे पसरल नूनोडीह कें सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानल जा रहल छैक। 2500 साल पुरान अवशेष पायल गेल छैक। तीन नदीक क्षेत्र अछि ई स्थान। पर्यटनक दृष्टि स' एहि स्थानकें आधुनिक ढंग स' विकसित कयल जा सकैछ।

महान क्रांतिकारी खुदीराम बोसक नाम पर एत' स्टेडियम एवं मूर्ति बनल अछि, मुदा देशक स्वतंत्रता मे अपन जान देनिहारक प्रति ई किछु नहि भेल। सरकार एकरा पैघ सांस्कृतिक स्थल मे परिवर्तित क' सकैत अछि।

■

सीतामढ़ी

लखनदेई नदीक पश्चिम तट पर आ जनकपुर धाम स' लगभग 1 कोसक दूरी पर प्राचीन काल मे मिथिलेश महाराज सीरध्वज यज्ञभूमिक-शोधनार्थ सोनाक ह'र स' खेत जोति रहल छलाह कि सिड़ाउरि स' एक कन्या उत्पन्न भेलीह। नाम सीता राखल गेलन्हि आ हुनके नाम पर सीतामढ़ीक नामकरण भेल। वैदेहीक जन्मभूमि। 11 दिसम्बर 1972 कें विवाह पंचमी दिन सीतामढ़ी जिलाक उद्घाटन भेल। पुनौरा गाम, जे सीतामढ़ी शहर स' दक्षिण-पश्चिम 2 मीलक दूरी पर अछि, ओतहि जानकीक जन्म भेल छलनि। एक अन्य कथाक अनुसार 12 वर्ष धरि मिथिला मे अनावृष्टि आ अकाल रहबाक कारणें राजा जनक वर्षाक हेतु हलेष्टि यज्ञ अपन रानी आ 88 हजार ऋषिक संग कयलनि। ह'र जोतबाक काल एकटा घैल फूटल, जाहि स' एक शिशु बहरयलीह आ राजा जनक हुनका अपन कन्या बनौलनि। पुनौरा गामक जाहि स्थान पर घैल फूटल छल ओहि स्थान कें जानकी जन्मकुंड कहल जाइछ आ अद्यपर्यन्त तीर्थस्थल बनल अछि। प्रतिवर्ष चैत्रक रामनवमी मे एतय मेला लगैछ जे एक पक्ष धरि चलैत अछि। एहि जिलाक उत्तर मे नेपाल, पूब मे मधुबनी, दक्षिण मे मुजफ्फरपुर-दरभंगा, पश्चिम मे शिवहर ओ पूर्वी चम्पारण जिला अछि। जिला मुख्यालय सीतामढ़ी मे अछि। ई तिरहुत प्रमंडलक एकटा जिला अछि। अनुमंडल सीतामढ़ी सदर मात्र, 17 प्रखंड ओ 271 पंचायत अछि। पुपरी पंचायत मे 13, रीगा मे 16, बैरगनियां मे 8, परिहार मे 27, नानपुर मे 16, डुमरा मे

28, रून्नीसैदपुर मे 32, सोनबरसा मे 20, बथनाहा मे 21, सुरसण्ड मे 18, बेलसण्ड मे 9, मेजरगंज मे 8, बाजपट्टी मे 19, चोरौत मे 7, बोखड़ा मे 11, परसौनी मे 7 ओ सुप्पी प्रखंड मे 11 पंचायत अछि। बागमती एहि जिलाक प्रमुख नदी अछि। 2643 वर्ग कि.मी. मे पसरल अछि ई जिला। कुल 2936 पोखरि, जाहि मे 1582 निजी पोखरि अछि।

एहि जिलाक जनसंख्या 1991 मे 20,13,795 छल। वर्ष 2001 मे 26,69,887 आंकल गेल। अर्थात 24.57 प्रतिशतक वृद्धि भेल जखन कि बिहारक जनसंख्या मे 28.43 प्रतिशत ओ देशक जनसंख्या मे 21.34 प्रतिशत एहि दसक मे वृद्धि भेल। कुल पुरुष 14,10,149 ओ कुल महिलाक आबादी 12,59,738 छल। कुल साक्षरता 39.38 प्रतिशत, पुरुष साक्षरता 51.02 ओ महिला साक्षरता मात्र 26.35 जे देश मे 54.16 अछि। एहि जिला मे जनसंख्याक घनत्व 1214, बिहार मे 880 ओ देश मे 324। द्रुत गति स' बढ़ैत जनसंख्या एतयक आर्थिक विकासक मार्ग मे अवरोधक अछि। रोजगारक अभाव मे बढ़ैत श्रमशक्ति एहि क्षेत्रक पैघ समस्या छैक।

एहि जिलाक भूमि उर्वर अछि। प्रतिवर्ष बाढ़ि द्वारा गादक निक्षेप स' भूमिक उर्वरता मे वृद्धि होइछ। धानक खेतीक अनुकूल वर्षा होइछ। अपेक्षाकृत ऊंच भूमिजल-तल तथा बाढ़ि स' माटि मे पर्याप्त नमी रहैछ तें, दू-तीन फसिल उपजाओल जाइछ। एतय नदीक कछेड़ मे प्राकृतिक कगार भूमि ऊंच अछि ओ दोआब क्षेत्र मे नीच अछि। निचलका भूमि मे धान ओ ऊंच कगार पर मकई, कुसियार, आलू, अल्हुआ उपजाओल जाइछ। जलोढ़ नवीन माटि अछि। क्षारक मात्रा सेहो पाओल जाइछ।

प्राकृतिक वनस्पति जिला मे जनसंख्या वृद्धिक कारणें खेतीक लेल साफ कय देल गेल अछि। वन समस्याग्रस्त अछि। रेलमार्ग, सड़कक विकास, औद्योगिक विकास, भवन निर्माण, कृषि प्रसार तथा अवैध कटाइक कारणें वन-क्षेत्रक अतिक्रमण भेल छैक। सड़क, रेल, तटबंधक कछेड़ मे वन कें सुरक्षित घोषित कयल गेल छैक। जिला मे 46.12 कि.मी. वन क्षेत्र अछि। वृक्षक कटाइ पर आंशिक प्रतिबंध छैक।

एहि जिलाक प्रमुख नदी बागमती हिमालयक दक्षिणी ढलान नेपालघाटीक उत्तरी-पूर्वी भाग काठमांडू लग 8 हजार मीटर उंचाइ पर स्थित गोसाईनाथ शिखर स' 1700 वर्गमील सम्प्रसारक संग नि:सृत होइत सखतिया गाम लग प्रवेश करैछ। लाल बकेया एहि जिलाक पिपराही प्रखंडक अदउरी गाम मे, लखनदेई कटरा गाम लग एवं अधवारा समूहक नदी आपस मे मिलैत दरभंगाक हायाघाट मे बागमती मे विलीन भ' जाइछ। बागमती स्थिर नदी अछि। 1989 मे अधवारा समूहक नदीक बाढ़ि नियंत्रण योजनाक अन्तर्गत लगभग 250 कि.मी. लम्बा तटबंधक स्वीकृति देल गेल। 29 करोड़ टाकाक लागत एवं एहि स' लगभग 17 लाख आबादी एवं 3 लाख एकड़

भूमि कें बाढ़ि स' सुरक्षित करबाक योजना बिहार सरकारक छल। योजना एखन धरि लड़खड़ाइते अछि। लखनदेई नदीक बाढ़िक रोकथाम ओ एहि स' पटौनीक कोनो व्यवस्था नहि भेल छैक।

बागमती नदीक दहिना-बामा तट पर तटबंधक निर्माण भेल। बाढ़ि नियंत्रण ओ सिंचाइक तकनीकी एवं गैरतकनीकी योजनां बनल। हायाघाट स' नीचा कोसीक संगम धरि तटबंध बनल। ढेंग लग प्रस्तावित बराज स्थल स' रून्नीसैदपुरक पश्चिमोत्तर ओ सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुरक मार्गक पश्चिम धरि तटबंधक निर्माण भ' गेल अछि, किन्तु रून्नीसैदपुर स' हायाघाट धरि लगभग 79 कि.मी. धरि निर्माण काज पूरा नहि कयल गेल। फलस्वरुप तटबंधक कारणें सुरक्षित बैरगनियां प्रखंड, हायाघाट-एकमीघाटक पार्श्ववर्ती गाम तथा दरभंगा-नरकटियागंज रेल लाइनक उत्तर ओ दक्षिण बसल गाम सभ मे लगभग 5 स' 6 मास धरि जलजमाव रहैत अछि। बागमती बाढ़ि नियंत्रण परियोजनाक अन्तहीन कथा एखनो चलि रहल अछि। बाढ़िक विभीषिका स' किसान ओ मजदूरक अन्य राज्य मे पलायन भ' रहल अछि।

वर्षा ओ नेपाल स' पानि छोड़ि देला स' जिलाक नदीक जलस्तर मे वृद्धि होइत अछि आ प्रत्येक वर्ष स्थिति गंभीर भ' जाइछ। ढेंग बैरगनिया स' शुरू जउवां-मेघौल धरि लगभग डेढ़ सय कि.मी. लम्बा बागमती तटबंध पर रक्सिया लग दुनू दिस फूसक घरक बीच स' एकसर एक आदमी कें जयबाक रास्ता अछि। तटबंध चंदौली, खरका, शिवनगर ओ रक्सिया धरि कतेको जगह कटि गेल छैक। बागमतीक पानि एहि रास्ता स' कटौंझा ओ जनाढ़ धरि पैघ क्षेत्र मे पसरि जाइछ। जनाढ़ स' डेढ़ कि.मी. दूर बागमती पर बनल कटौंझा पुल, फेर रूनी चौक स' डेढ़ कि.मी. नाव स' चलिकय रक्सिया ओ शिवनगरक बीच बनल बागमती तटबंध धरि पहुंचल जा सकैछ। बागमतीक लेल रक्सिया बांध ओ एकर पश्चिम पोताबला बांधक बीच पांच कि.मी. पाट छैक। बागमतीक पाट पसरि रहल अछि। रक्सिया, सोनपुरवा, शिवनगर, बधौनी, मधौल, खरका, रूनी, मन्नुडीह आदि गांवक करीब 20 हजार आबादी बांधक बाहर अछि। रक्तिया मे दूठाम ओ शिवनगर मे तीन जगह बांध टूटल। पिछला साल सेहो टूटल छल। मौनानगर मे सेहो बांध टूटि गेल। पानि जनाढ़ धरि पहुंचि जाइछ। बागमती तथा अधवारा समूहक नदीक जलस्तर मे वृद्धि स' बाढ़िक स्थिति 28 जून 2003कें गंभीर भ' गेल छल। बागमतीक जलस्तर डुब्बा धार मे खतराक निशान स' 0.10 मीटर ओ कटौंझा मे 0.89 मीटर स' ऊपर पहुंचि गेल छल। अधवारा समूहक नदीक जलस्तर सुन्दरपुर मे खतराक निशान स' 1.20 मीटर ऊपर बहि रहल छल।

एन.एच. 77 ओ 104 समेत आधा दर्जन स' अधिक ग्रामीण सड़क पर 2 स' 3 फीट पानिक बहाब छल जाहि स' आवागमन बाधित छल। सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुर मार्ग पर बाहनक परिचालन बाधित छल। पुपरी-गंगटीक

बीच वाटरवेज बांध टूटि गेला स' प्रखंड मुख्यालय स' सम्पर्क टूटि गेल छल। 20 अगस्त 2003 कें बागमतीक जलस्तर मे तीन फीट वृद्धि भ' गेल छल। लखनदेई नदी कें छोरि सब नदीक जलस्तर खतराक निशान स' ऊपर बहि रहल छल। सीतामढ़ी-मुजफ्फरपुर मार्ग पर पुनः आवागमन ठप भ' गेल। अधवारा समूहक नदीक जलस्तर मे फेर वृद्धि भेल। प्रत्येक वर्ष जनजीवन भयंकर बाढ़िक चपेट मे रहैत अछि।

एहि जिलाक वर्त्तमान आर्थिक, सामाजिक ओ राजनैतिक स्थिति मे कृषिक विकास अनिवार्य अछि। एतय कृषि अर्थतंत्रक धूरी अछि। आर्थिक विकास कृषि विकासक बिना संभव नहि। जिलाक कृषि बहुफसली अछि। धान मे अगहनी प्रधान फसिल अछि। भदै धान कम होइछ। मड़ुआ उपजाओल जाइछ। कुसियारक फसिल होइछ। आलू, मिरचाई आ मसालाक खेती कयल जाइछ। गहूमक खेती आधुनिक ढ़ग स' कयल जाइत अछि। मकई जून-जुलाइ मे आर्द्रा नक्षत्र मे मानसूनी वर्षा भेला पर बोआइ कयल जाइछ तथा भादव-आसिन मे काटल जाइत छैक। बागमतीक ऊपरका भाग मे सरिसो, मसुरी, तमाकू, तीसी, मटर आ परोर प्रचुर होइछ। 85 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर निर्भर करैछ। तेरहटा कृषि फार्म-डुमराक मुरादपुर गाम मे 50 एकड़, रीगा मे 50 एकड़ ओ 25 एकड़क एक-एक फार्म भवदेवपुर, मेजरगंज, बैरगनियां, सुरसंड, परिहार, सोनबरसा, बलहा, बाजपट्टी, नानपुर, रून्नीसैदपुर मे स्थापित भेल छल। किसानक हित ओ कृषिक उन्नत पैदावारक हेतु। एखन घास उपजि रहल अछि।

उद्योग आजुक आर्थिक युगक आधार अछि एवं ओहि स' वंचित अछि सीतामढ़ी जिला। कलकत्ताक 'बांगड़ ब्रदर्स' 1932 मे रीगा मे बेलसंड सुगर कम्पनी लिमिटेडक स्थापना कयलक। प्रतिदिन 1200 टन कुसियार पेरबाक क्षमता छैक एहि मिल कें। डब्बल सल्फीटेशन पद्धति द्वारा एहि मिल मे चीनी बनाओल जाइछ। एहि मिलक स्थायी सम्पत्ति छल 78,08,439 रुपया ओ कार्यशील पूंजी 29,23,562 टाका। मिल पुरान भ' गेल छैक। एकर आधुनिकीकरण आवश्यक अछि। कुसियारक सिट्ठी स' कागज ओ छोआ (शीरा)स' शराब ओ केमिकल बनब्रबाक यंत्र लगाओल जा सकैछ। एकटा आधुनिक ढंगक चीनी मिल स्थापित कएल जा सकैछ। धान एहि जिलाक मुख्य फसिल अछि। 17टा धान कुटबाक मिल मुख्यतः बैरगनियां, जनकपुर रोड ओ सीतामढ़ी मे छैक। मुदा आधुनिक चाउर मिल नहि छैक। नेपाल निकट रहला स' लकड़ीक आयात वृहत रूप मे भ' सकैछ। सीतामढ़ी मे काठक पैघ गोला अछि, मुदा लकड़ी उद्योग कें विकसित नहि कयल गेल अछि। एहि शहरक पूर्वीय भाग मे आत्मर्नियमक एक छोट

कारखाना स्थापित कयल गेल छल। विकसित नहि कयल गेल। खादी कपड़ा-सूती, रेशमी ओ कम्बल-उद्योग पूर्व मे विकसित छल। ग्रामोद्योगी वस्तु-सरिसो तेल, चमड़ाक जूता, साबुन, कागज बनायल जाइत छल। राज्य सरकार आर्थिक सहायता दैत छल जे 14 वर्ष स' बन्द अछि। ई उद्योग सभ जीविकाक पैघ साधन छल, जे रूग्ण अछि। मत्स्य उद्योगक विकास हेतु बिहार राज्य मत्स्य उद्योग निगम लगभग 80 लाख रुपयाक लागत स' बखरी मे एकटा आधुनिक ढंगक हैचरी स्थापित कयने अछि। यातायात ओ बिजलीक अनिश्चितताक कारणें उत्पादन ओ बाजार मे वृद्धि नहि भ' रहल छैक। सीतामढ़ी जिला मे 2933 पोखरि अछि, जाहि मे 1582 निजी पोखरि अछि। पोखरिक भीड़ पर मुर्गीपालन ओ मत्स्यपालन कयल जा सकैछ। छोट-छोट निजी क्षेत्र मे हेचरी स्थापित भेल अछि मुदा अर्थाभाव मे विकसित नहि भेल अछि। मत्स्य उद्योग कें विकसित कयल जा सकैछ। ई जीविकाक पैघ साधन भ' सकैछ। मखानक खेती ओ उद्योग कें आधुनिक ढंग पर कयल जा सकैछ। सीतामढ़ी मे विस्कोमानक एक शीतगृह छल जे सम्प्रति बन्द अछि। चालू करबाक प्रयास भ' रहल छैक। खाद्य प्रसंस्करण ओ कृषि आधारित उद्योगक भविष्य उज्ज्वल अछि।

आजुक युग मे प्रचुर विद्युत संसाधनक विना उद्योग-धंधाक विकास असंभव अछि। जलविद्युत उत्पादनक पैघ संभावना अछि, किन्तु धनाभाव ओ नियोजनक अभाव अविकसित अछि। सीतामढ़ी विद्युत स्टेशनक क्षमता 12 मेगावाट बिजली उत्पादनक अछि मुदा आपूर्ति होइछ 3 मेगावाट। ई क्षेत्र एखनो लालटेन युग मे अछि। जनवरी 2002 मे पुपरी, रून्नी सैदपुर, बैरगनियां ओ शिवहर मे 574 ट्रान्सफार्मर छल जाहि मे 150 जरल छलैक। बेलसंड मे स्वीकृत विद्युत पावर हाउसक निर्माण लटकल छैक।

एहि जिलाक लेल सड़क यातायात प्रमुख अछि, मुदा बाढ़ि स' जर्जर भ' चुकल अछि। आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं प्रशासकीय दृष्टि स' यातयात महत्वपूर्ण अछि। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 77-हाजीपुर-मुजफ्फरपुर- सोनबरसा धरि 142 कि.मी. लम्बा एहि जिलाक मध्य होइत जाइत अछि। दोसर चकिया एन.एच संख्या 28 नरहर पकरी ब्रिज-मधुबन-शिवहर-सीतामढ़ी-हरलाखी-उमगांव-जयनगर-खुटौना एन एच 57 कें जोरैत छैक जे 110 कि.मी. अछि। काज जोर-शोर स' चलि रहल छैक। गतवर्ष प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक अन्तर्गत निम्न कार्य स्वीकृत भेल छल।

बेहटा स' बरीक -	1.33 कि.मी.	22.815 लाख रुपया
कुरहर - घाघो-नया टोल-हरिनगर पथ -	3.20 कि.मी.	36.145 लाख रुपया

विश्वनाथपुर-बिरौली-आ.ई.ओ पथ - बघारपुर-मदनपुर-रसलपुर पथ -	3.75 कि.मी.	54.440 लाख रुपया
डायन कोठी पथ स' सहियारा-छोडहिया - पटनिया - पोसुआ पथ -	3.60 कि.मी.	50.030 लाख रुपया
सोनबरसा-रजबाड़ा पथ वाया - दलकवा सिधोरखा -	3.15 कि.मी.	53.280 लाख रुपया
शिवाईपट्टी-विशनपुर पथ -	1.65 कि.मी.	33.478 लाख रुपया
खनुआ-सुगरीडीह पथ -	3.72 कि.मी.	54.06 लाख रुपया
धरवाडा-नरकटिया-नन्दकार-सिमरदह पथ -	1.65 कि.मी.	28.014 लाख रुपया

एकर कार्यान्वयन असन्तोषजनक अछि। बथनाहा बाजार स' तुरकौलिया पंचायत जायबला सड़कक खस्ताहाल अछि। जिला मुख्यालय स' जनकपुर जायबला मार्ग पंथपाकर मोड़ स' बथनाहा बाजार धरि जीर्ण भ' गेल अछि। भारत नेपाल कें जोरयबला सीतामढ़ी-बेला- परिहार मार्ग अत्यन्त जर्जर। परिहार प्रखंडक परबाह चौक स' नरंगा, मजौलिया, लालबंदी, जगदर, लहुरिया, बारा सड़क जर्जर। सीतामढ़ी-सुरसंड-भिट्ठामोड़ पथ स्थित हरसंगहो नदी पर बनल स्क्रू पाइल पुलक मरम्मत अविलम्ब जरूरी अछि। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 77 पर मुजफ्फरपुर- सीतामढ़ी-सैदपुर पुल-चारि पायाबला 121 वर्ष पुरान अछि। किछु प्रखंड मे आवंटित सड़क मार्ग-

मदनपुर-आजमगढ़-	4.50 कि.मी.	94.25 लाख रुपया
बथनाहा प्रखंडक सहियारा -पोसुआ-पटनिया-	4.60 कि.मी.	89.66 लाख रुपया
बथनाहा-भजगामा पथ -	1.00 कि.मी.	18.90 लाख रुपया
परसौनी प्रखंड अन्तर्गत सदन-हरपुसारी -	5.00 कि.मी.	87.33 लाख रुपया
रून्नी सैदपुर प्रखंडक मौना-सुगरीडीह-	5.29 कि.मी.	81.910 लाख रुपया
बाजपट्टी प्रखंडक संडवारा-पटदौरा-	3.00 कि.मी.	96.00 लाख रुपया
चोरौत प्रखंडक बेहटा-नरदी-बारीपथ-	2.05 कि.मी.	52.00 लाख रुपया
सोनबरसा प्रखंडक दलकादा-रंदरवा-	4.25 कि.मी.	95.[illegible] लाख रुपया

एहि जिलाक 1200 कि.मी. लम्बा सड़क मे पथ निर्माण विभागक 372.42 कि.मी., 595 कि.मी. ग्राम्य अभियंत्रण विभागक ओ जिला परिषदक

156 कि.मी.. शेष अन्य विभागक अधीन अछि। 120 कि.मी. सड़क राष्ट्रीय राजमार्गक देखरेख मे अछि। 751.063 लाख रुपयाक खर्च स' 40.83 कि. मी. प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक अन्तर्गत स्वीकृत पथ अछि। बाढ़ि ओ भ्रष्ट अभियंता-ठेकेदारक कार्य संस्कृतिक शिकार जिलाक सड़कक स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ैत जा रहल छैक। साइकिल ओ ट्रैक्टर आवागमनक साधन अछि। भारत-नेपालक सीमा पर स्थित एहि जिलाक आवागमन संकटपूर्ण अछि।

मीटर गेज रेल सेवा अछि। आमान परिवर्तन भ' रहल छैक। मुजफ्फरपुर-सीतामढ़ी रेल लाइनक हेतु 10 करोड़ रुपया खर्च भ' चुकल अछि। 2006 धरि रेल लाइन बनि जेबाक चाही।

एहि क्षेत्र मे पर्यटन विकासक हेतु एखन धरि कोनो काज नहि भेल अछि। वैदेहीक जन्मभूमि पुनौरा सीतामढ़ी रेलवे स्टेशन स' 2 कि.मी. दक्षिण-पश्चिम मे अछि। जानकी मन्दिर पुण्य तीर्थस्थल अछि। मुदा विकसित नहि कयल गेल अछि। नान्यपुर-राजानान्यदेवक महलक हेतु प्रसिद्ध अछि। पूर्ण अविकसित। मात्र भग्नावशेष विद्यमान। रीगा-ऋगवेदक अध्यापनक लेल प्रसिद्ध जगह अछि।

■

शिवहर

शिवहर सीतामढ़ी जिलाक अन्तर्गत अनुमंडल छल जे आब जिलाक श्रेणी मे अछि। तिरहुत प्रमंडलक एकटा जिला। तीन अनुमंडल-शिवहर, बेलसंड ओ पुपरी। पांच प्रखंड एवं कुल 53 पंचायत। शिवहर मे 10 पंचायत, डुमरी कटसरी मे 8, पुरनहिया मे 8, तरियानी मे 16 तथा पिपराही प्रखंड मे 11 पंचायत अछि। एहि जिलाक उत्तर मे सीतामढ़ी, पूब मे सीतामढ़ी, दक्षिण मे सीतामढ़ी ओ पूर्वी चम्पारण तथा पश्चिम मे पूर्वी चम्पारण जिला अछि। बागमती प्रमुख नदी अछि। समतल निक्षेपीय मैदान तथा नदीक निक्षेप स' बनल भूमि। समुद्र तलक ऊपर सामान्य उंचाइ 75 मी.स' कम। तीन प्रमुख ऋतु-शीत, ग्रीष्म ओ वर्षा। मध्य अक्टूबर स' फरबरी धरि शीत ऋतु, मार्च स' 15 जून धरि ग्रीष्म ओ मध्य जून स' अक्टूबर धरि वर्षा ऋतु एहि जिला मे रहैछ। औसत 1100-1300 मि.मी. वर्षा होइछ। जुलाइ ओ अगस्त मे सर्वाधिक वर्षा। हिमालयक दक्षिणी ढाल पर घनघोर वृष्टि होइछ जाहि स' एहि जिलाक नदी मे बाढ़ि आबि जाइछ। जिला ओ अनुमंडल मुख्यालय मे प्रशासनिक भवन, जेल, कोर्ट ओ अन्य ढांचागत सुविधाक सृजन पूरा नहि भेल अछि। कुल पोखरिक संख्या 337 अछि, जाहि मे 105 निजी अछि। वर्ष 1991क जनगणना मे एहि जिलाक जनसंख्या छल 3,77,699 जे वर्ष 2001 मे भ' गेल 5,14,288 अर्थात 36.16 प्रतिशत वृद्धि भेल। एहि मे पुरुषक संख्या 2,71,261 ओ महिला 2,43,27 अछि। पुरुष साक्षरता 45.54 तथा महिला साक्षरता 27.43 प्रतिशत। जिलाक कुल साक्षरता 37.01 प्रतिशत। जनसंख्याक घनत्व

एहि जिला मे 1161 अछि जखन कि बिहार मे 880 तथा राष्ट्रीय घनत्व मात्र 324। सब स' कम आबादीबला जिला।

बागमती हिमालयक दक्षिणी ढलान नेपाल घाटीक उत्तरी पूर्वीय भाग काठमांडू लग 8,000 मीटर उंचाइ पर गोसाईनाथ शिखर स' 1700 वर्गमील सम्प्रसारक संग निसृत होइछ। आदम बांध गाम लग प्रवेश करैछ आ कुशेश्वरस्थानक दक्षिण-पूब बेलाही लग कोसी मे मिलैत अछि। अधवारा समूहक दू दर्जन नदी एहि जिला मे बहैछ। एकर प्रमुख जलस्रोत हिमालय एवं तराइ स' निसृत होबयबला बरसाती नदी अछि। 1956 मे बागमती नदीक दहिना-बामा तट पर दू तटबंध सिरसिया स' फुहिया धरि 73 कि.मी. एवं दहिना तट पर सुरगाह हाट स' हायाघाट धरि 17 कि.मी. एवं हायाघाट स' बदलाघाट धरि 86 कि.मी. तटबंध बना देल गेल छैक। सिंचाइक व्यवस्था नहि भेल अछि। एकरा आठम पंचवर्षीय योजना मे सम्मिलित करबाक छल से नहि भेल। बागमती बाढ़ि नियंत्रण ओ सिंचाइ परियोजनाक अन्तहीन कथा एखनो चलि रहल अछि। वर्त्तमान सदीक प्रारम्भ मे बागमती शिवहर ओ सराय गामक बीच 6 कि. मी. खिसकि गेल अछि। बागमतीक व्यक्त वाहिका अर्द्धप्रवाहित अवस्था मे पाओल जाइछ।

बाढ़िक भयंकर मारि स' ई जिला सब वर्ष पीड़ित रहैछ। एहि जिलाक देवकुली स' महादेव-कोठिया तटबंध शुरु होइछ। सुरगाही धरि एकर लम्बाइ चेन संख्या 113 धरि होइछ। वर्ष 2002 मे मझौरा कोठिया डूबल त' नदीक उफान 62.77 मीटर छल। एहि वर्ष 28 जून 2003 कें नदीक उफान 61.18 मीटर छल। तटबंधक बाहर पश्चिम दिस सुरगाही, माधोपुर, सिरोपट्टी, पोझिंया, बेलहिया, विश्वम्भरपुर आदि सोलहटा पंचायत बाढ़िक चपेट मे छल। डेढ़ लाखक आबादी तबाह छल। 2 अगस्त 2003 कें सुरगाही गाम मे बागमतीक दहिना तटबंध चेन संख्या 113-120क बीच 100 फुट ध्वस्त भ' गेला स' दर्जनो गाम मे प्रलयक स्थित छल। सुरगाही समेत कुशहर, दस्तारा, पिपरिया, भोरहां, बेलहिया, नीमियाही, मोतनाजे, कोलसो आदि गामक अस्तित्व पर गंभीर संकट उपस्थित छल। भागि कय लोक ऊंच स्थान पर शरण लेलक। एहि क्षेत्रक लोकक लेल ई संकट नव नहि अछि। प्रशासन स्थायी व्यवस्था एखन धरि नहि कय सकल अछि। जनवरी 2003 मे राज्य सरकार एहि जिलाक चारिटा बाढ़ि सुरक्षात्मक काज मे 87 लाख रुपया व्यय कयने छल।

बाढ़ि ओ जल प्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि नरम पाओल जाइछ। बागमतीक पश्चिम भागक माटि मे क्षार पाओल जाइछ। बालूक संग सूक्ष्म गादक निक्षेप होइछ, जे शरदकालीन ओ रब्बी फसलक हेतु उत्तम। नवीन जलोढ़ माटि। माटि उपजाऊ अछि। 95 प्रतिशत भूमि पर खेती होइछ।

धान, गहूम ओ मकई प्रमुख फसिल एहि जिला मे होइछ। एहि

जिला मे कुल कृषियोग्य भूमिक 52 प्रतिशत भाग मे धान उपजाओल जाइछ। जलवायवीय स्थिति ओ जलक उपलब्धि धान क्षेत्रक विस्तार कें नियंत्रित करैत अछि। समतल उपजाऊ माटि, 1000 मि.मी. स' बेसी वर्षा, उपजकाल मे 30° सें. तापमान ओ सस्ता मजदूर उपलब्ध छैक। वर्षा कम भेला पर पटौनी करय परैत छैक। अगहनी धान मुख्य अछि तहि संग भदै धान सेहो उपजाओल जाइछ मात्र 12-14 प्रतिशत भूमि मे। बागमतीक पश्चिम क्षेत्र मे गहूमक खेती होइछ। हरितक्रान्तिक सर्वाधिक प्रभाव गहूमक खेती पर परल छैक। मकई एहि जिलाक तेसर फसिल अछि। बागमतीक पूर्वीय क्षेत्र मे कुसियारक उत्पादन होइत अछि। आलू सेहो उपजाओल जाइछ। कृषि उत्पादन मे वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार ओ आयक अवसर मे वृद्धि तथा आत्मनिर्भरताक लेल कृषिक आधुनिकीकरण परमावश्यक अछि। जिलाक सम्यक् आर्थिक विकास कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि स' संभव अछि। तरियानी प्रखंड मे तमाकू ओ सब्जीक उत्पादन बढ़ाओल जा सकैछ।

ई जिला उद्योग विहीन अछि। विकासक कार्यक्रम मे उद्योगक महत्वपूर्ण भूमिका छैक। उद्योगीकरण ओ आर्थिक विकास उच्च जीवन-स्तरक आधार अछि। प्राकृतिक ओ मानवीय संसाधनक लाभप्रद उपयोग नहि भेल अछि। एहि जिला मे लघु औद्योगिक इकाइक निबंधन 1997-98 मे 41, 1998-99 मे 162, 1999-2000 मे 281 अर्थात् वर्ष 2000 धरि मात्र 231। अधिकांश बन्द अछि। कृषि आधारित उद्योगक प्रचुर संभावना अछि। एखन धरि एहि दिशा मे कोनो प्रयास नहि भेल छैक। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग एहि जिलाक लेल लाभकारी सिद्ध होयत। आधुनिक चाउरक मिल एहि जिला मे नहि अछि, जखन कि धान प्रचुर मात्रा मे उपजाओल जाइछ।

यातायातक समुचित विकासक बिना आर्थिक विकास संभव नहि अछि। एहि जिला मे सड़क निर्माण मे कतेको असुविधा छैक। जमीन ठोस नहि, बाढ़िक आगमन, बाढ़ि मे डूबि जायब, जलजमाव तथा नदीक बहुलता अछि। शिवहर जिला परिषद वर्ष 2001-2002 मे प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजनाक अनुमोदन एहि तरहें कयने अछि। शिवहर प्रखंड-शिवहर ब्रह्मटोली भगवानपुर मुल्ली विशाही पथक शेष भागक निर्माण, फतहपुर चौक स' बसहिया राम हरनहिया पश्चिमी पूर्वी सुन्दरपुर मे मुजफ्फरपुर-शिवहर पी. डब्ल्यू.डी. सड़क धरि निर्माण कार्य। तरियानी प्रखंड-वैद्यनाथ विश्वम्भरपुर, सुल्तानपुर, कुण्डल छपरा सड़क मे हाई स्कूलक गेट धरि फतहपुर, कोझिया, पचड़ापथ, सखरपुर, बेलहिया बांध धरि। पिपराही प्रखंड-धनकौल, मीनापुर, कुम्भा ग्राम तक, महुआवा समिआलम साहब चौक स' ललुआघाट पश्चिमी चम्पारण सीमा धरि। डुमरी कटसरी प्रखंड- भटहां आर.ई.ओ. सड़क स' उमेद छपड़ा कटसरी रोड, डुमरी कटसरी गाजीपुर जपसिंह मसहा रोहुआ रोड। पुरनहिया प्रखंड-पुरनहिया पी.डब्ल्यू.डी. सड़क स' हथसार

होइत कल्हुआ होइत सिधोखा तक, दोस्तीयां बाजार स' खैरा पहाड़ी होइत बराही जगदीश टोल होइत बराही मोहन बाजार होइत बसंत बाजार पी.डब्ल्यू. डी. सड़क धरि। राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 104 मधुबनी-शिवहर-सीतामढ़ी-हरलाखी उमगांव-जयनगर-खुटौना नरहिया (एन.एच.57) 160 कि.मी. लम्बा पथ निर्माणाधीन अछि। 23 जुलाइ 2002क बाढ़ि मे डुब्बाघाट पुल, जे सीतामढ़ी-शिवहर पथ (एन.एच. 104) मे अछि, क्षतिग्रस्त भ' गेल छल। एक करोड़ 92 लाख रुपया स्वीकृत भेल, मुदा तकनीकी कारण स' जुलाइ 2003 धरि निर्माण नहि भ' सकल अछि। शिवहर-सीतामढ़ी पथ मे लक्ष्मीपुर एवं रसोदपुर, शिवहर-मुजफ्फरपुर पथ मे शिवहर उच्च विद्यालयक निकट तथा सुन्दरपुर मे चारिटा जर्जर लकड़ी पुलक स्थान पर स्क्रू पाइल पुलक हेतु निधि उपलब्ध करा देल गेल छैक तीन वर्ष पूर्वहिं, मुदा एकमात्र लक्ष्मीपुर मे बनि सकल। शिवहर-मुजफ्फरपुर सड़क दयनीय स्थिति मे छैक। सड़क स' जुड़ल कुशहर, सलेमपुर, समहुती, फतेहपुर, खोजपुर वंशीपचरा, नरवारा ओ अन्य स्थान मात्र साइकिल स' गेल जा सकैछ। तरियानी प्रखंडक बागमती तट पर स्थित कतेको गाम वर्ष भरि बाढ़ि स' प्रभावित रहैछ। आवाजाहीक कोनो व्यवस्था नहि छैक। बागमती नदीक पेट मे बसल शिवहर जिला मुख्यालय एहि 21म सदी मे रेलमार्ग स' जुड़ल नहि अछि। जिला कें पूर्वी चम्पारण, मुजफ्फरपुर तथा सीतामढ़ी स' जोरयबला सड़क मार्ग जर्जर अछि। शिवहर-मधुवन (पूर्वी चम्पारण) एन.एच. 104 मे डुब्बाघाट पुल कें ध्वस्त भ' गेला स' आवागमन कष्टकर अछि।

■

वैशाली

भगवान महावीरक जन्मभूमि, भगवान बुद्धक कर्मस्थली लेल चर्चित विश्वक सर्वप्रथम लिच्छवी गणतंत्र वैशालीक पवित्र भूमि मे स्थापित छल। वैशालीक इतिहास बड़ प्राचीन अछि। ईसा स' छठम शताब्दी पूर्व विश्वक सर्वप्रथम गणतंत्र एतहि छल। इक्ष्वाकुक पुत्र विशाल वैशाली शहरक स्थापना कयने छलाह। लिच्छवी सबहक नेतृत्व मे बज्जी संघ राज्य पूर्णरुपेण समृद्ध छल। महावीर एवं बुद्ध बहुत समय एतय बितौलनि। सम्राट अशोकक समय धरि वैशाली बौद्ध धर्मक प्रधान केन्द्र भ' गेल छल। मौर्य युग मे सेहो ई प्रधान नगर छल। प्राप्त अवशेष सभक प्रामाणिक आधार पर ई प्रमाणित छैक जे गुप्त काल मात्र शासने मे नहि उल्लेखनीय छल, व्यापारिक रूप मे सेहो ई चर्चित ओ प्रमुख छल। सातम शताब्दी मे चीनी यात्री ह्वेनसांग तिरहुत भ्रमण कयने छलाह आ हुनक लेख स' ज्ञात होइछ जे एहि क्षेत्र मे बौद्धधर्म पतनोन्मुख छल तथा वैशालीक प्राचीन गौरव लुप्त भ' चुकल छल। देशक स्वतंत्रताक लड़ाइ मे एतयक लोक सक्रिय रूप स' भाग लेने छलाह। फलस्वरुप अंग्रेज प्रशासन सामूहिक दंडक रुप मे 90,000/- रुपया वसूली कयने छल। 1865 मे हाजीपुर मुजफ्फरपुर जिलाक अनुमंडल छल तथा 13 नवम्बर 1972 कें वैशाली अलग जिला बनायल गेल। तिरहुत प्रमंडलक एकटा जिला। जिला मुख्यालय हाजीपुर मे। हाजीपुर शहर बंगालक राजा हाजी इलियास (1345-1358) बनाओल। तीन अनुमंडल-हाजीपुर, महुआ ओ महनार अछि। कुल प्रखंड 16 एवं 284 पंचायत। राघोपुर मे 20 पंचायत, बिदुपुर मे 24,

वैशाली मे 16, महुआ मे 23, हाजीपुर मे 25, राजापाकर मे 13, महनार मे 13, पातेपुर मे 32, गोरौल मे 16, जन्दाहा मे 23, सहदेई बुजुर्ग मे 10, लालगंज मे 21, भगवानपुर मे 20, चेहराकला मे 12, बेलसर मे 9 तथा देसरी मे 7 पंचायत छैक। जिलाक कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 2036 वर्ग कि. मी. अछि। एहि जिलाक उत्तर मे मुजफ्फरपुर जिला, पूब मे समस्तीपुर, पश्चिम मे सारण तथा दक्षिण मे गंगा नदी अछि। जिलाक प्रमुख नदी गंगा ओ गंडक। कुल पोखरिक संख्या 1105, जाहि मे सरकारी पोखरिक संग 667 निजी अछि। चौर 13,500 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे अछि। समुद्रतल स' सामान्य उंचाइ 75 मी. स' कम छैक।

प्राकृतिक वातावरणक मुख्य तत्व माटि एतयक मूलभूत संसाधन। वाहित माटि अछि। गंडक ओ गंगा नदी द्वारा लायल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल। नवीन जलोढ़ माटि पाओल जाइछ। माटि उपजाऊ अछि । बाढ़ि ओ जलाप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि नरम रहैछ । बालु आ गादक सम्मिश्रण माटि मे रहैत छैक। उत्तम जलसंचार पाओल जाइछ। बांगड़ माटि, जाहि मे 30 प्रतिशत स' अधिक मात्रा मे चून पाओल जाइत छैक। कुल कृषियोग्य भूमिक 95 प्रतिशत मे खेती कयल जाइत अछि। माटि जांचक एक प्रयोगशाला सम्प्रति मृतप्राय छैक।

ई प्रधानतः कृषि क्षेत्र अछि तें प्राकृतिक वनस्पति कृषि कार्यक लेल साफ कय देल गेल छैक। रेल मार्ग, सड़क विकास, औद्योगिक विकास, भवन निर्माण, कृषि प्रसार तथा अवैध कटाइक कारणें वन-क्षेत्रक अतिक्रमण भेल छैक। एहि स' भूमि-क्षरण ओ पर्यावरण असंतुलनक समस्या बढ़ि गेल अछि। सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी ओ वनरोपण वन-रक्षणक दिशा मे उत्तम प्रयास भेल अछि। एहि जिला मे मात्र 50.70 कि.मी. क्षेत्र मे वन अछि, जे मात्र 2.49 प्रतिशत।

समशीतोष्ण कटिबंध स्थित अंचल। जलवायु उपोष्ण एवं आर्द्र। ग्रीष्म ऋतु मार्च मास मे प्रारम्भ ओ सामान्यतः 15 जून तक। निरन्तर, बढ़ैत तापमान, निरन्तर कम होइत वायु भार, अल्प आर्द्रता ऊंच तापमान ओ शुष्क वायु एहि ऋतुक विशेषता। मध्य जून स' मध्य अक्टूबर धरि वर्षा ऋतु। दक्षिण-पश्चिम मानसून स' वर्षा। जुलाइ ओ अगस्त मास मे सर्वाधिक वर्षा। 1100-1300 मि.मी. वर्षा होइछ। फरवरी-मार्चक वर्षा स' रबी फसल कें हानि होइत छैक।

वर्ष 2001 मे जिलाक जनसंख्या 27,12,389 आंकल गेल जे वर्ष 1991क जनगणना मे 21,46,065 छल। अर्थात् एहि अवधि मे 26.39 प्रतिशत वृद्धि भेल। पुरुषक संख्या 14,12,276 ओ महिलाक संख्या 13,00,113 अछि। जनसंख्याक घनत्व 1332 छैक। कुल साक्षरता 51.63 प्रतिशत जाहि मे पुरुष साक्षरता 64.00 तथा महिला साक्षरता 38.14 प्रतिशत। प्रति एक हजार पुरुष पर 921 महिला छथि। आबादीक घनत्वक दृष्टि स' वैशाली

जिला दोसर स्थान पर ओ साक्षरताक दृष्टि स' प्रथम स्थान पर सम्पूर्ण मिथिला मे अछि।

अदौकाल स' मनुष्य ओतहि बसैत छथि जतय सुगमतापूर्वक जल उपलब्ध होइछ। हुनक आवास जलक उपलब्धि द्वारा नियंत्रित होइत आयल अछि। जल मनुष्यक प्राथमिक आवश्यकता मे प्रधान अछि। पेयजल, घरेलू काज, सिंचाइ, विद्युत उत्पादन, उद्योग आदि मे व्यवहारक हेतु जल अत्यावश्यक। संगहि मत्स्य पालन, नौकायन, बागवानी एवं मनोरंजनक लेल जल व्यवहृत होइछ। एहि जिला मे सिंचाइक हेतु जलक सर्वाधिक आवश्यकता। गंगा, गंडक ओ पोखरि स' प्रचुर जलक आपूर्ति होइछ। भूमि जल पर्याप्त अछि। गंडक नदी नेपालक सीमा स' गंगाक संगम धरि 277 कि.मी. बहैत सोनपुर लग कोन्हरा घाट मे गंगा मे विलीन भ' जाइछ। मुख्य पश्चिमी नहरि स' एहि जिला मे सिंचाइ होइत छैक। कुल सिंचित क्षेत्र 528.13 वर्ग कि.मी. मे अछि जे कुल भौगोलिक क्षेत्रफलक 25.93 प्रतिशत मात्र। भूमि उपजाऊ अछि। यदि कृषि भूमि मे सिंचाइक पूर्ण व्यवस्था कय देल जाय तं ई अंचल धन-धान्य स' परिपूर्ण भ' जायत। नाबार्ड द्वारा एहि जिला मे 8000 ट्यूबवेलक मंजूरी भेल। प्रत्येक प्रखंड मे 500 तथा प्रति ट्यूबवेल 26,000 रुपया लागत स' 31 मार्च 2002 धरि 1800 लगबाक लक्ष्य छल।

वर्ष 2003क बाढ़ि स' ई जिला क्षतिग्रस्त भेल। 11 सितम्बर 2003 कें गंगाक पानि महनार-मोहिउद्दीननगर मे 3 फुट बहय लागल। 20 सितम्बर 2003 धरि एहि जिलाक राघोपुर, महनार, सहदेई बुजुर्ग, हाजीपुर एवं बिदुपुर प्रखंडक 4 लाख लोक बाढ़ि स' प्रभावित भेल छलाह। राघोपुर मे 935, महनार मे 300 एवं सहदेई बुजुर्ग मे 130 मकान बाढ़िक कटाव स' क्षतिग्रस्त भेल। 356.80 लाख रुपयाक फसिल क्षतिग्रस्त भेल। गंगा-गंडकक बाढ़िक पानि घटल मुदा 1975क बाद एहि वर्षक बाढ़ि लोक कें तबाह कय देलक।

कृषि उत्पादन मे वृद्धि, ग्रामीण क्षेत्र मे रोजगार एवं आयक अवसर मे वृद्धि करब तथा आत्मनिर्भरता प्राप्त करबाक लेल कृषिक आधुनिकीकरण परमावश्यक अछि। धान प्रधान फसिल। मानसूनी वर्षा एवं गंडक नहरिक सिंचाइ स' धान सर्वत्र उपजाओल जाइछ। धान मे प्रधान अगहनी अछि जे नवम्बर-दिसम्बर मे काटल जाइछ। भदै धान सेहो होइछ। क्षेत्रक 12 प्रतिशत भूमि मे धानक रोपनी होइत छैक। 35 प्रतिशत धान क्षेत्र सिंचित अछि। हरितक्रान्तिक सर्वाधिक प्रभाव गहूंमक खेती पर परल छैक। मकई कृषियोग्य भूमिक 8.5 प्रतिशत क्षेत्र मे कयल जाइछ। मड़ुआ एवं जौ सेहो उपजाओल जाइत छैक। दलहन गंगाक दियर मे, कुसियार वाणिज्यिक फसिल, मिरचाई ओ मसाला गंडक नदीक ऊंच क्षेत्र मे, फल मे केरा, लताम ओ आम उपजाओल जाइत अछि। जिला मे पानक खेती मे विकास भेल छैक। केरा अनुसंधान केन्द्र राजेन्द्र कृषि विश्वविद्यालयक अधीन कार्यरत अछि। 80

प्रकारक उन्नत केराक बीज लगाओल जाइछ। जनदाहा ओ ओकर पार्श्ववर्ती गाम मे लतामक खेती पैघ स्तर पर भ' रहल छैक। राजापाकर प्रखंडक नारायणपुर गाम मे गुलाबक खेती व्यावसायिक रूप मे कयल जा रहल अछि। हाजीपुर मे 50 लाख लागत स' सीड प्रोसेसिंग प्लांट लगाओल गेल छल जे 10 वर्ष स' बन्द छैक।

उद्योग कें विकसित कयने बिना जिलाक आर्थिक विकास पछुआयले रहत। गोरौल मे एकटा चीनी मिल अछि। एहि मिल कें सारणक शीतलपुर स' 1952 मे स्थानान्तरित कयल गेल। 10 लाख रुपयाक पूंजी लागल अछि आ कुसियार पेरबाक क्षमता 8,50,500 मन। मिल रूग्ण भ' गेल। 1974-75 मे सरकार बिहार स्टेट सुगर निगमक अधीन एकरा कयलक। निगम स्वयं रूग्ण भ' गेल। मिल बन्द परल अछि। महनार मे दूटा तमाकूक चूर्ण बनयबाक मिल छैक। पीनी सेहो बनाओल जाइत छैक। हाजीपुर औद्योगिक प्रांगण मे बिहार राज्य फ्रुट्स ओ वेजिटेबल्स निगम 1.83 करोड़ रुपयाक लागत स' एहि कारखानाक निर्माण सरकारी क्षेत्र मे 1984-85 मे कयलक। 1986-87 मे 50 लाख रुपयाक भोज्य सामग्री निर्यात कयल गेल छल। रूस ओ भूटान माल पठाओल जाइत छल। 'रसवन्ती' नाम स' फलक रस बाजार मे बिकाइत छल। चारि साल धरि काज कयलाक बाद बन्द भ' गेल। एहि प्रांगण मे 525 एकड़ भूमि मे केन्द्रीय प्लास्टिक इंजीनियरिंग ओ टेक्नोलाजी इंस्टीच्यूट दिसम्बर 2002 मे खोलल गेल। एहि मे बिहार राज्य वस्त्र निगमक अधीन आधुनिक रेडीमेड गार्मेन्ट्स प्रोजेक्ट कार्यरत छल, जे एखन बन्द परल अछि। 'इंडस्ट्रीयल पार्क'क हेतु राज्य सरकार 2002 मे हाजीपुर मे 100 एकड़ भूमि अधिगृहीत कयलक। ई 14.92 करोड़ रुपयाक लागत स' बनत। केन्द्र सरकार 75 प्रतिशत ओ राज्य सरकार 25 प्रतिशत योगदान करत। एहि मे केन्द्र सरकार 5 करोड़ ओ राज्य सरकार 4 करोड़ रुपया लगा चुकल अछि। एतय स' माल निर्यात कयल जायत। हाजीपुर औद्योगिक प्रांगण मे कतेको उद्योग निजी क्षेत्र मे लगाओल गेल। अधिकांश रूग्ण भ' बन्द भ' गेल। राज्य सरकार एकटा अंग्रेजी दवाइक कारखाना लगा रहल छल, लीज पर देलक, तथापि बन्द अछि। 'होरिहरपुर केला अनुसंधान केन्द्र' मे केराक थम्ब स' ताग बनयबाक काज विकसित कयल गेल छैक। प्रतिदिन 20 के. जी. रस्सी बनायल जाइत छैक। एक मशीनक लागत मात्र 50,000/- अछि आ तीनटा यूनिट कार्यरित अछि। जर्दाक एक कारखाना सेहो कार्यरत अछि। जिला मे वर्ष 2000 धरि 5589 लघु औद्योगिक इकाइ निबंधित छल। अधिकांश बन्द अछि। 1993 मे गरीबी दूर करबाक प्रयासक क्रम मे जवाहर रोजगार योजनाक द्वितीय चरण मे एहि जिलाक मिरजानगर गाम मे मधु उत्पादनक कार्यक्रम चलाओल गेल। मधु विश्व बाजार मे प्रवेश कयलक तथा सर्वप्रथम जनवरी 1998 मे 22 लाख रुपयाक 40 मेट्रिक टन मधु

जर्मनीक हैम्बर्ग पठाओल गेल। मधु उद्योग एहि क्षेत्र मे पूर्ण विकसित अछि। खाद्य प्रसंस्करण, मत्स्य, कृषि आधारित उद्योग कें विकसित करबाक उपाय कयल जाय। लहठी-चूड़ीक निर्माण मे ई जिला सर्वोत्तम काज करने अछि। कम स' कम 50,000 रुपयाक लागत स' 8-10 हजार मासिक आय संभव छैक। 1977 स' बाग दुल्हनक नाज लहठी केन्द्र उत्तम काज करने अछि। हाजीपुर औद्योगिक प्रांगण 262.15 एकड़ मे पसरल अछि तथा अइठाम 127 औद्योगिक इकाइ अछि। 1975 मे ई प्रांगण चालू कयल गेल छल। सम्प्रति मुर्दघट्टी बनल छैक।

कांटी मुजफ्फरपुरक 220 मेगावाट ताप विद्युत केन्द्र स' एहि जिला मे बिजली आपूर्तिक प्रचुर संभावना छल, मुदा स्थिति निराशाजनक अछि। 72.6 करोड़ रुपयाक लागत स' बिजली बोर्डक तिरहुत इलेक्ट्रिक बोर्ड दूटा मेगा प्रोजेक्ट तैयार कय रहल अछि। प्रथम छल जे वैशालीक 2600 गाम ओ मुजफ्फरपुर जिलाक विद्युतीकरण होयत जे आब 4000 गाम कयल गेल छैक। सम्प्रेषणक नवीन व्यवस्था सेहो भ' रहल छैक।

सड़क यातायात दयनीय स्थिति मे अछि एहि जिला मे। हाजीपुर-मुजफ्फरपुर राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 77, जे 17टा जिलाक संग नेपाल स' जोरैत छैक, खराब अवस्था मे छैक। 1999 मे एहि पथ कें राष्ट्रीय राजमार्ग घोषित कयल गेल। एहि सड़कक 25म ओ 42 स' 45 कि. मी. क बीच सड़क जर्जर भ' गेल छैक। 53 कि.मी. पर स्थित पुल एखन धरि ठीक नहि कयल गेल छैक। केन्द्रीय सरकार राजमार्ग विकासक हेतु 385.55 लाख रुपया तथा अनुरक्षण ओ मरम्मतिक लेल 1643.15 लाख रुपया स्वीकृत कयने अछि। सड़क निधि स' 1506 लाख रुपया दुनू पुलक हेतु स्वीकृत ओ अनुमोदित सेहो कयने अछि। एहि मार्ग कें चारि लेन मे बदलबाक परियोजना रिपोर्ट बनाओल गेल छैक। हाजीपुर-महनार पथक शेष भाग स' चेचर धरि 8 कि.मी. चौड़ीकरण नहि कयल गेल छैक, जखन कि यैह मार्ग एन.एच. 19कें एन.एच. 28 स' जोड़ैत छैक। हाजीपुर-छपरा मुख्य राष्ट्रीय उच्च पथक स्थिति दयनीय छैक। एन.एच. 103, जे हाजीपुर वाया जनदाहा समस्तीपुर एन.एच. स' मिलैत छैक, जर्जर छैक। हाजीपुर-महनार तथा हाजीपुर-समस्तीपुर वाया महुआ काफी महत्वपूर्ण सड़क मार्ग अछि, जकर रखरखाव अत्यन्त खराब छैक। हाजीपुर-जनदाहा, हाजीपुर-महनार, महुआ-मुजफ्फरपुर, महुआ-ताजपुर, जनदाहा-महुआ, जनदाहा-महनार, महनार-मोहद्दीनगर, समस्तीपुर-जनदाहा स' मुसरीघरारी, जनदाहा पटोरी समेत कतेको मुख्य सड़क बदहाल स्थिति मे। प्रतिवर्ष मरम्मतिक नाम पर राज्य सरकार करोड़ो रुपया खर्च करैछ तथापि ढाकक वैह तीन पात। प्रधानमंत्री सड़क योजना मे काज लागल छल -

हाजीपुर प्रखंड	2.49 कि.मी.	21,26,400 रुपया
लालगंज	2.95 कि.मी.	56,82,900 रुपया
भगवानपुर	1.50 कि.मी.	32,43,000 रुपया
वैशाली	2.95 कि.मी.	64,34,100 रुपया
बेलसर	2.68 कि.मी.	59,99,100 रुपया
गोरौल	2.95 कि.मी.	66,87,800 रुपया

हाजीपुर छोटी रेल लाइनक एकटा पुरान स्टेशन छल। बड़ी लाइनक आब गाड़ी चलैत अछि। जम्मूतवइ गुवाहाटी लोहित एक्सप्रेस, दिल्ली गुवाहाटी अवध आसाम एक्सप्रेस, दिल्ली मुजफ्फरपुर सद्भावना एक्सप्रेस, काठगोदाम हावड़ा एक्सप्रेस, न्यू दिल्ली बरौनी वैशाली एक्सप्रेस, न्यू दिल्ली दरभंगा स्वतंत्रता सेनानी एक्सप्रेस, दिल्ली दरभंगा शहीद एक्सप्रेस, दिल्ली दरभंगा सरयुग यमुना एक्सप्रेस, कुर्ला मुजफ्फरपुर एक्सप्रेस, कुर्ला दरभंगा एक्सप्रेस, गोरखपुर हावड़ा मौर्य एक्सप्रेस, गोरखपुर हावड़ा पूर्वांचल एक्सप्रेस, गोरखपुर कटिहार टाटा एक्सप्रेस ट्रेनक संचालन भ' रहल छैक। वर्ष 1977 मे हाजीपुर स' समस्तीपुर वाया महुआ, पातेपुर प्रखंड एवं ताजपुर प्रखंडक सर्वे भ' चुकल छल। एहि स' महुआ अनुमंडल, पातेपुर प्रखंड, जे रेलसेवा स' नहि जुरल अछि, जुरि जायत। 171 कि.मी. लम्बा हाजीपुर-सुगौली रेल लाइनक 324.66 करोड़ रुपयाक अनुमानित लागत स' काज शुरू कय देल गेल छैक। एहि स' वैशाली, साहेबगंज तथा पूर्वी चम्पारण जिला लाभान्वित होयत। गंगा पर रेलपुल योजना अनुमानतः 2006 धरि पूरा भ' जायत, जे दीघाघाट कें सोनपुर स' जोड़त। 183 करोड़ रुपया यूपी ब्रिज निगम कें देल जा चुकल अछि। यैह निगम एकर निर्माण कय रहल अछि। उत्तर बिहार कें दक्षिण बिहार स' जोरल जा रहल अछि। कुल लागत 650 करोड़ रुपया अछि। पूर्व मध्य रेलवेक हाजीपुर मुख्यालय बनि गेला स' एहि क्षेत्र कें कतेको तरहक लाभ होयत।

पर्यटन उद्योगक असीम संभावना छैक। प्राचीन सभ्यता, ऐतिहासिक धरोहर, खंडहर, तीर्थस्थल एहि उद्योगक लेल उपयुक्त स्थल।

वासोकुंड : वैशालीगढ़ जतय भगवान महावीरक जन्म भेल छल। 24म तीर्थंकर कुण्डलपुरक राजपरिवार मे जन्म। माता त्रिशाला वैशाली नरेश महाराज चेटकक पुत्री। माता-पिता तेइसम तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथक अनुयायी। भगवान महावीर अढ़ाई हजार वर्ष पूर्व जाहि अहिंसा, अपरिग्रह ओ अनेकान्तक माध्यम स' प्राणिमात्रक लेल जे सन्देश देने छलाह आ समाजक सुख-शांतिक मार्ग बतौने छलाह आइ ओहि समय स' अधिक प्रासंगिक अछि। केन्द्र सरकार 8 करोड़ रुपया वैशालीगढ़क विकास पर खर्च कयने अछि। एहि मे वैशाली मे विद्युत, सड़क, स्मारक, ध्यान केन्द्र, सभामंडप समेत भगवान महावीर स' जुरल सभ स्थलक विकास कयल गेल छैक। बारह फुट ऊंच भगवान महावीरक मूर्तिक स्थापना कयल गेल छैक।

वैशालीक गौरवमयी परम्पराक स्मृति मे एतय प्रतिवर्ष चैत मास मे रामनवमी स' चैत पूर्णिमा धरि वैशाली महोत्सवक आयोजन होइत छैक।

चेचर : वैशाली जिला मुख्यालय हाजीपुर स' 18 कि.मी. क दूरी पर स्थित पुरातात्विक एवं ऐतिहासिक धरोहर स' भरल चेचर गाम कें सड़क आ रेलमार्ग स' जोरबाक प्रयास भ' रहल छैक। चकसिकंदर स' 13 कि.मी. रेल ओ सड़क मार्गक निर्माण हेतैक। महनार पथ पर बिदुपुर प्रखंड अन्तर्गत गंगा नदीक कछेड़ मे स्थित अछि ई गाम। पुरातात्विक ऐतिहासिक सामग्री मे प्रमुख ताम्र युगक विश्वक सब स' लम्बा ऐरोहेड, हेलनक मूर्ति, खारोष्ठी-ब्राह्मी लिपि सहित माटिक मूर्ति तथा शाह आलम कालक सिक्का, सद्भावनाक प्रतीक संयुक्तचिह्न त्रिशूल एवं उर्दू शब्द अल्ला एक संग प्रदर्शित, वाल्मीकि रामायणक उर्दू अनुवाद अछि। सद्भावना एहन छल जे बगैर मजहबक भेदभाव रामायणक चौपाई उर्दूभाषी पढ़ैत छलाह।

अभिषेक पुष्करणी : एहि जिलाक गंगा-गंडकक संगम स्थल पर बनिया बसाढ़ गाम मे पुराण प्रसिद्ध गढ़ वैशाली अछि। वैशालीगढ़ हाजीपुर स' लगभग 40 कि.मी. उत्तर-पश्चिम मे अछि। एतय लालगंज होइत जयबाक एकमात्र साधन बस छैक। एहि गढ़क पश्चिम मे अभिषेक पुष्करिणी नामक एक पोखरि छैक। पुष्करिणीक कोनो दिस पोखरिक भीड़ नहि, समतल भूमि मात्र छैक। एहि प्राचीन नगरक स्थापना इक्ष्वाकुवंशी राजा विशाल अपन राजधानी बनयबाक लेल कयने छलाह। एहि पोखरि कें खुनला स' प्राप्त माटिक उपयोग गढ़क निर्माण मे भेल। भगवान गौतम बुद्धक जीवनकाल मे उत्तर भारतक सोलह जनपद मे एक वैशाली जनपद सेहो छल। पुष्करिणी चौदह सय फीट नाम ओ सात सय फीट चौड़ा अछि आ लगभग पचीस फीट गंहीर अछि। सात घाट-तीन उत्तर दिस-तीन दक्षिण दिस तथा एक पश्चिम दिस। पूब दिस घाट नहि अछि। 1995 मे एकरा चारूकात जमीन भरिकय पक्की सड़क बनाओल गेल। एकर दक्षिण-पश्चिम कोन पर विश्वक सभ स' ऊंच नवनिर्मित शांति-स्तूप अछि जे जापान बौद्ध संघ द्वारा बनबाओल गेल छैक तथा स्थानीय खनन स' प्राप्त पुरातात्विक अवशेषक संरक्षण लेत उत्तरी तट पर संग्रहालय अछि। पुराण प्रसिद्ध अभिषेक पुष्करिणी पवित्र स्थान अछि। कहल जाइछ जे भगवान राम विश्वामित्रक संग बक्सर स' जनकपुर जाइत काल पुष्करिणीक घाट पर विश्राम कयने छलाह तथा तत्कालीन इक्ष्वाकुवंशीय कीर्तिशाली धर्मात्मा राजा सुमतिक आतिथ्य स्वीकार कयने छलाह। बौद्ध धर्म स्वीकार करबाक पूर्व वैशालीक विख्यात सुन्दरी वैभव सम्पन्न नगरबधु आम्रपाली तथागत स' धर्म दीक्षा आ शरणागतिक लेल याचना कयने छलीह। अनुमति भेटला पर आकर्षक केश कटवाय एहि पुष्करिणी मे अन्तिम स्नान कएने छलीह। नौकायण एवं आइयो अभिषेक पुष्करिणी अपन गरिमा अक्षुण रखने अछि।

मनोरम आधुनिक साज-सज्जाक व्यवस्था स' पर्यटन उद्योगक विकास कयल जा सकैछ। मत्स्य पालन विहित नहि अछि कारण ई भगवान महावीर स' प्रभावित अछि।

वैशालीक लिच्छवी स्तम्भ : राजा विशालक गढ़ स' लगभग दू मील पश्चिमोत्तर कोल्हुआ गाम मे भूरा रंगक एकहि पाथरक बनल, चमकदार पालिस कयल एक स्तम्भ लगभग 352 टन वजनक अवस्थित छैक। स्तम्भक शीर्ष भाग पर उत्तराभिमुख एक सिंह बैसल छैक तथा मेघलाक ऊपर विकसित कमल। डा. कनिंगहम वर्ष 1861मे एकर खनन करौने छलाह। स्तम्भ पानिक सतह स' लगभग 45 फीट ऊंच धरती पर एकर व्यास 49 ईंच तथा ऊपरक व्यास 38.7 ईंच। पानिक सतह स' 14 फुट नीचा खनन कयला पर प्रस्तरक आधार नहि पायल गेल छल। भगवान बुद्ध एतय पांच बेर आयल छलाह तथा बीसम वर्षावास व्यतीत कयने छलाह। अशोकक पूर्व निर्मित ई स्तम्भ अछि। ई सिंह-स्तम्भ लिच्छवी द्वारा भगवान बुद्धक भिक्षा-पात्रक दानक स्मृति मे स्थापित मानल जाइछ। बुद्ध अन्तिम बेर जाइत काल अपन पवित्र भिक्षा-पात्र एतहि दय कें चल गेलाह। लगभग दू सहस्र वर्ष स' अधिक प्राकृतिक प्रकोपक सामना करैत अद्यावधि स्तम्भ सुरक्षित अछि।

■



पश्चिमी चम्पारण

महर्षि वाल्मीकिक तपोभूमि, महात्मा गांधीक कर्मभूमि सदानीरा सप्तगंडकी स' सिंचित सोमेश्वर पहाड़क कछेड़ ओ भारत-नेपालक सीमा पर अवस्थित जनपद पश्चिमी चम्पारणक नाम स' जानल जाइछ। ई जिला अपन भौगोलिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं जनजातीय दृष्टि स' मिथिला मे अनुपम अछि। भारत-नेपाल सीमा पर स्थित हेबाक कारणें सामरिक दृष्टि स' अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। सोमनाथक पहाड़ी शृंखला ओ गहन वन स' भरल-पुरल अछि। सघन जंगल तथा जनजातीय आबादीक संग कतेको परम्परा एतय संरक्षित अछि। एहि जिलाक उत्तर मे नेपाल, दक्षिण मे गोपालगंज-पूर्वी चम्पारण, पूब मे नेपाल-पूर्वी चम्पारण ओ पश्चिम मे उत्तर प्रदेश अछि। तिरहुत प्रमंडलक 1 दिसम्बर 1971 स' एकटा जिला अछि। जिला मुख्यालय अछि बेतिया। तीन अनुमंडल-बेतिया, बगहा ओ नरकटियागंज। 18 प्रखंड मे कुल 319 पंचायत। मझौलिया प्रखंड मे 29 पंचायत, चनपटिया मे 24, नौतन मे 20, बेतिया मे 7, योगापट्टी 20, बैरिया मे 20, नरकटियागंज मे 27, सिकटा मे 16, गौनाहा मे 18, लौरिया मे 21, मैनाटांड़ मे 16, बगहा-2 मे 25, बगहा-1 मे 24, पिपरासी मे 7, मधुबन मे 10, भितहां मे 10, रामनगर मे 18, ओ ठकराहां प्रखंड मे 7 पंचायत। गंडक प्रमुख नदी अछि। कुल क्षेत्रफल 5228 वर्ग कि.मी.। कुल वन क्षेत्र 917.45 कि.मी.। गंडक बेसिन 6752 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे अछि। कुल 2913 पोखरि जाहि मे निजी पोखरि 1100 अछि। 1651 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे मोइन आ 882 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे चौर छैक। समुद्र तल स' सामान्य उंचाइ 75 मी. स' कम अछि।

गंडक नदीक धार परिवर्तन स' 10,000 एकड़ स' बेसी भूमि नेपालक कब्जा मे चलि गेल अछि। संगहि करोड़ोक वनस्पति। भारत सरकार एहि भूभाग पर कब्जा करबाक लेल सक्रिय नहि अछि।

सिवालिक वन क्षेत्रक माटि महत्वपूर्ण अछि, जे सोमेश्वर पहाड़क नदीय भाग मे गंडक घाटी मे पाओल जाइछ। एहि मे 29 प्रतिशत मृतिका छैक। माटि नदी द्वारा लायल गेल अवसादक निक्षेप स' बनल। बाढ़ि ओ जलाप्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि अत्यधिक नम रहैछ। माटि मे बालू ओ गादक प्रचुर सम्मिश्रण पाओल जाइछ। नदीक तट ओ दिअर मे प्रतिवर्ष जलाप्लावन ओ बालूक संग सूक्ष्म गादक निक्षेप होइछ। उत्तम जलसंचार होइत छैक। माटि उपजाऊ अछि। अधिकांश भूमि दू फसली। 84.6 प्रतिशत भूमि कृषि क्षेत्र अछि।

प्रधानत: कृषि क्षेत्र रहलाक करणें प्राकृतिक वनस्पति कें कृषि कार्यक लेल साफ क' देल गेल छैक। कृषि भूमि मे फसिल उपजाओल जाइत अछि। एहि जिला मे सोमेश्वर ओ दूनक पहाड़ीक तराइ मे आर्द्र पर्णपाती वन पाओल जाइछ। कुल वन क्षेत्र एहि जिला मे 919.45 कि.मी. अछि जे मात्र 17.59 प्रतिशत कुल भौगोलिक क्षेत्रक अछि। एतय प्रधान वृक्ष सखुआ पाओल जाइछ जकर उंचाइ 27 मीटर धरि होइछ। सीसो, तून, खैर, सिमड़, सबई घास, नरकट ओ बांस पाओल जाइछ। बालू स' भरल नदीक मार्ग मे उद्यान प्रकारक वन पाओल जाइत छैक। कथ, रेशम आ वनौषधि सेहो पाओल जाइछ। एहि जिला मे वृक्ष स्वत: सुखा रहल छैक। स्थायी चरागाह ओ अन्य गोचर भूमि सेहो छैक।

सफल कृषिक लेल अनुकूल मौसम आवश्यक अछि। फसिल कें आवश्यकतानुसार वर्षा, तापमान ओ रौदक आवश्यकता छैक। एतय लगभग 1600 मि.मी. वर्षा होइछ। वर्षाक परिवर्तिता ओ सिंचाइ मे सोझ संबंध छैक। अल्पकाल मे सीमित क्षेत्र मे भीषण वर्षा भेला पर वर्षाक जल नदी-वाहिका मे अंटि नहि पबैछ। अत: नदी मे उफान ओ बाढ़ि आबि जाइछ। गंडक नदीक जलग्रहण क्षेत्र मे निरन्तर कतेको दिन धरि वर्षा भेला पर महाप्रलयक दृश्य उत्पन्न होइछ।

वर्ष 2001क जनगणना मे एहि जिलाक जनसंख्या 30,43,044 आंकल गेल जे दस वर्ष पूर्व 1991क जनगणना मे 23,33,066 छल। अर्थात् 30.43 प्रतिशत जिलाक आबादी मे 1991क तुलना मे वृद्धि भेल, जखन कि वृद्धि बिहारक जनसंख्या मे 28.43 प्रतिशत ओ भारतक जनसंख्या मे 21.34 प्रतिशत भेल छैक। जनसंख्याक घनत्व एहि जिला मे 582, बिहार मे 880 ओ भारत मे अछि मात्र 324। प्रति 1000 पुरुष पर महिलाक संख्या 923 छैक। कुल पुरुषक संख्या 16,00,853 ओ महिला छथि 14,42,191। कुल साक्षरता 39.63 जे भारत मे अछि 65.38। कुल पुरुष साक्षरता 51.91

ओ महिला साक्षरता 25.85 प्रतिशत एहि जिला मे अछि।

1956 मे बड़का जमींदार ओ ओहि स' पूर्व छोटका जमींदारक जमींदारी समाप्त भ' गेल। 23 अगस्त 1984 कें लोकसभा मे बिहारक 1453 भूमि सुधार अधिनियम कें नवम सूची मे शामिल कए लेल गेल। मुदा भूमि सुधार अधिनियम कानूनक पोथीक शोभा बढ़बैत रहल। एखन धरि कोनो सुधार ओ भूमि व्यवस्था नहि भेल अछि। भूमि व्यवस्था स' अर्थ अछि ओहि व्यवस्था स' जकरा अनुसार भूमिक स्वामित्व, अधिकार एवं दायित्व निर्धारित कयल जाय। भूमि कें जोतयबलाक स्वामित्व, उचित मात्रा मे लगानक भुगतान, भूमिक हस्तांतरणक स्वतंत्र व्यवस्था एवं जोतक सीमाक निर्धारण एक आदर्श भूमि व्यवस्थाक गुण मानल जाइत छैक। भूमि हदबंदी अधिनियमक पालन एहि जिला मे नहि भेल छैक। एखनो हजारो एकड़ भूमिक मालिक सभ छथि। एहि मे शिकारपुर, मैनाटांड़ प्रखंडक बिउटहां गामक मार्कंडेय पांडेय, सोठीक सीताराम रजगरिया ओ अन्य।

एहि जिला मे उग्रवादी गतिविधिक पाछू ई सामाजिक-आर्थिक विषमता, निर्धनता, पिछड़ापन, बेरोजगारीक समस्या सेहो अछि। भू-हदबंदी अधिनियमक अन्तर्गत प्राप्त अधिशेष भूमि कें भूमिहीनक बीच वर्ष 2002-03 मे 2701.56 एकड़ भूमिक पर्चाक वितरण कयल गेल छल। यदि अधिशेष भूमिक सही आवंटन भूमिहीनक बीच भ' जाय त' बेकारी ओ उग्रवादी समस्या स' निबटल जा सकैछ।

एहि जिलाक प्रमुख नदी गंडक हिमालयक केन्द्रीय भाग स' पश्चिम मे धौला गिरीक चोटी ओ पूब मे मन्ना ओ रसुआगढ़ीक चोटी स' 14612 वर्गमील सम्प्रसार क्षेत्रक संग निसृत होइछ। नेपाल मे नारायणी ओ शालग्रामी ओ सप्तगंडकी सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग द' क' मैदान मे प्रवेश करैछ जे त्रिवेणी नाम स' जानल जाइछ। पश्चिम चम्पारणक वाल्मीकिनगर (भैंसालोटन) मे मिथिला मे प्रवेश। नेपालक सीमा स' गंगाक संगम धरि एहि नदीक लम्बाइ 277 कि.मी. अछि। नेपाल, उत्तर प्रदेश, गोपालगंज एवं मिथिलांचल मे बहैत सोनपुर लग कोन्हरा घाट मे ई गंगा मे विलीन भ' जाइछ। गंडक घाटी मे मही, गंडकी, हाता, झाझा, तून, झरही, तेल, सोन बाया केहाने, जजुआरी, फरदो आदि छोट-पैघ 40 टा धार एहि नदी मे समाहित होइछ। सर्वप्रथम 1857 मे सुखाड़ राहतक हेतु एहि जिला मे गंडक नदी स' त्रिवेणी ओ ढाका नहरिक काज भेल छल। 4 मार्च 1964 क' तत्कालीन नेपाल नरेश वाल्मीकिनगर मे गंडक बराजक शिलान्यास कयलनि। पश्चिमी चम्पारण, पूर्वी चम्पारण, मुजफ्फरपुर, वैशाली, गोपालगंज, सीवान, सारण जिलाक 33.93 लाख एकड़ एवं नेपाल मे बारा, रौतहट, परसा ओ भैरवा जिलाक 1,56,000 एकड़ ओ उत्तर प्रदेश मे 11 लाख एकड़ भूमि मे पटौनीक लक्ष्य छल। संगहि सूरजपुरा (नेपाल) मे 15 मेगावाट क्षमताबला

एक विद्युत गृहक निर्माण पश्चिमी मुख्य नहरि पर निर्धारित छल। गंडक परियोजनाक अन्तर्गत बिहार मे 95 कि.मी. लम्बा दोन शाखा स' 68,296 एकड़, 165 कि.मी. लम्बा तिरहुत नहरि स' 16,95,000 एकड़ एवं 61 कि. मी. सारण मुख्य नहरि स' 14,08,000 एकड़ भूमि मे सिंचाइक प्रावधान भ' गेल छैक। पूर्वी गंडक नहर प्रणालीक पुनर्स्थापनक लेल 294 करोड़ रुपयाक मंजूरी केन्द्र सरकार द्वारा प्राप्त भेल 15 अगस्त 2003 कें। गांजत क्षमता 5.76 लाख हेक्टेयर मे स' वर्तमान मे मात्र 2.26 लाख हेक्टेयर भूमि कें लाभ होइछ। 3.50 लाख हेक्टेयर भूमि मे सिंचन क्षमताक पुनर्स्थापन होयत। सील्टक जमाव, नहरि बांधक क्षरण, नेपाल स' आबयबला बाढ़ि स' क्षति आदिक कारणें तिरहुत मुख्य नहरिक स्थिति दयनीय भ' गेल छैक। 21.38 करोड़ रुपयाक लागत स' सरकार प्रस्तावित सारण नहर प्रणालीक पुनर्स्थापन कार्यक्रम चालू कयलक अछि। एहि स' 89818 हेक्टेयर मे खरीफ तथा 36113 हेक्टेयर मे रबीक सिंचाइ मे वृद्धि होयत।

जनवरी 2003 मे राज्य सरकार 295 बाढ़ि निरोधक कार्यक्रम पर 75.13 करोड़ रुपया खर्च कयलक। एहि मे पश्चिमी चम्पारण मे 21 बाढ़ि निरोधक योजना पर 4.36 करोड़ रुपया खर्च कयलक। गंडक तटबंध 9 लाख कृषि भूमि कें बाढ़ि स' बचयबा मे सक्षम अछि। नदी जमीन स' 10-20 फुट ऊपर भ' चुकल छैक। जलाशयक बिना तटबंध बनल छैक। तटबंध बाढ़ि नहि रोकि पबैछ, मात्र पानिक फैलाव कें रोकैत छैक। 20 जून 2003 धरि बाढ़ि कहर मचा रहल छल। आब कहल जाइछ जे नेपाल क्षेत्र मे जखन रिजर्ववायर बनत तखनहि बाढ़ि स' छुटकारा भेटत। वाल्मीकिनगर स' चम्पारण धरि 53-56 मीलक बीच नगदाहां तटबंध कें रगड़ि कय बहैत गंडक मिश्रौलिया धरि अंग्रेजीक 'एस' अक्षर भ' गेल छैक। एहि मे मिश्रौलिया, पीपरा, बथना, पुरन्दरपुर, टिकुलिया, कोहरबा, बभनौली, भेलानारी, सलहा, चंडीस्थान, मुड़ा ओ पिपरहिया अछि। नदीक बांध टूटला पर परसौना, जलहा, बेलवा, सरोत्तर, धनगढहा ओ एन.एच. 28 कें पार करैत बाढ़िक पानि मुजफ्फरपुर धरि पहुंच जायत। लोक गोहारि करैत छल जे बांध एहि बेर सोमेश्वर नाथे बचौताह। मुदा एहि बेर समुद्र तट स' 226 फुट डेंजर लाइन नदीक जल नहि पार कयलक। डेंजर लाइन स' 8 फुट नींचे छल। 7 जुलाइ 2003 कें पटजिरवा डुमरिया बांध मे कटाव जारी छल। बांध स' गंडक नदीक दूरी लगभग एक फीट। लोक सुरक्षित स्थान पर पलायन क' गेल। वाल्मीकिनगर मे गंडक बराज पर पानिक दबाव बढ़ल छल। बैरिया प्रखंडक उत्तरी पटजिरवा पंचायत मे सैकड़ों घर बाढ़िक पानि स' कटि गेल छलैक। पीडी रिंग बांध मे कटाव भ' रहल छल। 25 जुलाइ 2003कें मिश्रौलिया तटबंधक बंडवारक गंडक नदीक पेट मे 11600 फीट मे तटबंधक कटाव भ' रहल छल। 12 अगस्त 2003 कें वाल्मीकिनगर बराज

स' 639750 क्यूसेक पानि छोड़ल गेल, जाहि स' गंडक नदीक जलस्तर खड्डा मे 97.3 मीटर पार कय गेल। ई खतराक निशान स' 103 से.मी. अधिक छल। फलस्वरूप, नरकटियागंज-रक्सौल रेलखंड पर परिचालन ठप्प छल तथा बाढ़िक पानि बगहा, सिकटा ओ नरकटियागंज मे घुसि गेल। बेतियाक बैरिया, सिकटा, मैनाटांड, नरकटियागंज, नौतन, मझौलिया, योगापट्टी तथा बगहाक 6 प्रखंड मे बाढ़िक तांडव जारी छल। बगहा अनुमंडलक पदाधिकारी निवास, आरक्षी अधीक्षक कार्यालय, आरक्षी सदन, गंडक कालोनी, प्रखंड संसाधन केन्द्र परिसर, प्रखंड बगहा-2 क सामने उपमंडल काराक सामने जलमग्न छल। नरकटियागंजक पनियारी, समइनिया, कटहा, हड़बोड़ा, बलोर, हरहा, ओरिया, करतहा आदि नदीक जलस्तर मे भयानक वृद्धि भेल। गढ़ी माईक पास तथा डुमरिया बांध मे दरार पड़ि गेल। 19 अगस्त 2003 कें नेपालक जलअधिग्रहण क्षेत्र मे भारी वर्षा ओ वाल्मीकिनगर बराज स' तीन लाख क्यूसेक जल छोड़ल गेला स' बाढ़िक स्थिति पुन: गम्भीर भ' गेल। बैरिया, नौतन, सिकटा, योगापट्टी प्रखंडक कतेको नदी खतराक निशान टपि गेल छल। बाढ़ि स' बर्बादीक अन्तहीन कथा अछि, तथापि प्रशासन स्थायी निदान एखन धरि नहि कयने अछि।

कृषि एहि जिलाक अर्थतंत्रक धूरी तथा आर्थिक विकास कृषिक विकास बिना संभव नहि। जिलाक आर्थिक विकास कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि द्वारा संभव। जिलाक सर्वप्रमुख फसिल अगहनी धान। बोरो धान सेहो उपजाओल जाइछ। धान क्षेत्रक मात्र 2 प्रतिशत भूमि मे। 12 प्रतिशत धान क्षेत्र मे भदै धान सेहो उपजाओल जाइछ। गंडकक दिअर मे मकई उपजैत अछि। हरित क्रान्तिक प्रभाव स' गहूमक खेती होइछ। कुसियारक उत्पादन मे ई जिला अग्रणी अछि। चूनयुक्त जलोढ़ माटि कुसियारक उत्पादनक हेतु श्रेयस्कर छैक। 30 प्रतिशत धरि माटि मे चूनक अंश छैक। जूटक खेतीक विस्तार सेहो एहि क्षेत्र मे भेल छैक। मिरचाई ओ मसालाक उत्पादन जलोढ़ माटिक कारणें होइछ।

औद्योगिक दृष्टि स' ई जिला पछुआयल अछि। चीनी उद्योगक विकास एहि जिला मे 1932 स' प्रारम्भ भेल। तखनहि एहि उद्योग कें संरक्षण देल गेल छल। मिल सभ पुरान भ' गेल अछि। निजी क्षेत्रक हरिनगर, नरकटियागंज, मझौलिया, बगहा मे काज बढ़िया होइछ। सभ मिलक आधुनिकीकरण नहि कयल गेलै। हरिनगर मिलक पेराइक क्षमता 5000 मे.टन छैक। सरकारी क्षेत्रक चनपटिया, लौरिया ओ सुगौली मिल रूग्ण भ' गेल छल। आधुनिकीकरण ओ विकासक काज चलि रहल छल। बिहार राज्य चीनी निगम स्वयं मरणासन्न अछि, तखन ओकर इकाइक दुर्दशा स्वाभाविकें। एहि मिल सभक आधुनिकीकरण स' कागज ओ अलकोहल उद्योगक निर्माण कयल जा सकैछ। कागजक एकटा कारखाना नार्थ बिहार

मिल्स लिमिटेडक बगहा मे 7.500 टी.पी.ए. कागज बनयबाक योजना छल। काज चलि रहल छल, मुदा सन्तोषजनक नहि अछि। धानक फसिल बढ़िया होइछ, किन्तु प्राचीन ढंगक चाउर मिल नरकटियागंज, भैरवगंज, चनपटिया ओ रामनगर मे कार्यरत छैक। मिलक आधुनिकीकरण ओ आधुनिक ढंगक चाउरक मिलक भविष्य उत्तम छैक। जिलाक सीमावर्ती क्षेत्र मे प्लाईवुड फैक्टरी अछि। प्लाइवुड ओ लकड़ी उद्योग कें विकसित करबाक योजनाक कार्यान्वयनक आवश्यक छैक। कृषि आधारित उद्योगक भविष्य व्यापक छैक। खाद्य प्रसंस्करण उद्योग आधुनिक ढंगक लगाओल जा सकैछ। लघु उद्योगक विकासक हेतु औद्योगिक प्रांगणक निर्माण भेल जे उत्तर बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकार मुजफ्फरपुरक अधीन कार्यरत छैक। लघु उद्योग योजनानुसार विकसित नहि भेल। अधिकांश सूती वस्त्रक उत्पादन हस्त या बिजली करघा द्वारा कयल जाइछ। आंचलिक वस्त्रक बढ़ैत लोकप्रियता ओ वस्त्रक डिजाइन मे सदैव नयापन स' हस्तकरघा द्वारा निर्मित वस्त्रक देश एवं विदेश मे बहुत मांग अछि। एकीकृत हस्तकरघा ग्राम विकास योजनाक अन्तर्गत जोरि देल गेल छैक। एहि योजनाक अन्तर्गत करघाविहीन बुनकर कें करघा, कार्यशालाक निर्माण ओ कार्यशील पूंजी उपलब्ध कयल जाइछ। अधिकांश असंगठित क्षेत्र मे काज भ' रहल छैक। एहि लघु उद्योग कें संगठित रूप देला स' लाभकारी होयत। लगभग 200 हस्तकरघा एहि जिला मे कार्यरत अछि। बेरोजगारी दूर करबाक हेतु कुटीर उद्योग कें विकसित कयल जा सकैछ। एहि जिलाक गंडक बेसिन मे कतिपय स्थान पर सोना पाओल जेबाक संकेत भेटल छैक। खनन कार्य शुरु कयल जायत ओ दू वर्षक अभ्यंतर सकारात्मक परिणामक आशा अछि। गंडक बेसिनक मनोर, सोन्हा ओ राहुआ नदीक रेत मे प्लेसर गोल्ड पाओल गेल छैक। जिलाक असंख्य जलस्रोत मे मत्स्य पालन उद्योगक विकास कयल जा सकैछ। पाथर उद्योग कें संगठित रूप मे नियंत्रित कयल जा सकैछ। भिखना ठोरी स' सम्प्रति पाथर नहि निकालल जा रहल अछि।

सुलभ, सस्त निर्भर योग्य ऊर्जाक उपलब्धि पर कोनो क्षेत्रक आर्थिक विकास निर्भर करैत अछि। एहि जिलाक भौगोलिक स्थिति जल विद्युत परियोजना लेल अनुकूल छैक। मुदा ऊर्जा शक्तिक घोर अभाव। 1996 मे 6600 लाख टाकाक लागत स' पांच मेगावाटक 3 जल विद्युत इकाइ बनल-पूर्वी गंडक, वाल्मीकिनगर पश्चिमी चम्पारण योजना, जे बिहार राज्य जल विद्युत निगमक अधीन कार्यरत अछि। विद्युत उत्पादन होइछ, किन्तु कतेको समस्या। यथा, पूर्वी गंडक नहर पावर चैनेलक 1260 मीटर लम्बाइ मे सिल्ट भरब तथा तिरहुत नहर बन्द भेला पर शक्तिगृह कें जलक अभाव तें विद्युत उत्पादन ठप्प अछि। एहि जिलाक दोसर परियोजना त्रिवेणी पश्चिमी चम्पारण मे 1.5 मेगावाट क्षमताक दू यूनिट 14 करोड़ रुपयाक

लागत स' निर्माणाधीन छैक। असैनिक निर्माण काज पूरा भ' गेल छैक। विद्युत उत्पादन नहि प्रारम्भ भेल छैक।

कोनो क्षेत्रक आर्थिक विकास मे यातायातक सुविधाक योगदान सेहो महत्वपूर्ण छैक। एहि सीमावर्ती जिला मे विभिन्न विभागक अधीन 1000 कि.मी. लम्बा सड़क अछि। एहि मे 130 कि.मी. लम्बा छपवा स' वाल्मीकिनगर राजकीय सड़क कें राष्ट्रीय राजपथ बनेबाक मांग पूरा नहि कलय गेल छैक। गंडक नदी पर बगहा-छितौनी सड़क-पुल विशेष लाभकर नहि भ' रहल अछि। बेतिया-अरेराजक मात्र 18 कि.मी. (भटियरवा धरि) राजकीय उच्च पथ एहि जिला मे पड़ैछ। पथ प्रमंडल बेतिया ओ रामनगरक अधीन 307 कि.मी. सड़क अस्तित्वहीन भ' गेल छैक। एहि वर्ष छपवा स' त्रिवेणी, बेतिया स' गोविन्दगंज तथा मझौलिया स' जगदीशपुर पथक नवीकरणक हेतु 1 करोड़ 44 लाख रुपया स्वीकृत कयल गेल मुदा काज नहि भेल छैक। ग्रामीण अभियंत्रण संगठनक अधीन कुल 450 कि.मी. लम्बा सड़क पैघ-पैघ खधिया मे परिवर्तित भ' गेल। नरकटियागंज स' गांधीस्मृति स' जुड़ल ऐतिहासिक भीतिहरवा या बेतिया स' वाल्मीकिनगर वा अन्य प्रखंड मुख्यालय जयबाक सड़क मार्ग बेहाल स्थिति मे। एक कि.मी.क यात्रा मे सैकड़ों हिचकोला। प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना कें सात पैकेज स' प्राप्त 16 करोड़ रुपया पाथरक अभाव मे यकथक परल। जिला परिषदक अधीन लगभग 200 कि.मी. लम्बा सड़क नवीकरणक रास्ता ताकि रहल छैक। सड़क-पुलक अभाव मे भयंकर दुर्गति छैक। एहि मे लौरिया प्रखंडक अन्तर्गत गोनौली एवं डूमराक बीच सिकरहना नदी पर पुल, रामनगर एवं बगहा प्रखंडक लाखोक आबादी टापू पर हक जिंदगीक संत्रास झेलैत, रामनगर-भैरोगंजक बीच भसान नदीक पुल दू दसक स' निर्माणाधीन, रामनगर-लौरिया प्रखंडक बीच सिकरहना पर कतौ पुल नहि छैक, जाहि स' सैकड़ोक आबादी विकास स' वंचित। यैह अछि 21म शताब्दी मे सरहदी जिलाक सड़कक स्थिति। गंडक जे मिथिला ओ उत्तर प्रदेश कें अलग कयने छलीह 8 जून, 2002 कें 896 मीटर लम्बा पुल बनाकय जोरि देल गेल छैक। बगहा स' छितौनी धरि। सड़क मार्ग द्वारा 100 कि.मी. दूरी कम भ' गेल छैक। एहि स' जनकपुर ओ अयोध्या नज़दीक भ' गेल छैक।

रेलमार्ग स' ई जिला जुरल अछि। बड़ी लाइनक गाड़ी दिल्ली-रक्सौल एक्सप्रेस स' जुरल अछि। मुजफ्फरपुर-रक्सौल कतेको गाड़ी अछि। छोटी लाइनक गाड़ी नरकटियागंज-जयनगर गंडक एक्सप्रेस द्वारा जोरल गेल अछि। रक्सौल स' बीरगंज (नेपाल) कें 5.4 कि.मी. रेल लाइन द्वारा जोरि देल गेल छैक। एहि मे भारत सरकार कें 170 मिलियन रुपया लागल छैक। नेपाल कें 16 मिलियन डालर माल आयात मे खर्चक सुविधा भ' गेल छैक।

बीस सूत्री कार्यक्रमक निर्धारित मापदंडक अन्तर्गत ई जिला 66.67

प्रतिशत अंक प्राप्त कय चारिम स्थान प्राप्त कयलक। एहि कोटिकरण मे 12 कार्यक्रम छल जाहि मे अधिशेष भूमिक वितरण, पेयजल समस्या, आर्थिक रूप स' कमजोर वर्ग कें मकान, ग्रामीण विद्युतीकरण, वृक्षारोपण, बायोगैस संयंत्र एवं अन्य छल। अत्यन्त पिछड़ल ओ निर्धनतम जिलाक पहचानक लेल केन्द्रीय सरकार एकटा कमेटी गठित कयने छल, जे देशक 100 जिलाक पहचान कयलक। एहि मे ई जिला सेहो एक निर्धनतम ओ पिछड़ल जिलाक कोटि मे आंकल गेल। ई कमेटी नवीन संरचना कें सृजित करब ओ पुरान संरचनाक रखरखाव पर विशेष जोर देलक, मुदा एहि दिशा मे कोनो काज नहि भेल।

पर्यटन उद्योगक असीम संभावना अछि एहि जनपद मे। एकर उत्तरी भाग मे एक छोट पहाड़ी पेटी अछि जे हिमालय पहाड़क शिवालिक श्रृंखलाक एक अंग अछि। एहि मे सोमेश्वर श्रृंखलाक 74 कि.मी. लम्बा भाग पश्चिमी त्रिवेणी नहरक शीर्ष भाग स' शुरु होइछ ओ पूब मे भिखनाठोरी दर्रा धरि जाइछ। एतयक किला एहि अंचलक प्रहरी सदृश। एहि श्रृंखलाक पश्चिमी छोर पर वाल्मीकिनगर लग गंडक बराज अछि। एहिठामक पहाड़ पर आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ऋषि अपन आश्रम मे निर्वासित सीता एवं हुनक दुनू पुत्र कें रखने छलाह। ई बड़ रमणीय स्थल अछि। पर्यटक अबैत छथि मुदा आधुनिक सुविधाक सर्वथा अभाव। तीनटा राष्ट्रीय उद्यान-(1) वाल्मीकिनगर राष्ट्रीय उद्यान- 335.60 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे 1989 मे गठित (2) वाल्मीकिनगर आश्रयणी-544.67 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे 1978 मे गठित आ (3) उदयपुर आश्रयणी- 8.87 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल मे 1978 मे गठित। बाघ मात्र एहिठामक जंगल मे अछि।

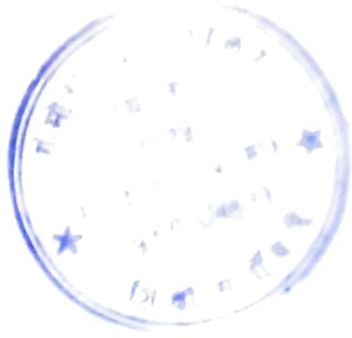
गांधी स्मृति स्थल : भीतिहरवा ऐतिहासिक स्थल। नरकटियागंज ओ अन्य स्थानक यात्रा कष्टकर। अविकसित स्थल।

बेतियाक सरैयामनि झील कें आधुनिक ढंग स' सजावट कयला स' आकर्षक पर्यटन स्थल होयत।

जिलाक पांच शहर कें विकसित करबाक योजना छैक। नरकटियागंज शहरी क्षेत्रक विकासक लेल एक करोड़ पचासी लाख रुपयाक परियोजना कें स्वीकृत भेटि चुकल छैक।

■

पूर्वी चम्पारण



जानकीक सीताकुंड, महात्मा बुद्धक भूमि, स्वतंत्रता संघर्ष मे अग्रणी अंचल पूर्वी चम्पारण जिला बूढ़ी गंडक नदीक जल स' सिंचित मिथिलाक पश्चिमी छोर पर स्थित नेपालक सीमा स' सटल भाग अछि। तिरहुत प्रमंडलक एक जिला एवं जिलाक मुख्यालय मोतिहारी मे अछि। किंवदन्ति अछि जे महाराज हरिसिंह देव मुहम्मद तुगलक बादशाह स' परेशान भ' नेपालक तराइ क्षेत्र मे गेला आ ओतय एक साधारण क्षत्रिय वा किरात कन्या स' उत्पन्न पुत्रक नाम मोती सिंह राखल ओ मोतिहारी शहर कें बसायल। 1 दिसम्बर 1971 स' स्वतंत्र जिला ओ एहि जिला मे 6 अनुमंडल-मोतिहारी सदर, अरेराज, सिकरहना, रक्सौल, पकरीदयाल ओ चकिया। 27 प्रखंड ओ 408 पंचायत अछि। मोतिहारी मे 18 पंचायत, सुगौली मे 16, रक्सौल मे 13, ढाका मे 23, घोड़ासहन मे 14, पताही मे 15, मधुबन मे 13, केशरिया मे 18, कल्याणपुर मे 24, चकिया मे 18, संग्रामपुर मे 14, हरसिद्धि मे 19, पहाड़पुर मे 16, अरेराज मे 14, आदापुर मे 17, रामगढ़वा मे 16, मेहसी मे 15, पकड़ीदयाल मे 11, चिरैया मे 23, छौड़ादानो मे 15, तुरकौलिया मे 16, पिपराकोठी मे 6, तेतरिया मे 9, कोटवा मे 16, फेन्हारा मे 6, बंजरिया मे 13 तथा बनकटवा मे 10 पंचायत अछि। एहि जिलाक उत्तर मे नेपाल, पूब मे शिवहर-सीतामढ़ी, दक्षिण मे मुजफ्फरपुर-सारण एवं पश्चिम मे गोपालगंज-पश्चिमी चम्पारण जिला अछि। कुल क्षेत्रफल 3968 वर्ग कि.मी. । प्रमुख नदी बूढ़ी गंडक। नदीक निक्षेप स' बनल भूमि। समुद्रतल स' सामान्य ऊंचाइ 100 मी.। नदीक जल समा

गेल छैक तें दलदल भूमि। 10,370 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल बूढ़ी गंडक बेसिन अछि। कुल 860 पोखरि जाहि मे सरकारी पोखरिक संख्या 519। मोइन 1651 हेक्टेयर क्षेत्र मे ओ 850 हेक्टेयर क्षेत्रफल मे चौर छैक।

बाढ़ि ओ जल प्लावनक कारणें वर्षा ऋतु मे माटि मे अत्यधिक नमी पाओल जाइछ। बांगड़ माटि अछि जाहि मे 30 प्रतिशत स' अधिक चून पाओल जाइछ। माटिक संग पाथर सेहो भेटैछ। अभिनव जलोढ़ माटि जे साधारणत: उपजाऊ होइछ। धानक बढ़िया फसिल होइत छैक। बूढ़ी गंडक घाटी मे नवीन जलोढ़ माटि पाओल जाइछ जे अत्यन्त उपजाऊ अछि। दू फसिला जमीन अछि। 84.6 प्रतिशत भूमि मे खेती होइछ। दक्षिण-पश्चिम मानसून स' एहि अंचल मे वर्षा होइछ। जुलाइ-अगस्त मे सर्वाधिक वर्षा। 1500 मि.मी.स' अधिक वर्षा होइछ एहि जिला मे। वर्षाक मात्रा, वितरण, विश्वसनीयता एवं परिवर्तिताक प्रत्यक्ष प्रभाव लोकक आर्थिक जीवन पर परैछ। वर्षाक परिवर्तिता तथा सिंचाइ मे सोझ संबंध छैक। वर्षा कम भेला पर सिंचाइ परमावश्यक। हिमालय मे भारी वर्षा, नदीक तल मे गाद, जलवाह-स्राव मे बाधा. नदी मार्ग मे परिवर्तन, सुरक्षा तटबंधक टूटब ओ अन्य बाढ़िक मुख्य क.रक अछि एहि जिला मे। बाढ़ि मानव जीवनक प्रत्येक पक्ष कें प्रभावित क'ैत अछि। प्रशासन एखन धरि बाढ़िक विभीषिका कें रोकि नहि सकल अछि।

वर्ष 2001क जनगणना मे एहि जिलाक जनसंख्या 39,33,636 छल जे वर्ष 1991मे 30,43,091 छल। अर्थात एहि दशक मे 29.26 प्रतिशत वृद्धि भ' गेल। कुल पुरुषक संख्या 20,72,350 ओ महिलाक संख्या 18,61,286 छैक। कुल साक्षरता जिला मे 38.14 प्रतिशत। पुरुष साक्षरता 50.14 एवं महिला साक्षरता 24.65, जखन कि सम्पूर्ण देश मे महिला साक्षरता 54.16 प्रतिशत अछि। जनसंख्याक घनत्व 991 एहि जिला मे, जे सम्पूर्ण देश मे 324 अछि। जनसंख्याक दृष्टि स' सबस' पैघ जिला पूर्वी चम्पारण।

पर्यावरण संतुलनक लेल अधिकाधिक वन क्षेत्र परमावश्यक अछि। एहि जिला मे 919.45 कि.मी. वन क्षेत्र छैक जे कुल भौगोलिक क्षेत्रफलक 17.59 प्रतिशत। उचित पर्यावरण संतुलनक हेतु 33 प्रतिशत वन क्षेत्र चाही। वन एवं पर्यावरण विभाग वन क्षेत्रक वृद्धिक हेतु बीस वर्षीय महत्वाकांक्षी योजना बनौलक अछि। एतयक वन मे सखुआ, सीसो, खैर, सेमर, साबे घास, बांस ओ नरकट पाओल जाइछ। बालु स' भरल नदीक मार्ग मे उद्यान प्रकारक वन अछि। रेलमार्ग, सड़कक विकास, औद्योगिक विकास, भवन निर्माण, कृषि प्रसार तथा अवैध कटाइक कारणें वन क्षेत्रक अतिक्रमण भेल छैक। सामाजिक वानिकी, कृषि वानिकी तथा वनरोपण वन-रक्षणक दिशा मे उत्तम प्रयास भेल छैक।

बूढ़ीगंडक नदी सोमेश्वर पहाड़क पश्चिम भाग हरहा दर्राक समीप

स' 900 वर्ग मील सम्प्रसारक संग निकलैत अछि। ई विशम्भरपुर चौतरवा स' उत्पन्न 512कि. मी. मैदानी भाग तय कय खगड़िया स' 4 कि.मी. दक्षिण गंगा मे मिल जाइछ। तेउर नदी मिलबाक पूर्व एकरा सिकहरना आ मिललाबाद बूढ़ी गंडक कहल जाइछ। मसान, बेलोर, पण्डई, उरिया, कोनहरा एवं धनउती एकर सहायक नदी अछि। बाढ़ि एहि क्षेत्र कें प्रभावित करैछ। बाढ़िप्रवण क्षेत्र लगभग 8.21 लाख हेक्टेयर। नदीक लम्बाइ 580 कि.मी. तथा एहि जिला स' खगड़िया धरि 415 कि.मी. बाढ़ि सुरक्षा तटबंध दुनू तरफ बनल अछि। एहि स' बाढ़ि सुरक्षा भेल छैक, मुदा नहरि निकालि क' सिंचाइक व्यवस्था स' ई क्षेत्र एखनो वंचित अछि। एहि नदीक पश्चिमी-दक्षिणी भाग गंडक सिंचाइ योजनाक अन्तर्गत अछि। यदि जलक सदुपयोग कयल जाय त' एहि जिलाक पूर्वी-उत्तरी भाग, मुजफ्फरपुर जिलाक पूर्वी-उत्तरी हिस्सा एवं दरभंगा जिलाक पश्चिमी भाग मे सिंचाइक व्यवस्था संभव छैक।

बाढ़ि निरोधक काजक एहि जिला मे 11टा योजना स्वीकृत छल जाहि पर 5.08 करोड़ रुपया व्यय कयल गेल, मुदा बाढ़ि बचाव इंतजाम कागजे पर रहल। 26 जून 2003कें बूढ़ी गंडक फुफकारि उठल एवं तटबंध 75 फुट दड़कि गेल। मोतिहारी जिला मुख्यालय स' 45 कि. मी. पर छैक रामगढ़वा बजार-रक्सौलक मार्ग पर। एतय स' भेड़िहारी तटबंधक दूरी 15कि. मी. अछि। पूरा जलमग्न। स्थिति छैक जे बूढ़ी गंडक बांध बाढ़ि कें नहि रोकि सकत। सिकटा लग बंगरी, धूतहां, गाद, सिंहई, टयूकी छोट-छोट पहाड़ी नदी बूढ़ी गंडक मे मिल जाइछ। तखन एकरा मसान नदी कहल जाइछ। सब नदीक एक संग तांडव। तिलावे तटबंध ओ भेड़िहारी तटबंधक बीच 30 हजारक आबादी बसल छल। 1972 मे बांध बनल छल। रखरखाव पर उचित खर्च नहि भेल, मात्र खानापूर्ति भेल। तेरह घंटा धरि मूसलाधार वर्षा भेलै। रक्सौल अनुमंडलक रामगढ़वा, आदापुर, रक्सौलक कतेको गाम मे बाढ़िक पानि पैसि गेल। बंगरी नदीक तटबंध लोक काटि देलक जाहि स' चम्पापुर, बैरिया, मंगलपुर, पटनी ओ शिवनगर मे 5000 एकड़ मे लागल फसिल बर्बाद भ' गेल। 30 जून 2003कें चिरैया प्रखंडक सितलपटी गामक समीप 200 मीटरक लम्बाइ मे नहरि काटि देल गेल जाहि स' मधुबनी, परतापुर, बराजयराम, पीपरा वाजिद सहित आधा दर्जन स' अधिक गाम मे पानि चलि आयल। साढ़े तीन लाखक आबादी बाढ़िक चपेट मे। 20 अगस्त 2003कें बैरिया प्रखंडक लौकरिया, पटजिरवा, डूमरिया बांध तथा पखनाहां-डूमरिया पीडी रिंग बांध मे तेजी स' कटाव भ' रहल छल।

कृषियोग्य भूमिक स्वामित्व, अधिकार एवं दायित्व एहि जिला मे निर्धारित नहि कयल गेल छैक। भूमि कें जोतयबलाक स्वामित्व, उचित मात्रा मे लगानक भुगतान, भूमिक हस्तांतरण, स्वतंत्र व्यवस्था एवं जोतक सीमाक

निर्धारण नहि भेल छैक। जमीन्दारी उन्मूलन त' भेल, मुदा एकटा अन्य वर्ग तैयार भ' गेल। हजारो एकड़ भूमिक स्वामी एखनो एहि जिला मे छथि। फलस्वरूप उग्रवादी प्रवृति मे वृद्धि। उग्रवाद प्रभावित पताही समेत अन्य थाना क्षेत्रक सर्वांगीण विकासक लेल स्थानीय प्रशासन एकटा पैघ योजना एगारहम फाइनेन्स कमीशन कें पठौने अछि। पुलिस व्यवस्था प्रभावित भ' गेल छैक। पकड़ीदयाल अनुमंडल कें दू जोन मे बांटल गेल छैक। प्रशासन अपना भरि पूर्ण सुविधा देबाक प्रयास कयलक अछि। दलाल एवं छुटभैया नेता बाधक होइत अछि। जिलाक गौनाहा, चिरैया, इटाही, रामनगर, पकड़ीदयाल, घोड़ासहन, मेहसी, रामगढ़वा, लौकरिया, गोवर्द्धना, सेमरा आदि एमसीसीक निशान पर छैक।

एहि जिला मे 80.13 प्रतिशत लोक कृषि पर निर्भर करैत छथि। कृषि जीविकाक मुख्य साधन। जिलाक सम्यक् आर्थिक विकास कृषिगत उत्पादन मे वृद्धि स' संभव छैक। अगहनी धान प्रमुख फसिल। भदै धान सेहो उपजाओल जाइछ। मकई जिलाक कुल खेती योग्य भूमिक 8.5 प्रतिशत क्षेत्र मे उपजा होइछ। जौक खेती मे ई जिला अग्रणी अछि। राहरि सामान्यत: सीमान्त भूमि ओ ऊंच भूमि मे कयल जाइछ। एकर उन्नत प्रभेद नवम्बर मे बाउग कयल जाइछ तथा अप्रैल मे काटल जाइछ। कुसियारक ई प्रधान उत्पादक क्षेत्र अछि। चूनयुक्त जलोढ़ माटि कुसियारक उत्पादनक प्रधान आधार। एहि जिलाक ई वाणिज्यिक फसिल अछि। आलूक उत्पादन होइछ। एहि हेतु शीतगृह अछि। हरितक्रान्तिक प्रभाव गहूमक खेती पर परल। गहूमक खेती आब भ' रहल अछि। कुल सिंचित भूमि 957.27 वर्ग कि.मी. क्षेत्र मे छैक। 3,03,923 हेक्टेयर कृषि योग्य भूमि। नहरि स' 76,000 हेक्टेयर भूमि मे सिंचाइक प्रावधान छैक। राष्ट्रीय नलकूल 318 तथा निजी 37987 अछि। 94 लिफ्ट इरीगेशनक सुविधा-1000 हेक्टेयर मे मात्र। धान 212000 हेक्टेयर, गहूमक 121000 हेक्टेयर, दलहन 9000 हेक्टेयर, रबी 2000 तथा तेलहन 9000 हेक्टेयर मे होइछ। आम 8377 ओ लीची 12370 हेक्टेयर मे होइछ। नारियलक खेती सेहो आब भ' रहल अछि। सम्प्रत्ति 37.65 हेक्टेयर मे।

चीनी उद्योग एहि जिलाक प्राचीन उद्योग। सुगौली ओ चकियाक मिल बहुत पुरान अछि। आधुनिकीकरण नहि कयल गेल छैक। एहि मिलक संग सिट्ठी स' कागज ओ छोआ (शीरा) स' अल्कोहल बनयबाक मिल नहि लागल अछि। धानक एक प्रधान उत्पादक जिला। रक्सौल, आदापुर, छौड़ादानो, भलातु, घोड़ासहन, सिकटा ओ कोरवा मे चाउर मिल अछि। मिल आधुनिक ढंगक नहि। आधुनिक चाउर मिल लगाओल जा सकैत अछि। सीप बटन उद्योग एहि जिला मे 1904 स' कार्यरत अछि। सीप बूढ़ीगंडक नदी स' निकालल जाइत अछि। प्राचीन काल मे 200 स' अधिक

कुटीर उद्योग चलैत छल। आब मात्र 3-4 चालू अवस्था मे अछि। सीप स' बटन, आभूषण, शृंगार ओ सजावटक सामान बनैत अछि। सीपक कोनो अंश बेकार नहि होइत अछि। सरकार कोनो आर्थिक सहायता नहि दैत अछि। उन्टे 16 प्रतिशत प्रोडक्शन टैक्स लगा देने अछि। एहि कुटीर उद्योग कें बढ़यबाक प्रयास होयबाक चाही। पीतरिक बर्तन बनयबाक प्राचीन धंधा एहि क्षेत्र मे छल। आब मात्र तीन-चारि कसेरा एहि उद्योग मे लागल छथि। मधुक धंधा हर्सा ओ ओकर समीपवर्ती क्षेत्र मे होइछ। सम्प्रति मात्र एक चौथाई प्राकृतिक संसाधनक उपयोग होइत अछि। इटालियन प्रजातिक मधुमांछी पालल जाइछ। एक कालोनी मे 3000 मधुमांझी रहैछ। मेहसी, हरपुरनाग, विश्वंभरपुर, मझौलिया, मंगराही, कटहा, भीमलपुर आदि क्षेत्र मे 150 मधुमांझी पालक 2.5 कालोनी स' लगभग 40 टन मधुक उत्पादन भ' रहल छैक। 10 हजार कालोनी बसाओल जा सकैछ। उत्पादन दस स' पंद्रह गुणा वृद्धि कयल जाकैछ। एहि स' रोजगार वृद्धिक असीम संभावना छैक। डेयरी उद्योगक बढ़िया संभावना छैक। वर्ष 1999-2000 धरि एहि जिला मे निबंधित लघु उद्योगक संख्या 5055 छल। आब अधिकांश बन्द अछि। मत्स्यपालन उद्योगक विकास सही ढंग स' नहि भेल छैक। मोतिहारीक मोती तथा करिया झील मे केन्द्र सरकार 1995 मे विश्व बैंकक सहयोग स' 19 करोड़ रुपयाक परियोजना चालू कयलक। 25 करोड़ रुपया मूल्यक लगभग 2500 मे टन माछक उत्पादन होइछ, जे स्थानीय बाजार मे बिका जाइछ। 282 एकड़ भूमि मे जल अछि ओहि मे मत्स्य उद्योगक विकास कयल जा सकैछ।

यातायातक मुख्य साधन अछि सड़क मार्ग। सम्पूर्ण जिलाक सड़क मार्ग जर्जर। मोतिहारी शहरक महत्वपूर्ण ओ अतिव्यस्त सड़क-चांदमारी चौक पर लोक सब 2003क वर्षाकाल मे धानक रोपनी कय अपन आक्रोश व्यक्त कयने छलाह। वर्ष 2002मे चांदमारी चौकवला सड़कक हेतु सांसद कोष स' 26 लाख रुपया आवंटन भेल छल। मरम्मत महज खानापूर्ति। ज्ञानबाबू चौक स' चैलहां मोड़ धरि पी. डबल्यू. डी. सड़क भारत-नेपाल कें जोरयबला एनएच 28ए मे चैलाहां लग मिलैत अछि। 50 कि.मी. लम्बा मे रक्सौल धरि ई सड़कक नाम पर कलंक अछि। यदि सड़कक कातक वृक्ष नहि हो त' सड़क ओ खेत मे फर्क नहि कयल जा सकैछ। 2002-03 मे 17 लाख रुपया मरम्मति मे खर्च कयल गेल छल। मार्ग संख्या 104 मे मरम्मतिक हेतु 20.88 लाख रुपया स्वीकृत भेल छल, काज नहि भेल। सुगौलीक बाद रक्सौल धरिक यात्रा मृत्यु कें आमंत्रित करैछ। वर्ष 2001-02मे प्रधानमंत्री सड़क योजनाक अन्तर्गत 7टा सड़क शामिल कयल गेल छल। मात्र तीनटा सड़क बनल अछि। एहि योजनाक अन्तर्गत 856.89 लाख रुपया आवंटित छल जाहि मे मात्र 114.49 लाख रुपया व्यय भेल छैक। मधुबन

स' नौरंगिया धरि 3.18 कि. मी., गम्हरिया स' खटौना धरि 2.53 कि.मी, चिरैया सेमरा स' खड़तड़ी भेडियाही धरि 12.90 कि.मी., जीतपुर स' डुबहा बजार होइत भटुअहिया पुरैनिया धरि 3.06 कि.मी. मेधुआ स' बहलोलपुर धरि 2.90 कि.मी., मुरारपुरक 2.15 कि.मी., कवलपुर स' गोविन्दपुर टिकैता चौक धरि 3.32 कि.मी., मिश्रौलिया स' लोकनाथपुर धरि 2.50 कि.मी., मीनापुर बालाकोठी स' परसौनी गाम धरि 1.62 कि.मी., भड़कुड़बा स' पटेखा धरि 2.00 कि.मी., ढ़ालाबाजार स' एनएच 28 वाटगंज धरि1.09 कि. मी., फुलवरिया स' बलुआ टिकुलिया होइत कौड़िया धरि 1.08 कि.मी., एनएच 28 स' खड़कटवा धरि 5.00 कि.मी., गायघाट लोहियार उज्जैनक 3.92 कि.मी., कल्याणपुर स' गोविन्दपुर धरि 2.50 कि.मी., मेघुआ बहलोलपुर स' पासवान टोल धरि 1.84 कि.मी., रढ़िया स' रामपुरवा धरि 5.85 कि. मी., एनएच 28स' मंगलपुर होइत राजापुर स' भटवलिया धरि 2.00 कि.मी. शंकर सरैया टिकैता मधुछपरा स' गोविन्दपुर सीवान धरि 2.00 कि.मी. तथा पी. डब्ल्यू. डी. सड़क स' बैरिया ढेकहां धरि 1.61 कि.मी. सड़क निर्माणाधीन अछि। एकर अतिरिक्त ग्राम्य अभियंत्र संगठनक अन्तर्गत सड़कक निर्माण ओ मरम्मति एहि तरहें भेल छैक:-

सुगौली -	4.5 कि.मी.	3.50 लाख रुपया
रामगढ़वा-	15 कि.मी.	12 लाख रुपया
रक्सौल -	5 कि.मी.	2.50 लाख रुपया
हरसिद्धि -	9 कि.मी.	6.80 लाख रुपया
केसरिया -	12 कि.मी.	6.00 लाख रुपया
पहाड़पुर -	3 कि.मी.	1.50 लाख रुपया
अरेराज-	53.3 कि.मी.	33.50 लाख रुपया
मोतिहारी -	13.5 कि.मी.	6.00 लाख रुपया
तुरकौलिया	5 कि.मी.	3.00 लाख रुपया
मेहसी-	11 कि.मी.	3.50 लाख रुपया
कल्याणपुर -	19.5 कि.मी.	8.00 लाख रुपया

मोतिहारी- ढाका रोडक चौड़ीकरण आवश्यक। ई सिकरहना अनुमंडल कें जिला मुख्यालय स' जोरयबला मुख्य सड़क अछि। संग्रामपुर प्रखंड स' अनुमंडल मुख्यालय अरेराज कें जोरयबला आरईओक सड़कक स्थिति जर्जर छैक। मोतिहारी-छतौनी सड़क जर्जर अवस्था मे अछि। खासकय भवानीपुर जिरात लग। बूढ़ीगंडक पर मधुबनी घाट पुल 18वर्ष स' निर्माणाधीन अछि। पकड़ीदयाल अनुमंडल कें मोतिहारी जिला मुख्यालय स' जोरयबला मुख्य सड़क। जिला मुख्यालय स' घोड़ासहन 41कि.मी. सड़क मार्ग जर्जर छैक तथा बरसात मे बन्द भ' जाइछ।

रेल यातायात मे विशेष परिवर्तन नहि भेल अछ। पहिने जे छोटी

लाइन छल ओकर आमान परिवर्तन भ' रहल अछि। बड़ी लाइनक गाड़ी स' मोतिहारी कें अमृतसर स' जोरि देल गेल छैक। सुगौली कें बुद्ध सर्किट स' जोरल जा रहल अछि। भारत-नेपाल सीमा पर स्थित रक्सौल स' 4 कि.मी. दूर हवाई अड्डा बदहाली मे अछि। ई 1960मे बनल छल। 5000 फीट रनवे छैक। एहि हवाई अड्डाकें व्यापारिक ओ सीमावर्ती क्षेत्र मे रहबाक कारणें आधुनिक ढंग स' विकसित करबाक प्रयोजन।

एहि जिलामे जल विद्युतक असीम संभावना अछि, मुदा एहि दिशा मे प्रयास नहि कयल गेल छैक। ताप बिजलीक व्यवस्था सेहो दयनीय अछि।

पर्यटन विकासक हेतु एहि जिलामे कोनो काज नहि भेल छैक। जखन कि बिहार सरकार पर्यटन कें उद्योगक दर्जा देने अछि।

केसरिया प्रखंडक सरोत्तर झील 6कि.मी. क्षेत्र मे पसरल अछि। 40,000 स' बेसी पक्षी एतय नवम्बर मे अबैछ एवं मार्चक अन्त धरि वापस चलि जाइत अछि। एहि मे पचास प्रतिशत पक्षी कें मारि देल जाइत छैक। पक्षी विहारक विकास हेतु बिहार सरकार कोनो प्रयास नहि कयने अछि।

सिद्धार्थ कें बुद्ध बनलाक बाद प्रथम पड़ाव ओ निर्वाणक अंतिम पड़ाव केसरिया मे स्थित विश्वक सब स' पैघ बौद्ध-स्तूप पर्यटनक दृष्टि स' विकसित नहि कयल गेल छैक। पर्यटक भवन, म्यूजियम, पेयजल ओ सड़क यातायातक सब सुविधा स' एकरा वंचित राखल गेल छैक। एहि धरोहरक विकास देशक स्वतंत्रता प्राप्तिक 57वर्ष बादो नहि कयल गेल छैक। पुरातत्व विभाग एहि सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहर कें विकसित नहि कय सकल अछि। वैशाली स' लौरिया-नन्दनगढ़ धरि प्रत्येक चारि माइल पर अशोक स्तम्भ अछि। एहि मे कतेको एक सिंहवला छैक। ई कलिंग युद्धक बादक थिक।

केसरिया प्रखंडक देकहां पंचायत मे लोक आस्थाक केन्द्र धवलपीठ मे श्रद्धालुक आवागमन अछि, जखन कि सड़क मार्ग एकदम ध्वस्त अछि। धवलपीठक प्रांगण मे 84 फीट उंच हनुमानक प्रतिमा निर्माणाधीन छैक। प्राय: ई प्रतिमा भारतक सब स' ऊंच प्रतिमा होयत।

मोतिहारी शहर मे मोतीझील 300 एकड़ क्षेत्र मे पसरल अछि। कुरिया, करारिया, बसबरिया, ओ धनौती झील स' संयुक्त ई झील अन्त मे बूढ़ीगंडक मे मिल जाइछ। 20 फीट जल सब समय रहैछ। मत्स्य पालन नौकायणक हेतु उपयुक्त अछि तथापि विकसित नहि कयल गेल छैक।

रक्सौल कें औद्योगिक, वाणिज्यिक, शहरी विकास, पर्यटक केन्द्रक रूप मे सुदृढ़ करबाक योजना केन्द्रीय सरकारक विचाराधीन छैक। कार्यान्वयनक आशा कयल जा सकैछ।

■

नवगछिया

नवगछिया भागलपुर जिलाक एकटा अनुमंडल तथा मिथिलाक एक भूभाग। गंगा नदीक उत्तरी अंचल। एहि अंचलक पूब मे कटिहार जिला, पश्चिम मे खगड़िया, उत्तर मे मधेपुरा तथा दक्षिण मे गंगा नदी-भागलपुर जिला। भौगोलिक क्षेत्रफल 870 वर्ग कि.मी.। कुल 8 प्रखंड तथा 86 पंचायत। नवगछिया मे 10 पंचायत, बिहपुर मे 13, गोपालपुर मे 9, नारायणपुर मे 11, खरीक मे 13, इस्माइलपुर मे 5, रंगरा चौक मे 10 तथा गौराडीह मे 15 पंचायत अछि। 2001क जनगणनाक अनुसार जनसंख्या 2,73,556 (अनुमानित) जे 1991क जनगणना स' 28.43 प्रतिशत अधिक अछि। कुल साक्षरता 50.28 प्रतिशत जाहि मे पुरुष साक्षरता 60.11 प्रतिशत तथा महिला साक्षरता मात्र 38.83 प्रतिशत। जनसंख्याक घनत्व 946 अछि जखन कि देशक 324 अछि। प्रमुख नदी छथि गंगा। धान, मकई ओ दलहन मे मसुरी प्रधान फसिल। केराक व्यावसायिक खेती होइछ।

विक्रमशिला सेतु गंगा पर बनल पुल, जे भागलपुरक बरारी घाट कें एहि अनुमंडलक तेतरी पंचायत स' जोरलक अछि, एहि क्षेत्रक विकास मे पैघ सहायक होयत। 15 नवम्बर 1990कें 4337.20 मीटर लम्बा, 67 पिलर, उत्तर पश्चिम पथ 900 मीटर, दक्षिण पथ 1600 मीटर, पुलक चौड़ाइ साढ़े सात मीटर एवं दुनू दिस फुटपाथ डेढ़-डेढ़ मीटर अछि। एहि सेतुक जखन शिलान्यास भेल छल त' परियोजनाक लागत 70 करोड़ रुपया आ पांच वर्षक अन्दर पूरा करबाक संकल्प छल, किन्तु एहि पुलक उद्घाटन 23 जुलाइ 2001 क' कयल गेल तथा लागत पड़ल एक अरब 67 करोड़ रुपया। पुलक बाइपास सड़क

एखन धरि नहि बनल छैक। बाइपास सड़क कें मोकामा स' फरक्का धरि जायबला एन. एच. 80क अंग बना देल गेल अछि। 200 करोड़ रुपयाक लागत स' बनयबला बाइपास सड़कक निर्माणक हेतु सर्वेक काज दिल्लीक एक संस्था कें देल गेल छैक तथा अगस्त 2003मे 16 लाख रुपया दय देल गेल छैक। सम्प्रति भागलपुर शहर मे यातायात पर अत्यधिक दबाव छैक। एहि पुल स' आर्थिक विकासक संगहि जल माफियाक आतंक स' क्षेत्रक लोक कें त्राण भेटत।

■



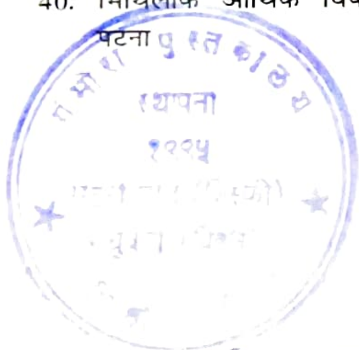
मिथिलाक जनपदक परिचयात्मक विवरण (जनगणना रिपोर्ट 2001क अनुसार)

क्रमांक	प्रमण्डल	मण्डल	मुख्यालय	क्षेत्रफल (वर्ग कि.मी.)	जनसंख्या (2001)		कुल जनसंख्या	साक्षरता (प्रतिशत)	विधान सभा ओ संसद मे सदस्यता (2004 धरि)	
					पुरुष	महिला			विधान सभा	संसद
1.	पूर्णिया	1. पूर्णिया	पूर्णिया	3229	1325794	1214994	2540988	35.51	7	1
		2. अररिया	अररिया	2830	1108924	1015907	2124831	34.94	6	1
		3. किसनगंज	किसनगंज	1884	666910	627153	1294063	42.80	3	1
		4. कटिहार	कटिहार	3057	1244943	1144590	2389553	45.51	7	1
2.	कोसी	1. सहरसा	सहरसा	4112	788585	717833	1506418	39.28	4	1
		2. सुपौल	सुपौल	2420	908855	836214	1745069	37.80	5	-
		3. मधेपुरा	मधेपुरा	1788	796272	728324	1524596	36.19	5	1
3.	मुंगेर	1. खगड़िया	खगड़िया	1486	675501	601176	1276677	41.56	4	1
		2. बेगूसराय	बेगूसराय	1918	1226057	1116932	2342989	48.55	7	1
4.	दरभंगा	1. दरभंगा	दरभंगा	2279	1716640	1568833	3285473	44.32	10	1
		2. मधुबनी	मधुबनी	3501	1837361	1733290	3570651	42.35	11	2
		3. समस्तीपुर	समस्तीपुर	2904	1771249	1642164	3413413	45.76	9	2
5.	तिरहुत	1. मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	3172	1941480	1802356	3743836	48.15	11	1
		2. सीतामढ़ी	सीतामढ़ी	2643	1410149	1259738	2669887	39.38	8	1
		3. शिवहर	शिवहर	——	271261	243027	514288	37.01	1	1
		4. प. चम्पारण	बेतिया	5228	1600853	1442191	3043044	39.63	9	2
		5. पू. चम्पारण	मोतिहारी	3968	2072350	1861286	3933636	38.14	11	1
		6. वैशाली	हाजीपुर	2036	1412276	1300113	2712389	51.63	8	2
6.	भागलपुर	नवगछिया (पुलिस जिला)			213000					
			मिथिलाक जनपदक कुल जनसंख्याक				43631581		127 (243)	21 (40)

सन्दर्भ

1. मिथिला तत्व विमर्श; म.म.पं. परमेश्वर झा
2. Mithila, A union Republic, Dr. Laksman Jha, Drabhanga
2. The Northern Border, Dr. Laksman Jha, Darbhanga.
3. Mithila will rize, Dr. Laksman Jha, Darbhanga
4. Wealth of Mithila, Dr. Lakshminarayan Singh
5. मिथिलाक संक्षिप्त राजनैतिक इतिहास; डा. (प्रो.) राधाकृष्ण चौधरी, वैदेही समिति, दरभंगा
6. मिथिलाक इतिहास, डा. उपेन्द्र ठाकुर
7. History of Tirhut, Shyam Narayan Singh, Calcutta.
8. मिथिलाक उद्योग ओ व्यापार - डा. विद्यापति सिंह
9. मिथिला भाषा ओ आर्थिक स्थिति - डा. लक्ष्मण झा एवं डा. लक्ष्मीनारायण सिंह
10. जब नदी बंधी, बाढ़ नियंत्रण की कोसी यात्रा - दिनेश कुमार मिश्र
11. बाढ़ से त्रस्त : सिंचाई से पस्त; दिनेश कुमार मिश्र
12. बन्दिनी महानन्दा - दिनेश कुमार मिश्र
13. Economics of North Bihar - Dr. Prabodh Kr. Jha
14. बिहार का संकट और उसका हल - त्रिपुरारि शरण
15. बिहार विकास की गाथा - बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना
16. बिहार उपलब्धियों का वर्ष (1996-97) सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बिहार, पटना
17. वार्षिक प्रशासकीय प्रतिवेदन (1975-76) बिहार सरकार, पटना
18. बिहार एक झलक (1995) सांख्यिकी एवं मूल्यांकन निदेशालय, पटना
19. CMIE Profile of districts, Bombay
20. The Economic Heritage of Mithila S.K. Jha & B. Jha
21. Bihar, A Profile - Dr. M.N. Karna
22. A peep into Seventy five years of Bihar, Journal Bihar Research society, Patna

23. Small Scale Industries Area Survey Report- Central Small Scale Industries Organisation, Patna
Saharsa - 1961, Darbhanga - 1962
Muzaffarpur - 1963, Champaran - 1967
Purnia - 1963
24. Distination Bihar Investment opportunities (1995) Govt. of Bihar, Patna.
25. Seminar on Industrialization of North Bihar (1989), IDBI.
26. Joint Industries Survey of Bihar (1991) IDBI, IFCI, ICICI, ARC.
27. Industrial Development Imperative for Bihar & Jharkhand (2001) Industries Commission (J. Irani)
28. औद्योगिक नीति (2003), बिहार सरकार, पटना
29. वैशाली का लिच्छवी स्तम्भ- नगेन्द्रनाथ कश्यप - जर्नल, बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना
30. मिथिलाक धरोहर - अभिषेक पुष्करणी - ताराकान्त मिश्र - घर-बाहर
31. मिथिलाक कुशल-मंगलक प्रतीक अछि-माछ - डा. शिशिर कु. वर्मा- समय साल (दिसम्बर-जनवरी 2004)
32. बिहार एवं झारखंड एक अध्ययन (वर्ष 2000) साहित्य भवन पब्लिकेशन, आगरा
33. बिहार सामान्य ज्ञान (वर्ष 2001), उपकार प्रकाशन, आगरा
34. बिहार का आधुनिक भूगोल (2001) डा. रामप्यारे सिंह, बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना
35. प्रभात खबर, पटना बिहार विशेषांक 7 अप्रैल, 2001
36. दैनिक जागरण, पटना
37. Times of India, Patna
38. त्रिस्तरीय पंचायत निर्वाचन (2001) राज्य निर्वाचन आयोग, पटना
39. http:/bihar.bin.in
40. मिथिलाक आर्थिक विकास (2000)- नरेन्द्र झा, शिखा प्रकाशन, पटना



■

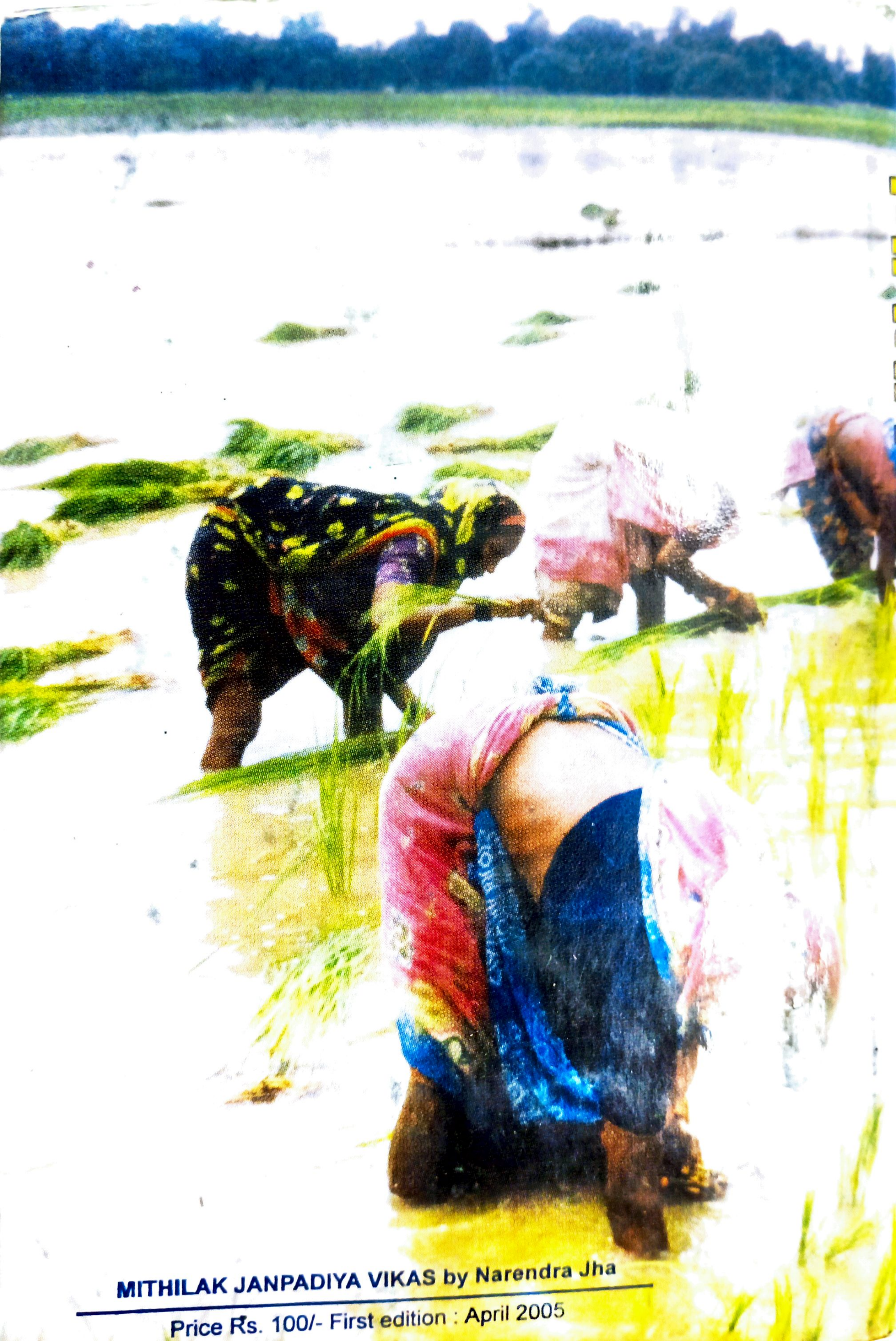


नरेन्द्र झा

दरभंगा जिलाक तरौनी गाम मे अनन्तचतुर्दशी, 1936 मे जन्म। दरभंगा, दिल्ली आ कोलकाता मे अध्ययन। कोलकाता स' चार्टर्ड एकाउंटेंटक डिग्री आ ओतहि किछु वर्ष अपन पेशाक संगहि 'मिथिला दर्शन' आ 'मिथिला मिहिर' मे मिथिलाक अर्थव्यवस्था पर नियमित लेखन। मैथिली आंदोलन आ सांस्कृतिक गतिविधि मे संलग्न। सम्प्रति पटना मे पेशा स' जुड़ल रहैत विविध पत्र- पत्रिका मे लेखन।

कृति : मिथिलाक आर्थिक विकास (वर्ष 2000 मे प्रकाशित)

सम्पर्क :
झा एण्ड एसोसिएट्स
मदनधारी भवन
एस.पी. वर्मा रोड
पटना- 800 001



MITHILAK JANPADIYA VIKAS by Narendra Jha

Price Rs. 100/- First edition : April 2005